2016

विदेश नीति की समीक्षा

विदेश मामलों के क्षेत्र में हुए विकास पर वार्षिक रिपोर्ट

विश्व मामलों की भारतीय परिषद

सप्रू हाउस, बाराखम्बा रोड

नई दिल्ली – 110070

www.icwa.in

विदेश मामलों के क्षेत्र में हुए विकास पर वार्षिक रिपोर्ट

विश्व मामलों की भारतीय परिषद

नई दिल्ली

के शोध संकाय द्वारा तैयार किया गया

विश्व मामलों की भारतीय परिषद (आईसीडब्ल्यूए) भारत में विदेश नीति का सबसे पुराना विचार मंच है, जो विदेश और सुरक्षा नीति के मुद्दों में विशेषज्ञता रखता है। यह भारत की स्वतंत्रता से पहले 1943 में भारत के पहले प्रधान मंत्री, जवाहरलाल नेहरू की प्रेरणा के अधीन प्रख्यात बुद्धिजीवियों के एक समूह द्वारा स्थापित किया गया था। 2001 में संसद के एक अधिनियम द्वारा विश्व मामलों की भारतीय परिषद को "राष्ट्रीय महत्व का संस्थान" घोषित किया गया है।

यह परिषद अपने आन्तरिक संकाय और साथ ही बाहरी विशेषज्ञों के माध्यम से नीति पर अनुसंधान करता है। यह नियमित रूप से सम्मेलनों, संगोष्ठियों, गोलमेज चर्चाओं, व्याख्यानों और प्रकाशन समेत बौद्धिक गतिविधियों की एक सरणी का आयोजन करता है। यह एक लैंडमार्क और सुस्थापित पुस्तकालय, वेबसाइट और 'इंडिया क्वार्टरली' नामक एक पत्रिका भी चलाता है। यह अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारत की भूमिका के

बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने में संलग्न है और सरकार तथा नागरिक समाज को नीति प्रतिमान और रणनीतियां प्रस्तुत करता है, और अन्य विदेशी विचार मंचों के साथ बहु-विषयक वार्ताओं और संवाद के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।

विषय-वस्तु

अध्याय
पृष्ठ

1. दक्षिण एशिया **8**

1.1. अफ़ग़ानिस्तान 8

1.2. बांग्लादेश
12

1.3. नेपाल
13

1.4. पाकिस्तान 17

1.5. श्री लंका 20

2. पूर्व एशिया/आसियान **22**

2.1. ब्रूनेई 22

2.2. कंबोडिया
23

2.3. इंडोनेशिया 24

2.4. लाओ पीडीआर 26

2.5. वियतनाम 27

2.6. म्यांमार 30

2.7. सिंगापुर 32

2.8. थाईलैंड 34

2.9. पापुआ न्यू गिनी 39

2.10. न्यू ज़ीलैण्ड 39

2.11. फिजी 44

3. मध्य एशिया 44

3.1. किर्गिज़स्तान 44

3.2. ताज़िकिस्तान 46

4. पश्चिम एशिया और उत्तर अफ्रीका 47

4.1. बहरीन 48

4.2. अल्जीरिया 49

4.3. मिस्र 49

4.4. मोरक्को 50

4.5. ट्यूनीशिया 52

4.6. ईरान 54

4.7. इज़राइल 56

4.8. फिलिस्तीन 57

4.9. क़तर 59

4.10. सऊदी अरब 64

4.11. ओमान की सल्तनत 65

4.12. सीरिया 65

4.13. तुर्की 66

5. अफ्रीका 68

5.1. घाना 69

5.2. कोटे डी आइवर 71

5.3. नामीबिया 72

5.4. नाइजीरिया 73

5.5. माली 74

5.6 मोज़ाम्बिक 75

5.7. केन्या 75

5.8. तंज़ानिया 76

5.9. दक्षिण अफ्रीका 77

6. हिन्द महासागर द्वीप राज्य 78

6.1. मालदीव 78

7. लैटिन अमेरिका और कैरेबियन 79

7.1. ब्राज़ील 79

8. उत्तर अमेरिका 81

8.1. मेक्सिको 81

9. प्रमुख शक्तियां 82

9.1. चीन 82

9.2. यूरोपीय संघ 85

i. भारत और यूरोपीय संघ 85

ii. बेल्जियम
93

iii. चेक गणराज्य 95

iv. फिनलैंड 96

v. फ्रांस 97

vi. हंगरी 103

vii. इटली 106

viii. स्वीडन
106

ix. स्विट्जरलैंड 108

x. आइसलैंड 109

9.3. जापान
110

9.4. रूस 110

9.5. संयुक्त राज्य अमेरिका 121

9.6. यूके 136

10. भारत और बहुपक्षीय संस्थाएँ 146

10.1. भारत और ब्रिक्स शिखर सम्मेलन 146

10.2. ब्रिक्स - बिमस्टेक आउटरीच 150

10.3. आरआईसी 153

10.4. संयुक्त राष्ट्र 154

10.5. सार्क 155

10.6. जी-20 और भारत 155

10.7. एससीओ और भारत 155

10.8. 7 वां एनएएम शिखर सम्मेलन 156

11. मिश्रित (शिखर सम्मेलन, सम्मेलन, सेमिनार और संवाद) 157

12. प्रमुख कार्यक्रम, वित्त मंत्रालय 162

योगदानकर्ता की सूची 168

स्रोत

विदेश नीति की समीक्षा 2016 में दी गई जानकारी निम्नलिखित वेबसाइटों से प्राप्त की गई है:

1. विदेश मंत्रालय
2. वाणिज्य मंत्रालय
3. वित्त मंत्रालय
4. राष्ट्रपति कार्यालय
5. उपराष्ट्रपति कार्यालय
6. प्रधान मंत्री कार्यालय
7. औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग (डीआईपीपी)
8. प्रेस सूचना ब्यूरो

1. दक्षिण एशिया

वर्ष 2016 में दक्षिण एशिया में हुए द्विपक्षीय विकास और की गई दौरों से ये पता चलता है कि भारत ने राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा क्षेत्रों में पड़ोसी देशों के साथ अपने जुड़ाव को बढ़ाने की कोशिश की थी। अफ़ग़ानिस्तान, मालदीव और श्रीलंका जैसे देशों के साथ रक्षा सहयोग बढ़ाने के लिए उठाए गए कदम, सतत विकास सहायता और क्षमता निर्माण कार्यक्रम का कार्यान्वयन कुछ ऐसे सकारात्मक पहलू हैं जिन्होंने द्विपक्षीय संबंधों में स्थिरता लाने में मदद की है। हालांकि, इन संबंधों पर संक्षिप्त अवधि के लिए नेपाल के आंतरिक राजनीतिक घटनाक्रमों का प्रभाव पड़ा है और संबंधित पक्षों के साथ वार्ता के माध्यम से इन्हें सुलझाया गया था। नेपाल में नेताओं के परिवर्तन ने भी समस्या को बेहतर ढंग से समझने में मदद की। पाकिस्तान के तरफ से सीमा पार आतंकवादी हमलों की संख्या बढ़ती रही, जिससे द्विपक्षीय संबंधों में तनाव आया। इसके कारण 2016 में इस्लामाबाद में आयोजित होने वाला सार्क सम्मेलन रद्द कर दिया गया था और इस शिखर सम्मेलन को रद्द करने के भारत के निर्णय को सार्क के अधिकांश सदस्य देशों से समर्थन मिला था।

1.1 अफ़ग़ानिस्तान

1.1.ए. इस्लामी गणराज्य अफ़ग़ानिस्तान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं मंत्री परिषद के अध्यक्ष डॉ. अब्दुल्ला अब्दुल्ला का भारत दौरा (31 जनवरी से 4 फरवरी 2016)

इस्लामी गणराज्य अफ़ग़ानिस्तान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी महामहिम डॉ. अब्दुल्ला अब्दुल्ला ने 31 जनवरी से 4 फरवरी 2016 तक भारत का दौरा किया। इस दौरे के दौरान, उन्होंने 1 फरवरी को प्रधान मंत्री से मुलाकात की और अफ़ग़ानिस्तान में सुरक्षा स्थिति और शांति और सुलह के मुद्दों समेत आपसी हित के द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की। ईएएम और एनएसए ने क्रमशः 1 और 4 फरवरी को महामहिम डॉ. अब्दुल्ला से मुलाकात की।

भारत ने अफ़ग़ानिस्तान में जारी राजनीतिक, सुरक्षा और आर्थिक संक्रमणों के दौरान सभी संभव तरीकों से उसके साथ खड़े रहने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया। दोनों पक्षों ने आतंकवाद के सभी रूपों और आविर्भावों को पूरी तरह से समाप्त करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस दौरान अफ़ग़ानिस्तान में 92 परियोजनाओं वाली लघु विकास परियोजनाओं के तीसरे चरण को मंजूरी दी गई। दोनों पक्ष प्राथमिकता के आधार पर ईरान में चाबहार बंदरगाह के माध्यम से संपर्कता विकसित करने पर सहमत हुए। डिप्लोमैटिक पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा की आवश्यकता से छूट प्रदान करने पर एक समझौते पर हस्ताक्षर भी किया गया।

1.1.बी. प्रधान मंत्री का अफ़गानिस्तान दौरा (04 जून 2016)

भारत के प्रधान मंत्री ने 4 जून 2016 को हेरात में अफ़ग़ानिस्तान-भारत मैत्री बांध के उद्घाटन समारोह पर काबुल का दौरा किया।[1] उन्होंने नदियों के महत्व के बारे में भाषण दिया, जो दुनिया की महान सभ्यताओं की वाहक रही हैं और कहा कि मैत्री बांध न केवल बिजली का

जनरेटर है बल्कि अफ़ग़ानिस्तान के भविष्य में आशावाद और विश्वास का भी जनरेटर है। उन्होंने अफगान संसद भवन के बारे में भी उल्लेख किया, जिसमें उन्होंने कहा था कि यह अफगान लोगों के भविष्य को मत और बहस से, न कि बंदूक और हिंसा से एक आकार देने में महाकाव्योचित संघर्ष के प्रति एक श्रद्धांजलि थी।

प्रधान मंत्री ने कहा कि एक-साथ मिलकर, उनकी साझेदारी की सहायता से ग्रामीण समुदायों के लिए स्कूल, स्वास्थ्य केंद्र और सिंचाई सुविधाओं का निर्माण किया गया है। इसने अफ़ग़ानिस्तान के भविष्य की जिम्मेदारी संभालने के लिए महिलाओं को कौशल प्रदान करके और युवाओं को शिक्षा प्रदान करके सशक्त बनाया है। उन्होंने सड़कों के निर्माण के लिए हाथ मिलाया है जो जरंज से देलाराम तक आपके देश की दूरी को कम करता है और ट्रांसमिशन लाइन बिछाया है जो आपके घरों तक बिजली पहुंचाता है। उन्होंने ईरान के चाबहार बंदरगाह में भारत द्वारा निवेश के बारे में भी बताया, जो अफ़ग़ानिस्तान को दुनिया के लिए एक नया मार्ग और समृद्धि का नया मार्ग देगा। उन्होंने आगे ये भी कहा कि उस दृष्टि को कार्यान्वित करने के लिए, पिछले महीने, राष्ट्रपति ग़नी, ईरान के राष्ट्रपति रूहानी और उनके साथ जुड़े और अफ़ग़ानिस्तान, ईरान और भारत के बीच चाबहार व्यापार और पारगमन समझौते पर हस्ताक्षर करने के गवाह बने।

प्रधान मंत्री ने यह भी उल्लेख किया कि जब अफगान को परिभाषित करने वाले मूल्य प्रबल होंगे, तब आतंकवाद और उग्रवाद पीछे हट जाएगा।

भारत के जुड़ाव के बारे में बात करते हुए, उन्होंने कहा कि भारत की क्षमता भले ही सीमित है, लेकिन इसकी प्रतिबद्धता की कोई सीमा नहीं है। इसके संसाधन भले ही मामूली हैं, लेकिन इसकी इच्छा असीम है। उन्होंने कहा कि यद्यपि दोनों देश भूगोल और राजनीति की बाधाओं का सामना करते हैं, लेकिन वे अपने उद्देश्य की स्पष्टता से अपना मार्ग निर्धारित करते हैं। इसलिए, अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर और क्षेत्रीय मंचों पर, भारत एक शांतिपूर्ण, समृद्ध, एकजुट, समावेशी और लोकतांत्रिक राष्ट्र प्राप्त करने के लिए अफगान के अधिकार के लिए एक स्वर में बोलेगा। और, उजाले और अँधेरे में, जो कुछ भी होगा, हम हमेशा, जैसा कि हेरात के महान सूफी कवि, हकीम जामी कहते हैं, दोस्ती की मंद हवा की ताजगी और खुशी का अनुभव करेंगे।

[1]http://mea.gov.in/outoging-visit-detail.htm?26867/Speech+by+Prime+Minister+at+the+Inauguration+of+Afghanistan++India+Friendship+Dam+in+Herat+June+4+2016

1.1.सी. अफ़ग़ानिस्तान के राष्ट्रपति के भारत दौरे के दौरान भारत-अफ़ग़ानिस्तान संयुक्त वक्तव्य (14 और 15 सितंबर 2016)

भारत और अफ़ग़ानिस्तान के दो नेताओं के बीच हस्ताक्षरित संयुक्त वक्तव्य में, यह सहमति बनी कि भारत के विदेश मंत्री और अफ़ग़ानिस्तान के विदेश मंत्री की अध्यक्षता में रणनीतिक साझेदारी परिषद शीघ्र ही बैठक आयोजित करेगी, चार संयुक्त कार्य समूहों की सिफारिशों की समीक्षा करेगी जो सहयोग के विविध क्षेत्रों को संभालते हैं और आगे मार्गदर्शन प्रदान करेगी। राष्ट्रपति के दौरे के दौरान नेताओं ने प्रत्यर्पण संधि, नागरिक और वाणिज्यिक मामलों में सहयोग पर सहमति और बाहरी अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोग में सहयोग पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर होने का संतोष व्यक्त किया। दोनों नेताओं ने अफ़ग़ानिस्तान में शांति, स्थिरता और विकास को बढ़ावा देने के लिए क्षेत्रीय और अन्य देशों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ भारत और अफ़ग़ानिस्तान को शामिल

करते हुए संवादों में तीव्रता लाने का स्वागत किया। उन्होंने विशेष रूप से, भारत-ईरान-अफ़ग़ानिस्तान त्रिपक्षीय परामर्श के परिणाम की सराहना की और न्यूयॉर्क में भारत-अमेरिका-अफ़ग़ानिस्तान परामर्श को पुनः आरम्भ करने की आशा जताई। प्रधान मंत्री ने राष्ट्रपति को अवगत कराया कि भारत अफ़ग़ानिस्तान सरकार को हर संभव तरीके से सहायता प्रदान करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ जुड़ना जारी रखेगा। इस संदर्भ में, नेताओं ने 4 दिसंबर को होने वाले हार्ट ऑफ एशिया-इस्तांबुल (एचओए) प्रोसेस के अमृतसर मंत्रिस्तरीय सम्मेलन साथ ही 5 अक्टूबर को होने वाले ब्रुसेल्स सम्मेलन के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि अमृतसर के चुनाव ने संपर्कता बहाल करने के महत्व को रेखांकित किया और एचओए के इस वर्ष के विषय: 'चुनौतियों को संबोधित करना, समृद्धि प्राप्त करना' के अनुरूप था। यह इस बात को भी रेखांकित करता है कि भारत और अफ़ग़ानिस्तान, दक्षिण एशिया और मध्य एशिया के बीच शीघ्र निर्बाध दो-तरफा संपर्कता प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। प्रधान मंत्री ने राष्ट्रपति को अमृतसर मंत्रिस्तरीय सम्मेलन के उद्घाटन के लिए आमंत्रित किया। राष्ट्रपति ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

1.1.डी. छठा हार्ट ऑफ एशिया-इस्तांबुल (एचओए) प्रक्रिया मंत्रिस्तरीय सम्मेलन (4 दिसंबर 2016),

अमृतसर घोषणा (04 दिसंबर, 2016)

हार्ट ऑफ एशिया-इस्तांबुल प्रोसेस (एचओए-आईपी) के रूप में क्षेत्रीय पहल का छठा मंत्रिस्तरीय सम्मेलन 4 दिसंबर 2016 को अमृतसर, भारत में आयोजित हुआ था। अमृतसर में आयोजित यह सम्मेलन अफ़ग़ानिस्तान पर एचओए-आईपी बहुपक्षीय प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अध्याय था। इसने अफ़ग़ानिस्तान में शांति और स्थिरता लाने के उद्देश्य से चल रहे क्षेत्रीय प्रयासों में कई आयाम जोड़े। सहयोगी देशों और संगठनों के अलावा सभी 14 एचओए-आईपी सदस्य देशों ने अमृतसर सम्मेलन में भाग लिया था। महामहिम श्री अरुण जेटली, भारत गणराज्य के वित्त मंत्री और महामहिम श्री सलाउद्दीन रब्बानी, इस्लामी गणराज्य अफ़ग़ानिस्तान के विदेश मामलों के मंत्री की सह-अध्यक्षता में भारत के प्रधान मंत्री एवं अफ़ग़ानिस्तान के राष्ट्रपति ने सम्मेलन का उद्घाटन किया था।

सम्मेलन ने राजनीतिक संवाद के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय मंच के रूप में और अफ़ग़ानिस्तान तथा एशिया क्षेत्र के समग्र हार्ट में स्थिरता, शांति और समृद्धि को बढ़ावा देने के उद्देश्य से करीबी क्षेत्रीय सहयोग और एशिया क्षेत्र के समग्र हार्ट के साथ संपर्कता अफ़ग़ानिस्तान की संपर्कता को बढ़ावा देने में एचओए-आईपी के महत्व की पुष्टि की। एचओए-आईपी अमृतसर सम्मेलन में एएनडीएसएफ द्वारा सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी अपनाने और अफ़ग़ानिस्तान में आतंकवाद और हिंसक चरमपंथ से लड़ने में उनकी भूमिका के लिए, इसके अलावा, वर्ष 2020 तक एएनडीएसएफ को निरंतर वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की प्रतिबद्धता और आईएसएएफ-पश्च मिशन द्वारा उन्हें सहायता प्रदान करने की प्रतिबद्धता की सराहना की गई। इसमें अक्टूबर 2016 में आयोजित अफ़ग़ानिस्तान पर ब्रुसेल्स सम्मेलन में सम्मिलित 100 से अधिक देशों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा विकास सहायता के लिए की गई प्रतिबद्धताओं की सराहना भी की गई।

अमृतसर सम्मेलन में अफ़ग़ानिस्तान और इस क्षेत्र में सक्रिय सभी आतंकवादी संगठनों का नाम बताया गया। सम्मेलन घोषणा में आतंकवाद के लिए वित्तपोषण सहित आतंकवाद के सभी प्रकारों को तत्काल समाप्त करने, साथ ही साथ इसमें समर्थन देने की मांग की गई। अमृतसर सम्मेलन में परिस्थिति से निपटने के लिए सभी एचओए देशों को शामिल करते हुए प्रभावी वि-आमूलीकरण और प्रति-आमूलीकरण रणनीतियों पर बल दिया गया।

सम्मेलन में उन चुनौतियों के बारे में चर्चा की गई, जिन्हें संबोधित करने की आवश्यकता है और जिनमें अफगान शरणार्थियों की स्वदेश-वापसी में हालिया वृद्धि और उनके पुनः एकीकरण, अफीम के अवैध उत्पादन और एचओए क्षेत्र में और उससे आगे के क्षेत्रों में भी मादक पदार्थों की तस्करी शामिल है।

अमृतसर सम्मेलन में इस समर्थन की पुष्टि की गई कि हार्ट ऑफ़ एशिया क्षेत्र में क्षेत्रीय संपर्कता और आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देने में अफ़ग़ानिस्तान को एक प्राकृतिक भू-पुल है और व्यापक क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग को बढ़ाने के लिए अपने भौगोलिक अवस्थिति का उपयोग करता है। इस संबंध में, सम्मेलन में ऊर्जा और संपर्कता परियोजनाओं जैसे कि सीएएसए-1000, टीएपीआई, टीयूटीएपी, चाबहार समझौते, पांच राष्ट्र रेलवे, तुर्कमेनिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान और ताज़िकिस्तान को जोड़ने वाले टीएटी के महत्व को उजागर किया गया, जो मध्य एशिया और दक्षिण एशिया के बीच क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत बनाने में एक केंद्रीय भूमिका निभाएंगे।

घोषणा में क्षेत्रीय देशों द्वारा हार्ट ऑफ एशिया क्षेत्र के भीतर महत्वपूर्ण उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम कॉरिडोर स्थापित करने और अफ़ग़ानिस्तान और इस क्षेत्र को बंदरगाहों के साथ जोड़ने वाली बुनियादी ढाँचे के विकास पर ध्यान केंद्रित करने की निरंतर प्रतिबद्धता का भी उल्लेख है।

छठे मंत्रिस्तरीय घोषणापत्र ने एचओए-आईपी में पहचाने गए छह विश्वास निर्माण उपाय (सीबीएम) के कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए अपना सामूहिक समर्थन व्यक्त किया, जिसमें 2015 में इस्लामाबाद मंत्रिस्तरीय सम्मेलन के बाद से विभिन्न सीएमबी के अधीन कई गतिविधियां निष्पादित होने की संतुष्टि व्यक्त की गई थी। सम्मेलन में प्रमुख देशों, भाग लेने वाले और सहयोगी देशों और संगठनों से आग्रह किया गया कि वे प्रत्येक सीबीएम के अधीन जिन गतिविधियों को वरीयता दी गई है, उनका कार्यान्वयन सुनिश्चित करें।

2017 में अजरबैजान हार्ट ऑफ एशिया-इस्तांबुल प्रोसेस के अगले मंत्रिस्तरीय सम्मेलन की मेजबानी करेगा।

1.2 बांग्लादेश

1.2.ए. बांग्लादेश के विदेश मंत्री महामहिम श्री अबुल हसन महमूद अली का भारत दौरा (मार्च 01-03, 2016)

बांग्लादेश के विदेश मंत्री महामहिम अबुल हसन महमूद अली ने विदेश मंत्रालय और ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन द्वारा आयोजित रायसीना वार्ता के पहले संस्करण में भाग लेने के लिए नई दिल्ली का दौरा किया। एफएम अली इस वार्ता के उद्घाटन सत्र में वक्ताओं में से एक थे।

2 मार्च 2016 को, एफएम अली की विदेश मंत्री के साथ द्विपक्षीय मुलाकात हुई, जिसके दौरान दोनों मंत्रियों ने जून 2015 में प्रधान मंत्री मोदी के ढाका दौरे के बाद से द्विपक्षीय सहयोग पहल में हुई प्रगति की समीक्षा की। वर्तमान में भारत और बांग्लादेश के उत्कृष्ट संबंधों की सराहना करते हुए, उन्होंने अपने संबंधों को और भी गहरा बनाने का दृढ़ संकल्प लिया। भविष्य के राजनीतिक विनिमय, सुरक्षा, संपर्कता और पारगमन, बिजली, ऊर्जा, पानी आदि सहित पारस्परिक हित के मामलों पर चर्चा की गई। बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर हुए हमलों की हालिया घटनाओं का उल्लेख करते हुए, विदेश मंत्री ने बांग्लादेशी प्राधिकारियों से अपराधियों के खिलाफ त्वरित कार्रवाई करने की मांग की। एफएम अली ने आश्वासन दिया कि बांग्लादेश सरकार देश में

कट्टरपंथी ताकतों की गतिविधियों को रोकने के महत्व को लेकर सजग है और बांग्लादेश के धर्मनिरपेक्ष, प्रगतिशील और उदार चरित्र की रक्षा के लिए अपनी सरकार की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

1.2.बी. 11-12 मई, 2016 को विदेश सचिव का बांग्लादेश दौरा

भारत के विदेश सचिव डॉ एस जयशंकर ने 11-12 मई, 2016 को बांग्लादेश का द्विपक्षीय दौरा किया। विदेश सचिव ने 11 मई को बांग्लादेश की माननीय प्रधान मंत्री शेख हसीना और बांग्लादेश के माननीय विदेश मंत्री श्री ए एच महमूद अली से मुलाकात की और 12 मई को बांग्लादेश के विदेश सचिव श्री एम शाहिदुलहक के साथ मुलाकात की।

संवाद के दौरान, दोनों विदेश सचिवों ने जून 2015 में भारत के माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के बांग्लादेश दौरे के दौरान लिए गए फैसलों और सहमतियों की प्रगति की समीक्षा की। महत्वपूर्ण घटनाक्रमों में भूमि सीमा समझौते के कार्यान्वयन; पलतना, त्रिपुरा से पूर्वी बांग्लादेश तक 100 मेगावाट बिजली की आपूर्ति शुरू करना; बांग्लादेश से त्रिपुरा तक इंटरनेट बैंडविड्थ की आपूर्ति; चटगाँव से कृष्णापट्टनम तक तटीय पोत सेवाओं की शुरुआत; ऊर्जा सहयोग पर प्रगति; 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर के ऋण व्यवस्था से कम की परियोजनाओं के निष्पादन के लिए डॉलर क्रेडिट लाइन समझौते पर हस्ताक्षर करना शामिल है। दोनों पक्षों ने सुरक्षा और सीमा प्रबंधन, बिजली, पोत परिवहन, रेलवे, स्वास्थ्य, नीली अर्थव्यवस्था, बांग्लादेश में भारतीय एसईजेड की स्थापना आदि के क्षेत्रों में विभिन्न द्विपक्षीय तंत्रों की हालिया बैठकों के दौरान किए गए निर्णयों का भी जायजा लिया।

यह दौरा, 2016 के दूसरे भाग में ढाका में दोनों देशों के विदेश मंत्रियों के नेतृत्व में आयोजित होने वाली संयुक्त परामर्शक आयोग की अगली बैठक के लिए जमीन तैयार करने में उपयोगी था।

1.3 नेपाल

1.3.ए. विदेश मंत्री का नेपाल दौरा

विदेश मंत्री, श्रीमती सुषमा स्वराज, नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री सुशील कोइराला के अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल के साथ 9 फरवरी 2016 को नेपाल गईं। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने नेपाल की राष्ट्रपति बिध्या देवी भंडारी और प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली के साथ शिष्टाचारिक मुलाकात की।

1.3.बी. नेपाल के प्रधान मंत्री के पी ओली का भारत दौरा

नेपाल के प्रधान मंत्री के.पी. शर्मा ओली ने 19-24 फरवरी, 2016 को भारत का दौरा किया। इस दौरे के दौरान दोनों देशों के बीच निम्नलिखित क्षेत्रों पर कई समझौतों और समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए:

- भूकंप के पश्चात पुनः निर्माण सहायता के लिए भारत सरकार के तरफ से दी जाने वाली सहायता पैकेज के 250 मिलियन अमेरिकी डॉलर अनुदान का उपयोग।
- नेपाल के तराई क्षेत्र में सड़क के बुनियादी ढांचे को मजबूत करना।
- नेपाल संगीत और नाटक अकादमी और संगीत-नाटक अकादमी के बीच।

- पारगमन मार्गों पर विनिमय के पत्र: (i) काकरबिट्टा-बंगलाबंध कॉरिडोर के ज़रिए नेपाल और बांग्लादेश के बीच पारगमन (ii) विशाखापट्टनम बंदरगाह का परिचालन।
- रेल परिवहन पर विनिमय के पत्र: (i) विशाखापट्टनम से/तक रेल परिवहन (ii) बांग्लादेश के साथ और के माध्यम से नेपाल के व्यापार के लिए सिंघाबाद के ज़रिए रेल पारगमन सुविधा।
- मुज़फ़्फ़रपुर-ढालकेबार ट्रांसमिशन लाइन का उद्घाटन [80 मेगावाट की प्रारंभिक आपूर्ति, अक्टूबर 2016 तक 200 मेगावाट और दिसंबर 2017 तक 600 मेगावाट की वृद्धि]।

1.3.सी. नेपाल के प्रधान मंत्री के भारत के राजकीय दौरे के दौरान भारत-नेपाल संयुक्त वक्तव्य की प्रमुख बिन्दुएँ, 15-18 सितंबर 2016

- दोनों प्रधानमंत्रियों ने उप-क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने में प्रगति की समीक्षा की, और इस बात पर सहमति व्यक्त की कि दोनों सरकारों को विशेष रूप से व्यापार, पारगमन, संपर्कता और शक्ति के क्षेत्रों में इसे और आगे बढ़ाने के तरीके तलाशने चाहिए।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने जुलाई 2016 में काठमांडू में आयोजित नेपाल-भारत संबंधों पर प्रख्यात व्यक्तियों के समूह की पहली बैठक पर ध्यान दिया।
- नेपाल के प्रधानमंत्री ने 25 अप्रैल और 12 मई 2015 के विनाशकारी भूकंपों के बाद भारत सरकार और भारत के लोगों द्वारा प्रदान की गई त्वरित और व्यापक सहायता के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने भूकंप के पश्चात नेपाल के पुनः निर्माण के लिए भारत के तरफ से दी जाने वाली 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर की विशेष सहायता पैकेज के लिए भारत सरकार का आभार व्यक्त किया।
- भारत के प्रधान मंत्री ने नेपाल में राष्ट्रीय पुनर्निर्माण प्राधिकरण (एनआरए) की स्थापना का स्वागत किया, जो भूकंप के पश्चात की पुनर्निर्माण परियोजनाओं का समन्वय करेगा।
- नेपाली पक्ष के अनुरोध पर, भारतीय पक्ष ने एनआरए को सहायता देने पर सहमति व्यक्त की, जिसमें भारत के राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा अनुभव और क्षमता निर्माण का साझा करना भी शामिल है। नेपाल सरकार द्वारा घरों के पुनर्निर्माण के लिए प्रत्येक लाभार्थी को 3 लाख नेपाली रुपए देने की घोषित नीति के जवाब में, भारत सरकार ने सूचित किया कि वह 50,000 परिवारों के लिए अपना योगदान 2 लाख नेपाली रुपए से बढ़ाकर 3 लाख नेपाली रुपए करेगी। इस उद्देश्य के लिए, भूकंप के पश्चात के पुनर्निर्माण के लिए 750 मिलियन अमेरिकी डॉलर की ऋण व्यवस्था में से नेपाल सरकार द्वारा 50 मिलियन अमेरिकी डॉलर का आहरण किया जाएगा।
- भारत के प्रधान मंत्री ने संविधान के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए नेपाल सरकार द्वारा समाज के सभी वर्गों को शामिल करने के लिए चलाए जा रहे प्रयासों का स्वागत किया।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल दिया कि दोनों पक्ष की सुरक्षा के प्रति खतरा बनने वाले अनैतिक तत्वों को खुली सीमा का दुरुपयोग करने की अनुमति ना दी जाए।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने काठमांडू में स्थित भारतीय दूतावास और नेपाल सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों को शामिल करते हुए एक निगरानी तंत्र स्थापित करने पर सहमति व्यक्त की, जो चल रही आर्थिक और विकास परियोजनाओं के संबंधित परियोजना कार्यान्वयन एजेंसियों/ विकासकर्ताओं के साथ मिलकर नियमित रूप से परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा करेगा, और उनके कार्यान्वयन में तेजी लाने के लिए आवश्यक कदम उठाएगा।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने अधिकारियों को फरवरी 2016 में दोनों पक्षों द्वारा सहमत कार्यान्वयन रूपरेखाओं के अनुसार डाक सड़कों और फीडर सड़कों (तराई सड़कों) के निर्माण में तेजी लाने और शीघ्र पूरा करने का निर्देश दिया।

- दोनों प्रधानमंत्रियों ने एकीकृत चेक पोस्ट (आईसीपी) पर बुनियादी ढांचे के शीघ्र विकास की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने सहमति व्यक्त की कि रक्सौल-बीरगंज आईसीपी परियोजना पर काम दिसंबर 2016 तक पूरा करने के उद्देश्य से इसमें तेजी लाई जाएगी; बिराटनगर में आईसीपी का निर्माण तुरंत शुरू होगा, और नेपालगंज और भैरवाहा में आईसीपी के संबंध में विस्तृत इंजीनियरिंग रिपोर्ट को पूरा करने में तेजी लाई जाएगी।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने चल रही दो भारत-नेपाल सीमा पार रेल-लिंक परियोजनाओं – (क) जयनगर-बिजलपुर-बर्दीबास और (बी) जोगबनी-बिराटनगर के कार्यान्वयन में हुई प्रगति की समीक्षा की और सहमति व्यक्त की कि दोनों पक्ष इन दोनों परियोजनाओं को शीघ्र पूरा करने के लिए आवश्यक अगला उपाय अपनाएंगे। दोनों पक्ष इस बात पर सहमत हुए कि तीन अन्य सहमत सीमा-पार रेल-लिंक परियोजनाओं (नेपालगंज-नेपालगंज सड़क; काकरबिट्टा-न्यू जलपाईगुड़ी; भैरवाहा – नौतनवा) का विकास सुकर बनाने के लिए कदम उठाए जाएंगे ताकि नेपाली पक्ष में भूमि अधिग्रहण शुरू हो सके।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे धालकेबर में सब-स्टेशन के निर्माण में तेजी लाएं, ताकि मुज़फ़्फ़रपुर-ढालकेबार ट्रांसमिशन लाइन को योजना के अनुसार पूरी क्षमता से संचालित किया जा सके।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने संतोष व्यक्त किया कि दोनों देश 2035 तक की अवधि के लिए सीमा पार से अंतर-संपर्क के लिए मास्टर प्लान और 2025 तक बिजली व्यापार पर कार्य योजना तैयार करने में लगे हुए हैं।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने अन्य प्रमुख पनबिजली परियोजनाओं, पंचेश्वर, ऊपरी करनाली और अरुण-III की प्रगति की समीक्षा की और उल्लेख किया कि परियोजनाओं का समयबद्ध तरीके से कार्यान्वयन करने के लिए विभिन्न मुद्दों को तेजी से संबोधित किया जाएगा ताकि लोगों को जल्द से जल्द उनके लाभ मिल सके।
- पंचेश्वर बहुउद्देश्यीय परियोजना की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट को अंतिम रूप देने में तेजी लाने का निर्णय लिया गया। यह सहमति हुई कि दोनों पक्ष 2014 में हस्ताक्षरित शक्ति व्यापार समझौते को संचालित करने के लिए उपाय करना जारी रखेंगे।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने अगस्त 2015 में रक्सौल-अमलेखगंज पेट्रोलियम पाइपलाइन के निर्माण के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर का स्वागत किया और निर्देश दिया कि निर्माण कार्य शीघ्र आरम्भ किया जाए।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने नेपाल में सड़कों और बिजली के बुनियादी ढांचे के विकास के लिए 100 मिलियन अमेरिकी डॉलर और 250 मिलियन अमेरिकी डॉलर के दो ऋण व्यवस्थाओं के उपयोग पर संतोष व्यक्त किया।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने 550 मिलियन अमेरिकी डॉलर के ऋण व्यवस्था में से सिंचाई परियोजनाओं के लिए 200 मिलियन अमेरिकी डॉलर और सड़कों तथा महाकाली पुल के निर्माण के लिए 330 मिलियन अमेरिकी डॉलर के आवंटन का स्वागत किया।
- नेपाल के अनुरोध पर, भारत ने कुछ परियोजनाएं, अर्थात, हुलाकी राजमर्ग (चरण- II); बुटवाल को जोड़ने वाली सीमा-पार ट्रांसमिशन लाइन, ढाकेलबार और हितौड़ा में 400 केवी सब-स्टेशन और कास्की जिले में एक पॉलिटेक्निक शुरू करने के लिए अतिरिक्त ऋण व्यवस्था प्रदान करने की इच्छा प्रकट की।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने स्वागत किया कि पशुपतिनाथ क्षेत्र में स्मारकों के पुनर्निर्माण और नवीकरण के लिए पशुपति क्षेत्र विकास ट्रस्ट और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के बीच समझौता ज्ञापन को अंतिम रूप दिया जाएगा।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने पर्यटन और स्वास्थ्य देखभाल की आयुर्वेदिक प्रणाली के क्षेत्रों में सहयोग को आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया।

1.3.डी. भारत-नेपाल संयुक्त आयोग की बैठक, 27 अक्टूबर, 2016

भारत-नेपाल संयुक्त आयोग बैठक का चौथा सत्र 27 अक्टूबर 2016 को नई दिल्ली में आयोजित किया गया था। इस सत्र की सह-अध्यक्षता भारत सरकार की विदेश मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री एम. जे. अकबर और नेपाल के विदेश मंत्री महामहिम डॉ. प्रकाश शरण महत ने की थी। दोनों प्रतिनिधिमंडलों में भारत के विदेश सचिव, डॉ. एस जयशंकर और नेपाल के विदेश सचिव, श्री शंकर दास बैरागी और दोनों पक्षों के अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे।

1.3.ई. भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने नेपाल का दौरा किया (2-4 नवंबर 2016)[2]

भारतीय राष्ट्रपति के स्वागत में आयोजित भोज में, उन्होंने भारत-नेपाल संबंधों के इतिहास और संभावनाओं पर भाषण दिया। उन्होंने शांति और सुरक्षा और अन्य समान चिंताओं के मुद्दों को भी संबोधित किया जो भारत और नेपाल साझा करते हैं।[3]

काठमांडू विश्वविद्यालय ने राष्ट्रपति मुखर्जी को मानद डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया। इस अवसर पर, उन्होंने दक्षिण एशिया में शिक्षा के इतिहास पर और राष्ट्र निर्माण में अच्छे शैक्षिक और प्रशिक्षण संस्थानों के महत्व पर व्याख्यान दिया।[4]

1.3.ई. राष्ट्रपति के नेपाल दौरे के दौरान उनके भोज भाषण का सारांश (02 नवंबर, 2016)

- उन्होंने घनिष्ठ संबंधों और आपसी समझ को मजबूत करने के लिए दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक संबंधों को अभिस्वीकार किया।
- नेपाल में चल रही लोकतांत्रिक प्रक्रिया की सराहना करते हुए, उन्होंने शांति, स्थिरता, प्रगति और सर्वांगीण विकास की तलाश में नेपाल के लोगों की उद्यम और उपलब्धियों की सराहना की। उन्होंने तीव्र संकट की परिस्थितियों के दौरान भी लोगों की तन्यकता बनी रहने पर टिप्पणी की। उन्होंने जरूरत पड़ने पर सहायता प्रदान करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को दोहराया।

1.3.एफ. सिविक रिसेप्शन, राष्ट्रपति सभा गृह, काठमांडू में राष्ट्रपति के संबोधन का सारांश (03 नवंबर, 2016)

- दुनिया में भारत और नेपाल जैसी कोई दो संप्रभु राष्ट्र नहीं हैं, जो समान संस्कृति साझा करते हैं और जिनके बीच एक खुली सीमा है। भारत की सरकार और लोग इस संबंध को और मजबूत और गहरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।
- भारत की स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान नेपाल की भूमिका के बारे में उल्लेख करते हुए, उन्होंने दोनों राष्ट्रों के लिए आर्थिक समृद्धि और सतत विकास की एक साझा दृष्टि के बारे में बताया।

1.4 पाकिस्तान

1.4.ए. पठानकोट आतंकवादी हमले की जांच में पाकिस्तान पर बयान,14 जनवरी 2016

भारत सरकार ने पठानकोट आतंकवादी हमले की जांच पर 14 जनवरी 2016 को पाकिस्तान सरकार द्वारा जारी किए गए बयान का स्वागत किया। बयान में ये बताया गया है कि पठानकोट घटना से जुड़े आतंकवादी तत्वों के खिलाफ चल रही जांच में काफी प्रगति हुई है। जैश-ए-मोहम्मद के खिलाफ की गई कार्रवाई पहला महत्वपूर्ण और सकारात्मक कदम है।

[2] For full coverage of the visit, see http://mea.gov.in/outgoing-visit-info.htm?2/929/Visit+of+President+to+Nepal+November+0204+2016
[3] For full text of the speech, see http://mea.gov.in/outoging-visit-detail.htm?27561/Banquet+Speech+by+President+during+his+visit+to+Nepal+November+02+2016

[4]For full text of the speech, see http://mea.gov.in/outoging-visit-detail.htm?27567/Acceptance+Speech+by+President+at+Kathmandu+University+Dhulikhel+November+03+2016

यह भी अभिस्वीकार किया गया है कि पाकिस्तान सरकार पठानकोट आतंकवादी हमले की जांच के लिए एक विशेष जांच दल भेजने पर विचार कर रही है। भारत सरकार ने पाकिस्तानी एसआईटी (विशेष जांच दल) के आने की आशा की।

1.4.बी. विदेश सचिव और पाकिस्तान के विदेश सचिव ऐजाज़ अहमद चौधरी की मुलाकात, 26 अप्रैल, 2016

भारत और पाकिस्तान के विदेश सचिवों ने नई दिल्ली में आयोजित "हार्ट ऑफ एशिया" की वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक के अवसर पर मुलाकात की। भारत के विदेश सचिव ने पाकिस्तान में पठानकोट आतंकवादी हमले की जांच के साथ-साथ मुंबई मामले के मुकदमे में तेजी लाने और दृश्यमान प्रगति की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने यूएन 1267 प्रतिबन्ध समिति में जैश-ए-मोहम्मद के नेता मसूद अज़हर को भी सूची में शामिल करने की मांग की। चर्चाओं में मछुआरों और कैदियों से संबंधित मानवीय मुद्दों समेत अन्य मानवीय मुद्दों और धार्मिक पर्यटन सहित लोगों से लोगों के बीच संपर्क के मुद्दों को भी शामिल किया गया।

1.4.सी. भारतीय तटरक्षक [आईसीजी] और पाकिस्तान समुद्री सुरक्षा एजेंसी [पीएमएसए] के बीच पांचवीं बैठक, 13-14 जुलाई, 2016

13-14 जुलाई, 2016 को इस्लामाबाद में आईसीजी और पीएमएसए की एक प्रतिनिधिमंडल स्तर की बैठक हुई। दोनों प्रतिनिधिमंडलों ने संबंधित ईईजेड की सुरक्षा से संबंधित परिचालन मुद्दों, दोनों देशों के ईईजेड को प्रभावित करने वाली प्रदूषण की घटनाओं के बारे में जानकारी के आदान-प्रदान, राष्ट्रीय कानूनों और विनियमों के अनुसार समुद्री खोज और बचाव अभियान की सहूलियत, और दोनों पक्षों द्वारा पकड़े गए मछुआरों के साथ मानवीय व्यवहार और उनकी शीघ्र रिहाई के साथ-साथ उनकी नौकाओं के शीघ्र प्रत्यावर्तन के मुद्दों पर चर्चा की।

1.4.डी. पाकिस्तान के विदेश मामलों पर सलाहकार द्वारा बयान पर सरकारी प्रवक्ता की प्रतिक्रिया कि पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर पर बातचीत के लिए भारत को आमंत्रित करेगा, 13 अगस्त, 2016

12 अगस्त, 2016 को प्रेस वार्ता में पाकिस्तान सरकार के विदेश मामलों के सलाहकार श्री सरताज अजीज के एक बयान के जवाब में, कि पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर पर बातचीत के लिए भारत को आमंत्रित करेगा, जिस पर पाकिस्तान के विदेश सचिव लिखेंगे। आधिकारिक प्रवक्ता ने कहा:

"भारत भारत-पाकिस्तान संबंधों में समकालीन और प्रासंगिक मुद्दों पर एक बातचीत का स्वागत करेगा। इस समय इनमें सीमा पार आतंकवाद, बहादुर अली जैसे आतंकवादियों की घुसपैठ, सीमा

पर हिंसा और आतंकवाद को उकसाने, फिज सईद और सैयद सलाहुद्दीन जैसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त आतंकवादियों का गुणगान करने के पाकिस्तान के प्रयासों पर रोक लगाना शामिल हैं और पाकिस्तान में मुंबई हमले के मुकदमे और पठानकोट हमले की जांच में ईमानदारी रखना।"

1.4.ई. पाकिस्तान विदेश मामलों के मंत्रालय की ओर से भारतीय उच्चायोग में प्राप्त एक मौखिक नोट पर एक प्रश्न पर सरकारी प्रवक्ता का जवाब (14 अगस्त, 2016)

पाकिस्तान के विदेश मामलों के मंत्रालय की ओर से भारतीय उच्चायोग में प्राप्त एक मौखिक नोट पर एक प्रश्न के जवाब में, आधिकारिक प्रवक्ता ने कहा:

''12 अगस्त को इस्लामाबाद में हमारे उच्चायोग को एक संचार प्रदान किया गया था ... भारत और इस क्षेत्र के अन्य देशों को पहले ही काफी अधिक मात्र में पाकिस्तान का ट्रेडमार्क निर्यात - अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, सीमा पार से घुसपैठियों, हथियारों, मादक पदार्थों और नकली मुद्रा मिला है। हम पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय से इस कथित संचार को पूरी तरह और स्पष्ट रूप से खारिज करते हैं।''

1.4.एफ. आईपीयू की 135 विधानसभा सत्र पर सामान्य बहस के दौरान पाकिस्तान के वक्तव्य के जवाब में लोक सभा के सांसद आर के सिंह के वक्तव्य का सारांश (24 अक्टूबर, 2016)

उन्होंने कहा कि पाकिस्तान भारत के जम्मू-कश्मीर राज्य के संबंध में आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करके अपनी ताकत का दुरुपयोग कर रहा है। उन्होंने पाकिस्तान को यह स्पष्ट किया कि जम्मू-कश्मीर का पूरा राज्य भारत का अभिन्न हिस्सा है। आतंकवाद मानव अधिकारों का सबसे घोर रहा उल्लंघन है और पाकिस्तान को वैश्विक आतंकवाद का केंद्र होने की कुख्याति प्राप्त है। पाकिस्तान की जनता, पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर, बलूचिस्तान और खैबर पख्तूनख्वा के लोग मानव अधिकारों की पूर्ण उपेक्षा में पाकिस्तान की सत्तावादी और भेदभावपूर्ण नीतियों के कारण सांप्रदायिक संघर्ष, आतंकवाद और चरम आर्थिक कठिनाई के शिकार बने हैं। मामलों के इस हालत को देखते हुए, मंत्री महोदय ने कहा कि पाकिस्तान को अपनी ऊर्जा अपने गृह की व्यवस्था बरक़रार रखने में उपयोग करने और कहीं और किसी अन्य देश पर मानव अधिकारों के हनन का आरोप लगाने की बजाय अपने पड़ोसियों पर आतंकी हमलों में शामिल घुसपैठियों पर कार्रवाई करने की दिशा में केन्द्रित करने की सलाह दी जाती है। चूंकि पाकिस्तान ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्तावों का मुद्दा उठाया है, मंत्री महोदय ने कहा कि वो पाकिस्तान को सलाह देंगे कि वो प्रस्तावों के अधीन पहले पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर पर से अपना अवैध कब्ज़ा हटाने का अपना प्राथमिक उत्तरदायित्व पूरा करे। उन्होंने पाकिस्तान से भारत के किसी भी हिस्से में हिंसा और आतंकवाद भड़काने और ऐसा करने में सहायता करना बंद करने को कहा और किसी भी मामले में भारत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने से परहेज करने की सलाह दी।

1.5 श्री लंका

1.5.ए. विदेश मंत्री का श्री लंका दौरा, 5-6 फरवरी 2016

श्रीमती सुषमा स्वराज ने 5-6 फरवरी, 2016 से भारत-श्रीलंका संयुक्त आयोग के 9 वें सत्र के लिए अंतर-मंत्रालयी प्रतिनिधिमंडल को कोलंबो लेकर गईं। उन्होंने 5 फरवरी, 2016 को श्रीलंका के विदेश मामलों के मंत्री श्री मंगला समरवीरा के साथ संयुक्त आयोग की बैठक की सह-अध्यक्षता की। संयुक्त

आयोग ने 22 जनवरी, 2013 को आयोजित 8 वें सत्र के बाद से द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति और विकास पर चर्चा की। सत्र के दौरान जिन प्रमुख बिंदुओं पर चर्चा की गई, वे थीं:

- चर्चा के दौरान आर्थिक और तकनीकी सहयोग करार पर वार्ता शुरू करने के लिए दोनों पक्षों पर चल रही तैयारियों का जायजा लिया गया। दोनों पक्षों की ओर से सी ई ओ फोरम के पुनर्गठन तथा व्यापार संबंध बढ़ाने के लिए श्रीलंका के निर्यात संवर्धन बोर्ड से प्राप्त प्रस्तावों का संज्ञान लिया गया।
- संयुक्त आयोग ने विभिन्न परियोजनाओं में अधिक गहरा सहयोग बनाने के उपायों पर चर्चा की जो चर्चा के अधीन हैं, जिसमें पलाली एयरपोर्ट का उन्नयन, कांकेसंतुरई बंदरगाह पर अवसंरचना विकास, समपुर पावर प्लांट और ट्रिंकोमाली में एक विशेष आर्थिक क्षेत्र आदि की परियोजनाएं शामिल हैं।
- संयुक्त आयोग ने संशोधित हवाई सेवा करार पर जल्दी हस्ताक्षर करने का आग्रह किया, जो सितंबर 2013 से लंबित है। दोनों पक्ष नागर विमानन क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए सहमत हुए जिसमें वैमानिकी तलाशी एवं बचाव, क्षमता निर्माण एवं प्रशिक्षण तथा भारतीय उपग्रह प्रणाली गगन का प्रयोग आदि जैसे क्षेत्रों में सहयोग शामिल है।
- भारत ने ''सौर गठबंधन'' का समर्थन करने के लिए श्रीलंका का धन्यवाद किया।
- 50,000 घरों के निर्माण और मरम्मत के लिए भारतीय आवास परियोजना की समीक्षा की गई। संयुक्त आयोग ने 44,000 मकानों का निर्माण पूरा हो जाने पर संतोष व्यक्त किया तथा नोट किया कि उवा एवं मध्य प्रांतों में शेष 4,000 मकानों के निर्माण के लिए शीघ्र ही निर्माण कार्य शुरू होने की उम्मीद है।
- संयुक्त आयोग ने प्रमुख गैर एस डी पी परियोजनाओं की भी समीक्षा की जैसे कि अनुदान के आधार पर जाफना सांस्कृतिक केन्द्र का निर्माण तथा लगभग 475 मिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य की जलापूर्ति परियोजनाएं जिन्हें भारत के एग्जिम बैंक की क्रेता ऋण स्कीम के तहत भारतीय कंपनियों द्वारा निष्पादित किया जाएगा। श्रीलंका पक्ष ने भारत सरकार से एस डी पी प्रतिमान के तहत अधिक परियोजनाएं संचालित करने का अनुरोध किया। संवादों के निष्कर्ष को देखते हुए, उत्तरी प्रांत में प्राथमिकता वाले 27 स्कूलों में अवसंरचना के जीर्णोद्धार तथा बट्टीकलोवा में शिक्षण अस्पताल में एक सर्जिकल यूनिट के निर्माण और चिकित्सा उपकरणों की आपूर्ति पर दो नए एस डी पी एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए गए।
- दोनों पक्षों ने स्वास्थ्य क्षेत्र में सहयोग के क्षेत्रों: निजी क्षेत्र के निवेश, पारंपरिक चिकित्सा, प्रशिक्षण के अवसर, आदि पर चर्चा की।
- संयुक्त आयोग ने दोनों देशों के बीच साझा नागरिक विरासत के उत्सव के रूप में भारत के त्योहार "संगम" का जायजा लिया।
- संयुक्त आयोग ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी संबंधी सहयोग के लिए संयुक्त समिति शीघ्र गठित करने और 2014 में समाप्त हो चुकी सहयोग कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया।
- संयुक्त आयोग ने पहले से ही मौजूद कई रक्षा संबंधित तंत्रों के माध्यम से रक्षा सहयोग को और तेज करने के लिए प्रोत्साहित किया।
- संयुक्त आयोग ने आतंकवाद से निपटने में सहयोग के महत्व को स्वीकार किया और दोनों देशों को साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता पर सहमति व्यक्त की।
- दोनों पक्ष मछुआरों के मुद्दे का स्थायी समाधान खोजने पर सहमत हुए।
- 6 फरवरी, 2016 को, मंत्री स्वराज ने भंडारनायके मेमोरियल इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस हॉल (बीएमआईसीएच) में "डिजिटल इंडिया का उदय" प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

1.5.बी. श्रीलंका के राष्ट्रपति का भारत में कार्य दौरा, 13-14 मई 2016

श्रीलंका के राष्ट्रपति, श्री मैत्रीपाला सिरीसेना ने 13 मई और 14 को भारत में कार्य दौरा किया। उन्होंने वैचारिक महाकुंभ में समापन सत्र को संबोधित किया, जो 14 मई को उज्जैन, मध्य प्रदेश में सिंहस्थ महाकुंभ के भाग के रूप में आयोजित किया गया था। राष्ट्रपति सिरिसेना, पीएम मोदी के साथ वैचारिक महाकुम्भ में गए और उज्जैन के निनोरा गाँव में 'सिंहस्थ घोषणा' जारी की। श्रीलंका के राष्ट्रपति ने विश्व प्रसिद्ध सांची स्तूप का भी दौरा किया और साथ ही श्रीलंका के महाबोधि समाज के एक समारोह में भाग लिया, जिसके दौरान उन्होंने अंगारिका धर्मपाल की एक प्रतिमा का अनावरण किया। राष्ट्रपति ने दिल्ली का दौरा भी किया, जहां प्रधानमंत्री मोदी ने उनके सम्मान में रात्रिभोज का आयोजन किया।

1.5.सी. दुरिअप्पा स्टेडियम, श्रीलंका के उद्घाटन के अवसर पर प्रधान मंत्री के संबोधन का सारांश (18 जून, 2016)

उन्होंने राष्ट्रपति सिरीसेना के साथ-साथ श्रीलंका के लोगों को पुनर्निर्मित दुरिअप्पा स्टेडियम समर्पित किया। उन्होंने स्टेडियम को आशावाद और आर्थिक विकास का प्रतीक बताया। भारत और श्रीलंका के बीच इतिहास, संस्कृति, भाषा, कला और भूगोल में विकसित हुए समृद्ध संपर्कों के बारे में उल्लेख करते हुए, प्रधान मंत्री ने कहा कि भारत दृढ़ता से ये मानता है कि इसके आर्थिक विकास से इसके पड़ोसियों को भी लाभ मिलना चाहिए। यहीं चीज भारत के साथ श्री लंका के स्थायी संबंधों को वर्तमान के प्रासंगिक बनाता है, और साथ ही देशों के भविष्य के लिए भी प्रासंगिक बनाता है। भारत आर्थिक रूप से समृद्ध श्रीलंका देखने की इच्छा रखता है। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को सशक्त बनाने में दुरिअप्पा स्टेडियम को एक हिस्सा बनाने में श्रीलंका की भूमिका का उल्लेख किया।

1.5.डी. श्रीलंका के प्रधान मंत्री का भारत दौरा, 4-6 अक्टूबर, 2016

श्रीलंका के प्रधान मंत्री महामहिम रनिल विक्रमसिंह ने 6 अक्टूबर 2016 को भारत आर्थिक शिखर सम्मेलन के लिए एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। श्रीलंका के प्रधान मंत्री ने श्रीमती निर्मला सीतारमण, वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री (आईसी) के साथ भारत आर्थिक शिखर सम्मेलन के उद्घाटन भाषण में भाग लिया। दौरे के दौरान, श्रीलंका के प्रधान मंत्री ने भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी, प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी, विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, गृह मंत्री, सड़क परिवहन और राजमार्ग और पोत मंत्री, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार से मुलाकात की।

2 पूर्व एशिया/ आसियान

वर्ष 2016 इस क्षेत्र के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण था क्योंकि भारत और पूर्व एशिया/आसियान देशों के नेताओं ने कई द्विपक्षीय दौरे किए थे। इसने क्षेत्र के उक्त देशों के बीच मैत्रीपूर्ण और परस्पर लाभप्रद संबंध बनाने के लिए वर्षों से किए गए समग्र प्रयासों को प्रबल बनाने में सहायता की है। विशेष रूप से, निम्नलिखित उल्लेखनीय घटनाओं पर प्रकाश डाला गया है:

2.1 ब्रूनेई

2.1.ए. भारत के उप-राष्ट्रपति का ब्रूनेई दौरा

ब्रूनेई के क्राउन प्रिंस, हिज रॉयल हाइनेस (एचआरएच), हाजी अल-न बिल्लाह के निमंत्रण पर माननीय उप राष्ट्रपति श्री एम हामिद अंसारी ने 1 से 3 फरवरी 2016 को ब्रूनेई दारुसेलम का आधिकारिक दौरा किया। 1984 में दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के बाद यह भारत की ओर से पहला उच्च स्तरीय दौरा था। दौरे के दौरान, निम्नलिखित क्षेत्र में कई समझौतों पर हस्ताक्षर हुए थे:

i. स्वास्थ्य सहयोग के क्षेत्र में सहयोग स्थापित करने के उद्देश्य से स्वास्थ्य सहयोग में समझौता ज्ञापन, जैसे कि स्वास्थ्य संवर्धन और बीमारी की रोकथाम, डॉक्टरों, अन्य पेशेवरों और विशेषज्ञों का आदान-प्रदान, स्वास्थ्य, चिकित्सा और स्वास्थ्य अनुसंधान विकास पर जानकारी का आदान-प्रदान, फार्मास्यूटिकल्स, चिकित्सा उपकरणों और सौंदर्य प्रसाधन का विनियमन और इन क्षेत्रों में व्यवसाय विकास को बढ़ावा देना।
ii. भारत और ब्रुनेई के बीच विभिन्न रक्षा क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ाना देने के उद्देश्य से रक्षा सहयोग पर समझौता ज्ञापन।
iii. युवा और खेल मामलों में सहयोग पर समझौता ज्ञापन, बशर्ते खेल व्यक्तियों और खेल टीमों के आदान-प्रदान के लिए एक रूपरेखा तैयार करना; खेल प्रशिक्षण में विशेषज्ञों का विनिमय सुकर बनाना; प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान; खेल प्रबंधन एवं प्रशासन और युवा मामलों के क्षेत्र में जानकारियों का साझा।

2.1.बी. ब्रुनेई विश्वविद्यालय में उपराष्ट्रपति का संबोधन

ब्रुनेई विश्वविद्यालय में अपने संबोधन में, श्री अंसारी ने, ब्रुनेई के साथ भारत के संबंधों पर बल दिया। उन्होंने कहा कि ऊर्जा व्यापार एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें भारत और ब्रुनेई एक-दूसरे के प्रबल पूरक हैं। वर्तमान में भारत ब्रुनेई से 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर का कच्चा तेल आयात करता है। हालांकि भारत ब्रुनेई के लिए तीसरा सबसे बड़ा आयातक है, लेकिन ब्रूनेई से भारत आयात किया गया कुल कच्चा तेल भारत में विश्व भर से आयात किए जाने वाले कच्चे तेल का केवल एक अंश है,जो 2014-15 में 112.748 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक थी। भारत ब्रुनेई सरकार के साथ एक उर्वरक संयंत्र स्थापित करने के लिए काम करना चाहता है जो भारत में कृषि आवश्यकता को पूरा करने के लिए उर्वरकों के उत्पादन के लिए ब्रूनेई में उपलब्ध हाइड्रोकार्बन संसाधनों का उपयोग करेगा। उन्होंने भारत के बुनियादी ढाँचे और विनिर्माण क्षेत्रों में ब्रुनेई के निवेशों का स्वागत किया, विशेष रूप से इसलिए क्योंकि भारत ने 'मेक इन इंडिया', 'डिजिटल इंडिया' और स्मार्ट शहरों जैसी कई पहल की शुरुआत की है। अपने संबोधन में, श्री अंसारी ने ब्रुनेई में रहने वाले उन 10,000 प्रवासी भारतीय समुदायों को सहायता प्रदान करने के लिए ब्रूनेई सरकार का आभार व्यक्त किया, जो ब्रूनेई की अर्थव्यवस्था में योगदान दे रहे हैं। लोगों के मध्य संपर्क बढ़ाने के लिए, उन्होंने शैक्षणिक संस्थानों के छात्रों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं के विनिमय में सहयोग बढ़ाने और संपर्कता संवर्धित कर तथा वीजा और यात्रा दस्तावेज की आवश्यकताओं को सुविधाजनक बनाकर परस्पर पर्यटन का विस्तार करने में सहयोग बढ़ाने पर बल दिया। उन्होंने आपसी सहयोग के कुछ अन्य क्षेत्रों को भी रेखांकित किया, जैसे कि, सूचना प्रौद्योगिकी, समुद्री-मार्गों की सुरक्षा बनाए रखना और रक्षा क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा गहराने के लिए सहयोग, और विभिन्न क्षेत्रों में रक्षा कर्मियों को प्रशिक्षित करना और तटीय सुरक्षा और आपदा तैयारियां और राहत।

2.2. कंबोडिया

2.2.ए. द्वितीय भारत-कंबोडिया संयुक्त आयोग की बैठक (08 जुलाई, 2016)

द्वितीय भारत-कंबोडिया संयुक्त आयोग की बैठक 8 जुलाई 2016 को नई दिल्ली में आयोजित की गई थी। यह बैठक भारत के पक्ष से माननीय राज्यमंत्री (सेवानिवृत्त) जनरल विजय कुमार सिंह और कंबोडिया के पक्ष से राज्य सचिव, विदेश मामलों के मंत्रालय महामहिम श्री लॉन्ग विसलो और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, कंबोडिया किंगडम की अध्यक्षता में हुई।

2.3 इंडोनेशिया

2.3.ए. डॉ वी.के. सिंह का इंडोनेशिया दौरा

बाली, इंडोनेशिया (31, अक्टूबर, 2016) में हिन्द महासागरतटीय सहयोग संघ (आईओआरए) के मंत्री परिषद की 16 वीं बैठक में डॉ. वी के सिंह, विदेश राज्य मंत्री के संबोधन का सारांश। इंडोनेशिया की भूमिका का उल्लेख करते हुए, उन्होंने आईओआरए मैत्री एवं एक कार्य योजना की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने बल देकर कहा कि आईओआरए के एजेंडे में क्षेत्र की रणनीतिक सुरक्षा और विकासात्मक प्राथमिकताएं दोनों शामिल हैं। संस्कृति मंत्रालय और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण परियोजना मौसम को लेकर आईओआरए के सदस्यों के साथ संपर्क में रहेंगे, जो यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थलों के नामांकन के लिए हिन्द महासागर तट में क्षेत्र-पार संपर्कता के स्वरूपों पर बल देने का लक्ष्य रखता है।

2.3.बी. इंडोनेशिया के राष्ट्रपति का भारत दौरा (11-13 दिसंबर 2016)

इंडोनेशिया गणराज्य के राष्ट्रपति श्री जोको विडोडो ने भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के निमंत्रण पर 11 से 13 दिसंबर 2016 तक भारत का आधिकारिक दौरा किया। यह राष्ट्रपति जोको विडोडो का भारत का पहला राजकीय दौरा था।

इंडोनेशियाई राष्ट्रपति जोको विडोडो ने 12 दिसंबर 2016 को भारतीय गणराज्य के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के साथ बैठक की और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और भारत के उपराष्ट्रपति श्री एम हामिद अंसारी से भी मुलाकात की।

इंडोनेशिया के राष्ट्रपति का स्वागत करते हुए अपने संबोधन में, भारत के प्रधान मंत्री श्री मोदी ने आसेह में भूकंप के कारण जानमाल के नुकसान पर अपनी सहानुभूति व्यक्त की। दोनों नेताओं ने एक मजबूत आर्थिक और विकास साझेदारी बनाने पर सहमति व्यक्त की, जो हमारे दोनों देशों के बीच विचारों, व्यापार, पूंजी और लोगों के प्रवाह को मजबूत बनाता है। भारत के प्रधान मंत्री और इंडोनेशिया के राष्ट्रपति निम्नलिखित पर सहमत हुए:

- भारतीय कंपनियों को फार्मास्यूटिकल्स, आईटी और सॉफ्टवेयर, और कौशल विकास के क्षेत्र में इंडोनेशिया के साथ करीबी से काम करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- संबंधित क्षमताओं का लाभ उठाते हुए बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए दो-तरफा निवेश को बढ़ाना। इस संबंध में, सीईओ फोरम को उद्योग से उद्योग जुड़ाव के लिए व्यापक और गहन मार्गों की पहचान करने के लिए नेतृत्व करना।
- इस संबंध में, सेवाओं और निवेश में भारत-आसियान मुक्त व्यापार समझौते को शीघ्र कार्यान्वित करना और क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी को अंतिम रूप देना महत्वपूर्ण कदम होंगे।
- सीधा संपर्क और लोगों से लोगों का संपर्क सुधारना सुविख्यात है। इस संबंध में भारत ने मुंबई के लिए सीधी उड़ान शुरू करने के गरुड़ इंडोनेशिया के फैसले का स्वागत किया।

2.3.सी. इंडोनेशिया के राष्ट्रपति के भारत के राजकीय दौरे के दौरान संयुक्त वक्तव्य, 12 दिसंबर, 2016

प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति जोको विडोडो ने बहु-पक्षीय कार्यक्रमों के हाशिए सहित वार्षिक शिखर बैठकें आयोजित करने पर सहमति व्यक्त की।

दोनों नेताओं ने भारत-इंडोनेशिया प्रख्यात व्यक्ति समूह (ईपीजी) द्वारा एक विज़न डॉक्यूमेंट 2025 प्रस्तुत करने का स्वागत किया, जिन्होंने वर्ष के आरम्भ में इस पर कार्य शुरू किया था।

- *रक्षा और सुरक्षा सहयोग*

रणनीतिक साझेदार और समुद्री पड़ोसी होने के नाते, दोनों नेताओं ने दोनों देशों के बीच सुरक्षा और रक्षा सहयोग को और भी मजबूत बनाने के महत्व पर बल दिया। आतंकवाद, आतंकवादी वित्तपोषण, धन शोधन, हथियारों की तस्करी, मानव तस्करी और साइबर अपराध से निपटने में सहयोग बढ़ाने का भी निर्णय लिया गया।

- *व्यापक आर्थिक साझेदारी*

आर्थिक साझेदारी के क्षेत्र में, दोनों देशों ने दो-तरफा व्यापार को अधिक सुकर बनाने और निवेश के लिए एक पूर्वानुमानित, खुले और पारदर्शी आर्थिक नीति ढांचे के महत्व को पहचाना। प्रधान मंत्री मोदी ने इंडोनेशिया के व्यवसायों भारत को पहल के मध्यम से रूपांतरित करने के लिए प्रयासों के ज़रिए प्रस्तुत अवसरों का लाभ उठाने के लिए आमंत्रित किया। संयुक्त वक्तव्य में ऊर्जा से संबंधित मुद्दों को भी शामिल किया गया, जैसे कि स्वच्छ, किफायती और नवीकरणीय ऊर्जा जो दोनों देशों के लिए महत्वपूर्ण है। भविष्य में ऊर्जा मिस्रण की मांग को पूरा करने के लिए, दोनों नेताओं ने तेल और गैस के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन के नवीकरण को प्रोत्साहित किया।

दोनों देशों ने पोत परिवहन में सीधे संबंधों, सरकारी-निजी कंपनी भागीदारी या अन्य रियायती योजनाओं सहित बंदरगाह और हवाई-अड्डा विकास परियोजनाओं में निजी क्षेत्र के निवेश को बढ़ावा दिया।

- *सांस्कृतिक और लोगों-से-लोगों का जुड़ाव*

नेताओं ने सांस्कृतिक विनिमय योजनाओं 2015-2018 के अधीन दोनों देशों के लोगों के बीच घनिष्ठ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध बनाने की प्रतिबद्धता ली।

- *आम चुनौतियों का सामना करने में सहयोग*

दोनों नेताओं ने आतंक के कृत्यों के खिलाफ "शून्य सहिष्णुता" पर बल दिया और सभी देशों से आतंकवादी सुरक्षित ठिकानों और बुनियादी ढांचे को खत्म करने, आतंकवादी नेटवर्क और वित्तपोषण चैनलों को रोकने और सीमा पार आतंकवाद को रोकने की दिशा में काम करने का अनुरोध किया। इसके अलावा, प्रधान मंत्री मोदी और राष्ट्रपति विडोडो ने, संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून संधि (यूएनसीएलओएस) में उल्लेखनीय ढंग से सूचित अंतर्राष्ट्रीय कानून के सिद्धांतों के आधार पर नौवहन और ऊपरी-उड़ान की स्वतंत्रता का सम्मान करने और अबाधित कानूनी वाणिज्य की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया।

2.3.डी. समुद्री सहयोग पर भारत और इंडोनेशिया का वक्तव्य, 12 दिसंबर, 2016

दिसंबर 2016 में इंडोनेशियाई राष्ट्रपति के भारत दौरे के दौरान दोनों देशों के बीच समुद्री सहयोग पर चर्चा हुई। दोनों नेताओं ने समुद्री सहयोग के कई पहलुओं पर बल दिया जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून संधि (यूएनसीएलओएस) में उल्लेखनीय ढंग से सूचित अंतर्राष्ट्रीय कानून के सिद्धांतों के आधार पर एक समुद्री कानूनी व्यवस्था बनाए रखना।
- अवैध, अनियंत्रित, और असूचित (आईयूयू) मछली पकड़ने का मुकाबला करने, रोकथाम, प्रतिबंधित और समाप्त करने की आवश्यकता।
- इंडोनेशिया और भारत के बीच समुद्री सहयोग पर समझौता ज्ञापन को अंतिम रूप देना, ताकि द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण स्तंभों के रूप में समुद्री रक्षा और सुरक्षा में अन्य चीजों के साथ-साथ समुद्री सहयोग को सुदृढ़ और त्वरित किया जा सके, और समुद्री उद्योगों को बढ़ावा दिया जा सके।

2.4 लाओ पीडीआर

2.4.ए. व्यिंचन, लाओस में आयोजित 7 वें मेकोंग-गंगा सहयोग वित्त मंत्रियों की बैठक में विदेश राज्य मंत्री, डॉ वी के सिंह का उद्घाटन संबोधन, 24 जुलाई, 2016

मंत्रियों की बैठक का आयोजन लाओ पीपुल्स डेमोक्रेटिक रिपब्लिक के मेकोंग गंगा सहयोग (एमजीसी) अध्यक्ष द्वारा किया गया था, जिसमें विदेश राज्य मंत्री डॉ. वी के सिंह ने भाग लिया था। उन्होंने घोषणा की कि भारत सरकार के भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) कार्यक्रम के तहत भारत कंबोडिया, लाओ पीडीआर, म्यांमार, वियतनाम और थाईलैंड प्रत्येक के एक प्रतिनिधि को संग्रहालय विज्ञान और संरक्षण तकनीकों का प्रशिक्षण देगा। डॉ. सिंह ने संस्कृति, पर्यटन, इंजीनियरिंग, प्रबंधन, शिक्षकों के प्रशिक्षण, फिल्म निर्देशन, ध्वनि, प्रकाश व्यवस्था और स्टेज जैसे क्षेत्रों में एमजीसी देशों को 50 नई छात्रवृत्तियां प्रदान करने की घोषणा की।

2.5 वियतनाम

2.5.ए. 03 सितंबर, 2016 को भारत के प्रधान मंत्री का वियतनाम दौरा

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने 02 से 03 सितंबर 2016 को वियतनाम समाजवादी गणराज्य का आधिकारिक दौरा किया; और मौजूदा रणनीतिक साझेदारी को आधिकारिक तौर पर बढ़ाकर व्यापक रणनीतिक साझेदारी किया। दोनों प्रधान मंत्री, दोनों पक्षों के अन्य मंत्रालयों और एजेंसियों के सहयोग से दोनों विदेश मंत्रालयों को केंद्र बिंदु बनाने पर सहमत हुए, और उन्होंने सहयोग के सभी क्षेत्रों में व्यापक रणनीतिक साझेदारी को वास्तविकता बनाने के लिए कार्य योजना बनाने पर सहमति व्यक्त की। भारत और वियतनाम के बीच संयुक्त वक्तव्य ने निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं को निर्धारित किया।

- **राजनीतिक संबंध, रक्षा और सुरक्षा** - प्रधानमंत्री मोदी ने ना त्रांग के दूरसंचार विश्वविद्यालय में एक आर्मी सॉफ्टवेयर पार्क के निर्माण के लिए 5 मिलियन अमेरिकी डॉलर देने की घोषणा की। प्रधानमंत्रियों ने वियतनाम के लोक सुरक्षा मंत्रालय और भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना

प्रौद्योगिकी मंत्रालय के बीच साइबर सुरक्षा के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर और भारत द्वारा वित्त पोषित इंदिरा गांधी उच्च तकनीक अपराध प्रयोगशाला में उपकरणों के अंतरण का स्वागत किया। वे भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय और वियतनाम के लोक सुरक्षा मंत्रालय के बीच सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन को शीघ्र अंतिम रूप देने पर सहमत हुए।

- **आर्थिक संबंध, व्यापार और निवेश:** वर्ष 2020 तक 15 बिलियन अमेरिकी डॉलर के व्यापार लक्ष्य को प्राप्त करना, जिसमें निम्न शामिल हैं लेकिन सीमित नहीं है: एक स्थापित तंत्र का उपयोग करना जैसे कि व्यापार का संयुक्त उप-आयोग, भारत के राज्यों और वियतनाम के प्रान्तों के बीच विनिमय को गहन बनाना, प्रतिनिधिमंडलों और व्यवसाय-से-व्यवसाय जुड़ावों का आदान-प्रदान सुदृढ़ बनाना, भारत-सीएलएमवी बिज़नस कॉन्क्लेव और वियतनाम-भारत बिज़नस फोरम जैसे व्यापार मेले और कार्यक्रम नियमित आयोजित करना। प्रधान मंत्री मोदी ने संविदात्मक निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए भारत में बड़े निवेशों के लिए वियतनाम सरकार से सहायता मांगी जैसे कि टाटा पॉवर की लॉन्ग फु-II 1320 मेगावाट थर्मल पॉवर परियोजना।
- **ऊर्जा:** प्रधानमंत्रियों ने दोनों पक्षों से आग्रह किया कि वे वियतनाम में नए ब्लॉक्स में सहयोग के लिए पेट्रोवियतनाम (पीवीएन) और ओएनजीसी विदेश लिमिटेड (ओवीएल) के बीच 2014 में हस्ताक्षरित समझौते को सक्रियता के साथ कार्यान्वित करें।
- **संपर्कता:** उन्होंने दोनों पक्षों की एयरलाइंस से जल्द-से-जल्द वियतनाम और भारत के प्रमुख शहरों के बीच सीधी उड़ानें खोलने का आग्रह किया। उन्होंने वियतनाम और भारत के समुद्री बंदरगाहों के बीच पोत परिवहन के सीधे मार्गों की स्थापना में तेजी लाने की मांग की।
- **विज्ञान और प्रौद्योगिकी:** प्रधानमंत्रियों ने दोनों देशों के बीच शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए बाह्य अंतरिक्ष की खोज के लिए अंतर-सरकारी रूपरेखा समझौते पर हस्ताक्षर करने पर संतोष व्यक्त किया और दोनों पक्षों से, भारत-आसियान अंतरिक्ष सहयोग के तहत वियतनाम में ट्रैकिंग और डेटा रिसेप्शन स्टेशन और डेटा प्रोसेसिंग फैसिलिटी स्थापित करने के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन और वियतनाम के प्राकृतिक संसाधन और पर्यावरण मंत्रालय के बीच कार्यान्वयन व्यवस्था को जल्द-से-जल्द पूर्ण करने का आग्रह किया।
- **प्रशिक्षण:** वियतनाम ने भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, नई दिल्ली में 15 वियतनामी राजनयिकों और भारतीय प्रबंधन संस्थान, बैंगलोर में वियतनाम नेशनल यूनिवर्सिटी फैकल्टी ऑफ ओरिएण्टल स्टडीज के 25 वियतनामी छात्रों को प्रशिक्षित करने के प्रस्ताव का स्वागत किया। वियतनाम ने मेकोंग-गंगा सहयोग की रूपरेखा के अधीन, विशेष रूप से त्वरित प्रभाव परियोजना कोष (क्यूआईपीएफ) के लिए भारत की सहायता का स्वागत किया।
- **स्वास्थ्य, संस्कृति, पर्यटन और लोगों-से-लोगों का जुड़ाव:** दोनों पक्षों ने स्वास्थ्य सहयोग पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर और संपन्न करने का स्वागत किया। भारत ने, मास्टर्स/डॉक्टोरल स्तर के पाठ्यक्रमों में उन्नत बौद्ध अध्ययन में वियतनामी छात्रों के लिए विशेष वार्षिक छात्रवृत्ति प्रस्ताव और वियतनाम के बौद्ध संघ के सदस्यों के लिए भारतीय संस्थानों में संस्कृत के अध्ययन के लिए एक वर्ष अवधि की वार्षिक छात्रवृत्ति प्रस्ताव की घोषणा की।
- **क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** दोनों प्रधान मंत्री संयुक्त राष्ट्र, एनएएम, विश्व व्यापार संगठन, आसियान और एआरएफ, एडीएमएम प्लस, ईएएस, एएसईएम समेत संबंधित मंचों और साथ ही अन्य उप-क्षेत्रीय सहयोग तंत्रों में सहयोग को मजबूत करने पर सहमत हुए।

2.5.बी. समझौते, जिन पर हस्ताक्षर हुए:

दोनों प्रधानमंत्रियों की उपस्थिति में निम्नलिखित समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए:

(i) शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए बाह्य अंतरिक्ष की खोज और उपयोग में सहयोग पर रूपरेखा समझौता;
(ii) दोहरा कराधान परिहार समझौते में संशोधन करने का प्रोटोकॉल;
(iii) संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना मामलों में सहयोग का कार्यक्रम;
(iv) 2017 को "मैत्री वर्ष" के रूप में मनाने के लिए वियतनाम के विदेश मंत्रालय और भारत के विदेश मंत्रालय के बीच प्रोटोकॉल;
(v) स्वास्थ्य सहयोग पर समझौता ज्ञापन;
(vi) सूचना प्रौद्योगिकी में सहयोग पर समझौता ज्ञापन;
(vii) वियतनाम सामाजिक विज्ञान अकादमी और विश्व मामलों की भारतीय परिषद के बीच सहयोग पर समझौता ज्ञापन;
(viii) साइबर सुरक्षा में सहयोग पर समझौता ज्ञापन;
(ix) मानकीकरण एवं अनुरूपता आंकलन के लिए भारतीय मानक ब्यूरो और मानक, मापिकी और गुणवत्ता निदेशालय के बीच समझौता ज्ञापन;
(x) सॉफ्टवेयर विकास और प्रशिक्षण में उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना पर समझौता ज्ञापन;
(xi) श्वेत नौवहन सूचना साझा करने पर तकनीकी समझौता;
(xii) ऑफशोर हाई-स्पीड गश्ती नावों के लिए अनुबंध।

2.5.सी. प्रधान मंत्री मोदी ने व्यिंचन, लाओ पीडीआर में आयोजित 14 वें आसियान-भारत शिखर सम्मेलन और 11 वें पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन में भाग लिया, 8 सितम्बर, 2016

14 वें आसियान-भारत शिखर सम्मेलन में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आसियान एशिया प्रशांत क्षेत्र में पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों को दूर करने के प्रयासों के मूल में है। इसलिए, समुद्र को सुरक्षित करना एक साझा जिम्मेदारी है। संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून संधि (यूएनसीएलओएस) में उल्लेखनीय ढंग से सूचित अंतर्राष्ट्रीय कानून के सिद्धांतों के आधार पर भारत नौ-परिवहन, ऊपरी-उड़ान और अबाध व्यापार का समर्थन करता है। और, भारत आसियान के साथ साझेदारी में अपनी भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

प्राकृतिक आपदाएँ एक आम चुनौती है। उनका प्रबंधन करना भारत की संयुक्त प्राथमिकता है। भारत इस क्षेत्र में जुड़ाव का एक सक्रिय एजेंडा अनुसरण करना चाहता है और नवंबर में आपदा जोखिम न्यूनीकरण पर एशियाई मंत्रिस्तरीय सम्मेलन की मेजबानी करेगा। और, यह मानवीय सहायता और आपदा राहत अभ्यास में सहयोग, साथ ही आपदा प्रबंधन कर्मियों के लिए क्षमता निर्माण को आगे बढ़ाने के लिए भी तैयार है। एक संतुलित और महत्वाकांक्षी क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी सही दिशा में उठाया गया एक कदम होगा।

भारत और आसियान के बीच भौतिक और डिजिटल संपर्कता बढ़ने से आर्थिक जुड़ाव, ईंधन वाणिज्य और निवेश में तेजी आ सकती है, विकास साझेदारी को गति मिल सकती है और लोगों-से-लोगों का संपर्क मजबूत बना सकता है। इसके लिए, भारत आसियान संपर्कता पर मास्टर प्लान के लिए प्रतिबद्ध है, जो प्रधान मंत्री ने भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग को कंबोडिया, लाओस और वियतनाम तक विस्तारित करने पर खोज कार्य को आगे बढ़ाने के लिए संपर्कता पर एक संयुक्त कार्य बल की स्थापना के लिए प्रस्तावित किया था। वियतनाम। भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच असीम डिजिटल संपर्कता एक साझा उद्देश्य है।

इसके लिए, भारत ने पहले ही कई प्रस्तावों को साझा किया है, जिसमें दूरस्थ इलाकों में राष्ट्रीय ग्रामीण ब्रॉडबैंड नेटवर्क द्वारा पूरित क्षेत्रीय उच्च क्षमता वाले फाइबर-ऑप्टिक नेटवर्क की स्थापना

करना और डिजिटल ग्राम बनाना शामिल है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी हमारे विकासात्मक जुड़ाव का एक महत्वपूर्ण तत्व है। प्रधान मंत्री मोदी ने संवर्धित विज्ञान और प्रौद्योगिकी विकास कोष के उपयोग के लिए समावेशी नवाचार मंच की अवधारणा का स्वागत किया। पूरे आसियान क्षेत्र को भारतीय रिमोट-सेंसिंग उपग्रह डेटा प्रदान करने के लिए भारत-आसियान ग्राउंड स्टेशन की स्थापना के लिए भारत वियतनाम के साथ मिलकर काम कर रहा है। वर्ष 2030 तक एशिया-प्रशांत क्षेत्र को मलेरिया से मुक्त बनाने के लिए भारत की प्रतिबद्धता के रूप में, प्रधान मंत्री मोदी ने मलेरिया का मुकाबला करने के लिए एक फ्लैगशिप आसियान-भारत कार्यक्रम प्रस्तावित किया।

11 वें पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने सभी दलों को यूएनसीएलओएस का सम्मान करने की आवश्यकता के बारे में कहा। चूंकि ये क्षेत्र भारत का समुद्री पड़ोसी है, इस क्षेत्र की आर्थिक और सुरक्षा आवश्यकताएं इसके समुद्री क्षेत्र के विकास पर बहुत हद तक निर्भर है। दरअसल, ईएएस जुड़ाव के लिए समुद्री समुद्री साझेदारी बनाना प्राथमिकता क्षेत्र होना चाहिए। समुद्री संसाधनों के संरक्षण के लिए अनुभवों को साझा करने और साझेदारी बनाने, पर्यावरणीय ह्रास को रोकने के माध्यम से, नीली अर्थव्यवस्था की सच्ची क्षमता का दोहन किया जा सकता है।

2.6 म्यांमार

2.6.ए. म्यांमार के राष्ट्रपति के भारत दौरे के दौरान प्रधान मंत्री का वक्तव्य, 29 अगस्त, 2016

दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय जुड़ाव की पूरी श्रृंखला पर उपयोगी चर्चा की। उन्होंने माना कि उनके सुरक्षा हित करीबी से संरेखित हैं। भारत की लगभग 2 बिलियन डॉलर की विकास सहायता से म्यांमार की आम जनता को मदद मिल रही है। दोनों पक्षों ने कृषि, बैंकिंग, बिजली और ऊर्जा में अपने सहयोग को गहरा करने के लिए दृढ़ संकल्प व्यक्त किया। नवीकरणीय ऊर्जा और चिकित्सा की पारंपरिक प्रणालियों में सहयोग के समझौता ज्ञापन, इन क्षेत्रों में आपसी सहयोग का संचालन करेंगे। वे दालों में व्यापार के लिए दीर्घकालिक और पारस्परिक रूप से लाभप्रद व्यवस्था की दिशा में काम करने के लिए सहमत हुए।

2.6.बी. म्यांमार के राज्य सलाहकार का दौरा, 19 अक्टूबर, 2016

म्यांमार के राज्य सलाहकार के दौरे के दौरान प्रधान मंत्री के प्रेस वक्तव्य का सारांश, 19 अक्टूबर, 2016

भारत के पहले राजकीय दौरे पर महामान्या दाऊ आंग सान सू की का स्वागत करते हुए, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने म्यांमार की नेता के साथ भारत के करीबी संबंध के बारे में बताया, और गोवा में आयोजित बिमस्टेक और ब्रिक्स-बिमस्टेक पहुँच शिखर सम्मेलन में म्यांमार की सहभागिता के लिए भारत की ओर से आभार व्यक्त किया।

प्रधान मंत्री मोदी ने कृषि, बुनियादी ढाँचा, उद्योग, शिक्षा, क्षमता निर्माण इत्यादि कुछ क्षेत्रों की पहचान की। कालाधन और त्रिपक्षीय राजमार्ग जैसी मेगा संपर्कता परियोजनाओं से लेकर मानव संसाधन विकास, स्वास्थ्य सेवा, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण के क्षेत्र की परियोजनाओं तक, भारत म्यांमार के साथ अपने संसाधनों और विशेषज्ञता को साझा करना जारी रखता है। भारत की ओर से विकास सहायता के लिए लोगों को लगभग 1.75 बिलियन अमेरिकी डॉलर दिया जा रहा है, जो म्यांमार सरकार और उसकी जनता की प्राथमिकताओं के अनुरूप है। दोनों नेताओं ने कृषि, बिजली, नवीकरणीय ऊर्जा और बिजली क्षेत्र सहित कई अन्य क्षेत्रों में अपना जुड़ाव बढ़ाने

पर सहमति व्यक्त की। भारत, म्यांमार के येज़िन में बीजों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए विभिन्न विकास एवं बीज उत्पादन केंद्र बनाएगा, दालों का व्यापार बढ़ाएगा, मणिपुर के मोरेह से म्यांमार के तामु में बिजली आपूर्ति बढ़ाएगा, म्यांमार सरकार द्वारा निर्धारित स्थल पर एलईडी इलेक्ट्रिफिकेशन परियोजना शुरू करने में साझेदार बनेगा। बिजली क्षेत्र में सहयोग पर एमओयू हस्ताक्षर होने से, इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में जुड़ावों को आगे बढ़ाने की रूपरेखा तैयार करने में मदद मिलेगी। सांस्कृतिक क्षेत्र में, भारत ने म्यांमार में हाल ही में आए भूकंप में क्षतिग्रस्त हुए पगोडा को बहाल करने में सहायता प्रदान करने का प्रस्ताव दिया।

भारत सरकार और म्यांमार सरकार के बीच हस्ताक्षरित समझौतों/एमओयू की सूची, 19 अक्टूबर, 2016

- म्यांमार के बीमा उद्योग के लिए एक शैक्षणिक और व्यावसायिक निर्माण कार्यक्रम तैयार करने के लिए म्यांमार वित्तीय नियामक विभाग और भारतीय बीमा संस्थान के बीच समझौता ज्ञापन।
- ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन।
- आरबीआई और म्यांमार केन्द्रीय बैंक के बीच बैंकिंग पर्यवेक्षण पर समझौता ज्ञापन।

2.6.सी. म्यांमार के राज्य सलाहकार के भारत दौरे के दौरान भारत-म्यांमार संयुक्त वक्तव्य का सारांश, 19 अक्टूबर, 2016

दोनों पक्षों ने सभी रूपों और किस्मों के आतंकवाद की निंदा की। दोनों पक्ष इस बात पर भी सहमत हुए कि आतंकवाद सबसे पहले मानवाधिकारों का उल्लंघन है और यह कि निर्दोष जीवन को नष्ट करने वाले आतंकवादियों को समर्थन, वित्तपोषण, भौतिक संसाधनों के प्रावधान या प्रशिक्षण प्रदान करने का कोई औचित्य नहीं हो सकता है।

दोनों पक्षों ने संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के प्रति अपना सम्मान रेखांकित किया। दोनों पक्ष इस बात पर सहमत थे कि दोनों पक्षों की सीमा सुरक्षा बालें, दोनों देशों की आम सीमाओं को सुरक्षित करने की दिशा में सूचना का समन्वय और आदान-प्रदान करेंगी। दोनों पक्षों ने संबंधित सीमा क्षेत्रों पर चर्चाओं में तेजी लाने के लिए भी सहमति व्यक्त की।

दोनों पक्षों ने राजनयिक माध्यमों से, तामु-मोरेह और री-ज़ोखथर सीमा क्रॉसिंग पॉइंट्स पर आव्रजन सुविधाओं स्थापित करने के माध्यम से आपस में समन्वय करने पर भी सहमति व्यक्त की।

दोनों पक्ष व्यापार और वाणिज्य की बाधाओं को दूर करने पर भी सहमत हुए ताकि द्विपक्षीय व्यापार और निवेश अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचान सके। सीमा व्यापार और सीमा हाट, और रेलवे और पोत परिवहन पर संयुक्त व्यापार समिति (जेटीसी), संयुक्त कार्य समूहों की शीघ्र बैठकें आयोजित करने पर सहमति हुई। म्यांमार पक्ष ने पेट्रोकेमिकल और पेट्रोलियम उत्पादों, विपणन बुनियादी ढांचे और एलपीजी टर्मिनलों की स्थापना के लिए प्रतिस्पर्धी निविदाओं में भाग लेने के लिए भारतीय कंपनियों को आमंत्रित करने का अपना आशय दोहराया।

दोनों पक्षों ने ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग पर भारत और म्यांमार के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर होने का संतोष व्यक्त किया।

भारत ने पुलिस प्रशिक्षण अवसंरचना बनाने और फोरेंसिक और साइबर सुरक्षा समेत अन्य क्षेत्रों की प्रशिक्षण पुस्तिकाएं बनाने में विशेषज्ञता साझा करने के लिए म्यांमार की सहायता करने पर सहमति व्यक्त की।

भारत पक्ष ने म्यांमार के विदेश सेवा के अधिकारियों की क्षमता निर्माण के संबंध में अधिक राजनयिक प्रशिक्षण प्रदान करने और यंगून में एक राजनयिक अकादमी के विकास के लिए चल रहे प्रयासों में म्यांमार की सहायता करने के अनुरोध पर सहमति व्यक्त की।

दोनों पक्षों ने एक प्रतिष्ठित व्यक्ति समूह की स्थापना के लिए सहमति व्यक्त की। दोनों पक्षों ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में शीघ्र सुधार लाने की आवश्यकता को रेखांकित किया।

2.7 सिंगापुर

2.7.ए. सिंगापुर के प्रधान मंत्री का भारत दौरा, 04 अक्टूबर, 2016

- *सिंगापुर के प्रधान मंत्री के भारत दौरे के दौरान भारत के प्रधान मंत्री के प्रेस वक्तव्य का सारांश (04 अक्टूबर, 2016)*

भारत-सिंगापुर के द्विपक्षीय संबंध को मजबूत बनाने में प्रधान मंत्री ली की प्रयासों की सराहना करते हुए, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने ली कुआन यू और पूर्व राष्ट्रपति एस आर नाथन को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। पिछले साल विकसित हुई "नया जोश, नई ऊर्जा" के साथ सामरिक साझेदारी पर बल देते हुए, प्रधान मंत्री मोदी ने, सिंगापुर की ताकत के साथ भारत की क्षमताओं को जोड़ते हुए; और सिंगापुर की गतिशीलता को भारतीय राज्यों की जीवंतता के साथ जोड़ते हुए, इस साझेदारी से होने वाले लाभों के बारे में बताया। कौशल विकास पर केंद्रित दो समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए: एक, भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के लिए गुवाहाटी में एक कौशल विकास केंद्र स्थापित करना, और दूसरा राष्ट्रीय कौशल विकास परिषद के साथ। उन्होंने राजस्थान राज्य सरकार के सहयोग से उदयपुर में पर्यटन प्रशिक्षण उत्कृष्टता केंद्र के उद्घाटन का स्वागत भी किया। राजस्थान शहरी विकास और अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में सिंगापुर के साथ भी साझेदारी कर रहा है।

दोनों प्रधानमंत्रियों ने अधिक से अधिक व्यापार आदान-प्रदान और सहयोग पर सहमति व्यक्त की। बौद्धिक संपदा पर समझौता ज्ञापन, व्यापारों के मध्य आदान-प्रदान और सहयोग की अधिक सुविधा प्रदान करेगा। दोनों नेताओं ने सिंगापुर में कॉर्पोरेट रुपए बॉन्ड जारी करने का भी स्वागत किया। रक्षा और सुरक्षा सहयोग रणनीतिक साझेदारी का प्रमुख आधार रहा। दो समुद्री देश होने के नाते, संचार के समुद्री मार्ग खुला रखना और समुद्रों और महासागरों के अंतर्राष्ट्रीय कानूनी व्यवस्थाओं का सम्मान करना, एक साझा प्राथमिकता है। आसियान, पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन और आसियान क्षेत्रीय रूपरेखा में दोनों राष्ट्रों का सहयोग, विश्वास और भरोसे के वातावरण में, क्षेत्रीय सहयोग के लिए एक खुला और समावेशी संरचना बनाने का लक्ष्य रखता है। आतंकवाद का बढ़ता ज्वार, विशेष रूप से सीमा पार से आतंकवाद, और कट्टरता का उदय दोनों देशों की सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौतियां हैं।

- *सिंगापुर के प्रधान मंत्री के भारत दौरे के दौरान हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापनों की सूची (04 अक्टूबर, 2016)*

1) तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम और आईटीईईएस सिंगापुर।
2) तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन। असम सरकार और आईटीईईएस सिंगापुर।
3) औद्योगिक संपत्ति सहयोग के क्षेत्र में समझौता ज्ञापन। डीआईपीपी और बौद्धिक संपदा कार्यालय सिंगापुर।

- *सिंगापुर के प्रधान मंत्री के भारत दौरे के दौरान भारत-सिंगापुर संयुक्त वक्तव्य (06 अक्टूबर, 2016)*
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने भारत और सिंगापुर के बीच संतोषजनक रूप से वस्तुओं में उच्च स्तर के आदान-प्रदान, दौरों और परामर्शों को नोट किया, जिसने भारत-सिंगापुर रणनीतिक साझेदारी के स्तंभों के अधीन सम्पूर्ण सहयोग को सशक्त बनाया है।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने स्मार्ट शहरों और शहरी समाधानों के क्षेत्र में मजबूत सहयोग की पुष्टि की।
- प्रधानमंत्रियों ने ज्ञान साझाकरण और क्षमता निर्माण के माध्यम से कौशल विकास में सहयोग करने की अपनी प्रतिबद्धता की भी पुष्टि की।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने रक्षा सहयोग में की गई महत्वपूर्ण प्रगति की सराहना की। उन्होंने 3 जून 2016 को सिंगापुर में आयोजित भारत-सिंगापुर रक्षा मंत्रियों की वार्ता का स्वागत किया।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने मई 2016 में पहले रक्षा उद्योग कार्य दल की बैठक, रक्षा, अनुसंधान एवं विकास और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग में निरंतर प्रगति, स्थलसेनाओं, वायु सेनाओं और नौसेनाओं के बीच नियमित रूप से संयुक्त सैन्य अभ्यास और प्रशिक्षण, सेवा-से-सेवा सहयोग, नौसैनिक जहाज का दौरा और श्वेत-नौवहन सूचनाओं का आदान-प्रदान भी नोट किया।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने आम सुरक्षा चिंताओं को दूर करने के लिए चल रहे सहयोग पर संतोष व्यक्त किया।
- प्रधानमंत्री मोदी ने सिंगापुर एक्सचेंज में मसाला बॉन्ड्स की लिस्टिंग का स्वागत किया।
- बढ़ते आर्थिक संबंधों का समर्थन करने के लिए, प्रधानमंत्रियों ने दोनों देशों के बीच और परे नए और व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य हवाई संपर्क बढ़ाने के अवसरों की तलाश, और क्षमता निर्माण एवं सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के माध्यम से विमानन, समुद्री और रसद क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ाने के महत्व को पहचाना।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने दो लोकतंत्रों के बीच संसदीय आदान-प्रदान के महत्व की पुष्टि की।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भारत और सिंगापुर के बीच बढ़ते सहयोग की सराहना की और अनुसंधान एवं विकास में सहयोग को आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया।
- दोनों पक्षों ने 1982 संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून संधि (यूएनसीएलओएस) समेत अंतर्राष्ट्रीय कानून के सिद्धांतों के आधार पर सुरक्षा, रक्षा और नौवहन और ऊपरी-उड़ान की स्वतंत्रता और अबाधित कानूनी वाणिज्य की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने आतंकवाद को शांति और स्थिरता के प्रति सबसे बड़ा खतरा माना और सभी रूपों और किस्मों के आतंकवाद से निपटने के लिए अपनी दृढ प्रतिबद्धता को दोहराया।
- भारत ने आसियान समुदाय के कार्यान्वयन का स्वागत किया और विकासशील क्षेत्रीय संरचना में आसियान की केंद्रीयता को अपना पूर्ण समर्थन व्यक्त किया। सिंगापुर ने क्षेत्रीय वास्तुकला में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका, विशेष रूप से आसियान क्षेत्रीय मंच (एआरएफ), आसियान के रक्षा मंत्रियों की बैठक प्लस (एडीएमएम प्लस), पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस), और एशिया-यूरोप बैठक (एएसईएम) में भाग लेकर और इसका समर्थन करके, का स्वागत किया।

2.8 थाईलैंड

2.8.ए. भारत के उपराष्ट्रपति का थाईलैंड दौरा, 3-5 फरवरी, 2016

भारत के उपराष्ट्रपति, श्री एम हामिद अंसारी, 3-5 फरवरी, 2016 को थाईलैंड गए थे। दौरे के दौरान, श्री अंसारी ने चुललॉन्गकोर्न विश्वविद्यालय, बैंकॉक में "भारत, थाईलैंड और आसियान: एक कायाकल्पित संबंध की परिरेखाएं" विषय पर व्याख्यान दिया।

2.8.बी. थाईलैंड दौरे के दौरान थाईलैंड के प्रधान मंत्री द्वारा आयोजित भोज में उपराष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी के वक्तव्य की मुख्य बिन्दुएँ

- द्विपक्षीय और आसियान के सन्दर्भ में, सहयोग के क्षेत्रों में व्यापार और निवेश, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, शिक्षा और सांस्कृतिक के आदान-प्रदान सहित पारस्परिक हित के विविध क्षेत्रों को शामिल किया गया है।
- समुद्री पड़ोसी होने के नाते, दोनों के मध्य संचार और वाणिज्य के अंतर्राष्ट्रीय समुद्री मार्गों की सुरक्षा में एक साझा रुचि है।

बैंकॉक के चुललॉन्गकोर्न विश्वविद्यालय में उपराष्ट्रपति द्वारा साझा की गईं प्रमुख बिन्दुएँ थीं:

- उपराष्ट्रपति ने व्यापार और निवेश, तकनीकी, मानव संसाधन विकास के माध्यम से रक्षा सहयोग, क्षमता निर्माण और थाईलैंड की भौतिक और मानवीय क्षमता, दोनों के विकास में योगदान को पहचाना।
- यह मानते हुए कि आसियान एशिया प्रशांत क्षेत्र में भारत का स्वाभाविक साझेदार है, श्री अंसारी ने कई नीतियों की ओर इंगित किया, जैसे कि इस क्षेत्र में संतुलन, शांति और स्थिरता के लिए लुक ईस्ट पॉलिसी और एक्ट ईस्ट नीति।
- उन्होंने भारत-आसियान सहयोग क्षेत्रों, जैसे कि बुनियादी ढांचे, विनिर्माण, व्यापार, कौशल, शहरी नवीकरण, स्मार्ट शहरों और मेक इन इंडिया कार्यक्रमों, संपर्कता परियोजनाओं, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग और क्षेत्रीय एकीकरण और सह-समृद्धि के लिए लोगों-से-लोगों के संपर्क पर विशेष बल दिया।
- भविष्य में सहयोग के क्षेत्रों की पहचान करते हुए, श्री अंसारी ने उल्लेख किया कि भारत आसियान-भारत विज्ञान और प्रौद्योगिकी विकास कोष को वर्तमान 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़ाकर 5 मिलियन अमेरिकी डॉलर करने की योजना बना रहा है; कम लागत वाली प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और सहयोगी अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं अपनाने के लिए एक आसियान-भारत नवाचार मंच स्थापित करने की योजना बना रहा है। इसके अलावा, भारत हो ची मिन्ह शहर में आसियान के लिए एक ट्रैकिंग और डेटा रिसेप्शन स्टेशन और डाटा प्रोसेसिंग फैसिलिटी स्थापित करने पर 21.53 मिलियन अमेरिकी डॉलर लागत की परियोजना का कार्यान्वयन कर रहा है, बायक, इंडोनेशिया में मौजूदा स्टेशन का उन्नयन कर रहा है और भारत के देहरादून शहर में अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी में आसियान कार्मिकों को प्रशिक्षण दे रहा है।
- संपर्कता के संदर्भ में, उन्होंने भारत-म्यांमार-थाईलैंड मोटर वाहन समझौते और आसियान-भारत समुद्री परिवहन सहयोग समझौते और कलादान मल्टी-मोडल पारगमन परिवहन परियोजना और री-टिडिम रोड परियोजना समेत अन्य प्रमुख परियोजनाओं पर संवादों को अंतिम रूप देने का विचार प्रकट किया। उन्होंने यह भी कहा कि भारत और आसियान के बीच भौतिक और डिजिटल संपर्कता बनाने में सहायता करने वाली परियोजनाओं को बढ़ावा देने के लिए भारत ने 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर की ऋण व्यवस्था का इंतज़ाम किया है। संपर्कता को बढ़ाने के लिए, भारत और आसियान को कंबोडिया, लाओ पीडीआर और वियतनाम में त्रिपक्षीय राजमार्ग के विस्तार के साथ-साथ मेकोंग-भारत आर्थिक कॉरिडोर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है, जो चेन्नई-दावेई समुद्री मार्ग के माध्यम से मेकांग क्षेत्र के उत्पादन नेटवर्कों को भारत के औद्योगिक एवं माल कॉरिडोर के साथ जोड़ेगा; और भारत के डिजिटल संपर्कता पहलों के भारत और आसियान के बीच सूचना राजमार्ग या आई-वे स्थापित करने की आवश्यकता है।

गैर-पारंपरिक खतरों जैसे कि उग्रवाद, आतंकवाद, समुद्री डकैती, तस्करी, राष्ट्र-पार अपराधों और नशीले पदार्थों की तस्करी में आपसी सहयोग पर भी प्रकाश डाला गया।

2.8.सी. थाईलैंड के प्रधान मंत्री के भारत दौरे के दौरान प्रधान मंत्री के प्रेस वक्तव्य का सारांश (17 जून, 2016)

थाईलैंड के नेता का स्वागत करते हुए, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने दोनों राष्ट्रों के लोगों के बीच मौजूद ऐतिहासिक संपर्क का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि घनिष्ठ रणनीतिक साझेदारी दोनों राष्ट्रों को अपने नागरिकों को ऐसे खतरों से सुरक्षित करने में मदद करती है, जिसमें साइबर सुरक्षा, नशीले पदार्थों, राष्ट्र-पार आर्थिक अपराध और मानव तस्करी के क्षेत्र शामिल हैं।

भूमि और समुद्री सीमाओं की निकटता के कारण, भारत और थाईलैंड दोनों ने रक्षा और समुद्री सहयोग के क्षेत्रों में करीब भागीदारी बनाने पर सहमति व्यक्त की। उन्होंने विनिर्माण और निवेश जुड़ावों के मार्गों सहित व्यापार और वाणिज्य में घनिष्ठ सहयोग बनाने का भी ज़िक्र किया। सूचना प्रौद्योगिकी, फार्मास्यूटिकल्स, ऑटो-कंपोनेंट और मशीनरी कुछ अन्य क्षेत्र हैं जिनमें सहयोग की अपेक्षा है। इन सहयोगों ने एक संतुलित व्यापक आर्थिक और भागीदारी समझौते के वादे को एक साझा प्राथमिकता बनाया है।

हवाई, भूमि और समुद्री मार्गों के माध्यम से संपर्कता से दोनों अर्थव्यवस्थाओं के बीच माल, सेवाओं, पूंजी और मानव संसाधनों का सहज प्रवाह हो सकेगा। इसके बाद, भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग को पूरा करना; और तीन देशों के बीच मोटर वाहन समझौते पर जल्दी हस्ताक्षर करने को प्राथमिकता दी गई। भारत के विकास के लिए संपर्कता भी एक प्राथमिकता क्षेत्र है। उत्तर पूर्वी राज्यों से दक्षिण पूर्व एशिया तक पहुंच में सुधार करना। अगले साल, राजनयिक संबंधों की स्थापना के सत्तर साल का जश्न मनाने के लिए, थाईलैंड में भारत का त्योहार, और भारत में थाईलैंड का त्योहार मनाया जाएगा।

डॉ बी आर अंबेडकर, भारतीय संविधान के वास्तुकार की एक सौ पच्चीसवीं जयंती मनाते हुए भारतीय संविधान का थाई भाषा में अनुवाद भी किया जा रहा है। भारत के बौद्ध स्थलों पर थाई पर्यटकों को आने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, भारत जल्द ही थाईलैंड के नागरिकों के लिए दोहरे प्रवेश ई-पर्यटक वीजा की सुविधा प्रदान करेगा।

2.8.डी. सारांश (मुख्य बिन्दुएँ) - थाईलैंड के प्रधान मंत्री के भारत दौरे के दौरान भारत-थाईलैंड संयुक्त वक्तव्य, 17 जून, 2016

पहले भारत-थाईलैंड बिजनेस फोरम, जो 17 जून 2016 को आयोजित हुआ था, में दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश के अवसरों का विस्तार करने और तीव्रकरण की सिफारिशें की गई थीं।

- <u>आर्थिक संबंध:</u> दोनों नेताओं ने भारत और थाईलैंड दोनों में निवेशकों से अधिक निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए सहमति जताई। दोनों पक्ष एक नई द्विपक्षीय निवेश संधि पर फिर से बातचीत करेंगे। दोनों नेताओं ने बौद्ध सर्किट के विकास के लिए और पांच विशिष्ट होटलों के निर्माण के लिए संरचना विकास में थाई कंपनियों द्वारा निवेश का स्वागत किया।
- <u>संपर्कता</u>: दोनों नेताओं ने भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग जैसे क्षेत्रीय संपर्कता प्रयासों में प्रगति पर संतोष व्यक्त किया और परियोजना को पूरा करने के साथ-साथ भारत-म्यांमार-थाईलैंड मोटर वाहन समझौते पर बातचीत में तेजी लाने के लिए सहमत हुए। दोनों नेताओं ने वायु सेवा

समझौते पर भारत के साथ बातचीत शुरू करने के लिए थाईलैंड की तत्परता का भी स्वागत किया। दोनों प्रधानमंत्रियों ने प्रस्तावित भारत-म्यांमार-थाईलैंड मैत्री कार रैली का स्वागत किया जो नवंबर 2016 में आयोजित की जाएगी।

- सुरक्षा और रक्षा: दोनों पक्ष दोनों देशों के बीच श्वेत पोत परिवहन समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए आपसी संवाद पूरा करने की दिशा में काम करने के लिए सहमत हुए। थाईलैंड ने भारतीय रक्षा उद्योग और रक्षा आर एंड डी और उत्पादन के क्षेत्र में भारत के अनुभव और विशेषज्ञता में रुचि व्यक्त की। दोनों पक्ष पारस्परिक रूप से पहचाने गए सहयोग क्षेत्रों के आधार पर भविष्य के जुड़ाव के प्रमुख क्षेत्रों की तलाश करने के लिए सहमत हुए। प्रधानमंत्रियों ने थाईलैंड कंप्यूटर आपातकालीन विशेषज्ञ टीम (थाई सीईआरटी) और इलेक्ट्रॉनिक्स लेनदेन विकास एजेंसी (ईटीडीए) और भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग (डीईआईटीवाई) के बीच सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर चल रही बातचीत का उल्लेख किया।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी: दोनों नेताओं ने वर्ष 2016 में नई दिल्ली में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में सहयोग पर संयुक्त समिति की अगली बैठक बुलाने पर सहमति दी, जिसका उद्देश्य 2017 को आरम्भ हो रही 3 वर्षीय सहयोग कार्यक्रम (पीओसी) को अंतिम रूप देना और पूर्ण करना होगा। भारत ने थाईलैंड को स्वदेशी रूप से विकसित जीपीएस एडेड जियो ऑगमेंटेड नेविगेशन या गगन सेवाओं का प्रस्ताव दिया, जो उन्नत नौवहन और अवस्थिति पता लगाने की सेवा प्रदान करता है और विमानन, समुद्री और अन्य क्षेत्र में सूचना सुविधाओं का प्रस्ताव दिया।
- संस्कृति, शिक्षा, और लोगों-से-लोगों का आदान-प्रदान: दोनों प्रधानमंत्रियों ने घोषणा की कि थाईलैंड में 'भारत के त्योहार' और भारत में 'थाईलैंड के त्योहार' जिसे क्रमशः ''स्वदेशी भारत वर्ष'' और ''नमस्ते थाईलैंड वर्ष'' का नाम दिया गया है, और इसे एक-साथ 2017 में इस अवसर के उपलक्ष्य में आयोजित किया जाएगा।
- क्षेत्रीय सहयोग: दोनों नेताओं ने आसियान-भारत रणनीतिक साझेदारी को और बढ़ाने की इच्छा व्यक्त की। उप-क्षेत्रीय ढांचे के महत्व को रेखांकित करने के लिए, प्रधानमंत्रियों ने देखा कि मेकांग-भारत आर्थिक कॉरिडोर का विकास आसियान के लिए पूरक होगा। दोनों पक्षों ने 2016 के अंत तक आरसीईपी वार्ता को अंतिम रूप देने में तेजी लाने के लिए आशा व्यक्त की, और साथ ही बिमस्टेक का अधिकतम उपयोग करने के लिए नियमित रूप से संस्था की बैठकें आयोजित करने को प्रोत्साहित किया।
- बहुपक्षीय सहयोग: उन्होंने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में शीघ्र सुधार के महत्व पर बल दिया ताकि यह अधिक जवाबदेह, प्रतिनिधि और प्रभावी ढंग से समकालीन वास्तविकताओं और कार्यों को दर्शाए। थाईलैंड ने अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) के शुभारंभ का स्वागत किया और दोनों पक्ष सौर ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग की संभावना का पता लगाने के लिए सहमत हुए।

दौरे के दौरान निम्नलिखित समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए:

1) 2016-2019 के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान (सीईपी का विस्तार) का कार्यकारी कार्यक्रम।
2) नागालैंड विश्वविद्यालय, भारत और चियांग माई विश्वविद्यालय, थाईलैंड के बीच समझौता ज्ञापन

दोनों पक्ष निम्नलिखित समझौता ज्ञापनों/समझौतों पर बातचीत करने के लिए सहमत हुए:

1. भारतीय मुद्रा के नकली नोटों की तस्करी और प्रसारण को रोकने/प्रतिकार के लिए समझौता ज्ञापन
2. मानव तस्करी से निपटने पर समझौता ज्ञापन
3. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में सहयोग पर भारत और थाईलैंड के बीच समझौता ज्ञापन

4. सफेद नौवहन सूचना पर समझौता ज्ञापन
5. भारत के केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएसओ) और थाई खाद्य एवं औषधि प्रशासन के बीच समझौता ज्ञापन
6. भारत और थाईलैंड के बीच सम्मन की सेवाओं, न्यायिक दस्तावेज, आयोग, निर्णय निष्पादन और मध्यस्थता निर्णय के लिए सिविल और वाणिज्यिक मामलों में कानूनी और न्यायिक सहयोग के लिए समझौता (सिविल और वाणिज्यिक मामलों पर एमएलएटी)
7. वायु सेवा समझौते का संशोधन
8. विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर सहयोग का कार्यक्रम (पीओसी)
9. भारत थाईलैंड मुक्त व्यापार समझौता
10. द्विपक्षीय निवेश संधि (बीआईटी)
11. मादक पदार्थों, नशीली पदार्थों, उनके प्रणेताओं और रसायन और मादक पदार्थों का सेवन नियंत्रित करने में सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन
12. थाईलैंड की कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम (थाई सीईआरटी), इलेक्ट्रॉनिक्स लेनदेन विकास एजेंसी (ईटीडीए) और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग (डीईआईटीवाई) के बीच समझौता ज्ञापन।

2.8.ई. जनरल (डॉ) वी के सिंह का बैंकॉक दौरा (10 अक्टूबर, 2016)

एशिया सहयोग संवाद, बैंकॉक के दूसरे शिखर सम्मेलन में विदेश राज्य मंत्री जनरल (डॉ) वी के सिंह (सेवानिवृत्त) के वक्तव्य का सारांश

उन्होंने सभी रूपों और किस्मों के आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में आतंकवादियों, आतंकी संगठनों और नेटवर्क को ना केवल विघटित किया जाना चाहिए और खत्म करने की कोशिश करनी चाहिए, बल्कि आतंकवाद को समर्थन और वित्त देने वाले देशों को पहचान कर उन्हें अलग करना चाहिए और दंड देना चाहिए, और उन देशों को भी जो आतंकवादियों और आतंकी समूहों को शरण देते हैं, और उनका गुणगान करते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि केवल अंतर-संपर्कता के माध्यम से, 21 वीं सदी को वास्तव में एक एशियाई शताब्दी बनाया जा सकता है। भारत ने डिजिटल संपर्कता सहित अन्य संपर्कता परियोजनाओं के लिए आसियान देशों को एक बिलियन अमेरिकी डॉलर की पेशकश की है। उन्होंने एक स्थायी सचिवालय की स्थापना की पहल की सराहना की। उन्होंने संयुक्त अरब अमीरात को एसीडी का अध्यक्ष बनने पर बधाई दी।

2.9 पापुआ न्यू गिनी

राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने 28- 29 अप्रैल 2016 को पापुआ न्यू गिनी का दो दिवसीय राजकीय दौरा किया।

महामहिम गवर्नर जनरल ने गवर्नमेंट हाउस में राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी का स्वागत किया।

2.9.ए पापुआ न्यू गिनी व्यापार परिषद में राष्ट्रपति के भाषण का सारांश (29 अप्रैल, 2016)

उन्होंने कहा कि, पापुआ न्यू गिनी के सामने चुनौती यह है कि वो इन प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों का मूल्य संवर्धन के लिए सबसे अच्छा उपयोग कैसे सकता है, कैसे रोजगार पैदा कर सकता है और आर्थिक रूप से लोगों को सशक्त कैसे बना सकता है।

भारत और पापुआ न्यू गिनी के बीच पिछले वर्ष 2014-15 का द्विपक्षीय व्यापार 209.48 मिलियन अमेरिकी डॉलर है। संतुलन पापुआ न्यू गिनी के पक्ष में है। भारत और पापुआ न्यू गिनी के बीच कई क्षेत्रों में परस्पर पूरक हैं। करीबी सहयोग हमारे लोगों के लिए अवसरों, विकास और प्रगति के साथ-साथ समृद्धि ला सकता है।

2.10 न्यू ज़ीलैण्ड

2.10.ए. राष्ट्रपति की 30 अप्रैल से 2 मई 2016 तक न्यू ज़ीलैण्ड का दौरा किया

भारत के राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने 28 अप्रैल से 02 मई, 2016 तक पापुआ न्यू गिनी और न्यू ज़ीलैण्ड का दौरा किया। अपनी यात्रा के दूसरे चरण में, वे 30 अप्रैल 2016 को न्यू ज़ीलैण्ड पहुंचे।

यह भारत के राष्ट्रपति का पहला न्यू ज़ीलैण्ड दौरा था। राष्ट्रपति ने कहा कि भारत और न्यू ज़ीलैण्ड के बीच बहुत कुछ समानता है जिसमें राजनीतिक प्रणालियों, लोकतंत्र और मानव मूल्यों के लिए मजबूत प्रतिबद्धता शामिल है।

दौरे के दौरान, एक हवाई सेवा समझौता पर हस्ताक्षर किया गया। विक्टोरिया विश्वविद्यालय में भारतीय अध्ययन के आईसीसीआर चेयर पर एक समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किया गया। न्यू ज़ीलैण्ड सरकार ने भारतीय छात्रों के लिए एक नई छात्रवृत्ति योजना की घोषणा की। राष्ट्रपति ने ऑकलैंड प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में एक भाषण दिया और मार्च 2017 में राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में आयोजित होने वाले अगले नवाचार महोत्सव में भाग लेने के लिए न्यू ज़ीलैण्ड के विश्वविद्यालयों के शिक्षाविदों को आमंत्रित किया। उन्होंने न्यू ज़ीलैण्ड के व्यापारिक अग्रणियों और भारतीय समुदाय को भी संबोधित किया और उन्हें भारत की विकास गाथा में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया।

2.10.बी. न्यू ज़ीलैण्ड के गवर्नर जनरल द्वारा आयोजित भोज में राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी का भाषण, 30 अप्रैल, 2016

2013 में, द्विपक्षीय व्यापार एक बिलियन अमेरिकी डॉलर को पार कर गया। व्यापार और निवेश के वर्तमान स्तर को सख्त रूप से बढ़ाने की आवश्यकता है ताकि इसकी अधिकतम क्षमता हासिल की जा सके।

न्यू ज़ीलैण्ड ने डेयरी विकास, खाद्य प्रसंस्करण, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी, स्वच्छ ऊर्जा और जल, आपदा प्रबंधन, जैव प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य सेवा और सेवाओं में जबरदस्त प्रगति की है। भारत इन क्षेत्रों में अपने द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाना, न्यू ज़ीलैण्ड के सफल अनुभव और प्रथाओं से सीखना और नए और अभिनव उत्पाद और प्रौद्योगिकी बनाने में सहयोग करना पसंद करेगा।

भारत आम हित के क्षेत्रों में न्यू ज़ीलैण्ड के साथ नई साझेदारी की आशा करता है। भारत सरकार के "मेक इन इंडिया" पहल में भारतीय समकक्षों के साथ जुड़ने के लिए भारत न्यू ज़ीलैण्ड के निवेशकों और उद्यमियों को आमंत्रित करना चाहेगा।

दोनों देश क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों में सक्रिय भागीदार हैं और साझा हित और प्रयोजन के मामलों पर निकट सहयोग में साथ काम किया है। वे दोनों संयुक्त राष्ट्र प्रणाली और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को दृढ़ बनाने की अनिवार्यता को पहचानते हैं। और उनमें सुधार देखना चाहते हैं ताकि वे आज दुनिया के सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करने में प्रासंगिक और प्रभावी बने रहें।

2.10.सी न्यू ज़ीलैण्ड के प्रधान मंत्री का भारत दौरा, 26 अक्टूबर, 2016

न्यू ज़ीलैण्ड के प्रधान मंत्री के भारत दौरे के दौरान प्रधान मंत्री के प्रेस वक्तव्य का सारांश।

दोनों ने द्विपक्षीय सहभागिता और बहुपक्षीय सहयोग के सभी पहलुओं पर विस्तृत और उत्पादक चर्चा की। प्रधानमंत्री मोदी ने खाद्य प्रसंस्करण, डेयरी और कृषि, और आपूर्ति श्रृंखला के संबंधित क्षेत्रों का उल्लेख किया और कहा कि इन क्षेत्रों में विशेष रूप से द्विपक्षीय सहयोग की संभावना है। इन क्षेत्रों में न्यू ज़ीलैण्ड की ताकत और क्षमता, भारत की विशाल प्रौद्योगिकी आवश्यकता के साथ मिलकर ऐसी साझेदारी का निर्माण कर सकती है जिससे दोनों समाजों को लाभ मिल सकेगा, वे एक संतुलित और पारस्परिक रूप से लाभप्रद व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते को शीघ्र पूरा करने पर निकटता से काम करना जारी रखने के लिए सहमत हुए।

उन्होंने वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दों पर घनिष्ठ सहयोग का उल्लेख किया, जिन्हें पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन प्रक्रिया के दौरान और भी घनिष्ठ बनाया गया है। अंतर्राष्ट्रीय शासन संस्थानों का सुधार दोनों के लिए एक साझा प्राथमिकता है। दोनों प्रधान मंत्री साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में आतंकवाद और कट्टरता के खिलाफ सुरक्षा और खुफिया सहयोग को मजबूत करने पर सहमत हुए।

- **न्यू ज़ीलैण्ड के प्रधान मंत्री जॉन की के भारत दौरे के परिणामों की सूची, 26 अक्टूबर, 2016**

खाद्य सुरक्षा सहयोग के संबंध में न्यू ज़ीलैण्ड के प्राथमिक उद्योग मंत्रालय और भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण के बीच व्यवस्था।

युवा मामलों और खेल के क्षेत्र में भारत गणराज्य सरकार के युवा मामले एवं खेल मंत्रालय और न्यू ज़ीलैण्ड सरकार के स्पोर्ट न्यू ज़ीलैण्ड के बीच समझौता ज्ञापन।

दोहरा कराधान परिहार और आय-कर के संबंध में वित्तीय चोरी की रोकथाम के लिए भारत गणराज्य सरकार और न्यू ज़ीलैण्ड सरकार के बीच संधि का तीसरा प्रोटोकॉल।

दोनों विदेश मंत्रालयों के बीच द्विपक्षीय मंत्रिस्तरीय वार्ता की स्थापना।

वरिष्ठ अधिकारियों के स्तर पर वार्षिक विदेश मंत्रालय परामर्श की स्थापना।

साइबर मुद्दों पर सहयोग और संवाद।

- **□न्यू ज़ीलैण्ड के प्रधान मंत्री के भारत दौरे के दौरान भारत-न्यू ज़ीलैण्ड संयुक्त वक्तव्य, 26 अक्टूबर, 2016**

दोनों प्रधानमंत्रियों ने भारत और न्यू ज़ीलैण्ड के बीच प्रवासियों के माध्यम से दृढ़ जुड़ाव का उल्लेख किया, क्योंकि भारतीय अब न्यू ज़ीलैण्ड की आबादी का लगभग चार प्रतिशत बनते हैं।

दोनों प्रधानमंत्रियों ने इस तथ्य को रेखांकित किया कि भारत और न्यू ज़ीलैण्ड दोनों समुद्री राष्ट्र हैं, जिनका हित एशिया-प्रशांत और भारत-प्रशांत क्षेत्रों को स्थिर और समृद्ध बनाने में निहित है, और जो समुद्री मार्गों की सुरक्षा और नौवहन की स्वतंत्रता सुनिश्चित करते हैं। तदनुसार, दोनों प्रधान मंत्री भारत और न्यू ज़ीलैण्ड की साझा राजनीतिक, रक्षा और सुरक्षा संबंधों को और मजबूत बनाने पर सहमत हुए।

इस संवर्धित राजनीतिक-सुरक्षा संबंध को संचालित करने के लिए, दोनों प्रधानमंत्रियों ने सहमति व्यक्त की कि भारत और न्यू ज़ीलैण्ड:

भारत, न्यू ज़ीलैण्ड में आयोजित वार्षिक बैठकों के माध्यम से या क्षेत्रीय या वैश्विक समारोहों के हासिए पर द्विपक्षीय मंत्रिस्तरीय संवाद करेंगे;

वरिष्ठ अधिकारियों के स्तर पर वार्षिक विदेश मंत्रालय परामर्श आयोजित करेंगे;

साइबर मुद्दों पर दोनों देशों के बीच सहयोग और संवाद को बढ़ावा देंगे;

समुद्री सुरक्षा में हमारे आपसी हितों के समर्थन में जानकारी साझा करने की संभावनाओं की तलाश करेंगे;

सूचना साझा करने में सहायता के लिए एक कस्टम सहयोग व्यवस्था और नए कस्टम, प्रक्रियाओं और तकनीकों के आदान-प्रदान के लिए एक ढांचा प्रदान करने के लिए चर्चा करेंगे;

भारतीय और न्यू ज़ीलैण्ड के रक्षा कर्मियों को एक-दूसरे के रक्षा पाठ्यक्रमों और स्टाफ कॉलेजों में स्थान देकर रक्षा शिक्षा का आदान-प्रदान करेंगे; तथा

एक-दूसरे के बंदरगाहों पर नौसेना की जगहों के दौरे को प्रोत्साहित करेंगे, और साथ ही एक भारतीय जहाज को न्यू ज़ीलैण्ड भेजेंगे ताकि ये नवंबर 2016 में होने वाली रॉयल न्यू ज़ीलैण्ड की नौसेना की 75 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य पर वहां पहुंचे।

न्यू ज़ीलैण्ड ने मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था में भारत के प्रवेश का स्वागत किया, जो वैश्विक अप्रसार उद्देश्यों को मजबूत करेगा।

प्रधानमंत्रियों ने न्यू ज़ीलैण्ड और भारत के बीच सुदृढ़ और बढ़ती शिक्षा और प्रवासन जुड़ाव को स्वीकार किया, न्यू ज़ीलैण्ड में भारतीय छात्रों के लिए उच्च मूल्य, उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षा कार्यक्रमों के अवसरों को नोट किया, जो न्यू ज़ीलैण्ड में कौशल की मांग को पूरा सकते हैं, और न्यू ज़ीलैण्ड और भारत के संस्थानों के बीच मजबूत अंतर्राष्ट्रीय संबंध भी नोट किया। प्रधानमंत्रियों ने सक्रिय निरीक्षण और विनियमन के महत्व को पहचाना ये सुनिश्चित करने के लिए कि सभी छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षा अनुभव प्रदान किए जाएं और न्यू ज़ीलैण्ड और भारत में एजेंसियों के बीच सहयोग जारी रखने को रेखांकित किया ये सुनिश्चित करने के लिए कि उनके बीच के मौजूदा जुड़ाव फले-फूले और दोनों के लिए लाभकारी हों। भारत और न्यू ज़ीलैण्ड के बीच कई प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए, इस वर्ष साहित्य, नृत्य, फिल्म, संगीत और दृश्य कला जैसे क्षेत्रों में एक सांस्कृतिक सहयोग व्यवस्था पर हस्ताक्षर का स्वागत किया; और द्विपक्षीय युवा विनिमय को बढ़ाने के लिए मौजूदा खेल सहयोग व्यवस्था में संशोधन पर हस्ताक्षर का स्वागत किया।

दोनों प्रधानमंत्रियों ने भारत और न्यू ज़ीलैण्ड के बीच पर्यटकों के बढ़ते प्रवाह का स्वागत किया, और इस साल की शुरुआत में भारत सरकार द्वारा हवाई सेवा नीति में किए गए परिवर्तनों के अनुरूप न्यू ज़ीलैण्ड-भारत वायु सेवा समझौते में संशोधन पर सहमति बनाने की दिशा में काम करने के लिए सहमत हुए।

दोनों प्रधानमंत्रियों ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि भारत और न्यू ज़ीलैण्ड के बीच वाणिज्यिक और व्यापारिक संबंध मजबूत थे, ये नोट किया कि वर्तमान माल और सेवाओं के दो-तरफा व्यापार में 1.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर का कारोबार हुआ था, जो पिछले पांच वर्षों में 42 प्रतिशत बढ़ा है

दोनों ने एक उच्च-गुणवत्ता, व्यापक और संतुलित द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौते की दिशा में काम करना जारी रखने की प्रतिबद्धता ली, जो दोनों पक्षों के लिए सार्थक वाणिज्यिक परिणाम लाएगा;

उन्होंने यह सुनिश्चित करने की शपथ ली कि भारत और न्यू ज़ीलैण्ड दोनों क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी वार्ता के लिए उच्च गुणवत्ता वाले, व्यापक परिणाम लाने में योगदान करेंगे, जिसमे दोनों देश शामिल हैं;

अपने कर सहयोग प्रावधानों को अंतर्राष्ट्रीय कर-प्रथा के अनुरूप बनाने के लिए द्विपक्षीय दोहरा कराधान परिहार समझौते में संशोधन की घोषणा की; तथा

न्यू ज़ीलैण्ड और भारतीय खाद्य सुरक्षा प्राधिकरणों के बीच अधिक समन्वय को बढ़ावा देने के लिए और खाद्य उत्पादों में अधिक कुशल व्यापार का समर्थन करने के लिए एक खाद्य सुरक्षा सहयोग व्यवस्था पूरा होने की घोषणा की।

स्वच्छ गंगा पहल सहित स्वच्छ भारत में न्यू ज़ीलैण्ड के वैज्ञानिक और वाणिज्यिक संस्थाओं की अधिक से अधिक सहभागिता की घोषणा की, जिसके द्वारा स्वच्छ प्रौद्योगिकी और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्रों में न्यू ज़ीलैण्ड की विशेषज्ञता का दोहन किया जाएगा।

2.11 फिजी

2.11.ए. फिजी के प्रधान मंत्री का भारत का निजी दौरा, 19 मई 2016

- फिजी के प्रधान मंत्री रियर एडमिरल (सेवानिवृत्त) जोसिया वोरिके बेनीमारामा ने 19 मई 2016 को भारत का निजी दौरा किया। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की और भारत-फिजी संबंधों पर चर्चा की। पीएम मोदी ने श्रेणी 5 चक्रवात विंस्टन की वजह से फिजी में हुए जीवन के नुकसान के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त की, जो फिजी में फरवरी 2016 में आया था।
- प्रधान मंत्री बैनीमारमा ने चक्रवात के तुरंत बाद भारत द्वारा प्रदान की गई 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर की सहायता और 45 टन राहत सामग्री के लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद दिया।

3 मध्य एशिया

1990 के शुरुआती दशक में भूतपूर्व यूएसएसआर से आजादी के बाद भारत और मध्य एशियाई देशों जैसे कि कज़ाकिस्तान, किर्गिज़स्तान, ताज़िकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उज़्बेकिस्तान अपनी द्विपक्षीय और बहुपक्षीय जुड़ावों को बढ़ाया है। मध्य एशिया के साथ अपने संबंधों के दो दशक पूरे होने पर और 'विस्तारित पड़ोस' के साथ जुड़ाव को और गहरा करने के लिए, भारत ने 2012 में बिश्केक, किर्गिज़ गणराज्य में आयोजित पहली भारत-मध्य एशिया वार्ता के दौरान 'कनेक्ट सेंट्रल एशिया' नीति की घोषणा की।

3.1. किर्गिज़स्तान

3.1.ए. किर्गिज़ गणराज्य के राष्ट्रपति का भारत दौरा (18-21 दिसंबर 2016)

किर्गिज़ गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री अल्माजबेक शरषएनोविच अतामबेव ने 18 से 21 दिसंबर, 2016 तक भारत का राजकीय दौरा किया। राष्ट्रपति अतामबेव ने उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया, जिसमें किर्गिज़ गणराज्य के मंत्री, वरिष्ठ अधिकारी और व्यापारी अग्रणी शामिल थे। राष्ट्रपति अतामबेव का दौरा, एक राष्ट्रपति के तौर पर उनका भारत का पहला दौरा था। दोनों देशों की आम चुनौतियों, जैसे कि आतंकवाद, उग्रवाद और कट्टरपंथ पर चर्चा हुई। भारत और किर्गिज़ गणराज्य प्रतिवर्ष आतंकवाद पर संयुक्त सैन्य अभ्यास कर रहे हैं। रक्षा क्षेत्र में सहकारी जुड़ाव के अलावा, सफल सहयोग के उत्कृष्ट उदाहरण के तौर पर किर्गिज़-इंडिया माउंटेन बायो-मेडिकल रिसर्च सेंटर को चर्चा में लाया गया।

आर्थिक सहयोग के क्षेत्र में, दोनों नेता आर्थिक रूप से जुड़ने और लोगों का विनिमय बढ़ाने की आवश्यकता पर सहमत हुए। दोनों पक्षों ने स्वास्थ्य, पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि, खनन और ऊर्जा में अवसरों के दोहन में उद्योग और व्यापार की भूमिका के महत्व पर बल दिया गया। वर्ष 2017 भारत और किर्गिज़स्तान के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 25 वीं वर्षगांठ का वर्ष है।

3.1.बी. किर्गिज़स्तान के राष्ट्रपति के राजकीय दौरे के दौरान संयुक्त वक्तव्य (20 दिसंबर 2016)

किर्गिज़स्तान के राष्ट्रपति और भारत के प्रधान मंत्री द्वारा एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया, जिसमें राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और तकनीकी आदि के क्षेत्र में द्विपक्षीय मुद्दों को शामिल किया गया। संयुक्त वक्तव्य में कुछ बड़े मुद्दों को संबोधित किया गया था जैसे कि:

द्विपक्षीय संबंध

रक्षा के क्षेत्र में सहयोग: दोनों पक्षों ने रक्षा क्षेत्र में सहयोग के विकास पर संतोष व्यक्त किया, जो दोनों देशों के बीच उच्च स्तर के आपसी विश्वास को दर्शाता है। भारत-किर्गिज़स्तान सैन्य अभ्यास की "खंजर" श्रृंखला एक वार्षिक कार्यक्रम बन गई है। "खंजर-द्वितीय" अभ्यास मार्च 2015 में किर्गिज़स्तान में और "खंजर III" मार्च-अप्रैल 2016 में ग्वालियर, भारत में आयोजित किया गया था। ये अभ्यास फरवरी-मार्च 2017 में किर्गिज़स्तान में आयोजित होने वाले हैं। तीसरा संयुक्त भारत-किर्गिज़ सेना पर्वतारोहण अभियान अगस्त-सितंबर 2016 में आयोजित किया गया था।

भारत और किर्गिज़स्तान संयुक्त रूप से किर्गिज़स्तान के इस्किक-कुल जिले के बाल्कि शहर में किर्गिज़-इंडियन माउंटेन ट्रेनिंग सेंटर का निर्माण कर रहे हैं। यह केंद्र किर्गिज़ गणराज्य के सशस्त्र

बलों के कर्मियों के साथ-साथ मेजबान किर्गिज़-भारतीय संयुक्त पर्वत प्रशिक्षण अभ्यासों के लिए निर्देश और प्रशिक्षण प्रदान करेगा।

आर्थिक सहयोग, वैज्ञानिक, तकनीकी और सांस्कृतिक सहयोग: एक व्यापक पांच-वर्षीय रोड-मैप विकसित करने पर सहमत हुए, जो दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश के स्तर को बढ़ाने में मदद करेगा। दौरे के दौरान एक द्विपक्षीय निवेश संधि शुरू की गई है। किर्गिज़ पक्ष ने भारतीय उद्यमियों के लिए यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन (ईईईयू) में शामिल होने के परिणामस्वरूप उपलब्ध अवसरों पर प्रकाश डाला। इंटरनेशनल नॉर्थ-साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर (आईएनएसटीसी) और चाबहार बंदरगाह को भारत-किर्गिज़स्तान द्विपक्षीय संबंधों के बीच व्यापार और संपर्क बढ़ाने में महत्वपूर्ण परियोजनाओं के रूप में उल्लेख किया गया था। संयुक्त वक्तव्य में किर्गिज़-इंडिया माउंटेन बायो-मेडिकल रिसर्च सेंटर, सूक हाई पास में दूसरे चरण की प्रयोगशाला के सफलतापूर्वक संपन्न, किर्गिज़स्तान में टेलीमेडिसिन नेटवर्क स्थापित करने में भारत के योगदान, स्वास्थ्य क्षेत्र में निजी अस्पतालों के बीच संबंधों को बढ़ाना, भारतीय-तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण को भारत-किर्गिज़स्तान संबंधों के प्रभावी उदाहरण के रूप में बताया गया। दोनों नेताओं ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी और व्यापार और अर्थव्यवस्था समेत अन्य क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए वीजा प्रक्रियाओं के उदारीकरण के लिए सहमति व्यक्त की।

क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर सहयोग: किर्गिज़ ने विस्तारित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत के स्थायी सदस्यता के दावे के पक्ष में अपना समर्थन दिया। दोनों देशों ने संयुक्त राष्ट्र से अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए व्यापक संधि अपनाने का निवेदन किया। दोनों नेताओं ने भारत सहित कई अन्य देशों द्वारा यूएनएफसीसीसी के पेरिस समझौते के अनुसमर्थन का स्वागत किया।

3.2 ताज़िकिस्तान

3.2.ए. ताज़िकिस्तान के राष्ट्रपति का भारत दौरा (14-18 दिसंबर 2016)

ताज़िकिस्तान गणराज्य के राष्ट्रपति ने 14-18 दिसंबर 2016 को भारत का राजकीय दौरा किया। ताज़िक राष्ट्रपति ने राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी, उपराष्ट्रपति श्री एम हामिद अंसारी और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ मुलाकात कीं। ताज़िक राष्ट्रपति ने अपनी पांच दिवसीय यात्रा के पहले चरण में केरल का दौरा किया।

आगंतुक राष्ट्रपति का स्वागत करते हुए, प्रधान मंत्री मोदी ने दोनों देशों के साझा द्विपक्षीय संबंधों और रणनीतिक साझेदारी के सम्पूर्ण पहलुओं का उल्लेख किया, जो क्षेत्रीय सुरक्षा और विकास में पारस्परिक सम्मान, विश्वास और साझा हितों की नींव पर बना है। प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता में, दोनों नेताओं ने आतंकवाद के खतरे पर चर्चा की जो न केवल दोनों देशों के लिए, बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए खतरा है।

आर्थिक सहयोग के क्षेत्र में आर्थिक भागीदारी, विशेषकर व्यापार और निवेश यातायात के दायरे और पैमाने को बढ़ाने की आवश्यकता पर सहमति व्यक्त की गई। कई अन्य क्षेत्रों जैसे कि हाइडल-पावर, सूचना प्रौद्योगिकी, फार्मास्यूटिकल्स, परिवहन बुनियादी ढांचे सहित सतही संपर्कता और इसे सड़क और रेल नेटवर्क के माध्यम से अफ़ग़ानिस्तान, ताज़िकिस्तान और मध्य एशिया से जोड़ने के साथ ईरान में चाबहार बंदरगाह के साथ जोड़ने को प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के रूप में पहचाना गया था।

3.2.बी. दौरे के दौरान आदान-प्रदान किए गए समझौतों/एमओयू की सूची (17 दिसंबर 2016)

1. ताज़िकिस्तान सरकार के तहत टेलीविजन और रेडियो समिति और प्रसारभारती, भारत के बीच समझौता ज्ञापन।
2. ताज़िकिस्तान गणराज्य सरकार और भारत सरकार के बीच दोहरा कराधान परिहार और आय पर करों के संबंध में वित्तीय चोरी को रोकने के लिए समझौते में संशोधन।
3. धन शोधन, संबंधित अपराधों और आतंकवाद के लिए वित्तपोषण से संबंधित वित्तीय खुफिया जानकारी के आदान-प्रदान में सहयोग के लिए भारत की वित्तीय खुफिया इकाई और नेशनल बैंक ऑफ ताज़िकिस्तान के अधीन वित्तीय निगरानी विभाग के बीच समझौता ज्ञापन।
4. दोनों पक्षों के बीच द्विपक्षीय निवेश संधि की शुरुआत की घोषणा।

3.2.सी. ताज़िकिस्तान के राष्ट्रपति के राजकीय दौरे के दौरान हस्ताक्षरित संयुक्त वक्तव्य की प्रमुख बिन्दुएँ (17 दिसंबर 2016)

ताज़िकिस्तान के राष्ट्रपति और भारत के प्रधान मंत्री के बीच द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर विस्तृत वार्ता होने के बाद निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं पर बातचीत हुई:

दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय रक्षा और सुरक्षा सहयोग की समीक्षा की और सहयोग को आगे बढ़ाने और का निर्णय लिया। उन्होंने 17 नवंबर 2016 को विदेश कार्यालय परामर्श और 2 नवंबर 2016 को रक्षा सहयोग पर संयुक्त कार्य समूह की बैठक के सफल समापन का स्वागत किया और सहमति जताई कि व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग के संयुक्त आयोग, आतंकवाद प्रतिरोध पर संयुक्त कार्य समूह के साथ इस तरह की चर्चा और राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के बीच नियमित विचार-विमर्श पारस्परिक लाभ के लिए जारी रखने चाहिए।

दोनों नेताओं ने संयुक्त राष्ट्र की संरचना में व्यापक सुधारों सहित बहुपक्षीय मुद्दों पर भारत और ताजिकस्तान के बीच उत्कृष्ट सहयोग और संयुक्त राष्ट्र एवं अन्य अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर दोनों देशों की पहल के लिए आपसी सहयोग पर संतोष व्यक्त किया।

4 पश्चिम एशिया/ उत्तर अफ्रीका

भारत और पश्चिम एशिया के कुछ देशों के बीच कई राजनितिक एवं आर्थिक उच्च-स्तरीय द्विपक्षीय दौरें हुईं। उपराष्ट्रपति के अल्जीरिया, मोरक्को और ट्यूनीशिया और भारतीय विदेश मंत्री के इजरायल, फिलिस्तीन, बहरीन और राज्य मंत्री के सीरिया, यूएई दौरों के अलावा, भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वयं पश्चिम एशिया के चार महत्वपूर्ण देशों, यूएई, क़तर, ईरान, सऊदी अरब का दौरा किया और महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापनों/समझौतों/संधियों पर हस्ताक्षर किया। ये समझौता ज्ञापन/ समझौते सुरक्षा, रक्षा, ऊर्जा, समुद्री, डायप्सोरा, आतंकवाद-विरोध, विआमूलीकरण के साथ-साथ निहित समूहों द्वारा राजनैतिक उद्देश्यों के लिए अनुसरण की जा रही हिंसक विचारधाराओं का संयुक्त रूप से जवाबी बयान जारी करके युवाओं को प्रेरित होने से रोकना।

पश्चिम एशियाई देशों से भारत के दो महत्वपूर्ण दौरे हुए, पहला मिस्र के राष्ट्रपति अब्दुल फतह अल सीसी का दौरा और दूसरा यूएई के क्राउन प्रिंस और रक्षा मंत्री का दौरा।

2016 में पश्चिम एशिया के साथ भारत के विकासशील जुड़ाव की एक अनूठी विशेषता यह रही है कि भारत की बढ़ती प्रोफाइल और सामान्य रूप से पश्चिम एशिया और विशेष रूप से खाड़ी देशों की शांति और स्थिरता में सकारात्मक योगदान देने की क्षमता को पहचाना गया है। विभिन्न स्तरों पर बातचीत के दौरान, यह भी स्पष्ट था कि अब पश्चिम एशियाई देशों ने स्वीकार किया है कि दो क्षेत्रों, पश्चिम एशिया और दक्षिण एशिया की नियति एक दूसरे से जुड़ी हुई है और जब तक एक संयुक्त नीति का विकास नहीं किया जाता तब तक दूसरे पर एक का प्रपाती प्रभाव रोका नहीं जा सकता है और इसमें भारत की भूमिका महत्वपूर्ण है।

4.1 बहरीन

4.1.ए. विदेश मंत्री का बहरीन दौरा (23-24 जनवरी 2016)

विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने 23-24 जनवरी 2016 को बहरीन का आधिकारिक दौरा किया और उन्होंने अरब-भारत सहयोग मंच की पहली मंत्रिस्तरीय बैठक में भाग लिया।

अरब-भारत सहयोग मंच की पहली मंत्रिस्तरीय बैठक में विदेश मंत्री के टिप्पणी की प्रमुख बिन्दुएँ (24 जून, 2016)

उन्होंने अरब-भारत सहयोग मंच की पहली मंत्रिस्तरीय बैठक में भाग लेने के लिए मनामा में अपनी मौजूदगी की खुशी व्यक्त की। भारत और क्षेत्र के बीच उच्च स्तरीय बातचीत को उजागर करते हुए, उन्होंने कहा कि वर्ष 2016 की शुरुआत विदेश मंत्री के फिलिस्तीन दौरे से हुई, जो अक्टूबर 2015 में राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी की फिलिस्तीन दौरे के अनुसरण में था। प्रधान मंत्री मोदी ने अगस्त 2015 में संयुक्त अरब अमीरात की यात्रा की थी और यह 34 वर्षों के बाद संयुक्त अरब अमीरात में किसी भारतीय प्रधानमंत्री का पहला दौरा था। श्रीमती स्वराज ने कहा कि भारत को तीन महीने पहले नई दिल्ली में आयोजित तीसरे भारत अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन के दौरान अल्जीरिया, कोमोरोस, जिबूती, मिस्र, मॉरिटानिया, मोरक्को, सोमालिया, सूडान और ट्यूनीशिया के अरब नेताओं का स्वागत करने का सम्मान नसीब हुआ। और उनका ये दौरा अरब दुनिया के साथ भारत के निरंतर रणनीतिक जुड़ाव को दर्शाता है।

आज अरब देश सामूहिक रूप से भारत के सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार हैं, जिनके साथ 180 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक का द्विपक्षीय व्यापार है। भारत अपनी 60% तेल और गैस आवश्यकता को पश्चिम एशिया से पूर्ण करता है, और इस क्षेत्र को हमारी ऊर्जा सुरक्षा का एक स्तंभ बनाता है। माघरेब क्षेत्र फॉस्फेट और अन्य उर्वरकों का एक प्रमुख स्रोत है जो हमारी खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देता है। हमारे सहयोग के नए और उभरते क्षेत्रों में कृषि अनुसंधान, शुष्क भूमि में खेती, सिंचाई और पर्यावरण संरक्षण शामिल हैं। इन सभी में भारत को अरब सहयोगियों के साथ अपना अनुभव साझा करने में खुशी होगी।

श्रीमती स्वराज ने कहा कि भारत सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी), ऑटोमोबाइल और लघु और मध्यम उद्यमों, जैव प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रों में साझेदार बनने के लिए तैयार है। खाड़ी देशों के प्रभु धन निधि को भारत के विकासशील अवसंरचना क्षेत्र में लाभप्रद रूप से नियोजित किया जा सकता है। इस वर्ष ओमान में होने वाला अगला भारत-अरब साझेदारी सम्मेलन हमारी आर्थिक साझेदारी को गहरा करने के मामले में एक असल गेम चेंजर साबित हो सकती है।

सरकार से सरकार के संवादों के अलावा, लोगों से लोगों के जुड़ाव ने भी संबंधों का आधार बनाया है। इस क्षेत्र में 7 मिलियन से अधिक भारतीय रहते हैं। उसने उल्लेख किया कि अरब दुनिया के बड़ी संख्या में लोग भारतीय फिल्मों का आनंद लेते हैं, भारतीय संगीत सुनते हैं और भारतीय व्यंजनों का आनंद लेते हैं। उसे विश्वास था कि भारत में होने वाला तीसरा भारत-अरब सांस्कृतिक महोत्सव सांस्कृतिक संपर्कों और सहयोग को और आगे बढ़ाएगा।

भारत और अरब दुनिया आम चुनौतियों का सामना करते हैं और शांति, समृद्धि और स्थिरता की उनकी तलाश में उनके पास समान अवसर हैं। मनमा घोषणा और 2016-17 के कार्यकारी कार्यक्रम के माध्यम से, दोनों ने उन चुनौतियों को संबोधित करने और उन अवसरों का उपयोग करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया।

4.2 अल्जीरिया

4.2.ए. उपराष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी का अल्जीरिया दौरा - प्रेसिडेंशियल पैलेस, अल्जीयर्स, अल्जीरिया में उपराष्ट्रपति के प्रेस वक्तव्य का सारांश (19 अक्टूबर, 2016)

अल्जीरियाई सरकार के आतिथ्य की सराहना करते हुए, उपराष्ट्रपति अंसारी ने राष्ट्रपति बोथफ्लिका से मुलाकात की और अल्जीरियाई नेता के साथ पारस्परिक हित के विभिन्न विषयों पर चर्चा की। इन चर्चाओं में रक्षा और सुरक्षा, हाइड्रोकार्बन संसाधनों, परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग, अंतरिक्ष, उर्वरकों और राजनीतिक स्तर पर नियमित दौरों के साथ-साथ आतंकवाद के खतरे से लड़ने जैसे क्षेत्रों पर चर्चा हुई। उपराष्ट्रपति ने अल्जीरिया के प्रधान मंत्री को भारत आने का निमंत्रण दिया।

4.3 मिस्र

4.3.ए. मिस्र अरब गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री अब्देल फत्ताह अल-सीसी का भारत दौरा, 01-03 सितंबर, 2016

मिस्र अरब गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री अब्देल फत्ताह अल-सीसी ने 01-03 सितंबर, 2016 को भारत का राजकीय दौरा किया। राष्ट्रपति के साथ उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल और एक व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल भी था।

राष्ट्रपति अल-सिसी और प्रधानमंत्री मोदी ने करीबी राजनीतिक और सुरक्षा सहयोग, गहरे आर्थिक जुड़ाव, और वैज्ञानिक सहयोग और व्यापक सांस्कृतिक और लोगों-से-लोगों के संपर्क के तीन स्तंभों पर आधारित द्विपक्षीय संबंधों को गहन बनाने का फैसला किया।

- <u>राजनीतिक और सुरक्षा सहयोग</u> - दोनों देशों के बीच वर्षों से राजनीतिक नेताओं और आधिकारिक स्तर पर हुए जुड़ावों की सराहना की; एनएसए के स्तर पर सुरक्षा सहयोग और आतंकवादवाद पर हालिया आदान-प्रदान, और दोनों राष्ट्रीय सुरक्षा परिषदों के बीच सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन को संपन्न करने का स्वागत किया; नियमित आदान-प्रदान के माध्यम से रक्षा सहयोग, संयुक्त रक्षा समिति की बैठकें, मिस्र के प्रतिनिधिमंडल का डेफएक्सपो 2016 दौरा और विभिन्न उच्च स्तरीय आदान-प्रदान; अरब इजरायली संघर्ष के लिए एक व्यापक और स्थायी समाधान की तलाश; सीरिया और इराक में शांति; आकस्मिकता के समय में भारत के तरफ से मिस्र को खाद्यान्न भेजना; संघर्ष क्षेत्रों से नागरिकों को निकालने के दौरान एक दूसरे की सहायता करना;

संयुक्त राष्ट्र के व्यापक सुधार के लिए मिलकर काम करना; और जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से निपटना।

- आर्थिक जुड़ाव और वैज्ञानिक सहयोग – मिस्र में भारतीय निवेश का स्वागत किया जो कि लगभग 3 बिलियन अमेरिकी डॉलर है; एक-दूसरे की अर्थव्यवस्थाओं में अधिक आर्थिक उपक्रमों को आमंत्रित करना; तीसरी संयुक्त व्यापार समिति की बैठक के परिणामों की सराहना की और भारत-मिस्र संयुक्त व्यापार परिषद की सिफारिशों पर तेजी से कार्यान्वयन करने की मांग की; विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाना; अंतरिक्ष, उपग्रह प्रौद्योगिकी, टेली-चिकित्सा और टेली-शिक्षा में सहयोग बढ़ाना।
- सांस्कृतिक आदान-प्रदान और लोगों-से-लोगों का संपर्क – नागरिक संबंधों को मजबूत करने के लिए, सांस्कृतिक और शैक्षणिक आदान-प्रदान को बढ़ाना; ऐन शम्स विश्वविद्यालय, काहिरा में पहला भारतीय अध्यक्ष; वर्ष 2017 में "भारत द्वारा नील महोत्सव" और "मिस्र द्वारा गंगा महोत्सव" शुरू करना; भारत और मिस्र के बीच समुद्री परिवहन के समझौते पर हस्ताक्षर, और; भारत के राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री मोदी को मिस्र आने का निमंत्रण दिया, जिसे स्वीकार किया गया।

4.4 मोरक्को

4.4.ए. उपराष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी ने 30 मई से 01 जून, 2016 तक मोरक्को का दौरा किया

उपराष्ट्रपति के मोरोक्को दौरे के दौरान राबत के मोहम्मद वी विश्वविद्यालय में संबोधन का सारांश- "वैश्वीकृत दुनिया में विविधता कायम करना: भारत का अनुभव" (01 जून, 2016)[5]

यहाँ तक कि दूर देश भारत में भी, मोरक्को के बुद्धिजीवियों के आधुनिक विचार में योगदान को जाना जाता और स्वीकार किया जाता है। अब्दुल्ला अल-अरुई और आबिद अल-जबरी जैसे नाम फ़ौरन दिमाग में आते हैं; वैसे ही फातिमा मरनीसी और फातिमा सिद्दकी जैसे नारीवादी लेखकों के योगदान भी याद आते हैं। कुछ पारिभाषिक प्रश्नों पर ध्यान आकर्षित करते हुए, उन्होंने नोट किया कि कई स्थानों पर 'अरब' और 'इस्लाम' शब्द एक साथ या दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किये जा रहे हैं। लेकिन क्या ये दोनों पर्यायवाची हैं? क्या अरब विचारधारा इस्लामी विचारधारा के पर्याय बन गए हैं? क्या सभी अरब विचारधारा इस्लामी हैं या विलोमतः हैं? इन सबसे ऊपर, क्या सभी इस्लामी विचारधारा के लिए अरबों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है?

पश्चिमी देश एक शक्तिशाली, तर्कहीन बल की धारणा बनाने चाहते हैं, जो पूरे समाज को सांस्कृतिक मुखरता, राजनीतिक दखल और आर्थिक प्रभाव की ओर ले जाता है। इसका मूल आधार मुस्लिम सांस्कृतिक समरूपता और निरंतरता की परिकल्पना है जो सामाजिक वास्तविकता के अनुरूप नहीं है। दुनिया के बड़ी संख्या में मुसलमान गैर-अरब हैं और ऐसे समाजों में रहते हैं जो अरब नहीं हैं। ये ऐतिहासिक तथ्य भी उतना ही प्रासंगिक है कि उन्होंने पूरी तरह से इस्लाम की सभ्यता में योगदान किया और उसका लाभ उठाया है। यह सिलसिला आज भी जारी है।

दुनिया में मुस्लिमों की बड़ी आबादी के गैर-अरब वर्गों के अनुभवों और सोच के रुझान महत्वपूर्ण है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। इन वर्गों में प्रमुख रूप से मुस्लिम प्रमुखता वाले देश विशेष रूप से इंडोनेशिया, बांग्लादेश, पाकिस्तान, ईरान और तुर्की भी शामिल हैं, और वो देश भी शामिल हैं जहाँ इस्लामिक धर्म के अनुयायी बहुल आबादी का निर्माण करते हैं जैसे कि भारत, चीन और फिलीपींस।

मोरक्को के इतिहास में सूफी आंदोलनों और 'ज़ाविया' की भूमिका के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि मोरक्को और भारत में सूफी प्रथाओं के तुलनात्मक अध्ययन के लिए जगह है। यह पृष्ठभूमि है जिसने आधुनिक भारत को प्रभावित किया है और एक मिश्रित समाज के अस्तित्व की वास्तविकता को प्रभावित करता है जिसके आधार पर एक लोकतांत्रिक राजनीति और एक धर्मनिरपेक्ष राज्य संरचना खड़ी की गई थी। हमारे संविधान के निर्माताओं का उद्देश्य नागरिकता के आवश्यक अवयवों के रूप में नागरिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक

[5]https://www.mea.gov.in/Speeches-Statements.htm?dtl/26861/Address_by_Vice_PresidentquotAccommodating_Diversity_in_a_Globalising_World_The_Indian_Experiencequot_at_the_Mohammed_V_University_in_Rabat_during_his

अधिकारों को सुरक्षित करना था। समाज की वर्गीकृत प्रकृति और असमान अर्थव्यवस्था को देखते हुए, समानता और न्याय की तलाश एक जारी कार्य रही है, और इसकी खामियों और कार्यान्वयन की गति को लेकर समय-समय पर सवाल खड़े किए गए हैं। इसमें सुधार लाने की जिम्मेदारी हमारी कार्यशील लोकतंत्र पर है, इसकी जवाबदेही तंत्र पर है, और इसके साथ ग्रामों और जिला परिषदों से लेकर क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर तक समस्त स्तरों पर नियमित चुनाव आयोजनों पर भी है, कानून शासन और सार्वजनिक मुद्दों पर जनता में उच्च जागरूकता भी इसके लिए जिम्मेदार है।

4.4.बी. अफ्रीकी संघ में पुनः शामिल होने को लेकर मोरक्को की पहल पर एक प्रश्न के प्रति आधिकारिक प्रवक्ता का जवाब (05 अगस्त, 2016)

अफ्रीकी संघ को फिर से शामिल करने के लिए मोरक्को की पहल पर एक सवाल के जवाब में, आधिकारिक प्रवक्ता ने कहा: "भारत अफ्रीकी संघ में फिर से शामिल होने के लिए मोरक्को की पहल का स्वागत करता है। भारत मोरक्को सहित सभी अफ्रीकी देशों के साथ घनिष्ठ संबंध रखता है। भारत हमेशा अफ्रीकी संघ के लिए खड़ा हुआ है। जिसमें संपूर्ण अफ्रीकी महाद्वीप शामिल है। तीसरे भारत-अफ्रीकी मंच शिखर सम्मेलन में अफ्रीकी महाद्वीप के सभी 54 देशों के लिए भारत का निमंत्रण इस नीति की पुष्टि था। भारत को उम्मीद है कि मोरक्को के एयू में फिर से शामिल होने से अफ्रीका की एकता मजबूत होगी और एयू को अनुमति देगा। अपने सदस्य देशों के मामलों में रचनात्मक भूमिका निभाएं।"

4.5 ट्यूनीशिया

4.5.ए. उपराष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी ने 02-03 जून, 2016 को ट्यूनीशिया का दौरा किया

दौरे के दौरान उपराष्ट्रपति ने 03 जून, 2016 को ट्यूनिस में ट्यूनीशियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्ट्रैटेजिक स्टडीज में भाषण दिया।[6] भाषण की मुख्य बिन्दुएँ इस प्रकार हैं:

भारत और दुनिया के विषय पर चर्चा करते हुए, उपराष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी ने आज की अव्यवस्थित दुनिया की प्रकृति को बयान किया। दुनिया जहां मानव अस्तित्व दांव पर है; दुनिया जिसे विस्फोट और अंतःस्फोट दोनों से खतरा है। हालांकि शीत युद्ध के दौर के दौरान एक नया प्रतिमान तैयार किया गया था, जिसमें मानव सुरक्षा के आधार पर न केवल राज्यों के बारे में, बल्कि मनुष्य की भलाई के बारे में भी बताया गया था।

[6]http://mea.gov.in/outoging-visit-detail.htm?26866/Keynote+Address+by+Vice+President+at+Tunisian+Institute+of+Strategic+Studies+in+Tunis+June+03+2016

हालांकि अंतरराज्यीय संघर्षों में गिरावट आई है, लेकिन सदी के पिछले चतुर्थांस का अनुभव दिखाता है कि किस तरह से अधिक व्यापक सुधारों की अपेक्षाओं को ख़ारिज किया गया है। उन्होंने कहा:

- कम तीव्रता वाले नागरिक संघर्षों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है;
- असुरक्षित नागरिकों के खिलाफ हिंसा में वृद्धि हुई है;
- इनमें से कुछ संघर्षों ने राज्य की सीमाओं को पार कर लिया है और नागरिक उनका प्रमुख शिकार बने हैं;
- उन्होंने मानव आबादी को विस्थापित किया है और मानव सुरक्षा को खतरे में डाल रहे हैं;
- वे राष्ट्र राज्य को कमजोर करते हैं, और पड़ोसी देशों के बीच घर्षण पैदा कर रहे हैं।

यह वैश्विक परिदृश्य है जिसमें भारत ने हाल के दशकों में अपनी विकासात्मक चुनौतियों को संबोधित करने और दुनिया में अपनी भूमिका पहचानने का प्रयास किया है। इसकी कुछ मुख्य विशेषताएं हैं:

- 1991 में शुरू हुए 25 साल के आर्थिक उदारीकरण ने भारत की अर्थव्यवस्था को बदल दिया है। 7% की औसत वार्षिक वृद्धि दर ने धन बनाया है जिसने करोड़ों भारतीयों को वैश्वीकृत दुनिया में भाग लेने और उससे लाभ उठाने की अनुमति दी है। इसके बावजूद, हमारी लगभग एक-तिहाई आबादी बेहद गरीबी में रहती है और भारत शिक्षा, प्रशिक्षण, मानव और बुनियादी ढाँचे के विकास की विकट चुनौतियों का सामना करता है।
- भारत का कुल वैश्विक व्यापार 1991 में 37.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2016 में 758.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया, जो पिछले 25 वर्षों में 20 गुना वृद्धि है। भारत के औद्योगिक और कृषि उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। एक व्यापार अनुकूल भारत आज कई क्षेत्रों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) प्राप्त करने वाले अग्रणियों में से एक है।
- अतिरिक्त संसाधनों की उपलब्धता ने भारत को अपने नागरिकों की शिक्षा और कल्याण में अधिक निवेश करने की अनुमति दी है, जिसने बदले में भारत को वैज्ञानिक और उद्यमशीलता की प्रतिभा प्रदान की है।
- मजबूत विकास ने भारत की समुद्री और रणनीतिक क्षमता को बढ़ाया है। इसकी रक्षा क्षमताओं में वृद्धि हुई है; साथ ही दोस्तों और जरूरतमंदों को विदेशी सुरक्षा और मानवीय सहायता प्रदान करने की इसकी क्षमता भी बढ़ी है।
- वैश्विक मुद्दों और बहुपक्षीय कूटनीति का एजेंडा, भारत के लिए बारहमासी रुचि का विषय बना हुआ है।
- पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका भारत के लिए कोई अपरिचित क्षेत्र नहीं हैं। ऐतिहासिक संबंध, सांस्कृतिक बंधन, साझा हित और मामलें हमारे संबंधों की विशेषता हैं। ऑटोमोटिव घटकों, ऑटोमोबाइल, इंजीनियरिंग उत्पादों, आईटी, फार्मास्यूटिकल्स, जैव-प्रौद्योगिकी और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्रों में व्यापार के विस्तार की काफी संभावना है।
- आम चिंता के क्षेत्र भी हैं। आतंकवाद एक प्रमुख वैश्विक चुनौती बनकर उभरा है। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद को केवल संगठित अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई द्वारा पराजित किया जा सकता है। आतंकवाद की चुनौतियों से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर एक व्यापक सम्मेलन को अपनाकर अंतर्राष्ट्रीय कानूनी ढांचे का पुनर्गठन करने की आवश्यकता है।
- भारत और ट्यूनीशिया के बीच संबंध दोस्ताना और कलह से मुक्त रहे हैं। वे सामान्य सिद्धांतों को साझा करते हैं और कई मुद्दों पर समान दृष्टिकोण रखते हैं। भारत ने ट्यूनीशिया के स्वतंत्रता संघर्ष

का कड़ा समर्थन किया था और आज, जब आप स्वतंत्रता और लोकतंत्र की राह पर आगे बढ़ रहे हैं, भारत आपके साथ है।

- ट्यूनीशिया यूरोप और अफ्रीका दोनों के साथ भारत के व्यापार का केंद्र बन सकता है। ट्यूनीशिया अपने लाभ के लिए फार्मास्युटिकल्स के उत्पादन, विशेष रूप से किफायती कीमत पर जेनेरिक दवाएं, स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में उन्नति, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और उचित मूल्य पर उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा का प्रावधान में भारतीय विशेषज्ञता और सिद्ध क्षमताओं का लाभ उठा सकता है।

4.6. ईरान

वर्ष 2016 में भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने मई में ईरान का उच्च स्तरीय दौरा किया, जिसके माध्यम से भारत-ईरान संबंध अधिक गहरा हुआ, और उसके बाद अप्रैल में भारत की विदेश मंत्री ने ईरान का दौरा किया।

4.6.ए. विदेश मंत्री का ईरान दौरा (16-17 अप्रैल, 2016)[7]

विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने 16-17 अप्रैल, 2016 को अपने समकक्ष ईरान के विदेश मामलों के मंत्री डॉ. जवाद ज़रीफ़ के निमंत्रण पर तेहरान का दौरा किया। विदेश मंत्री ने ईरान के माननीय राष्ट्रपति डॉ. हसन रूहानी से मुलाकात की, सुप्रीम लीडर के सलाहकार डॉ. अली अकबर वेलयाती से मिले, और श्री जवाद ज़रीफ़ के साथ प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता की।

उन्होंने आशा व्यक्त की कि दोनों पक्ष अवसर मिलने पर जल्दी ही चाबहार बंदरगाह पर द्विपक्षीय अनुबंध पर हस्ताक्षर करेंगे, और चाबहार बंदरगाह के माध्यम से व्यापार और पारगमन कॉरिडोर पर भारत, ईरान और अफ़ग़ानिस्तान को शामिल करते त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर करेंगे। ईरान ने अश्गाबात समझौते में शामिल होने की भारत की इच्छा का समर्थन किया। दोनों पक्षों ने अंतर्राष्ट्रीय उत्तर दक्षिण परिवहन कॉरिडोर के महत्व पर प्रकाश डाला। ईरानी पक्ष ने चाबहार-जाहेदान जैसी रेलवे परियोजनाओं में भारत की भागीदारी की संभावनाओं का स्वागत किया, जिससे क्षेत्रीय संपर्क बढ़ेगी।

[7]http://mea.gov.in/press-releases.htm?dtl/26630/visit+of+external+affairs+minister+to+iran+april+1617+2016

भारत ने, हाल ही में राज्य मंत्री (आईसी) पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस के ईरान दौरे के माध्यम से ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग के परिणाम का स्वागत किया, जिसमें फ़रज़ाद बी के अन्वेषण और विकास और उर्वरक परियोजनाओं की स्थापना में भारत की भागीदारी का मामला शामिल है। संबंधित कंपनियों को निर्देशित किया गया है कि वे फ़रज़ाद बी पर अपने अनुबंध संबंधी वार्ताओं को समयबद्ध तरीके से पूरा करें। ईरानी पक्ष ने पहले अपने गैस मूल्य निर्धारण फॉर्मूले का संचार किया था और चाबहार एसईजेड में भारतीय निवेश का स्वागत किया था।

विदेश मंत्री ने व्यापार दोहरा कराधान परिहार समझौते को जल्द अंतिम रूप देने पर बल दिया, जिसमें द्विपक्षीय निवेश संरक्षण और संवर्धन समझौता शामिल है और इसके साथ वरीय व्यापार समझौतों पर जल्द वार्ता शुरू करने पर बल दिया। उन्होंने बताया कि भारत दोनों देशों के संबंधित अधिकारियों के बीच हुई सहमति के अनुसार पारस्परिक रूप से कार्यशील बैंकिंग चैनलों के माध्यम से ईरान को तेल के लिए किया गया भुगतान वापस लेने को तैयार था।

दोनों पक्षों ने दोनों देशों की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद संरचनाओं के बीच अच्छे सहयोग पर ध्यान दिया और इस जुड़ाव को गहन बनाने पर सहमति व्यक्त की।

भारत और ईरान के बीच के सांस्कृतिक संबंधों को देखते हुए, दोनों पक्ष मौजूदा सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने और मजबूत करने के लिए सहमत हुए, जिसमें एक दूसरे के देश में ईरान और भारत का सप्ताह मनाने, पांडुलिपियों का प्रकाशन, भाषा, साहित्य और धर्म से संबंधित सम्मेलनों और कार्यक्रमों का आयोजन करना शामिल है। वे आईसीसीआर द्वारा प्रायोजित तेहरान विश्वविद्यालय में हिंदी चेयर स्थापित करने और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम को नए सिरे से शुरू करने पर सकारात्मक रूप से विचार करने के लिए सहमत हुए।

4.6.बी. पीएम मोदी का ईरान दौरा, 22-23 मई 2016

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने 22-23 मई 2016 को ईरान का दौरा किया। उन्होंने 23 मई को सुप्रीम लीडर ग्रैंड अयातुल्ला अली ख़ामेनेई से मुलाकात की और राष्ट्रपति हसन रूहानी के साथ बातचीत की। दौरे के दौरान, निम्न दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए गए थे:

i. भारत-ईरान सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम
ii. सरकारों के बीच नीतिगत वार्ता और विचार मंचों के मध्य संवादों को लेकर भारत सरकार के विदेश मंत्रालय और ईरान के विदेश मामलों के मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन।
iii. विदेश सेवा संस्थान, विदेश मंत्रालय और स्कूल ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस, ईरान के विदेश मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन।
iv. विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में सहयोग पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय एवं विज्ञान, अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के बीच प्रोटोकॉल का कार्यान्वयन।
v. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद और ईरान के इस्लामी सांस्कृतिक और संबंध संगठन के बीच समझौता ज्ञापन।
vi. आईपीजीपीएल (इंडिया पोर्ट्स ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड) और ईरान के आर्य बंदर के बीच बंदरगाह विकास कार्यों के लिए चाबहार बंदरगाह पर द्विपक्षीय अनुबंध।
vii. ईरान की परियोजनाओं पर एक्सिम बैंक और सेंट्रल बैंक ऑफ ईरान के बीच समझौता ज्ञापन।
viii. भारत के ईसीजीसी (एक्सपोर्ट क्रेडिट गारंटी कॉर्पोरेशन लिमिटेड) और ईरान के एक्सपोर्ट गारंटी फंड के बीच समझौता ज्ञापन।
ix. नाल्को (नेशनल एल्युमीनियम कंपनी लिमिटेड) और ईरानी खान और खनन उद्योग विकास और नवीनीकरण संगठन (आईएमआईडीआरओ) के बीच समझौता ज्ञापन।
x. इरकॉन और ईरान के सीडीटीआईसी (परिवहन एवं अवसंरचना कंपनी का निर्माण, विकास) के बीच समझौता ज्ञापन।
xi. भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार और ईरान के राष्ट्र पुस्तकालय और अभिलेखागार संगठन के बीच सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन।

23 मई 2016 को चाबहार संपर्कता कार्यक्रम में भाषण देते हुए, प्रधान मंत्री मोदी ने कहा कि 'व्यापार और पारगमन मार्ग हमारी अपार संपर्कता के यात्रा का केवल एक शुरुआती बिंदु होने चाहिए'। उन्होंने रेखांकित किया कि ईरान, अफ़ग़ानिस्तान और भारत के बीच संपर्कता एजेंडे की पूरी श्रृंखला में, संस्कृति से लेकर वाणिज्य, परंपराओं से लेकर प्रौद्योगिकी, आईटी से लेकर निवेश, रणनीति से लेकर सेवाएं, और लोगों से लेकर राजनीति शामिल होनी चाहिए।

प्रधान मंत्री मोदी और राष्ट्रपति रूहानी एक मजबूत, समकालीन और सहकारी संबंध बनाने के अपने दृढ़ संकल्प में एकजुट थे, जो दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक और सभ्यता संबंधों की ताकत के आधार पर बना है, उनकी भौगोलिक निकटता का लाभ उठाता है, और तेजी से अंतर-निर्भरता की ओर बढ़ती दुनिया की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

दोनों पक्षों ने इस क्षेत्र के भीतर और बाहर बहु-मोडल संपर्कता को बढ़ावा देने में ईरान और भारत की रणनीतिक स्थिति और अद्वितीय भूमिका को पूर्ण रूप से निभाने का निर्णय लिया। उन्होंने उम्मीद जताई कि चाबहार बंदरगाह को विकसित करने में भारत की भागीदारी से द्विपक्षीय सहयोग और क्षेत्रीय संपर्कता का एक नया अध्याय आरम्भ होगा और दोनों देशों के बीच अधिक समुद्री जुड़ाव और सेवाओं को प्रोत्साहन मिलेगा, जिसकी विस्तृत विषय-वस्तु पर संबंधित अधिकारी काम करेंगे।

4.7 इज़राइल

4.7.ए. विदेश मंत्री का इज़राइल दौरा (17-18 जनवरी 2016)

विदेश मंत्री श्रीमती. सुषमा स्वराज ने 17-18 जनवरी 2016 को इज़राइल का आधिकारिक दौरा किया। उनके साथ विदेश मंत्रालय के सचिव (पूर्व) और अन्य अधिकारी भी थे। यह विदेश मंत्री का इज़राइल का प्रथम दौरा था और उन्होंने यह दौरा अक्टूबर 2015 में राष्ट्रपति के इजरायल दौरे के बाद किया था। भारत और इज़राइल घनिष्ठ और बहुपक्षीय संबंध साझा करते हैं।

दौरे के दौरान विदेश मंत्री ने इजरायल के नेता के साथ विचार-विमर्श किया और भारत इज़राइल द्विपक्षीय संबंधों की सम्पूर्ण पहलुओं की समीक्षा की। दोनों पक्ष लोकतंत्र और मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था के मूल्यों में दृढ़ विश्वास रखते हैं। भारत और इज़राइल कृषि, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और शिक्षा के क्षेत्र में भी करीबी संबंध साझा करते हैं। विदेश मंत्री ने अपने दौरे के दौरान इजरायल में रह रही भारतीय समुदाय के साथ भी बातचीत की। इस दौरे ने इज़राइल के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ाया और दोनों पक्षों के बीच संबंधों को और मजबूत किया।

इजरायल के साथ भारत के संबंध व्यापक पश्चिम एशिया क्षेत्र के साथ इसके जुड़ाव का हिस्सा हैं और क्षेत्र के किसी भी देश के साथ इसके संबंधों से स्वतंत्र हैं।

4.7.बी. तेल अवीव में भारतीय समुदाय के स्वागत समारोह में विदेश मंत्री का संबोधन (18 जनवरी 2016)

विदेश मंत्री श्रीमती सुशमा स्वराज ने उल्लेख किया कि भारत और इजरायल ने 1992 में राजनयिक संबंधों की पूर्ण स्थापना के बाद से अब तक के कम समय में एक-साथ मिलकर लंबी दूरी तय की है। उन्होंने कहा कि राजनीतिक स्तर पर भारत की बातचीत भी बढ़ रही है। अगले साल हमारे दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की पूर्ण स्थापना की 25 वीं वर्षगांठ होगी।

उन्होंने हमारे नागरिक समाजों, सांसदों, राय निर्माताओं और महिलाओं के बीच कई और आदान-प्रदानों की आवश्यकता पर ध्यान दिया। आर्थिक संबंध हमारे द्विपक्षीय संबंधों को विकसित करने की कुंजी है। उसने कहा कि दोनों देशों को व्यापार आधारित संबंधों से हटकर ऐसे संबंध बनाने चाहिए जो निवेश, विनिर्माण और सेवाओं पर आधारित हों।

4.8 फिलीस्तीन

4.8.ए. विदेश मंत्री का फिलीस्तीन दौरा (17 जनवरी 2016)

विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने 17 जनवरी 2016 को फिलिस्तीन का राजकीय दौरा किया। विदेश मंत्री के साथ विदेश मंत्रालय के सचिव (पूर्व) और विदेश मंत्रालय के अन्य अधिकारी भी थे। यह पश्चिम एशिया क्षेत्र में विदेश मंत्री का पहला दौरा था और फिलिस्तीन इस क्षेत्र का पहला गंतव्य है, जो अपने-आप में भारत के इस क्षेत्र के देशों के साथ अपने जुड़ाव में फिलिस्तीन के महत्व को दर्शाता है।

अपने दौरे के दौरान विदेश मंत्री ने फिलिस्तीनी के नेता के साथ मुलाकात की और भारत फिलीस्तीनी द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की। फिलिस्तीन राज्य के साथ भारत पारंपरिक रूप से घनिष्ठ संबंध साझा करता है और फिलिस्तीन के साथ क्षमता निर्माण और मानव संसाधन विकास की पहल के माध्यम से सक्रिय रूप से योगदान देता है। इस दौरे ने फिलिस्तीन को भारत के निरंतर राजनैतिक, राजनयिक और विकासात्मक समर्थन की भी पुष्टि की। विदेश मंत्री ने रामल्लाह में फिलिस्तीन डिजिटल लर्निंग एंड इनोवेशन सेंटर का भी उद्घाटन किया।

4.8.बी. भारत-फिलिस्तीन डिजिटल लर्निंग एंड इनोवेशन सेंटर के उद्घाटन पर विदेश मंत्री के संबोधन की मुख्य बिन्दुएँ (17 जनवरी, 2016)

उन्होंने भारत-फिलिस्तीन डिजिटल लर्निंग एंड इनोवेशन सेंटर के उद्घाटन पर अपनी खुशी व्यक्त की और कहा कि यह फिलिस्तीन में अपने भाइयों और बहनों की मदद करने की भारत की प्रतिबद्धता का एक और उदाहरण है। उन्होंने द्विपक्षीय, बहुपक्षीय और क्षेत्रीय मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला पर राष्ट्रपति अब्बास और विदेश मंत्री रियाद अल मल्की के साथ अपनी चर्चा का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि अल-कुद्स विश्वविद्यालय में इस केंद्र की तर्ज पर, भारत गाजा शहर में आईसीटी और नवाचार में उत्कृष्टता का एक और केंद्र बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने रामल्लाह में एक टेक्नो-पार्क विकसित करने की भी बात की।

उन्होंने कहा कि भारत गहरी आर्थिक साझेदारी और भारत और फिलिस्तीन के बीच अकादमिक सहयोग को बढ़ाने की दिशा में काम कर रहा है। उन्होंने सांस्कृतिक संपर्कों और लोगों-से-लोगों का विनिमय अधिक गहन बनाने पर बल दिया, जो हमारे संबंधों का आधार हैं। वर्षों से फिलिस्तीनी के सैकड़ों छात्रों ने सर्वश्रेष्ठ भारतीय संस्थानों में अध्ययन किया है। हमें अपनी दोस्ती को आगे बढ़ाने में उनके अनुभव का दोहन करना चाहिए।

4.8.सी. रामल्लाह में फिलिस्तीन-इंडिया टेक्नो पार्क की स्थापना के लिए भारत और फिलिस्तीन के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर, 31 अक्टूबर, 2016

भारत और फिलिस्तीन ने 31 अक्टूबर, 2016 को रामल्लाह में फिलिस्तीन-इंडिया टेको पार्क की स्थापना के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किया। अक्टूबर, 2015 में भारत के माननीय राष्ट्रपति के फिलिस्तीन दौरे के दौरान, टेक्नो पार्क स्थापित करने की घोषणा की गई थी। भारत सरकार ने पार्क की स्थापना के लिए 12 मिलियन अमेरिकी डॉलर देने की घोषणा की, जिसके लिए 2 वर्षों की अवधि में छमाही आधार पर 3 मिलियन अमेरिकी डॉलर भुगतान किया जाएगा। फिलिस्तीनी पक्ष ने परियोजना के लिए भूमि उपलब्ध कराई है। एक बार काम पूरा होने के बाद, टेक्नोपार्क फिलिस्तीन में सम्पूर्ण आईटी सुविधाओं वाले एक आईटी हब के रूप में काम करेगा, और आईटी से संबंधित सभी सेवा आवश्यकताओं के लिए एक-स्टॉप समाधान प्रदान

करेगा, अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी प्रदान करेगा, आईटी कंपनियों और विदेशी कंपनियों की मेजबानी करेगा, स्थानीय व्यापार बढ़ाएगा, विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थानों की भी मेजबानी करेगा।

यह सहायता फिलिस्तीनी कारण का समर्थन करने के लिए भारत सरकार की मजबूत प्रतिबद्धता का हिस्सा है। यह परियोजना युवा फिलिस्तीनियों के लिए रोजगार सृजन, व्यापार और अन्य अवसरों में मदद करेगी।

4.9 क़तर

4.9.ए. भारत के प्रधान मंत्री ने 04-05 जून, 2016 को क़तर का दौरा किया। इस दौरे के दौरान हस्ताक्षरित संयुक्त वक्तव्य में निम्नलिखित मुख्य बिन्दुएँ शामिल हैं:[8]

- दोनों नेताओं ने व्यापार और निवेश, ऊर्जा, रक्षा और जनशक्ति के क्षेत्र में अच्छी तरह से कार्यशील द्विपक्षीय संस्थागत तंत्र की सराहना की और बल दिया कि दोनों देशों के बीच सहयोग को अधिक मजबूत बनाने के लिए क्षेत्रीय संयुक्त कार्य समूहों को नियमित रूप से बैठकें करती रहनी चाहिए। दोनों पक्ष नियमित रूप से सभी द्विपक्षीय मामलों और पारस्परिक हित के क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों की समीक्षा करने के लिए एक अंतर-मंत्रालयी उच्च स्तरीय संयुक्त समिति का गठन करने पर सहमत हुए।
- भारत ने फरवरी और मार्च 2016 में इंटरनेशनल फ्लीट रिव्यू और डीईएफईओक्सपो भारत में क़तर की भागीदारी और क़तर के प्रतिनिधिमंडलों द्वारा भारतीय नौसेना और तटरक्षक प्रतिष्ठानों की बढ़ती हुई दौरों की सराहना की। क़तर ने भारत के अपने उच्च स्तर की भागीदारी और भारतीय नौसेना के द्वारा मार्च 2016 में डीआईएमडीईएक्स के दौरान स्वदेशी डिजाइन निर्देशित मिसाइल युद्धपोत निर्माण और साथ ही साथ भारतीय नौसेना के जहाजों और तटरक्षक का नियमित रूप से सद्भावना दौरे के लिए धन्यवाद दिया। क़तर ने भारत और क़तर में सशस्त्र बलों और तटरक्षक बल के कर्मियों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालन के प्रस्ताव की सराहना की।
- दोनों नेताओं ने पुष्टि की कि आतंकवाद को किसी भी धर्म, सभ्यता या जातीय समूह के साथ संबद्ध नहीं करना चाहिए।
- दोनों नेताओं ने आतंकवाद के प्रायोजकों और समर्थकों को अलग करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला और इस बात पर सहमति व्यक्त की कि ऐसी सभी संस्थाओं के खिलाफ तत्काल कार्रवाई की जाए, जो आतंकवाद का समर्थन करती हैं और इसे नीति के एक साधन के रूप में उपयोग करना चाहिए।

[8]http://mea.gov.in/outoging-visit-detail.htm?26870/IndiaQatar+Joint+Statement+during+the+visit+of+Prime+Minister+to+Qatar

- दोनों पक्षों ने साइबर सुरक्षा में सहयोग को बढ़ावा देने के तरीकों और साधनों पर चर्चा की।
- कतरी पक्ष ने फीफा 2022 विश्व कप की तैयारी में क़तर में अवसंरचना विकास परियोजनाओं में भारतीय कंपनियों की भागीदारी और "क़तर के लिए दृष्टि 2030" के तहत विकास योजनाओं का स्वागत किया।
- उन्होंने क़तर निवेश प्राधिकरण और भारत सरकार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय अवसंरचना और निवेश कोष के बीच सहयोग के महत्व पर विचार-विमर्श किया। दोनों नेताओं ने राष्ट्रीय अवसंरचना और निवेश कोष में कतारी संस्थागत निवेशकों की भागीदारी के लिए रूपरेखा समझौते पर हस्ताक्षर करने का स्वागत किया।

- दोनों पक्षों ने ऊर्जा क्षेत्र में बढ़ते द्विपक्षीय व्यापार पर संतोष व्यक्त किया चूंकि क़तर भारत को एलएनजी और एलपीजी का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है।
- भारतीय पक्ष ने अपनी ऊर्जा कंपनियों के हित और क़तर में क़तर पेट्रोलियम और अन्य कंपनियों के साथ आपसी हितों के अवसरों पर प्रकाश डाला, ताकि संयुक्त रूप से नए क्षेत्रों की खोज की जा सके और खोजे गए तेल और गैस परिसंपत्तियों का अच्छी तरह से विकास और क़तर में उपलब्ध प्राकृतिक गैस और कच्चे तेल की संसाधनों का दोहन किया जा सके।
- भारतीय पक्ष ने नई "हाइड्रोकार्बन अन्वेषण एवं लाइसेंसिंग" नीति और "डिस्कवर स्मॉल फील्ड्स" नीति के तहत भारत में अन्वेषण खंडों के लिए बोली लगाकर क़तर को भारत के अन्वेषण और उत्पादन क्षेत्र में निवेश करने के लिए आमंत्रित किया।
- भारतीय पक्ष ने रणनीतिक सुरक्षित भंडारण की सुविधा के भारत में निर्माण के दूसरे चरण में भाग लेने के लिए क़तर को आमंत्रित किया है।
- दोनों नेताओं ने वित्तीय सेवाओं के क्षेत्र – बैंकिंग, बीमा और पूंजी बाजार में, द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करने की जरूरत पर विचार-विमर्श किया। उन्होंने दोनों देशों के वित्तीय संस्थानों जैसे कि भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड और संबंधित केंद्रीय बैंकों के बीच सहयोग को विस्तार करने का निर्णय लिया है।
- दोनों नेताओं ने क़तर के राज्य सरकार और भारतीय गणराज्य की सरकार बीच स्वास्थ्य के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जाने का स्वागत किया।
- प्रधानमंत्री मोदी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन के गठन की पहल की क़तर ने सराहना की है। उन्होंने इस एलायंस को दुनिया भर में नई सौर प्रौद्योगिकी को आगे बढ़ाने के महत्व के रुप में स्वीकार किया।
- प्रधान मंत्री मोदी ने 2019 में क़तर-भारत वर्ष संस्कृति को मनाने के फैसले के लिए क़तर संग्रहालय की सराहना की। दोनों नेताओं ने कस्टम मामलों में सहयोग और पारस्परिक सहायता के समझौते पर हस्ताक्षर किए जाने का स्वागत किया; पर्यटन सहयोग पर समझौता ज्ञापन; और क़तर राज्य की सरकार और भारतीय गणराज्य की सरकार के बीच युवा और खेल के क्षेत्र में समझौता ज्ञापन के लिए पहला कार्यकारी कार्यक्रम।
- दोनों नेताओं ने नोट किया कि भारत-क़तर संबंधों के मूल में लोगों से लोगों के बीच संपर्क विद्यमान थे और दोनों पक्ष इन संबंधों का पोषण करना जारी रखेंगे। दोनों नेताओं ने कौशल विकास और योग्यता को पहचानने में सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जाने का स्वागत किया।
- प्रधानमंत्री मोदी ने महामहिम अमीर को उत्साह सहित स्वागत और आतिथ्य सत्कार के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया। उन्होंने महामहिम अमीर को पारस्परिक रूप से सुविधाजनक समय पर भारत का आधिकारिक दौरा करने के लिए आमंत्रित किया जो उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

4.9.बी. क़तर के प्रधानमंत्री का भारत दौरा (2-3 दिसंबर 2016)

- प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के निमंत्रण पर, 2-3 दिसंबर, 2016 को क़तर प्रधान मंत्री और क़तर राज्य के आंतरिक मंत्री, महामहिम शेख अब्दुल्ला बिन नासिर बिन खलीफा अल-थानी ने वरिष्ठ मंत्रियों और एक उच्च-स्तरीय प्रतिनिधिमंडल के साथ भारत का आधिकारिक दौरा किया।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने एक प्रतिनिधिमंडल स्तर की बैठक की और द्विपक्षीय संबंधों की स्थिति की समीक्षा की और सदियों पुराने व्यापार और लोगों-से-लोगों के संपर्क के आधार पर दोनों देशों के बीच घनिष्ठ, बहुआयामी संबंधों को आगे बढ़ाने और समेकित करने के तरीकों और साधनों पर विचारों का आदान-प्रदान किया।

- दोनों पक्षों ने दोनों तरफ की बुनियादी ढांचा विकास परियोजनाओं में भागीदारी का स्तर बढ़ाने के लिए भी सहमति व्यक्त की और नियमित और समयबद्ध तरीके से उपलब्ध निवेश के अवसरों पर जानकारी का आदान-प्रदान करने का बीड़ा उठाया।
- उपलब्ध अवसरों, विशेष रूप से बुनियादी ढांचे, विशेष आर्थिक क्षेत्रों, नागरिक उड्डयन, ऊर्जा, पेट्रोकेमिकल्स, स्वास्थ्य और फार्मास्यूटिकल्स, सूचना प्रौद्योगिकी, शिक्षा, पर्यटन और कृषि के क्षेत्र में पूर्ण लाभ लेने के लिए इन क्षेत्रों पर बल दिया। विशेष प्रशिक्षण, सूचना के आदान-प्रदान और रक्षा उपकरणों के संयुक्त उत्पादन के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाकर नवंबर 2008 में हस्ताक्षरित रक्षा सहयोग समझौते द्वारा प्रदान की गई रूपरेखा पर निर्माण के लिए व्यावहारिक कदम उठाने पर भी बल दिया गया था।
- इस दौरे ने दोनों पक्षों को पश्चिम एशिया, मध्य पूर्व और दक्षिण एशिया में सुरक्षा स्थिति के विशेष संदर्भ के साथ, पारस्परिक हित के क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान करने का एक और अवसर प्रदान किया।

4.9.सी. समझौतें/समझौता ज्ञापन

- तीन समझौतों/समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए, जिसमें राजनयिक, विशेष और आधिकारिक पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा की आवश्यकता पर छूट और साइबर स्पेस में तकनीकी सहयोग और साइबर अपराध से मुकाबला में समझौता ज्ञापन; और पर्यटकों और व्यापारियों के लिए ई-वीजा हेतु आशय पत्र के अलावा क़तर की वितरण एवं बपौती की सर्वोच्च समिति और भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के बीच समझौता ज्ञापन शामिल हैं। अलग से, क़तर पोर्ट्स मैनेजमेंट कंपनी ("मवानी क़तर") और इंडियन पोर्ट्स ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड के बीच एक समझौता ज्ञापन संपन्न हुआ।
- दौरे के दौरान, क़तर के प्रधान मंत्री ने माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी से मुलाकात की।
- दौरे के दौरान भारत के गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने क़तर के प्रधान मंत्री से मुलाकात की। दोनों पक्षों ने आतंकवाद और कट्टरता का मुकाबला करने के लिए मिलकर काम करने का संकल्प लिया। उन्होंने आतंकवाद-विरोध, खुफिया साझाकरण और आतंकवाद-वित्तपोषण और धन शोधन के अलावा अन्य राष्ट्र-पार अपराधों का मुकाबला करने पर सहयोग देने की चर्चा की।
- क़तर के प्रधान मंत्री के भारत दौरे ने उच्चतम स्तर पर नियमित दौरों की परंपरा और दोनों देशों के नेताओं के बीच विचारों के व्यापक आदान-प्रदान को मजबूत किया, क्योंकि हम 21 वीं सदी के लिए एक मजबूत साझेदारी का निर्माण करना चाहते हैं।

4.10 सऊदी अरब

4.10.ए. सऊदी अरब के विदेश मंत्री का भारत का आधिकारिक दौरा (07-08 मार्च, 2016), 07 मार्च, 2016

माननीय विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के निमंत्रण पर, सऊदी अरब साम्राज्य के विदेश मंत्री महामहिम श्री अदेल बिन अहमद अल-जुबिर ने 7-8 मार्च, 2016 को नई दिल्ली में अपना पहला आधिकारिक दौरा किया।

इस दौरे के दौरान, दोनों मंत्रियों ने द्विपक्षीय संबंधों के सम्पूर्ण पहलुओं पर चर्चा की और साथ ही आपसी हित के क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर भी चर्चा की। सऊदी अरब द्विपक्षीय व्यापार में चौथा सबसे बड़ा साझेदार था, जिसने 2014-15 में भारत के साथ 40 बिलियन अमेरिकी डॉलर

का व्यापार किया। सऊदी अरब भारत में कच्चे तेल का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता भी है जो भारत में कच्चे तेल के कुल आयात का एक-पांचवा भाग तेल आयात करता है।

भारतीय समुदाय सऊदी अरब में रहने वाले सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय हैं और उनके मेजबान देश की प्रगति और विकास में उनका सकारात्मक योगदान अच्छी तरह से पहचाना जाता है। वर्तमान में सऊदी अरब में 2.96 मिलियन से भी अधिक भारतीय नागरिक काम कर रहे हैं।

4.10.बी. प्रधान मंत्री का सऊदी अरब साम्राज्य का आधिकारिक दौरा (2-3 अप्रैल, 2016), 22 मार्च, 2016

प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने महाराज सलमान बिन अब्दुलाज़ीज़ अल-सऊद के निमंत्रण पर 2-3 अप्रैल, 2016 को सऊदी अरब साम्राज्य का आधिकारिक दौरा किया।

2010 में तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह की रियाद के दौरे के बाद भारत की ओर से सऊदी अरब के लिए यह सर्वोच्च-स्तरीय दौरा था।

दौरे के दौरान, प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने महाराज सलमान बिन अब्दुलाज़ीज़ अल-सऊद के साथ पारस्परिक हित के द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मुद्दों पर चर्चा की।

4.10.सी दौरे के दौरान हस्ताक्षरित संयुक्त वक्तव्य में निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं का उल्लेख किया गया था:

- दोनों नेताओं ने दोनों देशों के बीच उच्च-स्तरीय दौरों के नियमित आदान-प्रदान पर संतोष व्यक्त किया, यह रेखांकित करते हुए कि दिल्ली घोषणा (2006) और रियाद घोषणा (2010) ने पारस्परिक रूप से लाभप्रद द्विपक्षीय संबंधों को 'रणनीतिक साझीदार' के स्तर तक बढ़ा दिया है। दोनों नेताओं ने दोनों देशों की सुरक्षा और समृद्धि के लिए खाड़ी और हिंद महासागर क्षेत्रों में समुद्री सुरक्षा को मजबूत करने के लिए सहयोग बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की। इसके अलावा, वे प्राकृतिक आपदाओं और संघर्ष स्थितियों में मानवीय सहायता और निकासी के लिए द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने पर सहमत हुए।
- दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय स्तर पर और संयुक्त राष्ट्र की बहुपक्षीय प्रणाली में अंतर्गत, आतंकवाद का मुकाबला करने की आवश्यकता का कड़ा समर्थन किया।
- दोनों पक्षों ने धन शोधन, संबंधित अपराधों और आतंकवाद के वित्तपोषण से संबंधित खुफिया जानकारी के आदान-प्रदान में सहयोग पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जाने का स्वागत किया।
- दोनों नेताओं ने अपनी संबंधित एजेंसियों को कट्टरता और नफरत के लिए उकसाने, घुसपैठ, और राजनितिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए आतंकवाद को सही ठहराने वाली समूहों एवं देशों द्वारा धर्म का दुरुपयोग करने का मुकाबला करने के प्रयासों में समन्वय करने का निर्देश दिया।
- दोनों नेताओं ने दिसंबर 2015 को नई दिल्ली में सऊदी भारत व्यवसाय परिषद की बैठक का स्वागत किया और सहमति व्यक्त की कि यह परिषद व्यापार और आर्थिक सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए एक उपयोगी मंच है।
- दोनों नेताओं ने सऊदी अरब सामान्य निवेश प्राधिकरण और इन्वेस्ट इंडिया के बीच मसौदा समझौते पर हस्ताक्षर किए जाने का स्वागत किया, जिसका उद्देश्य दोनों देशों में निजी क्षेत्रों द्वारा निवेश को बढ़ावा देना है।

- दोनों नेताओं ने सामान्य वर्ग के कामगारों की भर्ती के लिए श्रम सहयोग के समझौते पर हस्ताक्षर करने का स्वागत किया। दोनों पक्षों ने नियमित आधार पर वाणिज्य दूतावास संबंधी मुद्दों पर चर्चा करने के लिए भारत-सऊदी अरब संयुक्त आयोग की छत्र के अधीन वाणिज्य दूतावास संबंधी मुद्दों पर एक संयुक्त कार्यदल की स्थापना करने का भी स्वागत किया।

3 अप्रैल, 2016 को दोनों देशों के बीच कई समझौतें और समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किया गया था।

- सऊदी अरब साम्राज्य के श्रम मंत्रालय और भारत गणराज्य के विदेश मंत्रालय के बीच सामान्य श्रेणी के श्रमिकों की भर्ती के लिए श्रम सहयोग पर समझौता।
- भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) और सऊदी मानक, मापिकी और गुणवत्ता संगठन (एसएएसओ) के बीच तकनीकी सहयोग कार्यक्रम।
- भारत गणराज्य के हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद (ईपीसीएच) और सऊदी पर्यटन और राष्ट्रीय विरासत आयोग हस्तशिल्प के क्षेत्र में सहयोग के लिए कार्यकारी योजना।
- वित्तीय खुफिया इकाई-भारत और वित्तीय खुफिया इकाई-सऊदी अरब के बीच धन शोधन, आतंकवाद वित्तपोषण और संबंधित अपराधों से संबंधित खुफिया जानकारियों के आदान-प्रदान पर समझौता ज्ञापन।
- इन्वेस्ट इंडिया और सऊदी अरब सामान्य निवेश प्राधिकरण (एसएजीआईए) के बीच निवेश प्रोत्साहन सहयोग के लिए रूपरेखा।

4.11 ओमान की सल्तनत

4.11.ए. रक्षा मंत्री मनोहर पर्रीकर ने ओमान का दौरा किया, 20-22 मई 2016

रक्षा मंत्री मनोहर पर्रीकर ने 20 से 22 मई 2016 को ओमान की सल्तनत का आधिकारिक दौरा किया।

दौरे के दौरान, रक्षा मंत्री ने उप प्रधान मंत्री सैय्यद फहद बिन महमूद अल सैद, रॉयल ऑफिस के मंत्री लेफ्टिनेंट जनरल सुल्तान बिन मोहम्मद अल नु'अमानी से मुलाकात की और रक्षा मामलों के मंत्री बादेर बिन सऊद बिन हरीब अल बुसैदी के साथ द्विपक्षीय वार्ता की। बैठकों के दौरान द्विपक्षीय रक्षा सहयोग से लेकर सैन्य आदान-प्रदान में वृद्धि सहित सभी पहलुओं पर चर्चा की गई। दोनों पक्षों ने पारस्परिक हित के क्षेत्रीय विकास पर विचारों का आदान-प्रदान भी किया।

मंत्री ने मस्कट में स्थित सैन्य प्रौद्योगिकी कॉलेज और सुल्तान सशस्त्र बल संग्रहालय का दौरा किया। उन्होंने आईएनएस दिल्ली, आईएनएस दीपक और आईएनएस तर्कश के ओमान आगमन की सद्भावना को चिह्नित करने के लिए सुल्तान कबूस बंदरगाह पर आयोजित एक स्वागत समारोह में भी भाग लिया।

रक्षा सहयोग पर चार समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए:

i. ओमान की सल्तनत के रक्षा मंत्रालय और भारत गणराज्य के रक्षा मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन;
ii. समुद्र में समुद्री अपराध रोकथाम के क्षेत्र में रॉयल ओमान पुलिस (तटरक्षक) और भारतीय तटरक्षक के बीच समझौता ज्ञापन;

iii. समुद्री मुद्दों पर भारत गणराज्य की सरकार और ओमान की सल्तनत की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन; तथा

iv. उड़ान सुरक्षा सूचना विनिमय पर, ओमान की रॉयल वायु सेना द्वारा प्रतिनिधित्व ओमान सल्तनत की सरकार और भारतीय वायु सेना द्वारा प्रतिनिधित्व भारत गणराज्य की सरकार के बीच प्रोटोकॉल।

भारत और ओमान ने उल्लेख किया कि रक्षा सहयोग उनकी द्विपक्षीय रणनीतिक साझेदारी का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो ऐतिहासिक संबंधों के साथ-साथ आपसी विश्वास और साझा हितों पर आधारित है। इस बात पर सहमति बनी कि दोनों पक्ष अपने मौजूदा द्विपक्षीय रक्षा सहयोग का और अधिक विस्तार और समेकन करेंगे।

4.12 सीरिया

4.12.ए. सीरियाई अरब गणराज्य के उप प्रधान मंत्री और विदेश मामलों के मंत्री का भारत दौरा (11-14 जनवरी, 2016)

महामहिम श्री वालिद अल मौअलीम, सीरियाई अरब गणराज्य के उप प्रधान मंत्री और विदेश मामलों के मंत्री ने 11 से 14 जनवरी 2016 को भारत का आधिकारिक दौरा किया।

4.13 तुर्की

4.13.ए. विदेश राज्य मंत्री जनरल वी के सिंह ने 26 अप्रैल, 2016 को इस्तांबुल में आयोजित हार्ट ऑफ एशिया इस्तांबुल प्रक्रिया की वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक में भाग लिया। तेह के उद्घाटन संबोधन में उन्होंने निम्नलिखित पर प्रकाश डाला:

- 2016 हार्ट ऑफ एशिया प्रक्रिया का विषय "चुनौतियों को संबोधित करना, समृद्धि प्राप्त करना" है। हार्ट ऑफ एशिया प्रोसेस का सहभागी देश होने के नाते, भारत अन्य देशों सहित इस बात से अवगत है कि हार्ट ऑफ एशिया में अफ़ग़ानिस्तान की अवस्थिति के कारण यहाँ की परिस्थितियाँ क्षेत्रीय शांति, सुरक्षा और आर्थिक विकास पर गहरा प्रभाव डालती हैं।
- भारत को हार्ट ऑफ एशिया प्रोसेस का एक सक्रिय सहभागी बनने का सम्मान मिला है और व्यापार, वाणिज्य और निवेश के अवसरों में एक अग्रणी देश बनने का अवसर मिला है। यह सीबीएम अधिक क्षेत्रीय आर्थिक संपर्क और सहयोग का उद्देश्य रखता है। इसका उद्देश्य अफ़ग़ानिस्तान के लिए एक अनुकूल परिस्थितियों बनाना है ताकि अफ़ग़ानिस्तान व्यापार से सहारे फले-फूले और सहायता पर निर्भर न रहे।
- यह क्षेत्र, क्षेत्रीय देशों के मध्य व्यापार, वाणिज्य और निवेश को बढ़ाने के सभी प्रयासों का केंद्र बिंदु होना चाहिए। बेहतर संपर्कता अधिक निवेश और निजी क्षेत्र की भागीदारी को संभव बना सकती है। यह अफ़ग़ानिस्तान के व्यापार और पारगमन क्षमता का पूरी तरह से उपयोग करने में मदद कर सकता है।

4.14 संयुक्त अरब अमीरात (यूएई)

4.14.ए. अबू धाबी के क्राउन प्रिंस और यूएई सशस्त्र बलों के डिप्टी सुप्रीम कमांडर का भारत दौरा

श्री नरेंद्र मोदी, भारत गणराज्य के प्रधान मंत्री के निमंत्रण पर अबू धाबी के क्राउन प्रिंस महामहिम शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान और यूएई सशस्त्र बलों के डिप्टी सुप्रीम कमांडर ने 10-12 फरवरी, 2016 को भारत का अपना पहला राजकीय दौरा किया। दौरे के दौरान निम्नलिखित क्षेत्रों में कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए:

- यूएई के आंतरिक मंत्रालय और भारतीय गणराज्य के गृह मंत्रालय के बीच साइबर स्पेस में तकनीकी सहयोग और साइबर अपराध का मुकाबला करने पर समझौता ज्ञापन।
- भारत गणराज्य की सरकार और यूएई सरकार के बीच भारत में अवसंरचना निवेश में संयुक्त अरब अमीरात के संस्थागत निवेशकों की भागीदारी को सुगम बनाने के लिए एक समझौता ज्ञापन।
- व्यापक परियोजनाओं, निवेश के माध्यम से द्विपक्षीय सहयोग प्रदान करने और नवीकरणीय और स्वच्छ ऊर्जा में अनुसंधान एवं विकास में सहयोग के लिए सामान्य रूपरेखा समझौता।
- शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए बाह्य अंतरिक्ष की खोज और उपयोग में सहयोग के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (आईएसआरओ) और संयुक्त अरब अमीरात अंतरिक्ष एजेंसी के बीच समझौता ज्ञापन। यह समझौता ज्ञापन अंतरिक्ष विज्ञान, प्रौद्योगिकी और सुदूर संवेदीकरण सहित अन्य अनुप्रयोगों में सहयोग; उपग्रह संचार और उपग्रह आधारित नौवहन के सहयोग के लिए एक रूपरेखा स्थापित करता है।
- भारतीय बीमा विनियामक प्राधिकरण (आईआरडीए) और यूएई के बीमा प्राधिकरण के बीच द्विपक्षीय सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन। इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य संबंधित प्राधिकरणों के बीच सहयोग की एक रूपरेखा बनाने और अपने संबंधित कानूनों और नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए नियामक और प्रासंगिक पर्यवेक्षी सूचनाओं के आदान-प्रदान के माध्यम से आपसी समझ को बढ़ाने के माध्यम से बीमा पर्यवेक्षण के क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देना है।
- भारत और यूएई के बीच सांस्कृतिक सहयोग के लिए कार्यकारी कार्यक्रम (ईपीसीसी)। सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम 2016 - 2018 मौजूदा द्विपक्षीय सांस्कृतिक समझौते (1975) का अनुसरण करता है और नए ईपीसीसी के तहत कई सांस्कृतिक विनिमय गतिविधियाँ प्रदान करता है।
- कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई), भारत सरकार और राष्ट्रीय योग्यता प्राधिकरण (एनक्यूए), संयुक्त अरब अमीरात सरकार के बीच कौशल विकास और योग्यता को पहचानने के लिए सहयोग पर आशय पत्र। इस आशय पत्र में कौशल विकास और योग्यता की परस्पर पहचान पर सहयोग के बारे में लिखा गया था।
- दुबई आर्थिक परिषद (डीईसी) और एक्सपोर्ट-इंपोर्ट बैंक ऑफ इंडिया के बीच समझौता ज्ञापन। इस समझौता ज्ञापन में दोनों पक्षों द्वारा व्यापार और व्यवसाय के अवसरों पर जानकारी का आदान-प्रदान करने और दुबई सरकार द्वारा भारतीय वस्तुओं और सेवाओं की खरीद को सुविधाजनक बनाने का लक्ष्य बढ़ाने के प्रावधान हैं।
- भारतीय रिज़र्व बैंक और संयुक्त अरब अमीरात के केंद्रीय बैंक के बीच भारतीय रुपया (आईएनआर)/यूएई दिरहम (एईडी) द्विपक्षीय मुद्रा विनिमय व्यवस्था के लिए समझौता ज्ञापन। यह समझौता ज्ञापन भारतीय रिज़र्व बैंक और संयुक्त अरब अमीरात के केंद्रीय बैंक के बीच मुद्रा विनिमय व्यवस्था के माध्यम से द्विपक्षीय वित्तीय संबंधों को बढ़ावा देता है।

4.14.बी. रक्षा मंत्री मनोहर पर्रीकर ने यूएई का दौरा किया, 22-23 मई 2016

रक्षा मंत्री मनोहर पर्रीकर ने 22 से 23 मई 2016 को यूएई का दौरा किया। उन्होंने अबू धाबी के क्राउन प्रिंस और यूएई सशस्त्र बलों के डिप्टी सुप्रीम कमांडर शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान और विदेश मंत्री शेख अब्दुल्ला बिन जायद अल नाहयान, और रक्षा राज्य मंत्री श्री मोहम्मद अहमद अल बोवारदी से मुलाकातें की। उन्होंने उनके साथ द्विपक्षीय रक्षा सहयोग और पारस्परिक हित के क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा की। दोनों पक्षों के बीच गोपनीय

जानकारियों की आपसी सुरक्षा पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया। मंत्री ने यूएई में रहने वाली भारतीय समुदाय के साथ भी बातचीत की।

4.14.सी. विदेश राज्य मंत्री श्री एम जे अकबर का संयुक्त अरब अमीरात का आधिकारिक दौरा (18-20 अक्टूबर, 2016)

माननीय विदेश राज्य मंत्री श्री एम जे अकबर ने 18-20 अक्टूबर, 2016 को संयुक्त अरब अमीरात का अपना पहला आधिकारिक दौरा किया।

दौरे के दौरान, उन्होंने अपने समकक्ष यूएई नेता से मुलाकात की और पारस्परिक हित के द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मामलों को शामिल करते हुए आधिकारिक चर्चा की। इसके अलावा, उन्होंने मुख्य वक्ता के रूप में 19-20 अक्टूबर को दुबई में आयोजित भारत-यूएई आर्थिक मंच के दूसरे संस्करण में भी भाग लिया।

भारत का संयुक्त अरब अमीरात के साथ घनिष्ठ और बहुपक्षीय द्विपक्षीय संबंध हैं, जो नियमित उच्च-स्तरीय दौरों और लोगों-से-लोगों के विस्तृत संपर्क पर आधारित है। अगस्त 2015 में माननीय प्रधान मंत्री, श्री नरेंद्र मोदी के हालिया यूएई दौरे और फरवरी 2016 में अबू धाबी के क्राउन प्रिंस महामहिम शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान के हालिया भारत दौरे ने इस संबंध को विस्तृत कर एक व्यापक रणनीतिक साझेदारी में बदल दिया है।

2015-16 में हमारी सु-संतुलित द्विपक्षीय व्यापार 50 बिलियन अमेरिकी डॉलर रही है, जो संयुक्त अरब अमीरात को हमारा तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बनाता है। यूएई प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के मामले में भारत में सबसे बड़े निवेशकों में से एक है। यह भारत की ऊर्जा सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देता है और 2015-16 में भारत में कच्चे तेल का पांचवा सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है।

लगभग 2.6 मिलियन मजबूत और जीवंत भारतीय समुदाय, संयुक्त अरब अमीरात का सबसे बड़ा प्रवासी समूह बनता है। उनके मेजबान देश के विकास में उनका सकारात्मक और सराहनीय योगदान हमारे उत्कृष्ट द्विपक्षीय जुड़ाव का एक महत्वपूर्ण कारक रहा है।

यह दौरा संयुक्त अरब अमीरात के साथ हमारे पारस्परिक रूप से लाभप्रद द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने का एक उपयोगी अवसर प्रदान करेगा।

4.14.डी. भारत-यूएई व्यापार मंच, दुबई में विदेश राज्य मंत्री एम जे अकबर का संबोधन (20 अक्टूबर, 2016)

हमारे आर्थिक मंच पर भारत और यूएई के बौद्धिक और व्यापारिक इलीट को संबोधित करने का सम्मान प्राप्त हुआ है। भारत और यूएई एक ऐसे संबंध से जुड़ा है जो समुद्री व्यापार जितना पुराना है, जो हमारे मूल्यों की तरह दृढ़ है, हमारी विरासत की तरह शक्तिशाली और हमारी दोस्ती की तरह जीवंत है। साथ में, हम अपने क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में एक नया आयाम जोड़ सकते हैं और 21 वीं सदी को एक एशियाई युग में बदलने में मदद कर सकते हैं।

पिछले साल अगस्त में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के यूएई में परिवर्तनकारी दौरे ने इस नए भविष्य की नींव को मजबूत किया। यह विशेष और रणनीतिक संबंध एक और बड़ी छलांग लगाएगा, जब

अबू धाबी के क्राउन प्रिंस महामहिम शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान अगले साल जनवरी में हमारे गणतंत्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली आएंगे।

हमारे नेताओं ने निवेश के लिए 75 बिलियन अमेरिकी डॉलर का लक्ष्य रखा है; यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम एक दृश्यमान समय सीमा के भीतर उस दृश्य को वास्तविकता में बदल दें।

5. अफ्रीका

वर्ष 2016 में अफ्रीका को भारत के राजनय में केंद्र स्थान लेते हुए देखा गया। भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और प्रधान मंत्री द्वारा अफ्रीका के विभिन्न क्षेत्रों में किए गए उच्च स्तरीय दौरों ने संबंधों को एक नया आवेग दिया है। दौरों में अफ्रीका के विभिन्न क्षेत्रों के 12 देशों को शामिल किया गया। राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने एंग्लोफोन और फ्रैंकोफ़ोन पश्चिम अफ्रीकी और दक्षिणी अफ्रीकी देशों, घाना, कोटे डी इवोर और नामीबिया का दौरा किया। उपराष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी ने अरब और पश्चिम अफ्रीकी देशों मोरक्को, ट्यूनीशिया अल्जीरिया, नाइजीरिया और माली का दौरा किया। प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीकी हिंद महासागर के देशों, मोज़ाम्बिक, दक्षिण अफ्रीका, तंज़ानिया और केन्या का दौरा किया। यह अभूतपूर्व राजनय पहुँच अक्टूबर, 2015 में नई दिल्ली में तीसरे भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन (आईएएफएस-III) के सफल आयोजन के लिए अफ्रीका के साथ एक सतत संपर्क बनाए रखने के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को इंगित करता है। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि इनमें से अधिक़तर दौरे एक लंबे अंतराल के बाद की गईं। विशेष रूप से, पश्चिम और उत्तरी अफ्रीकी देशों के मामले में यह देखा जाता है कि बढ़ते आर्थिक संबंधों के बावजूद, दोनों पक्षों की तरफ से उच्च स्तरीय दौरों में कमी संबंधों की एक अछूती कड़ी बनी रहीं। इस संदर्भ में राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति द्वारा पश्चिम और उत्तरी अफ्रीकी क्षेत्र के देशों के दौरों का अत्यधिक महत्व है।

5.1 घाना

राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी का घाना दौरा

राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने 12-14 जून, 2016 को घाना का दौरा किया। यह भारत के राष्ट्रपति द्वारा पहला राजकीय दौरा था। भारत के राष्ट्रपति के आगमन पर घाना गणराज्य के उप-राष्ट्रपति महामहिम क्वेसी बेकोए अमिसाह-आर्थर, घाना गणराज्य के विदेश मंत्री माननीय हन्ना सेर्वाह तेत्तेह और घाना सरकार के अन्य मंत्रियों, वरिष्ठ नेताओं और अधिकारियों ने उनका स्वागत किया। उन्हें 21 तोपों की सलामी दी गई और गार्ड ऑफ ऑनर का निरीक्षण किया गया।

दौरे के दौरान राष्ट्रपति मुखर्जी ने घाना विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी की एक प्रतिमा का अनावरण किया और फ्लैगस्टाफ हाउस, घाना के राष्ट्रपतीय परिसर में एक पौधारोपण भी किया, जो देश में उनकी पहली यात्रा के निशान के रूप में भारतीय सहायता से निर्मित एक प्रतिष्ठित इमारत है। उन्होंने भारत-घाना संयुक्त व्यापार मंच, और घाना विश्वविद्यालय, लेगॉन में छात्रों और शिक्षकों की एक सभा को संबोधित किया। उच्चायुक्त, महामहिम श्री के जीवसागर द्वारा आयोजित स्वागत समारोह में उन्होंने घाना में भारतीय समुदाय के साथ भी बातचीत की।

तीन समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए और वे हैं:

- राजनयिक और आधिकारिक पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा की आवश्यकता से छूट

- एक संयुक्त आयोग की स्थापना।
- विदेशी सेवा संस्थान, विदेश मंत्रालय, भारत गणराज्य एवं विदेश मंत्रालय और क्षेत्रीय एकीकरण, घाना गणराज्य के बीच समझौता ज्ञापन।

5.1.ए. घाना के राष्ट्रपति द्वारा आयोजित राजकीय भोज, घाना विश्वविद्यालय और भारत-घाना संयुक्त मंच में राष्ट्रपति मुखर्जी के संबोधन की कुछ मुख्य बिन्दुएँ नीचे प्रस्तुत हैं:

भारत-घाना के भाईचारे का पोषण उनके लोगों की साझा आकांक्षाओं से होता है और उनके संस्थापक पिताओं की दृष्टि से निर्देशित होता है।

भारत, जो तीन दशकों से आतंकवाद का शिकार रहा है, घाना की चिंता को साझा करता है कि यह एक वैश्विक खतरा बन गया है। घाना द्वारा इस चुनौती का सामना करने के समय भारत इसके साथ एकजुट होकर खड़ा है।

भारत के क्षमता निर्माण कार्यक्रम – भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम (आईटीईसी) और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) छात्रवृत्ति योजना – पूरे अफ्रीका में घर-घर में लिए जाने वाले नाम बन गए हैं। हर साल, घाना के 250 सरकारी और अर्ध-सरकारी अधिकारी भारत में प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं, जबकि लगभग 20 विद्वान छात्रवृत्ति के माध्यम से पूर्णकालिक पूर्व-स्नातक, मास्टर्स और पीएचडी कार्यक्रम का अनुसरण करते हैं। भारत सरकार ने घाना के लिए सीट आवंटन में 300 आईटीईसी स्लॉट बढ़ाने और अन्य भारतीय योजनाओं के तहत वार्षिक छात्रवृत्ति की संख्या बढ़ाकर चालीस करने का फैसला किया है।

'ब्रांड इंडिया' आज दुनिया भर के विकसित और विकासशील देशों में एक विश्वसनीय नाम है क्योंकि यह मेजबान देशों के संसाधनों का मूल्य बढ़ाता है; यह स्थानीय कंपनियों के साथ मिलकर काम करता है और बढ़ता है; यह उपयुक्त प्रौद्योगिकियां लाता है जो रोजगार पैदा करती हैं और स्थानीय प्रतिभा को अवशोषित करने की अनुकूलन क्षमता रखता है; यह स्थानीय उद्योग के विकास को किसी भी तरह से बाधित किए बिना इसे जीवंत और प्रोत्साहित करता है।

5.1.बी राष्ट्रपति मुखर्जी के दौरे के दौरान भारत और घाना ने एक संयुक्त वक्तव्य पर हस्ताक्षर किया और इसकी मुख्य बिन्दुएँ नीचे प्रस्तुत हैं:[9]

- दोनों नेताओं ने घाना और भारत की सरकारों के बीच नियमित और सुसंगत उच्च-स्तरीय संवादों की आवश्यकता को रेखांकित किया और बहु-आयामी संबंधों के विभिन्न पहलुओं की समय-समय पर समीक्षा करने के लिए एक संयुक्त आयोग के रूप में एक संस्थागत ढांचे की स्थापना का स्वागत किया।

[9]http://mea.gov.in/outoging-visit-detail.htm?26915/Joint+Statement+between+India+and+Ghana+during+Presidents+visit+to+Ghana

- दोनों पक्ष संयुक्त आयोग की पहली बैठक के लिए पारस्परिक रूप से सुविधाजनक तारीखों पर सहमत हुए।
- दोनों नेताओं ने संतोष व्यक्त किया कि द्विपक्षीय व्यापार और निवेश लगातार बढ़ रहे हैं; हालाँकि, ये अभी भी मौजूदा क्षमता से नीचे थे। घाना में भारत की ओर से अब तक 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक का संचयी निवेश हुआ है, जबकि 2015-16 में द्विपक्षीय

व्यापार 3 बिलियन अमेरिकी डॉलर को पार कर गया। भारतीय राष्ट्रपति ने वर्ष 2020 तक 5 बिलियन अमेरिकी डॉलर का लक्ष्य सुझाया।

- घाना सरकार ने प्रमुख सामाजिक-आर्थिक परियोजनाओं जैसे कोमेन्डा चीनी प्लांट और एल्मिना मछली प्रसंस्करण प्लांट के लिए भारत के समर्थन के लिए निष्ठापूर्वक अपना आभार व्यक्त किया।
- भारत सरकार ने प्रत्येक वर्ष आईटीईसी स्लॉट में 250 से 300 और आईसीसीआर पूर्णकालिक छात्रवृत्ति में 20 से 40 तक की बढ़ोतरी की घोषणा की।
- दोनों नेताओं ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद एक संकट है, जो पूरी सभ्य दुनिया के लिए खतरा है। दोनों नेताओं ने रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने का अनुरोध किया।
- भारत के राष्ट्रपति ने घाना के जीवंत भारतीय समुदाय द्वारा द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाने में निभाई गई भूमिका की सराहना की, और घाना सरकार और जनता द्वारा भारतीय प्रवासियों के लिए दिखाई गई गर्मजोशी, सद्भावना और समर्थन के लिए उनके प्रति सराहना व्यक्त की।

5.2 कोटे डी आइवर

राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी का कोटे डी आइवर दौरा

भारत गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री प्रणब मुखर्जी ने कोटे डी आइवर गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री आलासान वातारा के निमंत्रण पर 14-15 जून, 2016 को कोटे डी आइवर का पहला राष्ट्रपतीय दौरा किया।

राष्ट्रपति मुखर्जी को देश का सर्वोच्च सम्मान, कोटे डी आइवर का राष्ट्रीय सम्मान देकर सम्मानित किया गया था। राष्ट्रपति मुखर्जी को अबिदजान शहर की प्रतीकात्मक कुंजी भी सौंपी गई और अबिदजान की मानद नागरिकता प्रदान की गई।

5.2.ए. 14 जून, 2016 को रजकीय भोज में अपने संबोधन में, राष्ट्रपति मुखर्जी ने निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं को रेखांकित किया।[10]

द्विपक्षीय व्यापार में लगातार वृद्धि हो रही है और अगले कुछ वर्षों में एक बिलियन अमेरिकी डॉलर को छूने की उम्मीद है।

दोनों संयुक्त राष्ट्र प्रणाली और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को मजबूत करने की अनिवार्यता को पहचानतेहैं। इस संदर्भ में, भारत संयुक्त राष्ट्र के विशेष अंगों, विशेषकर इसकी सुरक्षा परिषद में अधिक से अधिक जिम्मेदारियों को निभाने के लिए तैयार है।

आइवरी कोस्ट और भारत दोनों ही अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के खिलाफ हमारी लड़ाई में आम चिंताओं को साझा करते हैं और इस पर क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मंचों में निकटता से समन्वय करते रहे हैं और निरस्त्रीकरण, जलवायु परिवर्तन और सतत विकास सहित अन्य प्रमुख मुद्दों पर भी समन्वय करते रहे हैं।

5.2.बी दोनों पक्षों ने एक संयुक्त वक्तव्य पर हस्ताक्षर किए और संयुक्त वक्तव्य की कुछ मुख्य बिन्दुएँ हैं:[11]

राष्ट्रपति मुखर्जी और श्री आलासान वातारा ने व्यापार को तात्कालिक स्तर से बढ़ाकर 2020 तक दोगुना करने का लक्ष्य रखा। दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय व्यापार और आर्थिक संबंधों का विस्तार

करने और 2020 तक 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार का वांछित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए संयुक्त आयोग की बैठक जल्द बुलवाने के महत्व पर सहमति व्यक्त की।

कोटे डी आइवर के नेता ने रियायती ऋण व्यवस्था के माध्यम से कोटे डी आइवर के विकास में भारत द्वारा प्रदान की गई सहायता की सराहना की। भारत ने विभिन्न क्षेत्रों जैसे कृषि-प्रसंस्करण, परिवहन, ग्रामीण विद्युतीकरण और प्रसारण, मत्स्य पालन आदि में 136.2 मिलियन अमेरिकी डॉलर की ऋण व्यवस्था प्रदान की है। निम्न-भूमि कृषि के विकास के लिए दोनों देशों के बीच 102 मिलियन अमेरिकी डॉलर की अतिरिक्त ऋण व्यवस्था पर कार्य जारी है।

5.3 नामीबिया

<u>राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी का नामीबिया दौरा</u>

राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने 16 जून, 2016 को नामीबिया का दौरा किया। 1995 के बाद से यह भारत के राष्ट्रपति का पहला दौरा था। उन्होंने नवीकरणीय ऊर्जा, कृषि, क्षमता निर्माण, विकास सहयोग और संयुक्त राष्ट्र सुधारों, आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन और सतत विकास जैसे बहुपक्षीय मुद्दों में सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता पर चर्चा की।

[10]http://mea.gov.in/outoging-visit-detail.htm?26912/Banquet+Speech+by+President+during+his+visit+to+Cote+dIvoire+June+14+2016

[11]http://mea.gov.in/outoging-visit-detail.htm?26932/Joint+Statement+between+India+and+Cote+d+Ivoire+during+Presidents+visit+to+Cote+dIvoire

राष्ट्रपति मुखर्जी ने भारत को यूरेनियम की आपूर्ति का मुद्दा उठाया और राष्ट्रपति गिंगोब ने आश्वासन दिया कि नामीबिया इसकी आपूर्ति करने के तरीके तलाशेगा। इस बात पर सहमति हुई कि दोनों पक्षों की एक तकनीकी टीम जल्द से जल्द बैठक कर आगे के रास्ते पर चर्चा करेगी। उन्होंने नामीबिया विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय को भी संबोधित किया जहां उन्होंने शिक्षा, अर्थव्यवस्था, कृषि और विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

उन्होंने आईटीईसी स्लॉट को 125 से बढ़ाकर 200 करने, इंदिरा गांधी मातृत्व क्लिनिक के लिए 20,000 अमेरिकी डॉलर के अनुदान, सूखे की स्थिति के शमन के लिए 1000 टन चावल की सहायता और 100 टन आवश्यक दवाएं प्रदान करने की घोषणा की।

राष्ट्रपति मुखर्जी की मौजूदगी में नामीबिया लोक प्रशासन एवं प्रबंधन संस्थान (एनआईपीएएम) और भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद (आईआईएमए) के बीच और नामिया में सूचना प्रौद्योगिकी के उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना के लिए दो समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए।

5.4 नाइजीरिया

<u>भारत के उपराष्ट्रपति का नाइजीरिया दौरा</u>

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति, श्री एम हामिद अंसारी ने 26 से 29 सितंबर, 2016 को नाइजीरिया का दौरा किया। भारत के उच्चायोग सहित भारतीय शीर्ष वाणिज्य मंडल (सीआईआई और ऐसोकैम) और उनके नाइजीरियाई समकक्षों द्वारा संयुक्त रूप से अबुहा में आयोजित भारत-नाइजीरिया संयुक्त व्यापार मंच में दोनों उपराष्ट्रपतियों ने संयुक्त संबोधन दिया। उपराष्ट्रपति ओसिनबाहों ने भारत के अतिथि उपराष्ट्रपति के सम्मान में एक आधिकारिक रात्रिभोज आयोजित किया। दोनों नेताओं ने एक संयुक्त वक्तव्य पर हस्ताक्षर किया।

दोनों उपराष्ट्रपतियों ने दोहराया कि 2007 की रणनीतिक साझेदारी के लिए अबुहा घोषणा द्विपक्षीय संबंधों को गहरा करने के लिए रूपरेखा प्रदान करना जारी रखता है।

भारत के उपराष्ट्रपति ने भारत की ऊर्जा सुरक्षा में नाइजीरिया की महत्वपूर्ण भूमिका बताई। दोनों नेता तेल और गैस क्षेत्र में मौजूदा सहयोग को मजबूत करने के लिए सहमत हुए, और विशेष रूप से नाइजीरिया से तेल और गैस खरीद पर सरकारों के मध्य समझौतों पर संवाद करने के लिए सहमत हुए।

नाइजीरिया सरकार ने भारत द्वारा नाइजीरिया में तीन शक्ति परियोजनाओं के लिए पहले प्रस्तावित 100 मिलियन अमेरिकी डॉलर की रियायती ऋण के लिए भारत का आभार जताया। दोनों पक्षों ने रियायती ऋण को जल्द आवंटित करने के लिए उचित प्रक्रियाएं पूरी करने की सहमति व्यक्त की।

भारत के उपराष्ट्रपति ने तृतीय भारत-अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन में नाइजीरिया को प्रोत्साहित किया कि वो अपनी रूचि के क्षेत्रों में भारत द्वारा अफ्रीकी देशों के लिए प्रस्तावित 10 बिलियन अमेरिकी डॉलर के रियायती ऋण का लाभ उठाए।

दोनों उपराष्ट्रपति ने भारतीय मानक ब्यूरो और नाइजीरियाई मानक संगठन के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए जाने का स्वागत किया। दोनों देशों के प्रतिनिधियों ने अपने अधिकारियों को निम्नलिखित समझौतों/समझौता ज्ञापनों पर वार्ता जारी रखने का निर्देश देते हुए एक आशय पत्र पर हस्ताक्षर किया:

(i) नवीकरणीय ऊर्जा;

(ii) सजा प्राप्त व्यक्तियों का स्थानांतरण;

(iii) सीमा शुल्क सहयोग; तथा

(iv) स्वास्थ्य सहयोग।

दोनों पक्ष राजनयिक पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा छूट समझौते में प्रवेश करने की संभावनाओं पर संवाद करने के लिए सहमत हुए।

दोनों नेताओं ने दोनों देशों के नेताओं और वरिष्ठ अधिकारियों के नियमित संवाद की आवश्यकता को रेखांकित किया, और 2017 की शुरुआत में एक पारस्परिक रूप से सुविधाजनक तारीख पर संयुक्त आयोग की अगली बैठक आयोजित करने की आवश्यकता को स्वीकारा।

5.5 माली

भारत के उपराष्ट्रपति का माली दौरा

माली गणराज्य की प्रधान मंत्री श्री मोदिबो कीता के निमंत्रण पर श्रीमती सलमा अंसारी के साथ भारत के उपराष्ट्रपति श्री एम हामिद अंसारी ने 29-30 सितंबर, 2016 को माली गणराज्य का दौरा किया। उनके साथ श्री अर्जुन राम मेघवाल, वित्त राज्य मंत्री और चार सांसद, वरिष्ठ अधिकारी और मीडिया भी माली गए थे।

द्विपक्षीय वार्ता में श्री अंसारी और श्री कीता ने द्विपक्षीय संबंधों के संपूर्ण पहलुओं को शामिल किया। मानकों और एक सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (सीईपी) पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। ऐतिहासिक स्थलों को नष्ट करने की निंदा करते हुए, भारत ने टिम्बकटू की विश्व धरोहर स्थलों के पुनरुद्धार के लिए 500,000 अमेरिकी डॉलर की नकद सहायता प्रदान करने की घोषणा की। भारत ने विदेश मंत्रालय को वाहनों और आईटी उपकरणों का उपहार देने, आम जनता के उपयोग के लिए एम्बुलेंस उपहार देने और अंग्रेजी भाषा सीखने की प्रयोगशाला स्थापित करने के लिए सहायता देने की भी घोषणा की। भारत की सहायता को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार कर लिया गया। दोनों पक्षों ने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों पर द्विपक्षीय संबंधों के निर्माण को और मजबूत बनाने और दक्षिण-दक्षिण सहयोग की भावना में एक-दूसरे से सीखने के लिए सहमति व्यक्त की।

5.6 मोज़ाम्बिक

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मोज़ाम्बिक दौरा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 07 जुलाई, 2016 को मापुटो में मोज़ाम्बिक गणराज्य का दौरा किया। इस दौरे के दौरान, दोनों पक्षों ने लोगों के अधिक आदान-प्रदान की संभावनाओं का पता लगाया। उन्होंने भारत सरकार द्वारा दी जाने वाली प्रशिक्षण छात्रवृत्तियों के माध्यम से, गणतंत्र सभा के कर्मचारियों के क्षमता निर्माण के लिए भारतीय प्रशिक्षण संस्थानों के उपयोग का प्रस्ताव दिया। दोनों नेताओं ने सहमति व्यक्त की कि विनिमय बढ़ाने के इन अवसरों को राजनयिक चैनलों के माध्यम से और विकसित किया जाना चाहिए। दौरे के दौरान तीन समझौता ज्ञापनों/समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए (i) भारत और मोज़ाम्बिक के बीच मादक पदार्थों की मांग घटाने और नशीली दवाओं, मनोदैहिक पदार्थों और पूर्ववर्ती रसायनों और संबंधित मामलों में अवैध तस्करी की रोकथाम के लिए समझौता ज्ञापन। (ii) युवा मामले और खेल के क्षेत्र में भारत सरकार और मोज़ाम्बिक सरकार के बीच समझौता ज्ञापन और (iii) मोज़ाम्बिक से दालों की खरीद के लिए दीर्घकालिक समझौता।

5.7 केन्या

प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी का केन्या दौरा

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने 10 से 11 जुलाई 2016 को केन्या का राजकीय दौरा किया, जो 35 वर्षों के बाद प्रधान मंत्री का पहला दौरा था।

दौरे के दौरान निम्नलिखित द्विपक्षीय उपकरण संपन्न हुए:

i. रक्षा सहयोग पर समझौता ज्ञापन।

ii. राष्ट्रीय आवास नीति विकास और प्रबंधन के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन।
iii. दोहरा कराधान परिहार और आय-कर के संबंध में राजकोषीय चोरी की रोकथाम के लिए समझौता
iv. भारतीय मानक ब्यूरो और केन्या मानक ब्यूरो के बीच समझौता ज्ञापन
v. राजनयिक पासपोर्ट धारकों के धारकों के लिए वीज़ा से छूट पर समझौता।
vi. लघु और मध्यम उद्यमों [एसएमई] के विकास के लिए आईडीबी कैपिटल लिमिटेड को 15 मिलियन अमेरिकी डॉलर की ऋण व्यवस्था समझौता
vii. रिफ्ट वैली टेक्सटाइल्स फैक्ट्री [रीवाटेक्स] के उन्नयन के लिए केन्या सरकार को 29.95 मिलियन अमेरिकी डॉलर का क्रेडिट समझौता।

रक्षा सहयोग के भाग के रूप में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने केन्या रक्षा बलों को 30 फील्ड एम्बुलेंस सौंपे। केन्याई पक्ष ने रक्षा उपकरणों के अधिग्रहण के लिए भारत के तरफ से ऋण व्यवस्था के प्रस्ताव को ध्यान में लिया।

विकास सहायता पर, भारत ने भू-तापीय परियोजनाओं और कृषि मशीनीकरण के लिए ऋण व्यवस्था (एलओसी) प्रदान करने का प्रस्ताव रखा। केन्याई राष्ट्रपति ने लघु और मध्यम उद्यमों [एसएमई] के विकास के लिए, रिफ्ट वैली टेक्सटाइल्स फैक्ट्री (रीवाटेक्स) के उन्नयन के लिए 29.95 मिलियन अमेरिकी डॉलर की एलओसी एवं आईडीबी कैपिटल लिमिटेड को 15 मिलियन अमेरिकी डॉलर की एलओसी पर हस्ताक्षर करने के लिए सराहना की। उन्होंने भारतीय कंपनियों द्वारा 61.6 मिलियन अमेरिकी डॉलर की ऋण व्यवस्था के अधीन निष्पादित की जा रही पावर ट्रांसमिशन लाइन परियोजनाओं की भी सराहना की।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने टेलीकोबाल्ट कैंसर थेरेपी मशीन - भाभाट्रॉन II को उपहार में देने; आवश्यक/एआरवी दवाओं और चिकित्सा उपकरणों और स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में क्षमता निर्माण/प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहायता प्रदान करने की घोषणा की। भारतीय पक्ष ने आश्वासन दिया कि केन्या में 100 बिस्तरों वाला एक कैंसर अस्पताल बनाने के लिए एक एलओसी देने पर सकारात्मक विचार किया जाएगा।

राष्ट्रपति उहुरू केन्याटा ने भारत से दवा, फार्मेसी, दंत चिकित्सा और आईसीटी जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों को बढ़ाने पर विचार करने का अनुरोध किया, जो केन्या की राष्ट्रीय विकास प्राथमिकताओं के लिए प्रासंगिक हैं।

राष्ट्रपति उहुरू केन्याता ने 30 नवंबर 2015 को अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) के शुभारंभ में भारत या इसके नेताओं की भूमिका के लिए बधाई दी।

5.8 तंज़ानिया

<u>प्रधान मंत्री मोदी का तंज़ानिया दौरा</u>

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने 10 जुलाई, 2016 को तंज़ानिया का दौरा किया। अपने दौरे के दौरान उन्होंने राष्ट्रपति मैगुफुली के साथ आधिकारिक वार्ता की। दौरे के दौरान जारी किए गए संयुक्त वक्तव्य में निम्नलिखित मुख्य बिन्दुओं का उल्लेख है।

दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय समझौतों के संपन्न होने पर संतोष व्यक्त किया, जिसमें पानी, लघु उद्योग, विकास साझेदारी और आर्थिक सहयोग के क्षेत्र शामिल हैं। वे समझौते हैं:

i. दोनों देशों के बीच जल संसाधन प्रबंधन और विकास के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन
ii. दोनों देशों के बीच राजनयिक/आधिकारिक पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा छूट समझौते पर समझौता ज्ञापन।
iii. भारतीय राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (एनएसआईसी) और लघु उद्योग विकास संगठन तंज़ानिया (एसआईडीओ) के बीच संयुक्त कार्य योजना (जेएपी) पर समझौता।
iv. तंज़ानिया सरकार और भारत सरकार के बीच ज़ांज़ीबार में व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना के लिए समझौता ज्ञापन।
v. ज़ांज़ीबार में जल आपूर्ति प्रणाली के पुनरुद्धार और सुधार के लिए 92 मिलियन अमेरिकी डॉलर की एलओसी।

दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय व्यापार, निवेश के संदर्भ में सकारात्मक विकासों को पहचाना और हाल के वर्षों में भारत में तंज़ानिया के निर्यात को बढ़ाने के लिए शुल्क मुक्त टैरिफ वरीयता योजना में भारत के योगदान की सराहना की।

दोनों नेताओं ने ऊपरी रुवु पेय जल आपूर्ति परियोजना के हाल ही में पूरा होने की सराहना की, जो भारत की सहायता से रियायती ऋण के माध्यम से निष्पादित किया गया था, जो डार एस सलाम और उसके आसपास के शहरों को दोगुना से अधिक स्वच्छ पेय जल आपूर्ति करेगा। उन्होंने ज़ांज़ीबार में जल आपूर्ति परियोजना के लिए भारतीय रियायती ऋण सुविधा बढ़ाने का स्वागत किया। उन्होंने नेल्सन मंडेला अफ्रीकी विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान में आईटी संसाधन केंद्र, अरुषा की स्थापना की सराहना की, जो भारत सरकार के अनुदान से बनाया गया है। उन्होंने नेविगेशनल चार्ट और क्षमता निर्माण के मामले में जलसर्वेक्षण में सहयोग की भी सराहना की।

प्रधान मंत्री मोदी ने बुगान्डो मेडिकल सेंटर, वान्ज़ा को एक विकिरण चिकित्सा मशीन – "भाभाट्रॉन-II" देने की घोषणा की, जो वर्तमान स्थापित किया जा रहा है और तंज़ानिया को आगे भी आवश्यक दवाओं, एम्बुलेंस, और चिकित्सा उपकरण देने के लिए प्रतिबद्ध हुए।

5.9 दक्षिण अफ्रीका

<u>प्रधानमंत्री मोदी का दक्षिण अफ्रीका दौरा</u>

प्रधानमंत्री मोदी ने 7 से 9 जुलाई 2016 को दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया। इस दौरे के दौरान, दोनों पक्षों के बीच निम्नलिखित समझौतों और समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए: (i) आईसीटी पर समझौता ज्ञापन, (ii) कला और संस्कृति में सहयोग का कार्यक्रम, (iii) पर्यटन पर समझौता ज्ञापन और (iv) ग्रास रूट इनोवेशन (विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी) पर समझौता ज्ञापन

हस्ताक्षरित संयुक्त वक्तव्य में निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका और भारत के बीच व्यापक रणनीतिक साझेदारी की सराहना की। दोनों देश घोषणा पत्र में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हुए और ध्यान दिया कि वर्ष 2017 में लाल किला घोषणा पर हस्ताक्षर करने का बीसवां उत्सव मनाया जाएगा।

दक्षिण अफ्रीका ने दक्षिण अफ्रीका को प्रदत्त ई-पर्यटक वीजा सुविधा का स्वागत किया। प्रधान मंत्री मोदी ने ब्रिक्स देशों के व्यापारिक व्यक्तियों के लिए 10-वर्षीय ब्रिक्स बहु प्रवेश बिजनेस वीज़ा के लिए दक्षिण अफ्रीका की सराहना की। आईबीएसए को एक प्रभावी मंच के रूप में रेखांकित करते हुए, वैश्विक-दक्षिण से तीन बड़े लोकतंत्रों की लोकतांत्रिक-भावना को मूर्त रूप देते हुए, उन्होंने आईबीएसए प्रक्रिया अधिक मजबूत बनाने के लिए अपनी दृढ़ प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि की। दोनों नेताओं ने सहमति व्यक्त की कि दक्षिण अफ्रीका 8 वीं त्रिपक्षीय आयोग बैठक की मेजबानी करेगा, और अगले साल भारत 6 वें आईबीएसए शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा।

6. हिन्द महासागर द्वीप समूह

6.1. मालदीव

मालदीव गणराज्य के राष्ट्रपति श्री अब्दुल्ला यामीन अब्दुल गयूम ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी से मिलने के लिए भारत का दौरा किया, 11 अप्रैल, 2016

दोनों देशों के बीच हस्ताक्षरित समझौतें/समझौता ज्ञापन हैं:

- अंतर्राष्ट्रीय वायु परिवहन से प्राप्त आय पर दोहरा कराधान परिहार के लिए भारत गणराज्य की सरकार और मालदीव गणराज्य की सरकार के बीच समझौता।
- भारत गणराज्य की सरकार और मालदीव गणराज्य की सरकार के बीच करों के संबंध में सूचना के आदान-प्रदान के लिए समझौता।
- 48oE पर प्रस्तावित "साउथ एशिया सैटेलाइट" की ऑर्बिट फ्रिक्वेंसी कोऑर्डिनेशन से संबंधित द्विपक्षीय समझौता।
- मालदीव की प्राचीन मस्जिदों के संरक्षण और पुनर्स्थापना और संयुक्त अनुसंधान और खोज सर्वेक्षण के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत गणराज्य की सरकार और मालदीव गणराज्य की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन।
- पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग पर भारत गणराज्य की सरकार और मालदीव गणराज्य की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन।
- रक्षा सहयोग के लिए भारत गणराज्य की सरकार और मालदीव गणराज्य की सरकार के बीच कार्य योजना।

7. लैटिन अमेरिका/ कैरेबियन

7.1 ब्राज़ील

7.1.ए. ब्राज़ील के राष्ट्रपति का भारत का आधिकारिक दौरा, 17 अक्टूबर, 2016

ब्राज़ील संघीय गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री मिशेल टेमर भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के निमंत्रण पर 17 अक्टूबर 2016 को भारत के आधिकारिक दौरे पर आए थे। उनके साथ विदेश मंत्री श्री होसे सेरा, कृषि मंत्री श्री बलेरो मैगी, उद्योग, विदेश व्यापार और सेवा मंत्री श्री मार्कोस पेरीरा, और बड़ी संख्या में अधिकारीगण और व्यापार प्रतिनिधिमंडल भी आए थे। हस्ताक्षरित संयुक्त वक्तव्य की मुख्य बिन्दुएँ हैं:

- नेताओं ने वैश्विक मुद्दों पर निकट सहयोग और समन्वय बनाए रखने पर सहमति व्यक्त की।
- उन्होंने संयुक्त राष्ट्र के तत्काल सुधार की आवश्यकता को रेखांकित किया। इस संदर्भ में, उन्होंने सुरक्षा परिषद सुधार पर दोस्तों का एक समूह गठन करने का स्वागत किया।
- नेताओं ने व्यापार में विविधता लाने की आवश्यकता पर बल दिया। इस संबंध में, उन्होंने व्यापार निगरानी तंत्र (टीएमएम) की हाल ही में आयोजित बैठक में हुई प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। भारत ने ब्राज़ील को उदारीकृत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) नीतियों और 'मेक इन इंडिया' पहल के बारे में ब्राज़ील को अवगत कराया और ब्राज़ील से अधिक निवेश आमंत्रित किया। ब्राज़ील के पक्ष ने, बदले में, "प्रोजेक्ट ग्रो" प्रस्तुत किया, और नए नियमों, शासन में सुधार लाने और कुछ परियोजनाओं को राष्ट्रीय प्राथमिकता के रूप में अनुमोदित करने का प्रस्ताव दिया, जो ब्राज़ील में भारतीय निवेश के लिए नए अवसर लाते हैं। दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय व्यापार और निवेश को सुविधाजनक बनाने के लिए पारस्परिकता के आधार पर व्यापार अनुकूल वीजा प्रक्रिया स्थापित करने की योजना का अनुसरण करने पर सहमति व्यक्त की।
- दोनों पक्ष उन क्षेत्रों को भी तलाशने के लिए भी सहमत हुए, जिसमें दोनों देशों को सहयोग से अपार लाभ होने की संभावना है, जैसे कि ब्राज़ील में दालों की उपज और भारत के कुक्कुट क्षेत्र में ब्राज़ील का निवेश। उन्होंने, विशेष रूप से सूअर के मांस और सेब बाजारों में स्वच्छता और पादप स्वच्छता उपायों पर एक आपसी समझ तक पहुंचने के लिए दोनों पक्षों की इच्छा का संतुष्टि के साथ स्वागत किया। वे इस बात पर सहमत हुए कि मेगा फूड पार्क और कोल्ड चेन अवसंरचनाओं समेत खाद्य प्रसंस्करण में निवेश सहयोग को बढ़ावा देने के लिए अवसरों की तलाश की जानी चाहिए।
- इसके अलावा, दोनों पक्ष ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग के अवसर तलाशने के लिए सहमत हुए। इथेनॉल में ब्राज़ील की विशेषज्ञता को स्वीकार किया गया था। दोनों पक्षों ने तेल और गैस क्षेत्र में सहयोग के महत्व पर भी बल दिया।
- नेताओं ने सराहना की कि 2017 में आयोजित होने वाली विज्ञान और प्रौद्योगिकी संयुक्त आयोग बैठक निरंतर सहयोग का संकेत देगी।
- भारत और ब्राज़ील ने कुछ बीमारियों के इलाज के लिए पांच रासायनिक दवाओं और पांच जैविक उत्पादों के विकास के लिए साथ आने का फैसला किया, जिनमें हेपेटाइटिस सी, ट्यूबरकुलोसिस, कैंसर और एचआईवी शामिल हैं। दोनों देशों ने अपनी नियामक एजेंसियों के बीच सफल सहयोग को तेज करने का भी निर्णय लिया ताकि दोनों देशों द्वारा विनिर्मित चिकित्सा उपकरणों और औषधीय उत्पादों के पंजीकरण और व्यापार से संबंधित प्रक्रियाओं को कारगर बनाया जा सके।
- वे पारस्परिक लाभ के लिए डेटा साझाकरण से भी आगे सहयोग बढ़ाने और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण के लिए सहमत हुए।
- भारत और ब्राज़ील ने परमाणु निरस्त्रीकरण और अप्रसार के लिए अपनी साझा प्रतिबद्धताओं को रेखांकित किया और परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग के अधिकार की पुष्टि की।
- राष्ट्रपति मिशेल टेमर ने भारत सरकार और उरी हमले के पीड़ितों के परिवारों के समक्ष अपना शोक व्यक्त किया, और कहा कि ब्राज़ील सभी प्रकार के आतंकवादी हमलों की कड़ी निंदा करता है।
- दोनों देश जलवायु परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए प्रतिबद्ध रहें, जैसा कि भारत के अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन पहल और ब्राज़ील की जैव-भविष्य मंच में दर्शाया गया है।
- लोगों पर केंद्रित, समावेशी और विकासोन्मुखी सूचना समाज बनाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि की। भारत और ब्राज़ील के हित अपने बीच आईसीटी, साइबर सुरक्षा और डिजिटल अर्थव्यवस्था संबंधी द्विपक्षीय सहयोग को गहराने में निहित है।

7.1.बी. भारत और ब्राज़ील के बीच हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापनों की सूची, 17 अक्टूबर 2016

1. आनुवंशिक संसाधन, कृषि, पशुपालन, प्राकृतिक संसाधन और मत्स्य पालन
2. फार्मास्यूटिकल उत्पाद विनियमन
3. पशु जीनोमिक्स और सहायक प्रजनन प्रौद्योगिकी
4. निवेश सहयोग और सुविधा संधि

8. उत्तर अमेरिका

8.1 मेक्सिको

संयुक्त मैक्सिकन राज्यों के राष्ट्रपति महामहिम श्री एनरिक पेना नीटो के निमंत्रण पर प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने 8 जून 2016 को मैक्सिको का एक कार्यकारी दौरा किया, जिसका उद्देश्य दोनों नेताओं द्वारा 28 सितंबर 2015 को संयुक्त राष्ट्र महासभा के 70 वें नियमित सत्र के हाशिए पर आयोजित वार्ता जारी रखना था। यह दौरा मार्च 2016 में मैक्सिको के विदेश मंत्री के भारत दौरे के बाद हुआ था। यह भारत और मेक्सिको के बीच द्विपक्षीय संबंधों में विकास का एक सकारात्मक संकेत है।

8.1.ए. मेक्सिको के विदेश मंत्री ने 11-12 मार्च, 2016 को भारत का दौरा किया

मेक्सिको सरकार के विदेश मंत्री, महामान्या मिस क्लाउडिया रुइज़ मास्सु सेलिनास ने 11-12 मार्च 2016 को भारत का दौरा किया और भारत की माननीय विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के साथ एक महत्वपूर्ण द्विपक्षीय बैठक की। अपनी बैठक के दौरान, विदेश मंत्री और मैक्सिकन विदेश मंत्री ने आपसी सहयोग को अधिक व्यापक बनाने और मजबूत बनाने के लिए राजनीतिक, वाणिज्यिक और व्यापार, वित्तीय, तकनीकी और अन्य क्षेत्रों सहित द्विपक्षीय संबंधों के सम्पूर्ण पहलुओं की व्यापक समीक्षा की। मंत्रियों ने द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति पर संतोष व्यक्त किया और निकट भविष्य में उच्च स्तरीय दौरों का आदान-प्रदान करने पर सहमत हुईं। उन्होंने पारस्परिक हित के महत्वपूर्ण क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर भी चर्चा की। उन्होंने भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के साथ आयोजित एक व्यावसायिक कार्यक्रम में निजी क्षेत्र के साथ भी बातचीत की और 'विश्व संदर्भ में मेक्सिको और भारत के साथ इसके संबंधों' के विषय पर विश्व मामलों की भारतीय परिषद (आईसीडब्ल्यूए) में व्याख्यान दिया।

8.1.बी. प्रधान मंत्री का मैक्सिको दौरा (08 जून, 2016)

दोनों नेताओं ने पारस्परिक हित के क्षेत्रीय मुद्दों पर विचारों का एक विस्तृत आदान-प्रदान किया था, जिसमें लैटिन अमेरिका में राजनीतिक और आर्थिक विकास, सीईएलएसी और प्रशांत गठबंधन, साथ ही साथ एशिया-प्रशांत क्षेत्र की वर्तमान परिस्थिति के मुद्दें भी शामिल थे।

उन्होंने व्यापार को बढ़ावा देने के लिए आर्थिक आदान-प्रदान में विविधता लाने के बढ़ते महत्व को रेखांकित किया; अवसंरचना क्षेत्रों, लघु एवं मध्यम उद्यमों, फार्मास्युटिकल उत्पादों, ऊर्जा, ऑटोमोबाइल क्षेत्र, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, कृषि, खाद्य प्रसंस्करण और अन्य संबंधित क्षेत्रों

में अधिक से अधिक संपर्कता विकसित करने और सहयोग को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

दोनों पक्ष अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन के उद्देश्यों को बढ़ावा देने के तरीकों और साधनों की तलाश करने के लिए सहमत हुए।

दोनों पक्षों ने संस्कृति, शिक्षा और पर्यटन के क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को बेहतर ढंग से समझने और मजबूत करने के लिए दोनों देशों के लोगों के बीच वर्धित आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के महत्व पर बल दिया।

दोनों नेताओं ने मैक्सिको की राष्ट्रीय डिजिटल रणनीति और डिजिटल इंडिया पहल के बीच अभिसरण द्वारा प्रस्तुत अवसरों का स्वागत किया, जो सामान्य उद्देश्यों को साझा करते हैं; अंतरिक्ष विज्ञान, पृथ्वी अवलोकन, जलवायु और पर्यावरण अध्ययन में सहयोग का स्वागत किया, और भारत के साथ-साथ मैक्सिको में सुदूर संवेदीकरण के लिए उपलब्ध अंतरिक्ष-संबंधित संसाधनों का कुशल उपयोग, आपदा की रोकथाम के लिए अग्रिम चेतावनी और मैक्सिकन अंतरिक्ष एजेंसी (एईएम) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के बीच उपग्रहों के प्रक्षेपण में सहयोग का स्वागत किया।

यह देखते हुए कि दोनों देशों की बड़ी संख्या में प्रवासी समुदाय विदेश में रहते हैं, नेताओं ने अपने मूल के समुदायों और उनके निवास स्थान का विकास करने के लिए अपने प्रवासियों के नेटवर्क, संगठनों और व्यक्तियों की भागीदारी के संबंध में विचारों, सूचनाओं का आदान-प्रदान करने और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने और साथ ही विदेशों में मौजूद अपने संबंधित नागरिकों के कल्याण और संरक्षण पर सहमति व्यक्त की।

उन्होंने बहुपक्षीय परिप्रेक्ष्य के साथ समाधान के रूप में परमाणु निरस्त्रीकरण और अप्रसार के साझा लक्ष्यों को बढ़ावा देना जारी रखने के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा मुद्दों पर सहयोग को बढ़ावा देना जारी रखने का वादा किया।

उन्होंने सभी रूपों और किस्मों के आतंकवाद की कड़ी निंदा की और संयुक्त राष्ट्र को मूल में रखते हुए एक प्रभावी बहुपक्षीय प्रणाली बनाने के महत्व की पुष्टि की, और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के व्यापक सुधारों की प्रक्रिया में प्रगति का समर्थन जारी रखने के महत्व पर सहमति व्यक्त की।

9 प्रमुख शक्तियां

9.1 चीन

भारत और चीन दोनों ने वर्ष 2016 में द्विपक्षीय और साथ ही बहुपक्षीय स्तर पर उच्च स्तरीय दौरों और आदान-प्रदान जारी रखा। राष्ट्रपति शी जिनपिंग और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने क्रमशः ताशकंद में जीसीओ शिखर सम्मेलन, हांग्जो में जी 20 शिखर सम्मेलन और गोवा में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के अवसरों पर तीन बार मुलाकात की (कृपया विवरण के लिए रिपोर्ट का बहुपक्षीय खंड देखें)। राष्ट्रपति मुखर्जी ने चीन का सफल दौरा किया। चीनी विदेश मंत्री वांग यी ने भारत का दौरा किया। इसके अलावा, नई दिल्ली में आयोजित चौथा भारत-चीन सामरिक और आर्थिक वार्ता एक महत्वपूर्ण अभ्यास साबित हुआ।

9.1.ए. राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी का चीन दौरा, 24-27 मई 2016

दोनों देशों के उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच अनुसंधान और नवाचार में सहयोग के साथ-साथ संवर्धित संकाय और छात्र आदान-प्रदान के अवसर प्रदान करने वाले दस समझौता ज्ञापनों को संपन्न किया गया।

पेकिंग विश्वविद्यालय में अपने भाषण में, राष्ट्रपति मुखर्जी ने चीन के साथ " जन-केंद्रित भागीदारी" की दृष्टि को रेखांकित किया और इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए आठ चरणों का सुझाव दिया; i. आपसी विश्वास और पारस्परिक सम्मान को बढ़ाना, ii. युवा आदान-प्रदान का विस्तार करना, iii. ऑडियो-विजुअल मीडिया में अधिक सहयोग और सह-उत्पादन को बढ़ावा देना, iv. अधिक से अधिक बौद्धिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना, v. पर्यटन संपर्कों का विस्तार करना, vi. विकासात्मक चुनौतियों पर अधिक से अधिक नागरिक समाज को प्रोत्साहित करना, vii. बहुपक्षीय मंचों में दृढ़ सहयोग, और viii. वृहद व्यापार और निवेश संबंध।

9.1.बी. चीन के विदेश मंत्री का भारत दौरा

चीन के विदेश मंत्री श्री वांग यी ने 13 अगस्त, 2016 को भारत का दौरा किया। इस दौरे के दौरान, दोनों पक्षों ने बहुपक्षीय बैठकों जैसे कि चीन में आयोजित हो रही जी-20 शिखर सम्मेलन और भारत में आयोजित हो रही ब्रिक्स शिखर सम्मेलन सहित आपसी हित के मुद्दों पर चर्चा की। एनएसजी में भारत की सदस्यता के मुद्दे पर, चीनी पक्ष ने अपना दृष्टिकोण समझाया और दोनों पक्षों ने विचार-विमर्श जारी रखने पर सहमति व्यक्त की ताकि इस मुद्दे पर विचलन के क्षेत्रों को कम किया जा सके।

9.1.सी. 4 वां भारत-चीन सामरिक आर्थिक वार्ता, 13 अक्टूबर, 2016

4 वां भारत-चीन रणनीतिक आर्थिक वार्ता का आयोजन 7 अक्टूबर, 2016 को दिल्ली, भारत में "आपसी लाभ के लिए विकास, नवाचार और सहयोग" विषय के तहत किया गया था। भारत-चीन रणनीतिक आर्थिक वार्ता का तंत्र (इसके बाद जिसे "एसईडी" कहा गया है) दिसंबर 2010 में स्थापित किया गया था। 4 थे एसईडी के दौरान, दोनों पक्षों ने वैश्विक आर्थिक रुझानों और दोनों देशों की वृहद आर्थिक स्थिति पर विचारों का आदान-प्रदान किया और द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने पर गहन चर्चा की।

इस संवाद को लगभग पाँच कार्य समूहों ने अंजाम दिया और निम्नलिखित ठोस परिणाम प्रस्तुत किए:

नीति समन्वय की कार्य समूह

नीति आयोग ने नीति आयोग और एनसीआरसी के बीच तटीय विनिर्माण क्षेत्रों के विकास में चीन की भारी सफलता को समझने और उपरोक्त सफलता से सीखने के लिए करीबी संपर्क बनाने का प्रस्ताव रखा।

अवसंरचा की कार्य समूह

दोनों पक्षों ने कुछ क्षेत्रों में उपलब्धियों की समीक्षा की जैसे कि मौजूदा रेलवे की गति बढ़ाने की व्यवहार्यता अध्ययन, उच्च गति रेलवे की व्यवहार्यता अध्ययन, कार्मिक प्रशिक्षण, और रेलवे स्टेशन पुनर्विकास पर अध्ययन जो कि तीसरे एसईडी के बाद से चर्चा के अधीन है।

हाई-टेक की कार्य समूह

दोनों पक्षों ने सूचना प्रौद्योगिकी सेवा उद्योग के विकास और दोनों देशों की सॉफ्टवेयर उद्योग नीतियों की वर्तमान परिस्थिति पर ध्यान केंद्रित किया, टैबलेट डिस्प्ले, सॉलिड स्टेट-लाइट, दुर्लभ पृथ्वी उद्योग प्रौद्योगिकी और बाजार की मांग को पूरा करने की आवश्यकता पर सहयोग बनाने की चर्चा की।

इसके अलावा, भारत की इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय और चीन की राष्ट्रीय विकास और सुधार आयोग के बीच "डिजिटल इंडिया" और "इंटरनेट प्लस" पर एक कार्य योजना बनाने पर सहमति व्यक्त की गई, ताकि दोनों पक्षों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया जा सके। यह भी देखा गया कि मौजूदा नैसकॉम और हैनान समझौता ज्ञापनों के तहत, हैनान प्रांत में एक चीन-भारत प्रौद्योगिकी पार्क स्थापित किया जा रहा है, जिससे लगभग 2000 उच्च कुशल भारतीय आईटी पेशेवरों के लिए संभावित अवसर पैदा हो रहे हैं।

संसाधन संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण की कार्य समूह

यह माना गया कि नगरपालिका के ठोस अपशिष्टों के निपटान से बहुमूल्य शहरी भूमि का नुकसान होता है। दोनों पक्ष इस बात पर सहमत हुए कि अपशिष्ट से ऊर्जा संयंत्र इस समस्या का एक संभावित समाधान है।

ऊर्जा की कार्य समूह

दोनों पक्ष अक्षय ऊर्जा संवर्धन में सहयोग के लिए सहमत हुए, विनिर्माण और पवन और सौर ऊर्जा के उत्पादन दोनों में सहयोग के लिए सहमत हुए।

दस्तावेज जिन पर सहमति व्यक्त की गई।

बैठक के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में, दोनों पक्षों ने सहयोग के लिए दो अंतर-सरकारी दस्तावेजों, एसईडी की एक कार्यवृत्ति और उद्यमों के बीच सहयोग के लिए 18 दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए।

9.2 यूरोपीय संघ

भारत और यूरोप के बीच 2016 में कई उच्च स्तरीय दौरे हुए। फ्रांसीसी राष्ट्रपति फ्रेंकोइस हॉलैंड ने जनवरी 2016 को गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भारत का दौरा किया। फ्रांस ने रक्षा, सुरक्षा, शहरी विकास, ऊर्जा, आदि क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने की पहल की। 13 वां भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन 30 मार्च, 2016 को ब्रुसेल्स में चार साल बाद आयोजित किया गया था। भारत और यूरोपीय संघ ने कार्य एजेंडा 2020 का समर्थन किया। उन्होंने आतंकवाद के खिलाफ एक संयुक्त घोषणा को अपनाया। शिखर सम्मेलन में भारत और यूरोपीय संघ ने स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु भागीदारी पर संयुक्त घोषणा और भारत-यूरोपीय जल

साझेदारी पर संयुक्त घोषणा को भी अपनाया। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने भी 30 मार्च, 2016 को बेल्जियम की आधिकारिक दौरा किया। भारत और बेल्जियम ने द्विपक्षीय शिखर बैठक की।

फ़िनलैंड के प्रधान मंत्री जुहा सिपिला ने फरवरी 2016 में भारत का दौरा किया। उन्होंने मुंबई में आयोजित 'मेक इन इंडिया' सप्ताह के उद्घाटन में भाग लिया। भारत और फिनलैंड ने आर्थिक संबंधों, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में सहयोग और क्षेत्रीय मुद्दों पर सहयोग बढ़ाने पर चर्चा की। स्वीडन के प्रधान मंत्री स्टीफन लोफवेन ने फरवरी, 2016 में भारत का दौरा किया। प्रधान मंत्री लोफवेन ने मेक इन इंडिया सप्ताह में भाग लिया। दोनों देश रक्षा क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए बातचीत करने पर सहमत हुए।

9.2.i. भारत और यूरोपीय संघ (भारत-ईयू शिखर सम्मेलन)

9.2.i.ए प्रधान मंत्री मोदी ने 13 वें यूरोपीय संघ-भारत शिखर सम्मेलन, ब्रुसेल्स में भाग लेने के लिए बेल्जियम का दौरा किया, 30 मार्च 2016

यूरोपीय संघ का प्रतिनिधित्व यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष डोनाल्ड टस्क और यूरोपीय आयोग के अध्यक्ष जीन-क्लाउड जुनकर ने किया था और भारत का प्रतिनिधित्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया था।

नेताओं ने साझा मूल्यों और सिद्धांतों के आधार पर यूरोपीय संघ-भारत रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने की अपनी प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि की। नेताओं ने "2020 कार्य के लिए यूरोपीय संघ-भारत एजेंडा" का समर्थन किया, और अगले पांच वर्षों के लिए यूरोपीय संघ-भारत रणनीतिक साझेदारी के लिए एक ठोस रोड-मैप तैयार किया।

नेताओं ने भारत में पर्यावरणीय रूप से स्थायी सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे में दीर्घकालिक निवेश का समर्थन करने के लिए यूरोपीय निवेश बैंक (ईआईबी) की प्रतिबद्धता का स्वागत किया। उन्होंने लखनऊ शहर में पहली मेट्रो लाइन के निर्माण में भागीदारी के रूप में कुल 450 मिलियन पाउंड के ऋण का स्वागत किया, जिसके अधीन ईआईबी और भारत सरकार ने 200 मिलियन पाउंड की पहली किश्त पर हस्ताक्षर किया।

विदेश नीति, मानव अधिकार और सुरक्षा सहयोग को आगे बढ़ाना

यूरोपीय संघ और भारत ने 2010 की 'अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर संयुक्त घोषणा' का नवीनीकरण किया और हिंसक चरमपंथ और कट्टरता, विदेशी आतंकवादी सेनानियों के प्रवाह, आतंकवादी वित्तपोषण के स्रोतों और हथियार आपूर्ति के स्रोतों का मुकाबला करने के लिए सहयोग बढ़ाने का निर्णय लिया।

यूरोपीय संघ और भारत प्रसार चुनौतियों पर विचारों का आदान-प्रदान जारी रखने पर सहमत हुए। यूरोपीय संघ और भारत ने ईरानी परमाणु मुद्दे के संबंध में संयुक्त व्यापक योजना योजना (जेसीपीओए) पर यूरोपीय संघ के उच्च प्रतिनिधि द्वारा कराई गई सहमति का स्वागत किया।

व्यापार और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने के माध्यम से विकास और रोजगार

नेताओं ने स्वीकार किया कि सेवाओं में व्यापार न केवल विकसित देशों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि विकासशील देशों के लिए भी विकास के लाभ प्राप्त करने समेत गरीबी के शमन तथा

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अपनी साझेदारी बढ़ाने के लिए नए मोर्चे की तरह एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में तेजी से उभर रहा है।

उन्होंने "कौशल भारत" को गहराने और इसमें समर्थन करने के लिए एसएमई सहित यूरोपीय संघ और भारतीय व्यवसायों को प्रोत्साहित किया।

नेताओं ने सफल यूरोपीय संघ-भारत आईसीटी संवाद और आईसीटी व्यापार संवाद का स्वागत किया। उन्होंने साइबर सुरक्षा, आईसीटी मानकीकरण, इंटरनेट शासन, अनुसंधान और नवाचार, (जैसे कि भाषा प्रौद्योगिकी, यूरोपीय संघ के नेटवर्क की स्थापना और भारतीय नवोन्मेष स्टार्ट-अप कंपनियों की स्थापना) के माध्यम से 'डिजिटल इंडिया' पहल और ईयू के 'डिजिटल सिंगल मार्केट' के बीच संबंधों को बढ़ाने का प्रोत्साहन दिया।

ईयू और भारत का लक्ष्य एस एंड टी के सीमांत क्षेत्रों में और स्वास्थ्य समेत वर्तमान वैश्विक चुनौतियों को संबोधित करने में उनके सहयोग को तेज करना है, और उन्होंने अनुसंधान और नवाचार परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए संयुक्त रूप से एक तंत्र स्थापित करने का स्वागत किया है।

सभी नेता फार्मास्यूटिकल्स, व्यापार और उद्योग के मुद्दों, कृषि, मत्स्य पालन, खाद्य और फ़ीड सुरक्षा समेत कई क्षेत्रों में यूरोपीय संघ-भारत के वर्तमान संवाद को और गहन बनाने के लिए प्रतिबद्ध हुए। उन्होंने बहुपक्षीय, व्यापक आर्थिक और वित्तीय मामलों पर चल रहे जुड़ाव के महत्व को रेखांकित किया। यूरोपीय संघ और भारत अपने क्षैतिज विमानन समझौते के कार्यान्वयन की शुरुआत के लिए तत्पर थे।

आने वाली पीढ़ियों के लिए वैश्विक समृद्धि

दोनों पक्षों ने सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा और अदीस अबाबा कार्य एजेंडा को अपनाने का स्वागत किया। दोनों पक्षों ने, मार्च 2015 में आपदा जोखिम न्यूनीकरण 2015-2030 के लिए अपनाई गई सेंदाई रूपरेखा को सुसंगत बनाने और पारस्परिक रूप से सुदृढ़ीकरण सुनिश्चित करने की आवश्यकता को पहचाना, जो एक सूचित जोखिम और प्रतिस्कंदी सतत विकास एजेंडा को रेखांकित करता है।

उन्होंने प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में संयुक्त गतिविधियों को जारी रखने के लिए यूरोपीय संघ-भारत ऊर्जा पैनल की बैठक जल्द बुलाई। उन्होंने 'भारत और यूरोपीय संघ के बीच स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु भागीदारी पर संयुक्त घोषणा' का भी स्वागत किया।

सामरिक साझेदारी में नागरिकों की भागीदारी बढ़ाना

यूरोपीय संघ और भारत ने अपने नागरिकों के बीच संपर्कों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रवासन और गतिशीलता पर एक आम एजेंडा की स्थापना का स्वागत किया।

9.2.i कार्य के लिए सीईयू-इंडिया एजेंडा-2020

यह एजेंडा 2005 और 2008 की संयुक्त कार्य योजनाओं के साझा उद्देश्यों और परिणामों पर आधारित है।

- ***विदेश नीति में सहयोग***

पारस्परिक हित के क्षेत्रों में विदेश नीति सहयोग को मजबूत करना, जैसे कि एशिया, अफ्रीका, मध्य पूर्व/पश्चिम एशिया, यूरोप और अन्य प्रासंगिक क्षेत्रों में विदेश मंत्रालय और यूरोपीय विदेश कार्य सेवा के उचित स्तरों पर नियमित संवादों के माध्यम से विदेश नीति सहयोग को मजबूत करना।

- ***सुरक्षा सहयोग***

अप्रसार और निरस्त्रीकरण, समुद्री डकैती-रोधी, आतंकवाद-रोधी (कट्टरता विरोध सहित) और साइबर सुरक्षा के साझा उद्देश्यों पर ठोस परिणाम प्राप्त करने के लिए दृढ़ सहयोग बनाना और कार्य करना।

- ***मानवाधिकार***

साझा मानवाधिकारों के मूल्यों को बढ़ावा देने और सामरिक साझेदारी के अंतर्गत आपसी समझ को बढ़ावा देने के लिए एक प्रमुख उपकरण के रूप में यूरोपीय संघ-भारत मानवाधिकार वार्ता के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्टि करना।

- ***व्यापार और निवेश, व्यवसाय और अर्थव्यवस्था***

बहुपक्षीय स्तर पर जुड़ाव जारी रखना, दोनों पक्ष इस बात पर चर्चा करने के लिए सहमत हुए हैं कि कैसे व्यापक-आधारित वाणिज्य एवं निवेश समझौते के माध्यम से उनके द्विपक्षीय व्यापार और निवेश समझौते को गहराया जा सकता है ताकि उसका लाभ पूरी तरह से प्राप्त किया जा सके।

फार्मास्यूटिकल्स के क्षेत्र में सहयोग को मजबूत करना, विशेष रूप से फार्मास्यूटिकल्स, जैव प्रौद्योगिकी और चिकित्सा उपकरणों पर यूरोपीय संघ-भारत संयुक्त कार्य समूह की नियमित बैठकों के संदर्भ में। भारत की 'मेक इन इंडिया' पहल के संदर्भ में, सार्वजनिक-निजी कंपनी भागीदारी सहित आपसी विनिमय को मजबूत करना और निवेश के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करना।

- **वैश्विक मुद्दे/क्षेत्र की नीति में सहयोग**

➢ **जलवायु परिवर्तन**

प्रत्याशित राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (आईएनडीसी) के कार्यान्वयन सहित पेरिस जलवायु समझौते के कार्यान्वयन पर सहयोग देना। 2015 में पार्टीज़ द्वारा मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के लिए अपनाए गए हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (एचएफसी) पर दुबई पाथवे को याद करते हुए, सहयोग की संभावनाएं तलाशना।

➢ **ऊर्जा**

यूरोपीय संघ-भारत ऊर्जा पैनल और इसके कार्य समूहों के तत्वावधान में अक्षय ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता, स्मार्ट ग्रिड, स्वच्छ कोयला प्रौद्योगिकी, ऊर्जा सुरक्षा और ऊर्जा अनुसंधान और नवाचार सहित ऊर्जा सहयोग का विस्तार करना और संयुक्त राष्ट्र महासचिव द्वारा आरम्भ की गई 'सभी के लिए सतत ऊर्जा' उद्देश्यों का समर्थन करते हुए संयुक्त पहल की संभावनाओं को तलाशना।

➢ **पर्यावरण**

अन्य पहलों के साथ-साथ, 'स्वच्छ भारत', 'स्वच्छ गंगा' और 'मेक इन इंडिया' की पहल के संबंध में आदान-प्रदान को बढ़ाना, जिसमें पर्यावरण पर संयुक्त कार्य समूह और शहरी प्रकरण में स्वच्छ हवा, अपशिष्ट, रसायन, जल, जैव विविधता, मिट्टी और भूमि जैसे क्षेत्रों में बहु-हितधारक पर्यावरण मंच के माध्यम से आदान-प्रदान बढ़ाना शामिल है।

भारत-यूरोपीय जल साझेदारी (आईईडब्ल्यूपी) की स्थापना और कार्यान्वयन, पानी के मुद्दों पर यूरोपीय संघ और भारत के बीच अधिक सुसंगत और प्रभावी सहयोग को सक्षम करना, विशेष रूप से गंगा नदी के कायाकल्प के लिए भारत की 'स्वच्छ गंगा' प्रमुख कार्यक्रम और भारत के राष्ट्रीय जल मिशन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के संदर्भ में।

- **सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा**

सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के कार्यान्वयन पर अनुभव साझा करने के लिए ईयू-भारत वार्ता स्थापित करना।

- **शहरी विकास**

'100 स्मार्ट शहरों' के प्रमुख कार्यक्रम और यूरोपीय संघ के शहरी नीति विकास के अनुभव के सन्दर्भ में, बुनियादी ढांचे, ऊर्जा, स्वच्छता और जल प्रबंधन जैसे मुद्दों पर नियमित वार्ता करने के माध्यम से भारतीय राज्यों और शहरों, यूरोपीय संघ के सदस्य राज्यों और क्षेत्रों/शहरों और यूरोपीय संघ की क्षेत्रीय समिति की बढ़ती भागीदारी के साथ शहरी विकास पर यूरोपीय संघ-भारत का सहयोग बढ़ाना।

- **अनुसंधान और नवाचार**

23 नवंबर, 2015 को नई दिल्ली में आयोजित 10 वीं भारत-यूरोपीय संघ विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचालन समिति की बैठक के परिणामों के आधार पर, भारत-यूरोपीय संघ विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार सहयोग।

चयनित यूरोपीय संघ क्षितिज 2020 और भारतीय कार्यक्रमों में शोधकर्ताओं की पारस्परिक पहुंच की दिशा में काम करना।

परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास सहयोग के लिए यूराटॉम-भारत समझौते को अंतिम रूप देना और कार्यान्वयन शुरू करना।

- **सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी)**

"डिजिटल इंडिया" पहल और यूरोपीय संघ के "डिजिटल सिंगल मार्केट" के बीच, विशेष रूप से आर्थिक और नियामक मुद्दों (जैसे कि बाजार पहुंच), आईसीटी मानकीकरण, इंटरनेट प्रशासन, अनुसंधान और नवाचार के साथ-साथ अभिनव स्टार्ट-अप कंपनियों ("स्टार्टअप यूरोप इंडिया नेटवर्क") में सहयोग करके और वार्षिक संयुक्त आईसीटी कार्य समूह और व्यवसाय संवाद का अच्छा उपयोग करके तालमेल बनाना।

भारत-यूरोपीय संघ संयुक्त आईसीटी कार्य समूह के तहत वैश्विक संचार नेटवर्क (5G) की अगली पीढ़ी पर सहयोग के लिए एक संयुक्त घोषणा को अंतिम रूप देने की दिशा में काम करना।

- **परिवहन**

परिवहन नीति पर सहयोग और संवाद को सुदृढ़ बनाना जिसमें अन्य चीजों के साथ-साथ सुरक्षा, कानूनी और नियामक मुद्दें और बुनियादी ढांचे शामिल हैं। नागरिक उड्डयन पर, यूरोपीय संघ-भारत क्षैतिज समझौते (2008 में हस्ताक्षरित) पर कार्यान्वयन करना और विमानन सुरक्षा समेत सहयोग बढ़ाना।

- **अंतरिक्ष**

भारतीय क्षेत्रीय नौवहन उपग्रह प्रणाली और यूरोपीय संघ की गैलीलियो के बीच संवादों को प्रबलिकृत करने और साथ ही संयुक्त वैज्ञानिक अंतरिक्ष उपकरण के लिए पृथ्वी अवलोकन और उपग्रह नौवहन समेत अंतरिक्ष सहयोग को बढ़ाना।

- **<u>लोगों-से-लोगों का जुड़ाव</u>**

प्रवासन और गतिशीलता

उच्च स्तरीय वार्ता की नियमित बैठकें पुनः आरम्भ करना और इस रूपरेखा में, प्रवासन और गतिशीलता (सीएएमएम) पर यूरोपीय संघ-भारत का साझा एजेंडा कार्यान्वित करना।

- **शिक्षा और संस्कृति**

भारत की जीआईएएन कार्यक्रम और ईयू की इरास्मस+ कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षा पर संवाद और सहयोग को मजबूत करना; गतिशीलता और बहुभाषावाद सहित सर्वोत्तम प्रथाओं का साझाकरण; यूरोपीय संघ-भारत उच्च शिक्षा मेलों का आयोजन; और पहुंच, गुणवत्ता, सीखने के परिणामों और बेंचमार्किंग जैसे मुद्दों पर काम करना।

- **संसदों, नागरिक समाज और स्थानीय/विकेंद्रीकृत प्राधिकरणें**

पारस्परिक आधार पर भारतीय संसद और यूरोपीय संसद के प्रतिनिधिमंडलों के बीच पारस्परिक रूप से सुविधाजनक तारीखों पर नियमित बैठकें करना।

भारतीय और यूरोपीय संघ के नागरिक समाज संगठनों, विचार मंचों, स्थानीय और विकेंद्रीकृत प्राधिकरणों के बीच नियमित संवाद को बढ़ावा देना।

- **यूरोपीय संघ-भारत सामरिक भागीदारी की संस्थागत संरचना**

यूरोपीय संघ-भारत सुरक्षा संवाद और विदेश नीति परामर्श को "विदेश नीति और सुरक्षा परामर्श" (एफपीएससी) में मिलाना और चार सुरक्षा कार्य समूहों को बनाए रखना, जो एफपीएससी को रिपोर्ट करेंगे।

9.2.i.डी. आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई पर भारत-यूरोपीय संघ की घोषणा

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रपति डोनाल्ड टस्क और राष्ट्रपति जीन-क्लाउड जुनकर ने ब्रुसेल्स और दुनिया के कई हिस्सों में हुए आतंकवादी हमलों की कड़ी निंदा की और सभी रूपों के आतंकवाद का संयुक्त रूप से मुकाबला करने के अपने दृढ़ संकल्प की पुनः पुष्टि की। ब्रुसेल्स और पेरिस,

पठानकोट और गुरदासपुर में हाल में हुए आतंकवादी हमलों की निंदा करते हुए, और मुंबई में नवंबर 2008 के आतंकवादी हमलों को याद करते हुए, नेताओं ने इन हमलों के अपराधियों को उनके अंजाम तक पहुंचाने का अनुरोध किया। नेताओं ने आईएसआईएल (द-एश), लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद, हिज्ब-उलमुजाहिदीन, हक्कानी नेटवर्क और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय अन्य आतंकवादी समूहों जैसे कि अलकायदा और उसके सहयोगियों के खिलाफ निर्णायक और एकजुट कार्रवाई करने का अनुरोध किया।

आतंकवाद के वैश्विक खतरे का समाधान करने के लिए एक व्यापक अंतर्राष्ट्रीय कानूनी रूपरेखा स्थापित करने की तत्काल आवश्यकता को देखते हुए, नेताओं ने संयुक्त राष्ट्र से अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक संधि को जल्द अपनाने का अनुरोध किया। उन्होंने वित्तीय कार्रवाई कार्यबल (एफएटीएफ) और वैश्विक आतंकवाद-रोधी मंच (जीसीटीएफ) जैसे मंचों पर अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए मिलकर काम करने का संकल्प लिया।

9.2.i.ई. स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु साझेदारी पर यूरोपीय संघ और भारत गणराज्य के बीच संयुक्त घोषणा

स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा देने और जलवायु कार्रवाई के लिए ऊर्जा दक्षता बढ़ाने की आम हितों को पहचानते हुए, विकासशील देशों को विश्व की ओर से सहायता प्रदान करने के माध्यम से, और जैसा कि भारत द्वारा प्रस्तुत प्रत्याशित राष्ट्रीय निर्धारित योगदानों में प्रदर्शित किया गया है, पैरिस समझौते में शामिल यूरोपीय संघ और अन्य पक्षों को निम्नलिखित को पहचाना:

- स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन और वृहद ऊर्जा दक्षता का वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा में सकारात्मक योगदान;
- जलवायु अनुकूल ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण, विकास और कार्यान्वयन के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी साझेदारी विकसित करने की आवश्यकता, जैसा कि भारत द्वारा प्रस्तुत प्रत्याशित राष्ट्रीय निर्धारित योगदान में उजागर किया गया है, और सहयोगात्मक कार्रवाई को मजबूत करने की आवश्यकता;
- स्मार्ट ग्रिड के विकास द्वारा प्रस्तावित क्षमताएं और एक अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) और मिशन नवाचार की पहल, जिसका यूरोपीय संघ ने स्वागत किया; – विकासशील देशों में शमन और अनुकूलन कार्यों के लिए प्रदान किए जाने वाले जलवायु परिवर्तन वित्त को बढ़ाने की आवश्यकता, जिसमें सार्थक शमन कार्यों और कार्यान्वयन में पारदर्शिता के संदर्भ में विभिन्न प्रकार के स्रोतों से जैसे कि वित्त के वैकल्पिक स्रोतों सहित सार्वजनिक और निजी, द्विपक्षीय और बहुपक्षीय स्रोतों से 2020 तक संयुक्त रूप से 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर प्रदान करने का लक्ष्य है।

➢ **सहयोग के क्षेत्र**

भारत और यूरोपीय संघ निम्नलिखित सहयोग को प्रोत्साहित करने और बढ़ावा देने के का प्रयास करते हैं:

- स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु भागीदारी (इसके बाद "साझेदारी" कहा गया है) की स्थापना के लिए काम करना, और इसके लिए यूरोपीय संघ के इच्छुक सदस्य राज्यों, यूरोपीय और भारतीय संस्थानों, व्यवसायों और नागरिक समाज सहित संबंधित हितधारकों के प्रतिनिधियों को एक साथ लाना।
- स्वच्छ ऊर्जा, स्वच्छ कोयला प्रौद्योगिकी, ऊर्जा दक्षता के क्षेत्र में और भारत तथा ईयू में जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में नीति और नियामक दृष्टिकोण, प्रशासन, सर्वोत्तम प्रथाओं, व्यापार समाधान,

बाजार पहुंच और संयुक्त अनुसंधान और नवाचार के अवसरों पर विचारों का आदान-प्रदान करना, और इसके लिए यूरोपीय संघ और भारत की जलवायु और ऊर्जा नीतियों के कार्यान्वयन में प्राप्त सीख पर विचार करना।

- आईएनडीसी और संबंधित शमन और अनुकूलन पहलों को लागू करने के अनुभवों, विचारों और रुख का आदान-प्रदान करना।
- स्मार्ट ग्रिड पर यूरोपीय संघ-भारत सहयोग विकसित करना और अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन, मिशन नवाचार के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए यूरोपीय संघ के लिए भारत के साथ मिलकर काम करने की संभावनाओं को तलाशना।
- हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (एचएफसी) पर 2015 दुबई पाथवे की दृष्टि से उन पदार्थों पर मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के संदर्भ में सहयोग की संभावनाओं का पता लगाना जो ओज़ोन परत को नष्ट करते हैं।

दोनों पक्ष परस्पर हित के क्षेत्रों पर कार्य समूहों और विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा संवादों का समर्थन करने के लिए भारत-यूरोपीय संघ जलवायु परिवर्तन संवाद स्थापित करने का प्रयास किया। इस साझेदारी के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए क्रिया-उन्मुख कार्य योजना को विस्तृत करने की आवश्यकता है।

9.2.ii बेल्जियम

9.2.ii.ए. प्रधानमंत्री मोदी का बेल्जियम दौरा (30 मार्च, 2016)

13 वें भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन का उद्देश्य भारत-यूरोपीय संघ की रणनीतिक साझेदारी को गहरा करना और भारत के विकास और वृद्धि के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में सहयोग करना है।

9.2.ii.बी. प्रधान मंत्री के बेल्जियम दौरे के दौरान भारत-बेल्जियम संयुक्त वक्तव्य

नेताओं ने, द्विपक्षीय संबंधों को अधिक मजबूत बनाने के लिए एक अवसर के रूप में वर्ष 2017 में भारत और बेल्जियम के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 70 वीं वर्षगांठ का स्वागत किया।

प्रधानमंत्रियों ने भारत और बेल्जियम के बीच एक संस्थागत राजनीतिक संवाद शुरू करने का स्वागत किया। प्रधान मंत्री मिशेल ने भारत के प्रति बेल्जियम का समर्थन दोहराया कि भारत को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनना चाहिए। भारत और बेल्जियम ने वैश्विक अप्रसार उद्देश्यों को मजबूत करने में अपनी साझा रुचि को रेखांकित किया। इस संबंध में, बेल्जियम ने चार बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाओं, नामतः परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह, मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था, ऑस्ट्रेलिया समूह और वासेनार व्यवस्था का सदस्य बनने के लिए भारत की आकांक्षा का स्वागत करता है। भारत और बेल्जियम ने भारत को इन शासनों का सदस्य बनाने के लिए एक-साथ मिलकर काम करने की सहमति व्यक्त की।

दोनों देशों की संघीय संरचना पर ध्यान देते हुए, दोनों नेताओं ने भारत के राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों तथा बेल्जियम के क्षेत्रों और समुदायों के स्तर पर पारस्परिक रूप से लाभप्रद साझेदारी और सहयोग को प्रोत्साहित किया।

- **सुरक्षा सहयोग**

दोनों प्रधानमंत्रियों ने हिंसक चरमपंथ और आतंकवाद को रोकने और मुकाबला करने के लिए द्विपक्षीय और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता पर सहमति व्यक्त की, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक संधि को जल्द अपनाना और आतंकवादियों और आतंकवादी समूहों के सन्दर्भ में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सभी प्रासंगिक प्रस्तावों का कड़ाई से अनुपालन करना शामिल है।

➢ **आर्थिक सहयोग**

द्विपक्षीय व्यापार में हीरा क्षेत्र के महत्व और किम्बरली प्रक्रिया की संरचना में चल रहे सहयोग को स्वीकार करते हुए, उन्होंने इस पारस्परिक रूप से लाभकारी साझेदारी को और मजबूत करने का संकल्प लिया। नेताओं ने दोनों अर्थव्यवस्थाओं की सेवा क्षेत्र में सेवाओं की महत्वपूर्ण भूमिकाओं को पहचाना और विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी, फार्मास्यूटिकल्स और नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्रों जैसे सेवा क्षेत्र उद्योगों में आपसी साझेदारी को बढ़ावा दिया। दोनों प्रधानमंत्रियों ने एक संशोधन प्रोटोकॉल संपन्न होने का स्वागत किया जो दोहरा कराधान परिहार समझौता (डीटीएए) को अधिक व्यापक और समकालीन बनाता है।

➢ **ऊर्जा, बंदरगाह और सूचना प्रौद्योगिकी**

दोनों प्रधानमंत्रियों ने संघीय और क्षेत्रीय स्तर पर बेल्जियम के सक्षम प्राधिकरणों और भारत के नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के बीच अक्षय ऊर्जा पर समझौता ज्ञापन के तहत प्रगति का स्वागत किया और 14 मार्च 2016 को संयुक्त कार्य समूह की उद्घाटन बैठक का स्वागत किया जिसमें स्मार्ट शहरों, अपशिष्ट से ऊर्जा, लघु पवन टरबाइन, जल शोधन प्रौद्योगिकियों समेत नवीकरणीय ऊर्जा और शून्य उत्सर्जन भवनों को संयुक्त सहयोग के लिए प्राथमिकता क्षेत्र के रूप में पहचाना गया है।

नेताओं ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सक्रिय सहयोग पर सकारात्मक ध्यान दिया और भारत के देवस्थल में ऑप्टिकल इंफ्रारेड टेलीस्कोप की तकनीकी सक्रियता का स्वागत किया, जिसे भारत के एआरआईईएस (आर्यभट्ट अवलोकन विज्ञान अनुसन्धान संस्थान) और बेल्जियम की कंपनी कंपनी एएमओएस (उन्नत यांत्रिक एवं प्रकाशीय प्रणाली) द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किया गया है और जो सफल सहयोग का ठोस प्रदर्शन करता है। दोनों नेताओं ने जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत के जैव प्रौद्योगिकी विभाग और अनुसन्धान संस्थापन – फ़्लैंडर्स (एफडब्ल्यूओ) के बीच अंतिम समझौता ज्ञापन के आगामी हस्ताक्षर का भी स्वागत किया।

बंदरगाहों क्षेत्र में दोनों देशों के बीच लंबे समय से चलते आ रहे सहयोग को देखते हुए, उन्होंने फ्लैंडर्स सरकार और पोत परिवहन मंत्रालय के बीच हुए समझौते को अतिरिक्त दो वर्षों के लिए विस्तृत करने का स्वागत किया, साथ ही 2015 में हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के तहत एक संयुक्त प्रशिक्षण केंद्र विकसित करने के लिए एंटवर्प और जवाहरलाल नेहरु पोर्ट ट्रस्ट के बीच चल रहे सहयोग का भी स्वागत किया।

उन्होंने ई-शासन/मोबाइल शासन, साइबर सुरक्षा, प्रमुख अनुसंधान संस्थानों के बीच संस्थागत ढांचे, आईसीटी में शिक्षा और प्रशिक्षण सहित कई क्षेत्रों में सूचना संचार प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स (आईसीटी और ई) पर सहयोग करने के लिए चल रही बातचीत का भी स्वागत किया और समझौते के जल्द संपन्न करने की आशा व्यक्त की।

➢ **लोगों-से-लोगों का संपर्क**

शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग के महत्व की पुष्टि करते हुए, दोनों प्रधानमंत्रियों ने सहयोगात्मक अनुसंधान, छात्र की गतिशीलता और बेल्जियम और भारत के उच्च शिक्षण संस्थानों के बीच संकाय के आदान-प्रदान में कई परियोजनाओं का स्वागत किया। उन्होंने दोनों पक्षों के संस्थानों के बीच शैक्षिक जुड़ाव को और मजबूत करने की आशा व्यक्त की।

उन्होंने पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए भारत द्वारा बेल्जियम के नागरिकों को दी गई ई-टूरिस्ट वीजा सुविधा का स्वागत किया।

9.2.iii. चेक गणराज्य

9.2.iii.ए. चेक गणराज्य के विदेश मंत्री का दौरा (18-20 दिसंबर 2016)

चेक गणराज्य के विदेश मंत्री लुबोमिर ज़ाओरालेक ने 18 से 20 दिसंबर 2016 को भारत का दौरा किया। 2013 के बाद चेक गणराज्य के विदेश मंत्री का यह पहला दौरा था। मंत्री ज़ाओरालेक के साथ चेक गणराज्य के विदेश मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारीगण और विभिन्न व्यापार, औद्योगिक और वित्तीय क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते एक उच्च-स्तरीय व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडल भी थे।

भारत और चेक गणराज्य के बीच संबंध पारंपरिक रूप से अंतरंग और मैत्रीपूर्ण रहे हैं। इस वर्ष के दौरान, दोनों पक्षों की ओर से मंत्रिस्तरीय दौरों का आदान-प्रदान हुआ है, जिसके अंतर्गत भारत के रेल मंत्री अक्टूबर 2016 में चेक गणराज्य गए और मार्च 2016 में चेक गणराज्य के रक्षा मंत्री भारत दौरे पर आए थे।

उनकी वार्ता के दौरान, विदेश राज्य मंत्री एम जे अकबर के साथ द्विपक्षीय संबंधों के संपूर्ण पहलुओं के साथ-साथ आपसी हित के महत्वपूर्ण वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दों पर चर्चा हुई।

भारत और चेक गणराज्य एक मजबूत आर्थिक संबंध साझा करते हैं, जिनका वार्षिक द्विपक्षीय व्यापार 1.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर का है। आर्थिक संबंधों को मजबूत करने के तरीकों और साधनों पर चर्चा करने के लिए, भारतीय पक्ष से भारत के वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री और चेक गणराज्य के पक्ष से चेक गणराज्य के व्यापार और उद्योग मंत्री की सह-अध्यक्षता में संयुक्त आर्थिक आयोग पर एक तंत्र मौजूद है। भारत-चेक संबंधों में रक्षा सहयोग एक महत्वपूर्ण घटक है। भारत-चेक संयुक्त रक्षा समिति की बैठकों का एक तंत्र मौजूद है जिन्होंने आखरी बार नवंबर 2016 में बैठक संचालित की थी।

दोनों देशों में सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम और शिक्षा विनिमय कार्यक्रम मौजूद है और विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अनुसंधान और विकास में सहयोग पर नियमित रूप से चर्चा करते हैं। मंत्री ज़ाओरालेक और मंत्री एम जे अकबर ने आपसी हित के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आगे सहयोग की संभावना पर विस्तार से चर्चा की।

9.2.iv. फ़िनलैंड

फ़िनलैंड के प्रधान मंत्री, श्री जुहा सिपिला ने 12-14 फरवरी, 2016 को भारत का दौरा किया। दौरे के अंत में, 13 फरवरी, 2016 को एक संयुक्त वक्तव्य पर हस्ताक्षर किए गए। संयुक्त वक्तव्य की मुख्य बिंदुएँ हैं:

फिनलैंड के प्रधान मंत्री ने भारत को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनाने के पक्ष में फिनलैंड का समर्थन दोहराया।

वैश्विक अप्रसार उद्देश्यों और बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्था को मजबूत करने के अपने संयुक्त प्रयास में, प्रधान मंत्री सिपिला ने परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह और मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था में भारत की सदस्यता पर एक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। भारत के प्रधान मंत्री ने आर्कटिक परिषद में भारत को एक पर्यवेक्षक बनाने के प्रति फिनलैंड के समर्थन के लिए धन्यवाद दिया।

सभी रूपों और किस्मों में आतंकवाद की निंदा करते हुए और इस खतरे के प्रति शून्य सहिष्णुता को दोहराते हुए, जो गंभीर रूप से अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा, विकास और वृद्धि का ह्रास करता है, दोनों पक्षों ने आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए संयुक्त राष्ट्र के सभी कानूनी साधनों के अनुसमर्थन और कार्यान्वयन के महत्व पर बल दिया और अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक संधि पर प्रगति लाने के लिए प्रयास करने को प्रोत्साहित किया। उन्होंने विशेष रूप से अफ्रीका और मध्य पूर्व के संघर्षपूर्ण और अस्थिर क्षेत्रों में संकट में फंसे लोगों के बड़े पैमाने पर प्रवासन की समस्या पर भी ध्यान दिया।

उन्होंने भारत-यूरोपीय संघ के व्यापक व्यापार और निवेश समझौते (बीटीआईए) पर वार्ता फिर से शुरू करने की संभावना का स्वागत किया।

उन्होंने देखा कि भारत में 100 से अधिक फिनिश कंपनियां और फिनलैंड में कुछ 25 भारतीय कंपनियां स्थापित हैं। भारत में स्थापिय कई फिनिश कंपनियों का देश में ही विनिर्माण संयंत्र लगा हैं और अक्षय ऊर्जा और स्वच्छ तकनीक क्षेत्रों में संलग्न हैं, जो उन्हें 'मेक इन इंडिया' कम्पनियां बनाते हैं।

फ़िनलैंड के प्रधान मंत्री ने ईज ऑफ डूइंग बिज़नस सहित व्यवसायिक क्षेत्र तक पहुँचने और कई पहलों के माध्यम से एक सार्थक तरीके से उन्हें आपस में जोड़ने के लिए भारत सरकार और प्रधान मंत्री मोदी के प्रयासों का स्वागत किया।

फ़िनलैंड के प्रधान मंत्री ने नागरिक परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में फ़िनलैंड की क्षमताओं पर प्रकाश डाला। फिनिश कंपनियां और संबंधित सरकारी एजेंसियां परमाणु ऊर्जा संयंत्रों में सुरक्षा और रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र से संबंधित समाधान पेश कर सकती हैं।

दोनों प्रधानमंत्रियों ने सहयोग के अन्य क्षेत्रों जैसे कि नवाचार और विचारों को ऐसे उत्पादों में रूपांतरित करना जिन्हें दुनिया भर के बाजारों में बेचा जा सके, विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों, और डिजिटलीकरण पर सहयोग करने की सहमति व्यक्त की। दोनों नेताओं ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के क्षेत्रों में चल रहे सहयोग की सराहना की, जिसमें सौर, हाइब्रिड और स्मार्ट ग्रिड प्रणालियों को शामिल करने वाली ऊर्जा अनुसंधान परियोजनाओं पर बल दिया गया था। डीएसटी-टीईकेईएस एक साथ मिलकर स्वच्छ प्रौद्योगिकी, जैव-चिकित्सा उपकरणों और इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम और डिजाईन विनिर्माण पर व्यवसाय संचालित सहयोगात्मक अनुसन्धान एवं विकास को बढ़ावा देते हैं। दोनों पक्षों ने प्रौद्योगिकी आधारित स्टार्ट-अप को बढ़ावा देने की प्रासंगिकता को स्वीकार किया।

दोनों नेताओं ने ध्यान दिया कि हर साल लगभग 20000 फिनिश पर्यटक भारत आते हैं और फिनिश नागरिकों को ई-टूरिस्ट वीजा देने की सुविधा के साथ-साथ इस क्षेत्र में फिनलैंड में भारतीय निवेश से लोगों के बीच आदान-प्रदान को प्रोत्साहन मिलेगा।

दोनों पक्षों ने हाल ही में संहिता साझा, इंटरमॉडल सेवाओं, रूटिंग लचीलेपन, कार्गो पर खुले आसमान और घरेलू संहिता साझा पर नागरिक उड्डयन अधिकारियों के बीच समझौता ज्ञापन संपन्न होने की सराहना की; राजनयिक कर्मचारियों के परिवार के आश्रित सदस्यों द्वारा लाभकारी रोजगार पर समझौते के पाठ को अंतिम रूप देना; राजनयिक पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा की छूट और असम में ईंधन ग्रेड इथेनॉल, एसिटिक एसिड, फ़्यूरफ़्यूरल और बांस से बायो-कोयला उत्पादन के लिए जैव-रिफाइनरी परियोजना के साथ आगे बढ़ने के निर्णय के बारे में जारी वार्ता पर ध्यान दिया।

9.2.v. फ्रांस

9.2.v.ए फ्रांसीसी गणराज्य के राष्ट्रपति फ्रैंकॉइस हॉलैंड ने 24-25 जनवरी 2016 को भारत का दौरा किया

फ्रांसीसी गणतंत्र के राष्ट्रपति श्री फ्रैंकॉइस हॉलैंड ने 24-26 जनवरी 2016 तक भारत की आधिकारिक यात्रा की। श्री फ्रैंकॉइस हॉलैंड का भारत का राजकीय दौरा और भारत के 67 वें गणतंत्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में उनकी उपस्थिति भारत के लिए अपने एक विश्वसनीय और महत्वपूर्ण मित्र का गर्मजोशी के साथ स्वागत करने का एक विशेष अवसर था। यह राष्ट्रपति हॉलैंड का भारत का दूसरा राजकीय दौरा था और पांचवीं बार था जब फ्रांस के किसी राजकीय या शासनाध्यक्ष को भारत के गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था, जिससे फ्रांस वह देश बन गया जिसे सबसे अधिक बार ये सम्मान प्रदान किया गया है। दोनों देशों के बीच मित्रता और विश्वास के प्रतीक के रूप में, भारत ने फ्रांस की एक सैन्य टुकड़ी को परेड में शामिल होने का अवसर दिया, जिससे फ्रांस वह पहला देश गया जिसे ये सम्मान प्रदान किया गया है। यह दौरा, अप्रैल 2015 में प्रधान मंत्री मोदी के फ्रांस के सफल दौरे के नौ महीनों बाद हुई थी।

9.2.v.बी. फ्रांसीसी गणराज्य के राष्ट्रपति फ्रैंकॉइस हॉलैंड के भारत के राजकीय दौरे के दौरान हस्ताक्षरित समझौतों/ समझौता ज्ञापनों की सूची (25 जनवरी 2016)

फ्रांसीसी गणराज्य के राष्ट्रपति फ्रैंकॉइस हॉलैंड के भारत के राजकीय दौरे के दौरान 14 समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए थे। मुख्य बिन्दुएँ इस प्रकार हैं:

1. 36 राफेल विमानों की खरीद पर भारत और फ्रांस के बीच समझौता ज्ञापन।
2. भारत की ओशनसैट-3 उपग्रह के साथ आर्गोस-4 पेलोड होस्ट करने पर इसरो और सीएनईएस कार्यान्वयन व्यवस्था।
3. भविष्य की संयुक्त थर्मल इन्फ्रारेड पृथ्वी अवलोकन मिशन पर इसरो और सीएनईएस कार्यान्वयन व्यवस्था।
4. मधेपुरा बिहार में 800 इलेक्ट्रिक इंजनों के उत्पादन के लिए एल्सटॉम और भारतीय रेलवे के बीच संयुक्त उद्यम पर हितधारण समझौता।
5. लुधियाना और अंबाला रेलवे स्टेशनों के नवीकरण हेतु संयुक्त व्यवहार्यता अध्ययन के लिए भारतीय रेलवे और एसएनसीएफ, फ्रांसीसी रेलवे के बीच समझौता।

6. भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण और एएनएसईएस के बीच खाद्य सुरक्षा पर समझौता ज्ञापन।
7. 2016 में नमस्ते फ्रांस (भारतीय त्योहार) और बोंजौर इंडिया (फ्रेंच त्योहार) 2017 के अगले दौर के आयोजन के लिए आशय की घोषणा।
8. 2016-2018 की अवधि के लिए सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम।
9. आईआईटी मुंबई और थेल्स सिस्टमेस एयरोपॉर्टेस के बीच उद्योग प्रायोजित पीएचडी फैलोशिप के लिए समझौता ज्ञापन।
10. उच्च शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में सीएनआरएस, टीबी, यूबीओ, यूबीएस, ईएनएसटीए ब्रेटेन, ईएनआईबी (फ्रेंच विश्वविद्यालय) और आईआईटी मुंबई के बीच सहयोग का समझौता।

9.2.v.सी. फ्रांसीसी गणराज्य के राष्ट्रपति फ्रैंकॉइस हॉलैंड के भारत के राजकीय दौरे के अवसर पर भारत-फ्रांस संयुक्त वक्तव्य (25 जनवरी 2016)

भारत-फ्रांस के संयुक्त वक्तव्य की मुख्य बिन्दुएँ इस प्रकार हैं:

सामरिक साझेदारी

भारत और फ्रांस सदस्यता की दोनों श्रेणियों में विस्तार के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सहित संयुक्त राष्ट्र के तत्काल सुधारों की आवश्यकता को दोहराया ताकि यह समकालीन विश्व का बेहतर ढंग से प्रतिनिधित्व कर सके। फ्रांस ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी के लिए अपने समर्थन की फिर से पुष्टि की। व्यापक विनाश के हथियारों के अप्रसार के क्षेत्र में भारत और फ्रांस के सरोकार एवं उद्देश्य एक जैसे हैं। वैश्विक अप्रसार एवं निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से भारत और फ्रांस बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाओं अर्थात परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनसीजी), मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था (एमटीसीआर), आस्ट्रेलिया समूह और वासेनार व्यवस्था में भारत के शामिल होने के लिए संयुक्त रूप से काम करना जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध हुए।

सुरक्षा

भारत और फ्रांस ने आतंकवाद की खिलाफत करने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया तथा दोनों पक्षों द्वारा आतंकवादरोधी सहयोग पर जारी किए गए एक अलग संयुक्त वक्तव्य का स्वागत किया। फ्रांस के राष्ट्रपति और भारत के प्रधानमंत्री गृह सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, विशेष बलों तथा आतंकी नेटवर्कों के खिलाफ लड़ाई एवं आतंकवाद की साझी समस्या से निपटने के लिए आसूचना की हिस्सेदारी के क्षेत्रों में भारत और फ्रांस के सुरक्षा बलों के बीच सहयोग को गहन करने पर सहमत हुए। दोनों नेताओं ने 14 और 15 जनवरी को पेरिस में आयोजित हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा पर अब तक की पहली द्विपक्षीय वार्ता का भी स्वागत किया जिससे व्यापार एवं संचार के लिए समुद्री लेनों की सुरक्षा बनाए रखने, जल सुरक्षा एवं समुद्री आतंकवाद के खतरे से निपटने, समुद्री क्षेत्र जागरूकता बढ़ाने और हिंद महासागर क्षेत्र में व्यापार एवं आर्थिक संपर्कों को सुदृढ़ करने में अधिक सहयोग का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

रक्षा

दोनों नेताओं ने संतोष के साथ नोट किया कि 2006 में रक्षा सहयोग पर जो द्विपक्षीय करार किया गया है उससे रक्षा सहयोग, उत्पादन, अनुसंधान तथा रक्षा सामग्री के विकास एवं प्रापण

में सहयोग आगे बढ़ा है। दोनों पक्ष इस बात पर सहमत हुए कि रक्षा सहयोग पर करार की अवधि अगले दस वर्षों के लिए बढ़ाई जाएगी। दोनों नेताओं ने संयुक्त सैन्य अभ्यासों के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने जून, 2014 में सफल हवाई अभ्यास गरूड़ और अप्रैल, 2015 में नौसैन्य अभ्यास वरूण का स्वागत किया जिसमें फ्रांस के कैरियर स्ट्राइक समूह ने भाग लिया था। उन्होंने 6 से 20 जनवरी के दौरान भारत में आयोजित शक्ति अभ्यास के नवीनतम चक्र का स्वागत किया जिससे दोनों देशों की सेनाओं के लिए उपयोग प्रचालनात्मक सबक प्राप्त हुए, विशेष रूप से आतंकवाद की खिलाफत में।

दोनों नेताओं ने रक्षा क्षेत्र में फ्रांस और भारत के बीच सहयोग के लंबे इतिहास को रेखांकित किया तथा भारत में विनिर्माण करने के लिए फ्रांसीसी कंपनियों की मजबूत प्रतिबद्धता का आभार प्रकट किया। उन्होंने रक्षा प्रौद्योगिकी, अनुसंधान एवं विकास में सहयोग सहित सहमत क्षेत्रों में सहयोग को और बढ़ाने का अनुरोध किया।

परमाणु ऊर्जा

दोनों देशों ने सुरक्षा, संरक्षा, अप्रसार तथा पर्यावरणीय संरक्षण पर सर्वाधिक ध्यान देते हुए असैन्य परमाणु ऊर्जा के जिम्मेदार एवं संपोषणीय विकास के लिए अपनी प्रतिबद्धता की फिर से पुष्टि की। फ्रांस ने अंतर्राष्ट्रीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाओं, विशेष रूप से एन एस जी में भारत की उम्मीदवारी के लिए अपने मजबूत एवं पुराने समर्थन की फिर से पुष्टि की। भारत और फ्रांस के बीच परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण प्रयोगों के विकास पर 2008 के करार के अनुसरण में दोनों नेताओं ने अपनी औद्योगिक कंपनियों को परियोजना की लागत व्यवहार्यता के लिए भारत में विनिर्माण के लागत प्रभावी स्थानीयकरण पर समुचित रूप से विचार करके जैतापुर में परमाणु विद्युत रिएक्टर की छह यूनिटों के निर्माण के लिए 2016 के अंत तक तकनीकी – वाणिज्यिक वार्ता को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया।

जलवायु परिवर्तन

सीओपी-21 के अंत में अपनाए गए पेरिस करार के आलोक में आज भारत और फ्रांस के बीच द्विपक्षीय सहयोग जलवायु चुनौती से निपटने के लिए पहले से कहीं अधिक प्रतिबद्ध हुए।

स्वच्छ और सतत विकास

स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन को व्यावहारिक कार्रवाई में शामिल करने के लिए अपनी साझा प्रतिबद्धता का अनुवाद करते हुए, राष्ट्रपति हॉलैंड और प्रधान मंत्री मोदी ने सीओपी 21 के मौके पर 30 नवंबर 2015 को संयुक्त रूप से पेरिस में नई अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) पहल शुरू की। इस पहल को आगे बढ़ाने के लिए, दोनों नेताओं ने संयुक्त रूप से अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) के मुख्यालय के लिए भवन की आधारशिला रखी और 25 जनवरी 2016 को गुड़गांव, भारत में आईएसए के अंतरिम सचिवालय का उद्घाटन किया।

दोनों नेताओं ने स्वच्छ और सतत विकास के लिए सहयोग करने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की और स्मार्ट शहरों को विकसित करने की भारत की महत्वाकांक्षी योजनाओं में अपनी मूल्यवान भागीदारी की पुनः पुष्टि की। इस भावना के साथ, दोनों नेताओं ने स्मार्ट सिटी के रूप में चंडीगढ़, नागपुर और पुदुचेरी के 3 शहरों के विकास के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़, महाराष्ट्र राज्य, पुडुचेरी के केंद्र शासित प्रदेश और फ्रांसीसी

विकास एजेंसी के बीच जनवरी 2016 में 3 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर करने का स्वागत किया।

परिवहन

दोनों नेताओं ने स्वच्छ परिवहन के महत्व पर जोर दिया तथा सेमी हाइ स्पीड रेल और स्टेशन विकास के क्षेत्र में अप्रैल, 2015 में भारत के रेल मंत्रालय और फ्रांस के रेल मंत्रालय अर्थात एस एन सी एफ के बीच हस्ताक्षरित सहयोग प्रोटोकाल को याद किया। 2015 में भारत – फ्रांस अंतरिक्ष सहयोग की 50वीं वर्षगांठ के संस्मारक समारोह को याद करते हुए दोनों नेताओं ने एक भावी संयुक्त थर्मल इंफ्रारेड पृथ्वी प्रेक्षण मिशन पर परिभाषा अध्ययन में सहयोग के लिए अपनी अंतरिक्ष एजेंसियों के बीच दो कार्यान्वयन व्यवस्थाओं पर हस्ताक्षर होने और भारत के ओसियन सैट-3 उपग्रह पर डाटा संग्रहण के लिए फ्रांसीसी इंस्ट्रूमेंट की मेजबानी का स्वागत किया। उन्होंने भविष्य के अंतरिक्ष में Centre National d'étudesspatiales (सीएनईएस) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के ग्रह अन्वेषण मिशनों में साझेदारी के माध्यम से सहयोग की घोषणा का भी स्वागत किया।

आर्थिक सहयोग

द्विपक्षीय व्यापार एवं निवेश बढ़ाने के लिए एक अनुकूल माहौल को सुगम बनाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की फिर से पुष्टि करते हुए दोनों नेताओं ने अर्थव्यवस्था एवं वित्त पोषण में सहयोग पर उच्च स्तर पर आर्थिक एवं वित्तीय मामलों पर वार्ता के आयोजन का स्वागत किया। उन्होंने 9 महीनों की अवधि के अंदर भारत – फ्रांस सी ई ओ मंच के आयोजन का भी स्वागत किया। निवारक स्वास्थ्य के क्षेत्र में तथा संयुक्त जोखिम आकलन, अनुसंधान की गतिविधियों तथा खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में तकनीकी ज्ञान के आदान – प्रदान में सहयोग में वृद्धि के लिए निवेश एवं संभावनाओं को बढ़ाने में खाद्य सुरक्षा के विनियमों की केंद्रीय भूमिका को स्वीकार करते हुए दोनों नेताओं ने खाद्य सुरक्षा एवं मानक के क्षेत्र में भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण तथा Agencenationale de sécurité sanitaire de l'alimentation, de l'environnement et du travail (एएनएसईएस) के बीच समझौता ज्ञापन के हस्ताक्षर का स्वागत किया। दोनों नेताओं ने सितंबर 2015 में तेलंगाना और बोर्डो मेट्रोपोल के बीच शहरी विकास में सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन के समापन और दिसंबर 2015 में पेरिस और टूलूज़ में कर्नाटक सरकार द्वारा आयोजित निवेश रोड शो का स्वागत किया।

लोगों-से-लोगों का संपर्क, शिक्षा, कौशल विकास, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

दोनों नेताओं ने भारत और फ्रांस के बीच मजबूत लोगों-से-लोगों का एवं पर्यटन संपर्कों के अलावा दोनों देशों के बीच व्यापक सांस्कृतिक, शैक्षिक और वैज्ञानिक आदान – प्रदान की सराहना की। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में, जिसमें भारत और फ्रांस की संस्थाओं के बीच पहले से ही सैकड़ों करार हैं, दोनों नेताओं ने भारतीय विज्ञान शिक्षा संस्थान और अनुसंधान, पुणे तथा इकोल नोर्मले सुपरियर डे लायन के बीच समझौते पर हस्ताक्षर का स्वागत किया। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में जिसमें फ्रांसीसी और भारतीय संस्थानों के बीच सैकड़ों समझौतों पर हस्ताक्षर किए जा चुके हैं, दोनों नेताओं ने भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान पुणे और EcoleNormaleSupérieure de Lyon के बीच समझौते पर हस्ताक्षर का स्वागत किया। उन्होंने मुंबई के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान और फ्रेंच सीएनआरएस / Telecom Bretagne / Université de Bretagne

occidentale / Université de Bretagne Sud / ENSTA Bretagne / ENI Bretagne के बीच हस्ताक्षरित समझौते का भी स्वागत किया।

नेताओं ने संतोष के साथ इंडो-फ्रेंच उन्नत अनुसन्धान प्रोन्नति केंद्र (सीईएफआईपीआरए) द्वारा पिछले 28 वर्षों में ज्ञान नवाचार श्रृंखला में दोनों देशों के वैज्ञानिक समुदायों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने में निभाई गई भूमिका को पहचाना। उन्होंने फ्रांस और भारत दोनों के विभिन्न वैज्ञानिक एजेंसियों और उद्योगों के साथ साझेदारी में द्विपक्षीय कार्यक्रमों को लागू करके अपनी भूमिका का विस्तार करने के लिए सीईएफआईपीआरए को प्रोत्साहित किया। नेताओं ने दोनों देशों के बहु-हितधारकों की भागीदारी के माध्यम से विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार सहयोग को और भी करीब लाने के लिए एक मंत्री-स्तरीय संयुक्त एस एंड टी समिति की स्थापना का स्वागत किया।

विरासत, संस्कृति, खेल

प्रधानमंत्री मोदी तथा राष्ट्रपति हॉलैंड ने 2016 से 2018 की अवधि के लिए भारत और फ्रांस के बीच सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम पर हस्ताक्षर होने का स्वागत किया और फ्रांस गणराज्य के संस्कृति एवं संचार मंत्रालय, फ्रांस के राष्ट्रीय पुस्तकालय के अध्यक्ष और भारत के संस्कृति मंत्रालय के बीच संपन्न प्रशासनिक व्यवस्था का स्वागत किया। दोनों नेताओं ने 'नमस्ते फ्रांस' नामक महोत्सव को हार्दिक स्वागत किया जिसे भारत द्वारा फ्रांस में 15 सितंबर से 30 नवंबर, 2016 के दौरान आयोजित किया जाएगा जिसमें भारतीय सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए अनेक किस्म भारतीय सांस्कृतिक परफार्मेंस, प्रदर्शनियों, मेलों एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा और इसी तरह भारत में 2017 में फ्रांस के सांस्कृतिक महोत्सव 'बोंजोर इंडिया' के आयोजन का स्वागत किया।

9.2.v.डी. फ्रांसीसी गणराज्य के राष्ट्रपति फ्रैंकॉइस हॉलैंड के भारत के राजकीय दौरे के अवसर पर आतंकवाद के खिलाफ पर भारत-फ्रांस संयुक्त वक्तव्य (25 जनवरी 2016)

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा राष्ट्रपति फ्रांस्वा हॉलैंड ने हाल में विश्व के अनेक भागों में हुए जघन्य आतंकी हमलों की कड़े शब्दों में निंदा की तथा पेरिस, बमाको, बेरूत, ट्यूनिस, सैन बर्नार्डिनो, नजामेना और लेख चाड बेसिन क्षेत्र, काबुल, गुरदासपुर, इस्तांबुल, पठानकोट, जलालाबाद, जकार्ता, ओगाडोगू और चारसड्डा में निर्दोष लोगों की हत्या पर गहरी संवेदना एवं आक्रोश व्यक्त किया।

आतंकवाद से निपटने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की अनिवार्यता पर सहमत होते हुए भारत और फ्रांस ने वार्षिक सामरिक वार्ता तथा आतंकवाद की खिलाफत पर संयुक्त कार्य समूह की बैठकों के पर्यवेक्षण में अपने द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाने, हिंसक अतिवाद एवं कट्टरता का सामना करने, विदेशी लड़ाकों की भर्ती, आतंकियों की आवाजाही एवं प्रवाह में रूकावट पैदा करने, आतंकियों के वित्त पोषण के स्रोतों को बंद करने, आतंकी अवसंरचना को ध्वस्त करने तथा आतंकियों की हथियारों की आपूर्ति को रोकने का संकल्प व्यक्त किया। दोनों नेताओं ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से आतंकियों तथा आतंकी समूहों को नामित करने वाले या आतंकी कृत्यों की निंदा करने वाले संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के संकल्प 1267, 1988, 1989, 2253 और अन्य संगत संकल्पों का कड़ाई से पालन करने के लिए समवेत प्रयास करने का आग्रह किया।

आतंकी गुटों को व्यापक विनाश के हथियारों के प्रसार के जोखिम के बारे में गहरी चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने सभी देशों से यू एन एस सी आर 1540 और आई ए ई ए अपेक्षाओं का पूरी तरह पालन करने का आग्रह किया और परमाणु सामग्री के भौतिक संरक्षण पर संधि (सीपीपीएनएम) तथा 2005 संशोधन के अनुसमर्थन और परमाणु आतंकवाद के कृत्यों के दमन पर अंतर्राष्ट्रीय संधि (आईसीएसएएनटी), विशेष रूप से 1 अप्रैल, 2016 को परमाणु सुरक्षा शिखर बैठक के प्रयोजनार्थ इसकी पुष्टि करने का आग्रह किया।

इस बात पर जोर देते हुए कि किसी भी परिस्थिति में आतंकवाद का कोई औचित्य नहीं हो सकता है, उसका उत्प्रेरण जो भी हो, जहां कहीं भी और जिस किसी भी द्वारा यह किया गया हो, दोनों नेताओं ने लश्करे तैयबा, जैश ए मुहम्मद, हिजबुल मुजाहिद्दीन, हक्कानी नेटवर्क तथा अन्य आतंकी गुटों जैसे कि अलकायदा के विरूद्ध निर्णायक कदम उठाने का अनुरोध किया। भारत में पठानकोट एवं गुरदासपुर में हाल के आतंकी हमलों की निंदा करते हुए दोनों देशों ने पाकिस्तान से इनके दोषियों तथा मुंबई में नवंबर, 2008 के आतंकी हमलों के दोषियो को दंडित करने की अपनी मांग को दोहराया, जिसमें फ्रांस के दो नागरिक भी मारे गए थे तथा यह सुनिश्चित करने की मांग थी कि भविष्य में ऐसे हमले न हों। राष्ट्रपति हॉलैंड ने दक्षिण एशिया में, विशेष रूप से अफ़ग़ानिस्तान में स्थिरता लाने की भारत की भूमिका और पाकिस्तान के साथ व्यापक वार्ता शुरू करने की इसकी हाल की पहल के लिए भारत की प्रशंसा की।

9.2.vi. हंगरी

9.2.vi.ए. 17 अक्टूबर 2016 को उपराष्ट्रपति ने हंगरी का दौरा किया। उन्होंने हंगरी के बुडापेस्ट के कोर्विनस विश्वविद्यालय में 'भारतीय लोकतंत्र: उपलब्धियां और चुनौतियां' विषय पर एक व्याख्यान दिया। उनके व्याख्यान की कुछ मुख्य बिन्दुएँ हैं:

- आधुनिक लोकतंत्र के दिशा में हंगरी की यात्रा में 1956 के बाद कई दशकों का समय लगा और केवल 1990 में ही ये यात्रा आरम्भ हुई। चूंकि दोनों देशों की सरकारें लोगों के लिए और लोगों द्वारा ही चुनी जाती हैं, इसलिए प्रत्येक देश का अनुभव अपने-आप में अनूठा है।
- भारत ने कई दशक पहले इस यात्रा की शुरुआत की थी और हमारी युवा दर्शकों के साथ अपनी धारणाओं और अनुभव को साझा करना उपयोगी हो सकता है।
- भारतीय समाज की प्रकृति के बारे में कुछ शब्द कहना इस चर्चा को प्रासंगिक बनाने के लिए प्रासंगिक है। 1.27 बिलियन की हमारी आबादी में 4,635 से अधिक समुदाय शामिल हैं, जिनमें से 78 प्रतिशत न केवल भाषाई और सांस्कृतिक समुदाय हैं बल्कि सामाजिक श्रेणी के भी हैं। धार्मिक अल्पसंख्यकों की आबादी 19.4 प्रतिशत है। यह हमारे सांस्कृतिक इतिहास में भी झलकता है। भारतीय संस्कृति चरित्र में सामंजस्यपूर्ण है और, एक इतिहासकार ने कहा है कि 'यह अपने विकास के विभिन्न चरणों में समाजों के विभिन्न वर्गों की मान्यताओं, रीति-रिवाजों, संस्कारों, प्रतिष्ठानों, कलाओं, धर्मों और दर्शन को शामिल करता है। यह अनंत रूप से विषम तत्वों को एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास करता है जो इसकी समग्रता को बनाते हैं।' यह एक आसंदिग्ध मानव प्रयोगशाला है जहां विचारों, विश्वासों और सांस्कृतिक परंपराओं की क्रॉस ब्रीडिंग कुछ हजार वर्षों से प्रगति पर है। राष्ट्रीय आंदोलन ने इस सांस्कृतिक बहुलता को पहचाना और इस पर राष्ट्रीय पहचान बनाने का प्रयास किया।
- एक लोकतांत्रिक राज-व्यवस्था की अधिरचना और एक धर्मनिरपेक्ष राज्य की संरचना, आधुनिक भारत में जिसे स्थान दिया गया है, एक बहुल समाज की अस्तित्वगत वास्तविकता में निहित है।
- पहला आम चुनाव 1951 में हुआ था। 173 मिलियन नागरिक मतदान करने के लिए योग्य थे; इनमें से 44.87 प्रतिशत ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। विभिन्न राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों

से संबंधित 1874 उम्मीदवारों ने चुनाव लड़ा। छह दशक से अधिक समय बाद, 2014 के 16 वें आम चुनाव में, मतदाताओं का आकार बढ़कर 814 मिलियन हो गया था, मतदान प्रतिशत बढ़कर 66.4 हो गया था और इनमें से 67.9 प्रतिशत पुरुष और 65.6 प्रतिशत महिलाओं का मतदान था। प्रतियोगियों की संख्या 8,251 थी।

- निर्वाचक नामावली की तैयारी के लिए और संसदीय तथा राज्य विधानसभा चुनावों के संचालन के लिए संस्थागत संरचना बनाना निर्वाचन आयोग की ज़िम्मेदारी है, जो एक संवैधानिक निकाय है जिसके सदस्य छह साल के लिए पद धारण करते हैं और जिस प्रक्रिया से भारत के सर्वोच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश को हटाया जाता है, केवल उसी तरह की एक प्रक्रिया से ही उन्हें भी निकाला जा सकता है। 2004 से, ईवीएम या इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों के माध्यम से वोट दर्ज किए जाते हैं। ये भारत में निर्मित हैं और इनकी सटीकता और गोपनीयता का पूरी तरह से परीक्षण किया गया है।
- भारत निर्विवाद रूप से दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। इसका एकल गुण 'राजनीतिक प्रतियोगिता के लिए स्थान प्रदान करने में सफलता और विभिन्न प्रकार के दावों के अभिव्यक्ति के लिए एक अवसर प्रदान करने में निहित है'। इसने जटिल, अर्ध-संघीय, राज-व्यवस्था में समूह और क्षेत्रीय मांगों को समायोजित करने की सुविधा प्रदान की है। समाज के सभी स्तरों पर हमारे लोगों ने उत्साहपूर्वक लोकतांत्रिक प्रक्रिया का पालन किया है और 1992 में संविधान में किए गए संशोधन के माध्यम से इसे नगर पालिकाओं और ग्राम सभाओं या पंचायतों तक बढ़ाया गया।
- लोकतांत्रिक प्रक्रिया ने राजनीतिक शक्ति को समाज के मध्यम और उच्च जातियों और शहरी समाज वर्गों के हाथों से निकाल कर पिछड़े वर्गों के हाथों में दे दिया है, जो अब देश में राजनीतिक रूप से सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्ति हैं। उन्होंने विधायी और सरकारी सेवाओं में खुद के लिए आरक्षण जीता है, जो आजादी के बाद संवैधानिक प्रावधानों के माध्यम से अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए प्रदान किया गया था। हाल के इतिहास में राजनीतिक शक्ति में सुस्पष्ट बदलाव के कुछ ऐसे उदाहरण हैं, जिसमें जनसंख्या का इतना बड़ा जनसमूह शामिल है और जो बिना किसी हिंसा और लोकतांत्रिक तरीके से लगभग इतने कम समय में हुआ है। यह उन चमत्कारों का एक और उदाहरण है जो लोकतंत्र दिखा सकता है।
- नागरिकों के लिए पर्याप्त समानता हासिल करने की चुनौती, और इस तरह राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए भाईचारा सुनिश्चित करना, प्रगति के अधीन बना हुआ काम है।
- हमारे निर्वाचन प्रणाली के कामकाज की यांत्रिकी, कई वर्षों से महत्वपूर्ण संवीक्षा का विषय रही है, जो इस बात का बोध कराता है कि पथांतरण घुस आई है। 2011 में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने विधि आयोग, कानूनी सुधार का प्रस्ताव देने के लिए जिम्मेदार एक विशेषज्ञ संस्था, को निर्देश दिया कि वह पहचानी गईं दो कुप्रथाओं पर संशोधनों की सिफारिश दे। इसकी रिपोर्ट के बाद व्यापक राष्ट्रीय परामर्श किया गया। इसके अनुसरण में, आयोग ने चुनाव वित्त, राजनीतिक दलों के विनियमन और आंतरिक दल लोक्रंत्र, आनुपातिक प्रतिनिधित्व, अनिवार्य मतदान, राईट टू रिकॉल, ओपिनियन पोल, राजनीतिक विज्ञापन और चुनाव से संबंधित कई अन्य मामलों पर केंद्रित एक और रिपोर्ट दी।
- चुनाव के फर्स्ट-पास्ट-द-पोस्ट प्रणाली के बारे में एक महत्वपूर्ण सवाल निर्वाचित प्रतिनिधि की प्रतिनिधित्वशीलता से संबंधित है। 2014 के आम चुनाव में, लोक सभा के 539 विजयी उम्मीदवारों में से केवल 117 ने 50% या उससे अधिक मत हासिल किया था। 66.4% के समग्र राष्ट्रीय मतदान प्रतिशत के संदर्भ में यह संसद के निर्वाचित सदस्य की वास्तविक प्रतिनिधित्वशीलता को स्पष्ट करता है। एक अध्ययन से पता चलता है कि यह 31 प्रतिशत था। एक ओर, जहाँ एफपीटीपी प्रणाली अजटिल है क्योंकि यह एकल-सदस्य जिलों और उम्मीदवार केंद्रित मतदान का उपयोग करता है और मतदाताओं को उम्मीदवारों और पार्टियों के बीच एक स्पष्ट विकल्प देता है। इस कारण से, सर्वोच्च न्यायालय ने 'अभिवेदानों की तुलना में निर्णय के प्रभावाधिक्य की

योग्यता' के रूप में इसकी विशेषता बताई है। दूसरी ओर, यह परिणामों में मतदाता-हिस्सेदारी के बीच विसंगति पैदा करता है। यह विधायिका में छोटे या क्षेत्रीय दलों के अपवर्जन का भी कारण है। यह कमजोर वर्गों विशेषकर महिलाओं और अल्पसंख्यकों की असमान उपस्थिति से प्रेरित है। उसी समय, एफपीटीपी 'बहु-दलीय प्रणाली में प्रमुखता को बरकरार रखने में सक्षम नहीं रहा है क्योंकि जीतने वाला उम्मीदवार अक्सर केवल 20-30 प्रतिशत मतों से जीतता है।'

- अधिक व्यापक लोकतंत्र की राह में अन्य चुनौतियों में लिंग संतुलन का सवाल भी एक चुनौती है। 2014 में निर्वाचित कुल लोक सभा सदस्यों में से द केवल 11 प्रतिशत महिला सांसद थीं। केवल कुछ ही धार्मिक अल्पसंख्यक ऐसी स्थिति में हैं सभी नहीं। दोनों चुनौतियों को सकारात्मक कार्रवाई के लिए रणनीति बनाने के माध्यम से संबोधित करने की आवश्यकता है। हालाँकि, नगरपालिकाओं और ग्राम पंचायतों में कानून के माध्यम से लैंगिक समानता सुनिश्चित की गई है, लेकिन संसद और राज्य विधानसभाओं के लिए अभी तक ऐसा नहीं किया गया है।
- एक और विरोधाभास का उल्लेख किया जाना चाहिए। रिकॉर्ड से पता चलता है कि चुनावी अभ्यास में जनता की भागीदारी में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, लेकिन निर्वाचित निकायों के कामकाज से जनता का असंतोष लोकतांत्रिक प्रक्रिया में वंशवाद को जन्म दे रहा है। इसमें सुधार की आवश्यकता स्पष्ट है ताकि प्रणाली की सेवा प्रदान करने की क्षमता पर जनता का विश्वास प्रबलिकृत किया जा सके, जैसा होना चाहिए।
- यह स्पष्ट है कि चुनावी प्रक्रिया के प्रति सार्वजनिक जागरूकता के साथ-साथ सुधार की तलाश भी जारी रहेगी। इन आंदोलनों से उत्पन्न आवेगों और प्रक्रियाओं ने भारतीय लोकतंत्र को मजबूती दी है।

9.2.vii. इटली

9.2.vii.ए. विदेश मंत्री का इटली दौरा (02-05 सितंबर, 2016)

वेटिकन में मदर टेरेसा के संतत्व-घोषण विदेश मंत्री स्वराज के रोम दौरे के दौरान इटली की विदेश मंत्री श्री पाओलो जेंटिलोनी और भारत की विदेश मंत्री सुश्री सुषमा स्वराज ने 4 सितंबर को इटली के विदेश मंत्रालय में मुलाकात की।

9.2.viii. स्वीडन

9.2.viii.ए. स्वीडन के प्रधान मंत्री के भारत दौरे के दौरान भारत-स्वीडन के बीच संयुक्त वक्तव्य

स्वीडन के प्रधानमंत्री महामहिम स्टीफन लोफवेन ने 13-14 फरवरी, 2016 को भारत का दौरा किया, और उनके साथ अब तक किसी भी देश के दौरे पर आया सबसे बड़ा व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल था। दोनों पक्षों ने नोट किया कि भारत के आर्थिक विकास और वैश्विक शक्ति के रूप में वृद्धि ने दोनों देशों में आर्थिक विकास और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए और वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए साझेदारी को और अधिक गहरा और विस्तारित करने के नए अवसर पैदा किए हैं। प्रधान मंत्री लोफवेन और आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल ने भारत के प्रधान मंत्री के साथ द्विपक्षीय बैठक की, जिसके दौरान दोनों नेताओं ने उन क्षेत्रों पर चर्चा की, जिनमें पारस्परिक रूप से लाभप्रद द्विपक्षीय सहयोग की सर्वाधिक क्षमता है। बैठक के बाद जारी संयुक्त वक्तव्य, जिसका शीर्षक था 'नया संवेग, उच्चतर आकांक्षा' में नेताओं द्वारा चर्चा की गई बातों और दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने के लिए जो कदम उठाने पर सहमति व्यक्त की है, उनकी सूची है। इनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- उन्होंने दौरे के दौरान भारत-स्वीडन व्यावसायिक नेता गोल मेज के गठन का स्वागत किया।
- उन्होंने डिजिटल प्रौद्योगिकी और अर्थव्यवस्था पर एक नए संयुक्त कार्य समूह के गठन का समर्थन किया।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने 2015 में हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के अधीन सतत शहरी विकास पर संयुक्त कार्य समूह के शुभारंभ का स्वागत किया और स्मार्ट शहरों के विकास में मदद करने के लिए अपनी कंपनियों और सरकारी एजेंसियों को प्रोत्साहित करने पर सहमति व्यक्त की। वे डिजिटल भूमि प्रबंधन, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और शहरी परिवहन पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक संयुक्त कार्य योजना को अंतिम रूप देने के लिए तत्पर थे। समझौता ज्ञापन के संदर्भ में, स्वीडिश पक्ष ने स्मार्ट शहरों के रूप में विकास के लिए एक या अधिक शहरों पर ध्यान केंद्रित करने में रुचि व्यक्त की।
- उन्होंने रक्षा में सफल सहयोग की संभावनाओं को स्वीकार किया और सहमति व्यक्त की कि मेक इन इंडिया के शीर्षक के अधीन, उनके संबंधित रक्षा उद्योगों के बीच सहयोग की संभावनाओं को पहचाना जा सकता है और विमानन क्षेत्र को शामिल करते हुए उचित रूप से आगे बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने रक्षा पर समझौता ज्ञापन के तहत संयुक्त कार्य समूह की प्रगति का स्वागत किया।
- दोनों पक्षों ने माना कि एक-दूसरे की संस्कृतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने से लोगों-से-लोगों के बीच मेल-जोल बढ़ता है और स्वीडन में 'नमस्ते स्टॉकहोम' के पारस्परिक त्योहारों का स्वागत किया और भारत में स्वीडन-भारत नोबल मेमोरियल वीक का स्वागत किया।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने आतंकवाद और हिंसक अतिवाद को रोकने और मुकाबला करने और निकट संवाद के लाभ और सूचना तथा अच्छी प्रथाओं के पारस्परिक आदान-प्रदान में आम हितों को पहचाना। वे एजेंसी के स्तर की सहयोग, क्षमता निर्माण, हिंसक अतिवाद का मुकाबला करना, अनुभव साझाकरण और आतंकवाद के खिलाफ एक अंतर्राष्ट्रीय रूपरेखा गठन करने में सहयोग तथा अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक संधि के विस्तृत प्रावधान बनाने और अंतिम रूप देने की दृष्टि से अपने संबंधित विशेष दूतों को एक-दूसरे के देश के दौरे के लिए भेजने के लिए तत्पर थे।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने पूंजी और संयुक्त राष्ट्र-मिशन-स्तर पर संयुक्त राष्ट्र के मुद्दों पर गहन द्विपक्षीय वार्ता के लिए सहमति व्यक्त की।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने "सतत विकास के लिए एजेंडा 2030" अपनाने का भी स्वागत किया और इसके कार्यान्वयन में सहयोग करने के लिए प्रतिबद्ध हुए। उन्होंने एजेंडा 2030 के सार्वभौमिक, अविभाज्य और एकीकृत प्रकृति को पहचाना जो सतत विकास के तीन आयामों को संतुलित करता है: आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरण।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने पेरिस समझौते का स्वागत किया और इसके उद्देश्य- वैश्विक तापमान वृद्धि को 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे रखना और तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के प्रयासों को आगे बढ़ाने का स्वागत किया। इस संदर्भ में, दोनों पक्षों ने स्वीडन-भारत नवीकरणीय ऊर्जा सहयोग पर समझौता ज्ञापन के तहत सक्रिय चल रहे सहयोग का स्वागत किया और स्वीडिश ऊर्जा एजेंसी द्वारा भारत में 2016-2018 में अनुसंधान और पायलट परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए 5 मिलियन अमेरिकी डॉलर का योगदान देने की घोषणा का स्वागत किया।
- वैश्विक अप्रसार और निरस्त्रीकरण उद्देश्यों को मजबूत करने के अपने संयुक्त प्रयासों में, भारत और स्वीडन बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाओं में भारत की आगामी भागीदारी की दिशा में काम करने के लिए प्रतिबद्ध हुए।
- दोनों प्रधान मंत्री मानवाधिकारों को ऑनलाइन बढ़ावा देने, साइबर सुरक्षा, साइबर क्राइम से निपटने और अंतर्राष्ट्रीय साइबर मुद्दों पर एक सामान्य समझ विकसित करने और इंटरनेट शासन में एक खुले, समावेशी, पारदर्शी और बहु-हितधारक प्रणाली को समर्थन देने के साथ-साथ साइबर स्पेस में अंतर्राष्ट्रीय कानून के कार्यान्वयन के लिए प्रतिबद्ध हुए।

9.2.ix. स्विट्ज़रलैंड

9.2.ix.ए. प्रधान मंत्री का स्विट्ज़रलैंड दौरा (5-6 जून, 2016)। स्विट्ज़रलैंड के अपने दौरे के दौरान प्रेस वक्तव्य में प्रधानमंत्री ने कहा:[12]

> भारत और स्विटज़रलैंड दोनों ही दुनिया में शांति, समझ और मानवीय मूल्यों की आवाज़ रहे हैं। पिछले सात दशकों में, उनकी दोस्ती में लगातार वृद्धि देखी गई है। आज, उन्होंने अपने बहुपक्षीय द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की और स्विस के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों (सीईओ) के साथ विस्तृत चर्चा की।
>
> इन दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंध मजबूत और जीवंत हैं। कई स्विस कंपनियों का नाम भारत के घर-घर में लिया जाता है। व्यापार, निवेश, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और कौशल विकास में सहयोग के संबंध दोनों समाजों को लाभान्वित करते हैं। भारत ने ईएफटीए के साथ एफटीए वार्ता फिर से शुरू करने की तत्परता की पुष्टि की है। भारतीय अर्थव्यवस्था को स्मार्ट और सतत शहरों, मजबूत कृषि क्षेत्र, जीवंत विनिर्माण और गतिशील सेवा क्षेत्र द्वारा संचालित किया जाना है।

[12]http://mea.gov.in/outoging-visit-detail.htm?26871/Press+Statement+by+Prime+Minister+during+his+visit+of+Switzerland+June+06+2016

> और, इसके इंजनों को रेल, सड़कों, हवाई अड्डों और डिजिटल संपर्कता के विश्व स्तरीय नेटवर्क पर दौड़ना चाहिए। जहां हर किसी के लिए एक घर, और हर घर में बिजली एक वास्तविकता है। और, इसके 500 मिलियन से अधिक युवा कुशल और दुनिया भर में जनशक्ति की जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने भारत की आवश्यकताओं के अनुकूल स्विस व्यावसायिक और शैक्षिक प्रशिक्षण प्रणाली निर्माण करने के लिए सहमति व्यक्त की। जीवाश्म ईंधन के बजाय नवीकरणीय ऊर्जा पर निर्भर करना उनका मार्गदर्शक होगा।
>
> भारत और स्विट्जरलैंड वर्तमान वैश्विक वास्तविकताओं के अनुरूप अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों में सुधार के लिए प्रतिबद्धता भी साझा करते हैं। हम दोनों संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की गैर-स्थायी सदस्यता के लिए हमारे अपने दावे के प्रति एक-दूसरे का समर्थन करने के लिए सहमत हुए हैं। मैं परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह में भारत की सदस्यता के लिए स्विट्जरलैंड की समझ और समर्थन के लिए राष्ट्रपति का भी आभारी हूं। "काले धन" और कर चोरी के खतरे का मुकाबला करना भी हमारी साझा प्राथमिकता है। हमने कर अपराधियों को सजा दिलाने के लिए सूचना के शीघ्र और त्वरित आदान-प्रदान की आवश्यकता पर चर्चा की। सूचना के स्वत: आदान-प्रदान पर समझौते पर बातचीत की शुरुआत इस संबंध में महत्वपूर्ण होगी।
>
> हमारे दोनों देशों के लोगों के बीच मजबूत संबंध हमारे जुड़ाव का एक महत्वपूर्ण आधार और बेंचमार्क है। भारतीय फिल्म उद्योग की बदौलत, हम स्विस परिदृश्यों की आकर्षक सुंदरता से बहुत परिचित हैं। लेकिन, हम भारत में बड़ी संख्या में स्विस आगंतुकों का स्वागत करने के लिए भी उत्सुक हैं। इसके लिए, हमने इस वर्ष के शुरू में स्विस नागरिकों के लिए ई-टूरिस्ट वीजा की सुविधा खोली है।
>
> मुझे विश्वास है कि हमारी साझा प्रतिबद्धताएं और मूल्य, लोगों-से-लोगों का जुड़ाव और एक मजबूत और बढ़ती आर्थिक साझेदारी हमारे संबंधों को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी।

9.2.x. आइसलैंड

9.2.x.ए. आइसलैंड के विदेश मंत्री का भारत दौरा: 5 अप्रैल, 2016

आइसलैंड के विदेश मंत्री, श्री गुन्नार ब्रैगी स्वेन्सन ने 03-09 अप्रैल 2016 को भारत का दौरा किया। 5 अप्रैल को, विदेश मंत्री स्वेन्सन और विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने चर्चा की, जिसमें उन्होंने नवीकरणीय ऊर्जा, विशेष रूप से भू-तापीय ऊर्जा, पर्यटन, स्टार्ट-अप और विस्तारित व्यापार संबंधों के क्षेत्रों में देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने पर सहमति व्यक्त की। वे इस बात पर सहमत हुए कि भारत और ईएफटीए देशों (आइसलैंड, लिकटेंस्टीन, नॉर्वे और स्विट्जरलैंड) के बीच एक व्यापार और आर्थिक साझेदारी समझौता दोनों देशों के बीच अधिक आर्थिक संबंधों को सुविधाजनक बनाएगा। इसके अलावा, उन्होंने जलवायु परिवर्तन, संयुक्त राष्ट्र के सुधारों और आतंकवाद के वैश्विक खतरे जैसे महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों को और मजबूत करने के लिए मंत्रियों ने दोनों देशों के बीच व्यापारिक प्रतिनिधिमंडलों की आपसी यात्राओं पर सहमति व्यक्त की। मंत्रियों ने आर्कटिक और हिमालयी क्षेत्रों में बर्फ के आवरण और हिम नदियों के लिए जलवायु परिवर्तन के निहितार्थों को बेहतर ढंग से समझने के उद्देश्य से निरंतर वैज्ञानिक सहयोग के महत्व पर बल दिया। दोनों मंत्रियों ने इस बात को दोहराया कि आतंकवाद का कोई भी कृत्य आपराधिक एवं अक्षम्य है, चाहे उनके मकसद, उन्हें अंजाम देने का समय और ऐसे काम करने वाले कोई भी क्यों न हों। इस संदर्भ में उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक संधि को शीघ्र लागू करने की मांग की।

दोनों मंत्रियों ने वैश्विक अप्रसार उद्देश्यों को मजबूत करने में अपनी साझा रुचि को भी रेखांकित किया। इस संबंध में, आइसलैंड ने प्रासंगिक बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाओं में भारत की सदस्यता के लिए अपना समर्थन व्यक्त किया। दौरे के दौरान विदेश मंत्री स्वेन्सन ने बिजली, कोयला और नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा राज्यमंत्री श्री पियूष गोएल के साथ बैठक की। उन्होंने अक्षय ऊर्जा को बढ़ावा देने और भू-तापीय ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग करने में अपनी पारस्परिक रुचि पर चर्चा की, जहां आइसलैंडिक और भारतीय कंपनियां भारत में भूतापीय ऊर्जा का दोहन करने के लिए संयुक्त उद्यम स्थापित करने की संभावनाओं की तलाश कर रही हैं।

9.3 जापान

प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने जापान का दौरा किया (10-12 नवंबर 2016)। परमाणु ऊर्जा सहयोग पर एक समझौता सहित कुल 11 समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। प्रधान मंत्री मोदी ने जापान के बारे में भारत की धारणा और भारत के साथ उसके संबंधों के लिए प्राथमिकता को दर्शाते हुए एक भोज भाषण दिया। जापान के साथ। मीडिया को दिए गए वक्तव्य में, उन्होंने कहा कि जापान एक स्वाभाविक भागीदार था और पारस्परिक लाभ के लिए काम करने की बहुत गुंजाइश है। सीआईआई-कीडरेन के भोज में, उन्होंने जापानी व्यवसायों को भारत की पुनरुत्थान गाथा में निवेश करने के लिए आमंत्रित किया।

9.4 रूस

रूस और भारत के बीच संबंध इस वर्ष अक्टूबर में चरम पर पहुंचे, जब भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गोवा में आयोजित ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के मौके पर अपने वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात की। दोनों नेताओं ने अपने संयुक्त वक्तव्य में अपने विशेष और गौरवान्वित संबंधों को अभूतपूर्व ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए नए अवसरों को

आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। रूस ने 2016 के लिए अपनी नई 'विदेश नीति संकल्पना' के माध्यम से भी आपसी संबंधों को अनुकूल बनाने की गंभीरता के बारे में दोहराया, जिसमें रूस ने यह कहा कि यह "विदेश नीति प्राथमिकताओं के अभिसरण, ऐतिहासिक मित्रता के आधार पर और साथ ही सभी क्षेत्रों में पारस्परिक रूप से लाभकारी द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ाने के लिए भारतीय गणराज्य के साथ अपनी विशेष गौरवान्वित साझेदारी को और मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है।" 17 वीं भारत-रूस शिखर सम्मेलन के दौरान जो एक महत्वपूर्ण मुद्दा सामने आया वह इस संबंध में था कि वर्ष 2017 को किस तरह से मनाया जाए कि यह दोनों देशों के बीच स्थापित राजनयिक संबंधों के 70 वें वर्षगाँठ का उत्सव भी बन जाए।

9.4.ए रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने 15 अक्टूबर 2016 को 17 वें भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए भारत का दौरा किया। दौरे के दौरान संयुक्त वक्तव्य की मुख्य बिन्दुएँ निम्न हैं:

राष्ट्रपति पुतिन और प्रधान मंत्री मोदी ने भारत और रूस के बीच विशेष और गौरवान्वित रणनीतिक साझेदारी की समीक्षा की, जो लंबे समय तक आपसी विश्वास में निहित है, एक दूसरे के मूल हितों के प्रति बेजोड़ पारस्परिक समर्थन और लोगों-से-लोगों के अनोखे जुड़ाव की विशेषता से झलकता है।

प्रधानमंत्री मोदी ने दोहराया कि रूस भारत का प्रमुख रक्षा और रणनीतिक भागीदार बना रहेगा, और उनके बीच की स्थायी साझेदारी बदलती विश्व व्यवस्था में शांति और स्थिरता की कड़ी है। राष्ट्रपति पुतिन ने भारत के साथ विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त सामरिक भागीदारी के लिए रूस की निरंतर प्रतिबद्धता की पुष्टि की और आतंकवाद के खिलाफ युद्ध जैसे मुद्दों पर दोनों देशों के पदों की समानता का उल्लेख किया। भारतीय पक्ष ने उरी में सेना बेस पर हुए आतंकवादी हमले की रूस की स्पष्ट निंदा की सराहना की।

पिछले शिखर सम्मेलनों का अनुवर्तन

नेताओं ने दिसंबर 2014 में रूस के राष्ट्रपति पुतिन की भारत यात्रा और दिसंबर 2015 में प्रधानमंत्री मोदी की रूस यात्रा के दौरान जारी संयुक्त वक्तव्य में प्रदर्शित रोडमैप के अनुसार 2014 के बाद से द्विपक्षीय संबंधों में महत्वपूर्ण प्रगति का स्वागत किया। उन्होंने पिछले वर्ष के उच्च स्तरीय दौरों, संस्थागत विनिमयन और अन्य सम्पर्कों सहित द्विपक्षीय विनिमयनों पर संतोष व्यक्त किया।

आर्थिक सहयोग

नेताओं ने वार्षिक द्विपक्षीय व्यापार एवं निवेश के लिए दिसम्बर 2014 में वार्षिक सम्मेल में निर्धारित लक्ष्यों को वास्तविक बनाने के लिए लगातार अविष्कृत तरीके की आवश्यकता को स्वीकार किया और उद्देश्य की दिशा में काम करने की प्रतिबद्धता जाताई।

दोनों पक्षों ने 13 सितंबर 2016 को नई दिल्ली में आयोजित व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और सांस्कृतिक सहयोग पर भारतीय-रूसी अंतर-सरकारी आयोग (आईजीसी) की 22 वीं बैठक के परिणामों का स्वागत किया और आईजीसी के दौरान नए प्रस्तावों को जल्दी अंतिम रूप देने का अनुरोध किया। उन्होंने रूस और भारत में उच्च प्रौद्योगिकी निवेश की सुविधा के लिए रूसी प्रत्यक्ष निवेश कोष (आरडीआईएफ) के साथ भारत के राष्ट्रीय अवसंरचना निवेश कोष (एनआईआईएफ) द्वारा द्विपक्षीय निवेश कोष के निर्माण का उल्लेख किया।

विशेष रूप से रूसी पक्ष ने रूसी तेल क्षेत्र में भारत द्वारा हाल ही में निवेश का स्वागत किया और फार्मास्यूटिकल, रसायन उद्योग, खनन, मशीन निर्माण, संरचना परियोजनाओं का कार्यान्वयन, रेलवे क्षेत्र में सहयोग, उर्वरक उत्पदन, आटोमोबाइल, और विमान निर्माण के साथ साथ एक दूसरे की औद्योगिक सुविधाओं के आधुनिकीकरण में सहयोगी उपक्रम जैसे आशाजनक क्षेत्रों में नए और महत्वाकांक्षी निवेश प्रस्तावों को अंतिम रूप देने के लिए दोनों देशों की कंपनियों से अनुरोध किया। दोनों पक्षों ने कृपापूर्वक दोनों देशों के रेलवे संगठनों के बीच जारी सहयोग का आकलन किया और इसे आगे तेज करने का अनुरोध किया।

उन्होंने 2016 में सेंट पीटर्सबर्ग इंटरनेशनल इकोनॉमिक फोरम (जून 16-18) और पूर्व आर्थिक मंच (2-3 सितंबर) जैसे बड़े व्यापार और व्यवसायिक कार्यक्रमों के दौरान सीईओ स्तर की बातचीत सहित भारत और रूस के व्यापारिक समुदाय के प्रतिनिधियों के बीच संवाद बढ़ने का स्वागत किया, जिसमें श्री धर्मेंद्र प्रधान, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री, अंतर्राष्ट्रीय औद्योगिक प्रदर्शनी इनोप्रोम (जुलाई 11-14), श्रीमती निर्मला सीतारमण, वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), साथ ही भारत के राजस्थान, महाराष्ट्र राज्यों और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्रियों ने भाग लिया था। उन्होंने इस तरह की बातचीत को जारी रखने का अनुरोध किया और नोट किया कि इनोप्रोम-2016 में एक भागीदार देश के रूप में भारत की सहभागिता ने इनोप्रोम को उद्योग, वैज्ञानिक और तकनीकी नवाचारों के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय विकासों में सबसे अधिक प्रतिनिधि के रूप में उजागर किया। दोनों पक्षों ने रूसी संघ के उद्योग और व्यापार मंत्री डेनिस मंटुरोव की सफल यात्रा का जिक्र किया, जिन्होंने 11-14 अक्टूबर, 2016 को अपने व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल के साथ आंध्र प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र के राज्यों और नई दिल्ली का दौरा किया था और भारतीय-रूसी औद्योगिक सहयोग की अपार संभावनाओं को नोट किया। भारतीय पक्ष ने भारत में अंतर्राष्ट्रीय इंजीनियरिंग सोर्सिंग शो 2017 में रूस के भागीदार का स्वागत किया, यह रेखांकित करते हुए कि यह द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों को गति प्रदान करेगा। रूस ने भारत सरकार के, रूस के सुदूर पूर्व में अवसरों पर ध्यान केंद्रित करने, 2017 में पूर्व आर्थिक मंच में उत्साह से भाग लेने, रूसी संघ के सुदूर पूर्व क्षेत्रों के राज्यपालों और भारत के विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों के बीच एक गोलमेज सम्मेलन का आयोजन करने, कृषि, खनन, पोत परिवहन आदि में व्यापार और निवेश के अवसरों का पता लगाने के आशय का स्वागत किया।

दोनों पक्षों ने भारत एवं रूस के बीच हीरों के प्रत्यक्ष व्यापार को प्रोत्साहित करने की पहल का स्वागत किया और नियमित रूप से कच्चे हीरे को देखकर पीजेएससी एएलआरओएसए से इस परियोजना के सक्रिय समर्थन का उल्लेख करते हुए भारत डायमंड बार्स में विशेष अधिसूचित क्षेत्र (एसईजेड) के कामों का सकारात्मक मूल्यांकन किया।

डेयरी उत्पदों एवं गोजातीय मांस सहित कृषि व प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों के लिए आपसी बाजारी पहुंच पर दोनों देशों के पादप और पशु चिकित्सा अधिकारियों के समझौते जैसी पहलों का सकारात्मक मूल्यांकन करके, दोनों पक्षों ने अपने नियामक अधिकारियों के बीच चल रहे परामर्श को जारी रखने और द्विपक्षीय व्यापार के लिए इस तरह के उत्पादों की सीमा को चौड़ा करने के उपायों को पेश करने पर सहमति व्यक्त की।

दोनों पक्षों ने दोनों देशों के बीच चलने वाले माल एवं वाहनों पर व्यापार और सीमा शुल्क नियंत्रण की सुविधा के लिए पूर्व आगमन जानकारी के आदान प्रदान में सहयोग पर भारत का केन्द्रीय शुल्क और सीमा शुल्क बोर्ड औररूस की संघीय सीमा शुल्क सेवा के बीच प्रोटोकॉल के अनुसार ग्रीन कॉरिडोर परियोजना के कार्यान्वयन में प्रगति का स्वागत किया।

दोनों पक्षों ने भारत गणराज्य और यूरेशियन आर्थिक संघ के बीच मुक्त व्यापार समझौते की व्यवहार्यता पर विचार करने के लिए संयुक्त अध्ययन समूह के काम में प्रगति का उल्लेख किया।

व्यापार व्यवस्था में बैंकों की महत्वपूर्ण भूमिका का हवाला देकर, पक्षों ने संवादाता संबंधो के विकास एवं उधार सीमा में वृद्धि के माध्यम से अपनी भागीदारी के दोनों देशों के वाणिज्यिक बैंकों द्वारा वृद्धि की आशा को व्यक्त किया।

दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ाने में संपर्कता द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हुए, नेताओं ने अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे (आईएनएसटीसी) के कार्यान्वयन पर बल दिया, जो माल के पारगमन में लगने वाले समय को घटाने के माध्यम से क्षेत्र में आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

भारत-रूस "ऊर्जा पुल"

दोनों पक्षों ने संतोष के साथ कहा कि मजबूत नागरिक परमाणु सहयोग, हाइड्रोकार्बन क्षेत्र में सहयोग, दीर्घकालिक एलएनजी स्रोतन हितों, हाइड्रोकार्बन ऊर्जा पाइपलाइन पर काम करना और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग दोनों देशों के बीच एक आशाजनक "ऊर्जा पुल" का निर्माण करता है।

दोनों पक्षों ने 11 दिसंबर, 2014 को हस्ताक्षरित "रूसी संघ और भारत गणराज्य के बीच परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग में सहयोग को मजबूत करने के लिए सामरिक दृष्टि" के तहत सहयोग का विस्तार करने के अपने इरादे की पुष्टि की। इस सन्दर्भ में, उन्होंने संतोष के साथ उल्लेख किया कि सकारात्मक विकास की श्रृंखला को 2016 के अंत से पहले इन दस्तावेजों के समापन के लक्ष्य के साथ कुडनकुलम यूनिट 1 की पूर्ण विद्युत क्षमता की प्राप्ति, कुडनकुलम यूनिट 2 के विद्युत ग्रिड के साथ एकीकृत, कुडनकुलम यूनिट 3 और 4 के लिए साइट पर काम का प्रारंभ, और कुडनकुलम सूनिट 5 एवं 6 के लिए जनरल फ्रेमवर्क समझौते और क्रेडिट प्रोटोकॉल सहित इस वर्ष उनके असैन्य परमाणु सहयोग में चिह्नित किया गया है।

दोनों पक्षों ने भारत रशियन डिजाइन यूनिट में सीरियल निर्माण के संदर्भ में नए एवं भविष्यक रशियन डिजाइन न्यूक्लीयर पावर परियोजना के लिए उपकरण व घटकों मे स्थानीय विनिर्माण के लिए भारतीय परमाणु विनिर्माण उद्योग में सक्रिय संलग्नता के साथ भारतीय परमाणु ऊर्जा विभाग एवं रूस के रोस्तम के बीच स्थानिकीकरण के लिए कार्य योजना के कार्यान्वयन में की गई प्रगति की प्रशंसा की।

दोनों देशों के नेताओं ने पिछले शिखर सम्मेलन के बाद से भारतीय और रूसी तेल कंपनियों द्वारा की गई प्रगति की बहुत सराहना की, क्योंकि भारतीय कंपनियों ने "Tass-YuryakhNeftegazodobycha" और "Vankorneft" में इक्विटी प्राप्त किया और तेल अधिग्रहण में इक्विटी प्राप्त करने वाली सबसे बड़ी तेल कम्पनियां बनी थीं। तेल एवं गैस सहयोग को मजबूत करने के उद्देश्य के साथ, रूस ने रूसी संघ के अपतटीय आर्कटिक क्षेत्रों में संयुक्त परियोजनाओं में भाग लेने के लिए अपनी रुचि व्यक्त की।

दोनों पक्षों ने ऊर्जा दक्षता और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के विकास की दिशा में एक साथ काम करने के लिए अपनी निरंतर प्रतिबद्धता की पुष्टि की। इस संदर्भ में, उन्होंने भारत में सौर ऊर्जा के निर्माण पर रूसी ऊर्जा संघ मंत्रालय की रूसी ऊर्जा एजेंसी और भारत गणराज्य के सौर ऊर्जा

निगम के बीच 24 दिसम्बर 2015 को हस्ताक्षरित ज्ञापन के अंतर्गत सौर ऊर्जा क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत एवं विस्तृत करने की तत्परता व्यक्त की।

दोनों पक्षों ने भारत में मौजूदा ऊर्जा संयंत्रों के आधुनिकीकरण और नए ऊर्जा संयंत्रों के निर्माण क्षेत्र में सहयोग के विकास में दोनों देशों की ऊर्जा क्षेत्र कंपनियों को सहायता प्रदान करने की आवश्यकता पर बल दिया।

भारतीय राज्यों और रूसी क्षेत्रों के बीच सहयोग

11 दिसंबर, 2014 के संयुक्त वक्तव्य को याद करते हुए, दोनों पक्षों ने महाराष्ट्र और खांटी-मानसीस्क ऑटोनॉमस ओक्रग - उग्रा और महाराष्ट्र और स्वेर्दलोवस्क क्षेत्र के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का स्वागत किया। 2017 के पूरे वर्ष समारोह मनाने के माध्यम से मुंबई और सेंट पीटर्सबर्ग के बीच सिस्टर-सिटी संबंध की स्थापना की 50 वीं वर्षगांठ को चिह्नित करने के लिए दोनों पक्षों ने अपनी प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाया।

विज्ञान, स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकी और शिक्षा जुड़ावों को बढ़ाना

पक्षों ने वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्रों में और नवाचार क्षेत्रों में द्विपक्षीय वार्ता के अग्र विकास पर भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग और रूस के एफएएसओ के बीच समझौता ज्ञापन का स्वागत किया।

दोनों पक्षों ने शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग के विस्तार का उल्लेख किया। दोनों पक्षों ने छात्रों और संकायों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने, पाठ्यक्रम के विकास, संयुक्त प्रयोगशालाओं के निर्माण, वैज्ञानिक सम्मेलनों और सेमिनारों के आयोजन के साथ-साथ संयुक्त वैज्ञानिक अनुसंधान और अनुसंधान संस्थानों में विकसित प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण में सहयोग करने के लिए रूसी और भारतीय विश्वविद्यालयों के नेटवर्क (आरआईएन) पर गहन गतिविधि का उल्लेख किया।

दोनों पक्षों ने दिसंबर 2015 में सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस कंप्यूटिंग (सीडीएसी), इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस (आईआईएससी) और लोमोनोसोव मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी (एमएसयू) के बीच उच्च निष्पादन कंप्यूटिंग (एचपीसी) में सहयोग के लिए हस्ताक्षरित प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। भारतीय पक्ष ने एमओयू की परिकल्पना से परे हटकर सुपरकंप्यूटिंग गतिविधियों में रूसी पक्ष के साथ इस सहयोग को विस्तारित करने में अपनी रूचि दिखाई।

आर्कटिक के महत्व को पहचानते हुए और यह देखते हुए कि रूस आर्कटिक परिषद का सदस्य है और भारत मई 2013 से आर्कटिक परिषद का एक पर्यवेक्षक है, दोनों पक्षों ने चुनौतियों का अध्ययन करने के लिए वैज्ञानिक सहयोग की सुविधा के लिए सहमति व्यक्त की (जैसे कि बर्फ पिघलना, जलवायु परिवर्तन, समुद्री जीवन और जैव विविधता) ताकि तेजी से बदलते आर्कटिक क्षेत्र की चुनौतियां का सामना किया जा सके।

दोनों पक्षों ने आधुनिक फाइटोजेनेटिक जो खाद्य सुरक्षा के प्रावधान के लिए ज्ञान व रचनात्मक समाधान के सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत के रूप में कार्य करता है, क्षेत्र में भारत एवं रूस के बीच वार्ता और 2016 में नोवोसिबिर्स्क में आयोजित पहली अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी ''खाद्य सुरक्षा के लिए पौधों में जेनेटिक एवं जीनोमिक्स'' की सफलता का स्वागत करने के साथ साथ इस क्षेत्र में सहयोग में अग्र वृद्धि की आवश्यकता को रेखांकित किया।

अंतर्राष्ट्रीय योगा दिवस के रूप में 21 जून की घोषणा का स्वागत करते हुए और वर्ष 2016 में योगा इवेंट के सफल आयोजन पर टिप्पणी करते हुए, दोनों पक्षों ने योगा और आयुर्वेद के पारंपरिक भारतीय रूपों के माध्यम से स्वास्थ्य और फिटनेस को बढ़ावा देने के लिए सहयोग करने पर सहमति जताई। दोनों पक्ष रूस में आयुर्वेदिक प्रथाओं एवं दवाओं के गुणवत्ता नियंत्रण के लिए आयुर्वेदिक अध्ययन और नियमों के विकास के लिए पाठ्यक्रम तैयार करने में आपसी सहयोग की संभावना का अन्वेषण करेंगे।

अंतरिक्ष सहयोग

नेताओं ने ग्लोनस एवं एनएवीआईसी के अपने संबंधित नौवहन उपग्रह तारामंडल की उपयोगिता बढ़ाने के लिए एक दूसरे के क्षेत्रों में ग्राउंड स्टेशनों की स्थापना एवं उपयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर का स्वागत किया। दोनों पक्ष ने सबसे महत्वपूर्ण घटक के रूप में अंतरिक्ष अभियानों की सुरक्षा पर बाह्य अंतरिक्ष की गतिविधियों और नियामक प्रावधानों की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए दिशानिर्देशों के से को तैयार करने के एक समेकित दृष्टिकोण पर अंतरिक्ष संयुक्त राष्ट्र समिति के वैज्ञानिक और तकनीकी उपसमिति के भीतर विस्तार करने की अपनी वचनबद्धता की पुष्टि की।

रक्षा सहयोग

दोनों पक्षों ने 2016 में रूस के सुदूर पूर्व में जमीनी बलों से जुड़े संयुक्त भारतीय-रूसी अभ्यास इंद्रा पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने अप्रैल 2016 में भारतीय रक्षा राज्य मंत्री और मई-जून 2016 में नेशनल डिफेंस कॉलेज के प्रतिनिधिमंडल का मास्को में स्वागत किया। उन्होंने दोनों देशों के सशस्त्र बलों के बीच प्रशिक्षण, संयुक्त अभ्यास और संस्थागत बातचीत का विस्तार करने की आवश्यकता को रेखांकित किया।

दोनों पक्षों ने सकारात्मक रूप से भारत में केए-226टी हेलीकाप्टरों के उत्पादन के लिए संयुक्त उद्यम की स्थापना का मूल्यांकन किया।

सुरक्षा और आपदा प्रबंधन

सितंबर 2015 में भारत में रूस के आंतरिक मामलों के मंत्री व्लादिमीर कोलोकोल्सेव की भारत यात्रा को याद करते हुए दोनों पक्षों ने भारत गणराज्य के आंतरिक मंत्रालय और रूस के आंतरिक मामलों के मंत्रालय के बीच सहयोग और भारत नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो और रूस के आंतरिक मामलों के मंत्रालय क बीच संयुक्त कार्रवाई पर एक समझौते को अंतिम रूप देने की अपनी मंशा की पुष्टि की, जो चरमपंथ और नशीली दवाओं की तस्करी से निपटने के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित करके, सर्वोत्तम प्रथाओं और विशेषज्ञता के आदान-प्रदान के लिए चल रहे अंतर-मंत्रालयी बातचीत को और विकसित करने के लिए एक सक्षम ढांचा प्रदान करेगा।

संस्कृति, पर्यटन और लोगों-से-लोगों का संपर्क

दोनों पक्षों ने वर्ष 2016-2018 के लिए भारत गणराज्य के संस्कृति मंत्रालय और रूसी संघ के संस्कृति मंत्रालय के बीच एक सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के समझौते पर जल्द हस्ताक्षर में अपनी रुचि की पुष्टि की। 2016 में फेस्टिवल ऑफ रशियन कल्चर की सफलता को देखते हुए, 2017 में रूस में फेस्टिवल ऑफ इंडियन कल्चर होना तय किया गया था।

दोनों पक्षों ने पारस्परिक आधार पर नामित विमान कंपनियों के साथ साथ अपने देशों के संबंधित प्रदेशों में चार्टर और विशेष उड़ाने भरने वाली अन्य विमान कंपनियों के विमान चालक दल को वीजा मुक्त प्रवेश, रहने और जाने की सुविधा देने के फैसले को लागू करने के लिए फैसले को लागू करने के लिए करार सम्पन्न करने के उद्देश्य से उठाए गए कदमों का स्वागत किया।

दोनों पक्षों ने प्रवास से संबंधित मुद्दों पर बातचीत करने के महत्व का उल्लेख किया और इस क्षेत्र में विशेष रूप से इन मुद्दों पर लगातार वार्ता के माध्यम से रूस में काम कर रहे भारतीय नागरिकों के लिए वर्क परमिट एवं अस्थायी निवास परमिट जारी करने पर सहयोग के लिए कानूनी ढांचे में सुधार करने की दिशा में काम करने पर सहमति जताई।

दोनों पक्षों ने भारत गणराज्य और रूस के बीच मार्च 2015 में प्रभाव में आने वाली सजायाफ्ता व्यक्तियों के हस्तांतरण पर संधि को लागू करने की गति पर संतोष व्यक्त किया और आशा व्यक्त की कि आगे के परिणामों को आने वाले समय में सजा प्राप्त व्यक्तियों के स्थानांतरण पर द्विपक्षीय संधि को लागू करके प्राप्त किया जाएगा।

दोनों पक्षों ने राज्य के कांसुलर मिशन को हर संभव सहायता प्रदान करने के लिए निवासी राज्यों के क्षेत्र में अपने नागरिकों एवं न्यायिक संस्थाओं के अधिकारों एवं हितों की रक्षा करने में अनुभव के विनिमयन सहित कांसुलर क्षेत्र में सहयोग को मजबूत बनाने के प्रयासों को लागू करने की मंशा व्यक्त की।

दोनों पक्षों ने 2016 को मुंबई में मास्को और रूस फिल्म महोत्सव में भारतीय फिल्म महोत्सव के आयोजन पर संतोष व्यक्त किया।

पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग की अपार संभावना को समझकर और दोनों देशों के बीच पर्यटन एजेंसियों के बीच घनिष्ठ सहयोग को प्रोत्साहित करने के साथ, दोनों पक्षों ने 2018 को 'भारत और रूस के बीच पर्यटन का वर्ष' के रूप में मनाने पर सहमति जताई। उन्होंने भारत एवं रूस पर्यटन संघ, संगठनों, उद्यमों एवं कंपनियों के बीच सीधे संपर्क और संबंध के विस्तारण सहित द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने में रूस भारतीय पर्यटन मंत्रालय, और रूसी पर्यटन एजेंसी के बीच सहयोग को प्रोत्साहित किया।

राजनयिक संबंधों की स्थापना की 70वीं वर्षगांठ का समारोह

नेताओं ने भारत एवं रूस के बीख् राजनयिक संबंधों के विस्तार की 70वीं वर्षगांठ को चिंहित करने के लिए 2017 में भव्य समारोह का आयोजन किया है। उन्होंने संबंधित मंत्रालयों और एजेंसियों को राजनीतिक, रक्षा, ऊर्जा, व्यापार, अर्थव्यवस्था, वित्त, निवेश, संस्कृति, शिक्षा, थिंक टैंक, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल, युवा, पर्यटन सहित देशों के विभिन्न क्षेत्रों के बहुमुखी संबंधों की गहराई एवं चौड़ाई का चित्रण करने वाले समारोह का आयोजन करने का निर्देश दिया है।

वैश्विक व्यवस्था और विश्व शांति

रूस ने परिष्कृत एवं विस्तृत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी के लिए अपने समर्थन की पुष्टि की।

इंडियन साइड ने शंघाई कोऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन (एससीओ) में भारत की पहुंच में रूस द्वारा निभाई गई भूमिका की बहुत सराहना की।

नेताओं ने ब्रिक्स समूह में सहयोग के विकास पर संतोष व्यक्त किया और ब्रिक्स की सामरिक भागीदारी को मजबूत बनाने के महत्व को रेखांकित किया। नेताओं ने 2016 में ब्रिक्स व्यापार परिषद की बैठक द्वारा उत्पन्न गति पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने नए विकास बैंक के कामकाज में प्रगति और हरित एवं अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में परियोजनाओं के लिए ऋण के पहले सेट को वितरित करने के अपने फैसले का स्वागत किया। रूस ने ब्रिक्स फिल्म महोत्सव, ब्रिक्स अंडर – 17 फुटबॉल टूर्नामेंट, पर्यटन पर ब्रिक्स सम्मेलन जैसे इवेंट्स पर भारत की ब्रिक्स अध्यक्षता और संचालन के दौरान जन संपर्क को बढ़ाने पर ध्यान केन्द्रित करने की सराहना की।

नेताओं ने ब्रिक्स आर्थिक सहयोग के विकास पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने जुलाई 2015 में उफा सम्मेलन पर ब्रिक्स आर्थिक भागीदारी के लिए रणनीति के कार्यान्वयन में प्रगति की सराहना की। पक्षों ने ब्रिक्स प्रारूप में व्यापार में गैर शुल्क बाधाओं को नष्ट करने, सेवाओं में व्यापार वृद्धि और एमएसएमई का संरचना समर्थन एवं विकास पर भारतीय पहल के संयुक्त प्रोमोशन के माध्यम से सहयोग को व्यापक करने के लिए सहमति जताई। रूसी पक्ष ने ब्रिक्स देशों में अग्र व्यापार संबंधों को मजबूत करने के लिए नई दिल्ली में पहले ब्रिक्स व्यापार मेले के आयोजन की भी सराहना की। उन्होंने 2015 में रूस पक्ष द्वारा प्रस्तुत 2020 तक व्यापार, अर्थव्यवस्था और निवेश सहयोग के लिए ब्रिक्स रोडमैप के कार्यान्वयन के महत्व को भी रेखांकित किया। इस पर भी सहमति जताई गई कि आर्थिक और व्यापार मुद्दों पर ब्रिक्स संपर्क समूह, ब्रिक्स व्यापार परिषद और नए विकास बैंक के बीच निकट सहयोग को बढ़ाना ब्रिक्स आर्थिक साझेदारी को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है।

रूस, भारत और चीन (आरआईसी) के बीच सहयोग के महत्व पर बल देते हुए नेताओं ने 18 अप्रैल, 2016 को मास्को में आरआईसी मंत्रिस्तरीय बैठक के परिणामों का स्वागत किया, जो कि अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय मुद्दों पर आपसी विश्वास और समन्वय को मजबूत करने में एक ठोस योगदान के रूप में है।

दोनों पक्षों ने घरेलू सुरक्षा स्थिति को संबोधित करके, अफगान राष्ट्रीय सुरक्षा बलों की क्षमताओं में सुधार करके, नशीले पदार्थों की क्षमताओं के विरोध को मजबूत बनाकर, सामाजिक-आर्थिक विकास सुनिश्चित करके, और संपर्कता बढ़ाकर अफ़ग़ानिस्तान की मदद करने के लिए रचनात्मक, अंतर्राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और द्विपक्षीय सहयोग का अनुरोध किया।

नेताओं ने दृढ़ता से सभी रूपों और किस्मों के आतंकवाद की निंदा की और इसके उन्मूलन को सुनिश्चित करने के लिए व्यापक अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने आतंकवादियों को सुरक्षित ठिकाने प्रदान करने से इनकार करने की आवश्यकता और आतंकवादी विचारधारा के प्रसार के साथ साथ आतंकवाद, भर्ती, आतंकवादियों की सुरक्षित यात्रा एवं विदेशी आतंकवादी सेनानियों का नेतृत्व करने वाली कट्टरता का मुकाबला करने, सीमा प्रबंधन को मजबूत बनाने और प्रभावी कानूनी सहायता एवं प्रत्यर्पण व्यवस्था के महत्व पर बल दिया। इसके अलावा, उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से 'आतंकवाद के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष समर्थन के लिए शून्य सहिष्णुता' के सिद्धांत पर निर्मित मजबूत अंतर्राष्ट्रीय कानूनी शासन की आवश्यकता पर बल दिया। दोनों पक्षों ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक संधि (सीसीआईटी) को जल्द संपन्न करने के लिए ईमानदारी से प्रयास करने का अनुरोध किया।

नेताओं ने सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के इस क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग को गहरा करने की आवश्यकता की पुष्टि की और इस संबंध में सहयोग के लिए भारतीय-रूसी अंतर-सरकारी समझौते को संपन्न करने का स्वागत किया।

दोनों पक्षों ने दक्षिण पूर्वी यूक्रेन में जारी अस्थिरता पर चिंता व्यक्त की और 12 फरवरी, 2015 के मिंस्क समझौतों के कार्यान्वयन के लिए उपायों के पैकेज का पूरा कार्यान्वयन करके इस मुद्दे को राजनीति और बातचीत से हल करने का समर्थन किया।

दोनों पक्षों का मानना है कि 30 जून, 2012 के जिनेवा संवाद पर आधारित और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्तावों पर आधारित व्यापक और समावेशी अंतर-सीरियाई बातचीत के माध्यम से सीरिया में संघर्ष को शांतिपूर्वक हल किया जाना चाहिए।

रूस ने बैलिस्टिक मिसाइल प्रसार के खिलाफ हेग आचार संहिता और मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था में भारत के प्रवेश का स्वागत किया। रूस ने भारत के आवेदन का स्वागत किया और भारत के एनएसजी में शीघ्र प्रवेश के लिए अपने मजबूत समर्थन को दोहराया। रूस ने वासीयनार समझौते में पूर्ण सदस्यता की भारत की इच्छा का समर्थन किया।

नेताओं ने अंतरिक्ष के शस्त्रीकरण को रोकने की आवश्यकता पर बल दिया। दोनों पक्षों ने जिनेवा में निरस्त्रीकरण सम्मेलन में बाह्य अंतरिक्ष के शस्त्रीकरण रोकथाम के लिए कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतर्राष्ट्रीय समझौते को संपन्न करने का अनुरोध किया।

दोनों पक्षों ने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे कि ट्वेंटी (जी -20), पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन, एशिया-यूरोप बैठक, आसियान क्षेत्रीय मंच, आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक प्लस, एशिया में संवाद एवं विश्वास निर्माण उपायों पर सेमिनार, और एशिया सहयोग संवाद जैसे विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में अपने परामर्श और समन्वय को मजबूत करने की इच्छा जताई।

द्विपक्षीय परिप्रेक्ष्य

भारत गणराज्य और रूस के बीच सामरिक साझेदारी की अद्वितीय प्रकृति को स्वीकार करते हुए, नेताओं ने हितधारकों में विविधता लाने पर सहमति व्यक्त की और अपने लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए भारत-रूस साझेदारी को बढ़ाने के लिए सहयोग के मौजूदा तंत्र को और मजबूत बनाने की सहमति जताई।

9.4.बी. भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन के दौरान हस्ताक्षरित 17 समझौतों/समझौता ज्ञापनों की सूची (15 अक्टूबर, 2016)

हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन

- जहाज निर्माण में सहयोग, बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के कार्यान्वयन, प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण और विदेशी विशेषज्ञों के प्रशिक्षण हेतु दृष्टिकोण का अध्ययन करने के लिए जेएससी यूनाइटेड शिपबिल्डिंग कॉरपोरेशन और आंध्र प्रदेश आर्थिक सहयोग परिषद के बीच समझौता ज्ञापन।
- जेएससी "रुसिनफॉर्मएक्सपोर्ट" और भारत के शहरी विकास मंत्रालय, गृह मंत्रालय, राज्य कंपनी राष्ट्रीय भवन निर्माण निगम लिमिटेड, हरियाणा सरकार के बीच रूसी कंपनियों के आईटी

समाधानों के उपयोग के साथ भारत में "स्मार्ट शहरों" कार्यक्रम के कार्यान्वयन में सहयोग पर समझौता ज्ञापन।

- भारत में गैस पाइपलाइन बिछाने पर संयुक्त अध्ययन और सहयोग के अन्य संभावित क्षेत्रों पर गज़प्रॉम एंड इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड के बीच समझौता ज्ञापन।
- रोजनेफ्ट ऑयल कंपनी और ओएनजीसी विदेश लिमिटेड के बीच शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र में सहयोग समझौता।
- एनआईआईएफ और आरडीआईएफ के बीच निवेश कोष की स्थापना के लिए समझौता ज्ञापन।
- नागपुर-सिकंदराबाद/हैदराबाद के बीच ट्रेनों की गति बढ़ाने में भारतीय और रूसी रेलवे के बीच सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन।
- भारत में केए-226टी हेलीकाप्टर के निर्माण के लिए एक संयुक्त उद्यम की स्थापना हेतु शेयरधारक समझौते पर हस्ताक्षर।
- आईएसआरओ और रोसकॉसमॉस के बीच जीएलओएनएएसएस और एनएवीआईसी के लिए भू मापन एकत्रण केन्द्रों के पारस्परिक आवंटन पर समझौता ज्ञापन।
- द्विपक्षीय व्यापार और आर्थिक सहयोग के विस्तार पर रूसी संघ के आर्थिक विकास मंत्रालय और भारत गणराज्य के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (भारत) और एफएएसओ (रूस) के बीच समझौता ज्ञापन।
- 2017-18 की अवधि के लिए तेल और गैस क्षेत्र में सहयोग का कार्यक्रम।
- 2017-18 की अवधि के लिए विदेश मंत्रालय और रूस के विदेश मंत्रालय के बीच परामर्श के लिए प्रोटोकॉल।
- अंतर्राष्ट्रीय सूचना सुरक्षा में सहयोग पर समझौता।
- रूसी और भारतीय शिपयार्ड के बीच साझेदारी के माध्यम से चार अतिरिक्त 1135.6 फ्रिगेट्स की खरीद/निर्माण के लिए आईजीए पर हस्ताक्षर।
- एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम की खरीद के लिए आईजीए पर हस्ताक्षर।

9.5 संयुक्त राज्य अमेरिका

भारत अमेरिका का संबंध साल-दर-साल मजबूत होता जा रहा है। अमेरिका ने एनएसजी सीट के लिए भारत की उम्मीदवारी का समर्थन किया है और परमाणु अप्रसार और निरस्त्रीकरण के मुद्दे पर भारत द्वारा निभाई गई भूमिका तथा भविष्य में निभाई जाने वाली भूमिकाओं को स्वीकार किया है। पिछले वर्ष निम्नलिखित दौरे हुए थे।

9.5.ए. परमाणु सुरक्षा शिखर सम्मेलन के लिए प्रधान मंत्री का संयुक्त राज्य अमेरिका का दौरा (31 मार्च - 01 अप्रैल, 2016)

1. प्रधान मंत्री ने 31 मार्च और 1 अप्रैल, 2016 को वाशिंगटन डीसी में चौथे परमाणु सुरक्षा शिखर सम्मेलन में भाग लिया। पहला परमाणु सुरक्षा शिखर सम्मेलन वाशिंगटन डीसी (अप्रैल 2010) में हुआ और उसके बाद सोल (मार्च 2012) और द हेग (मार्च 2014) में हुआ था।

परमाणु सुरक्षा शिखर सम्मेलन की प्रक्रिया परमाणु आतंकवाद के कारण विश्व पर मंडराते खतरे पर नेताओं के स्तर का ध्यान केंद्रित करने और आतंकवादियों और अन्य गैर-राज्य कार्यकर्ताओं को संवेदनशील परमाणु सामग्री और प्रौद्योगिकियों तक पहुंच प्राप्त करने से रोकने के लिए आवश्यक तत्काल उपायों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए महत्वपूर्ण रहा है। 2016 के शिखर सम्मेलन ने भविष्य के एजेंडे को रेखांकित करते हुए पिछले एनएसएस संवादों / कार्य योजनाओं की प्रगति का जायजा लिया। प्रधानमंत्री ने एनएसएस 2016 के मौके पर द्विपक्षीय बैठकें भी कीं।

9.5.बी. भारत की राष्ट्रीय प्रगति रिपोर्ट, परमाणु सुरक्षा शिखर सम्मेलन 2016: अप्रैल 02, 2016

प्रधान मंत्री ने कहा कि भारत मजबूत संस्थागत रूपरेखाओं, स्वतंत्र नियामक एजेंसी और प्रशिक्षित और विशेषज्ञ जनशक्ति के माध्यम से राष्ट्रीय सुरक्षा को उच्च राष्ट्रीय प्राथमिकता देना जारी रखेगा। राष्ट्रीय प्रगति रिपोर्ट में उजागर की गई मुख्य बिन्दुएँ निम्न हैं:

- भारत परमाणु प्रौद्योगिकी और परमाणु सामग्रियों को मुख्य रूप से अपनी विद्युत मांगों के एक भाग की पूर्ति के संसाधन के तौर पर देखता है। यह परमाणु शक्ति को सुरक्षित, विश्वसनीय, सस्ता और पर्यावरण प्रयोग लिए के उदेश्य इस और है मानता अनुकूल-करने के लिए परमाणु प्रौद्योगिकियों को विकसित करने में संलग्न है।
- भारत द्वारा महसूस की गई परमाणु सुरक्षा मांगों के अनुरूप ही, देश में परमाणु सुरक्षा की संरचना को सशक्त किया गया है और भारत ने वैश्विक स्तर भी इस सुरक्षा की संरचना को मजबूती प्रदान करने के लिए अपनी भागीदारी पेश की है।
- अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए किसी देश की प्रतिबद्धता का निर्धारण करने के लिए, जिन 13 सार्वभौमिक दस्तावेजों को मानदंडों के रूप में स्वीकार किया गया है, भारत उन सभी दस्तावेजों का पक्षकार है। भारत परमाणु सामग्रियों के भौतिक संरक्षण पर संधि (सीपीपीएनएम) और परमाणु आतंकवाद के कृत्यों पर रोक की अंतर्राष्ट्रीय संधि का पक्षकार होने के नाते भारत इन दोनों संधियों के विश्व स्तर पर संवर्धन के लिए प्रयासों का समर्थन करता है।
- राष्ट्रीय ढांचे के संबंध में, भारतीय परमाणु ऊर्जा अधिनियम, 1962 सुरक्षा सहित परमाणु और विकिरण प्रौद्योगिकियों के विकास से संबंधित सभी पहलुओं के लिए कानूनी ढांचा प्रदान करता है। भारत के निर्यात नियंत्रण सूची और दिशानिर्देशों को परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) के साथ सामंजस्य किया गया है और भारत निर्यात नियंत्रण व्यवस्था की सदस्यता के माध्यम से साझा अप्रसार उद्देश्यों में अपने योगदान को मजबूत करने के लिए तत्पर है। संस्थागत रूप से, भारत में परमाणु और रेडियोलॉजिकल सामग्री की सुरक्षा भारत के परमाणु ऊर्जा नियामक बोर्ड (एईआरबी) द्वारा मजबूत निरीक्षण के माध्यम से सुनिश्चित की जाती है, जो इस उद्देश्य के लिए उच्च प्रशिक्षित और विशेष जनशक्ति के एक बड़े समूह को दर्शाती है। आईएईए के सहकर्मी समीक्षा तंत्र जैसे एकीकृत नियामक समीक्षा सेवा (आईआरआरएस) ने एईआरबी की नियामक प्रथाओं और क्षमताओं की ताकत को स्वीकार किया है। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) जो केंद्रीय काउंटर आतंकवाद कानून प्रवर्तन एजेंसी के रूप में कार्य करती है, के पास परमाणु ऊर्जा अधिनियम, गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम और हथियारों के सामूहिक विनाश और उनके वितरण प्रणाली (गैरकानूनी गतिविधियों का निषेध) अधिनियम का संदर्भ है। परमाणु नियंत्रण विभाग और परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) में 2013 में स्थापित परमाणु नियंत्रण और परमाणु सुरक्षा, निर्यात नियंत्रण और परमाणु सुरक्षा और सुरक्षा से संबंधित भारत की प्रतिबद्धता को लागू करता है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन एजेंसी (एनडीएमए) रेडियोलॉजिकल आपात स्थितियों सहित आपात स्थितियों पर प्रतिक्रिया देती है।
- भारत ने परमाणु तस्करी निरोधी टीम की स्थापना की है, जो दुर्भावनापूर्ण उद्देश्यों के लिए परमाणु और रेडियोधर्मी सामग्री के उपयोग के खतरों के प्रति अनुक्रिया देती है।
- उच्च संवर्धित यूरेनियम (एचईयू) के दुरुपयोग से खतरे को रोकने के लिए, भारत निम्न संवर्धित यूरेनियम (एलईयू) लक्ष्यों का प्रयोग कर यूरेनियम विखंडन की प्रक्रिया द्वारा मेडिकल ग्रेड एमओ-99 के उत्पादन के लिए एक प्रणाली की स्थापना कर रहा है। भारत "पुन: उपयोग के पुन: प्रसंस्करण" के सिद्धांत का भी पालन करता है जिसके तहत खर्च किए गए ईंधन की पुन: आपूर्ति और तेजी से रिएक्टरों की कमीशनिंग को प्लूटोनियम भंडार बनने से रोकने के लिए सिंक्रनाइज़ किया जा रहा है।

- भारत की नियामक एजेंसी एईआरबी ने विकिरण स्रोतों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत शक्तिशाली नियामक कार्यप्रणालियों की स्थापना की है। रेडियोधर्मी स्रोतों और विकिरण केन्द्रों की सुरक्षा पर दिशानिर्देश प्रकाशित करने के अलावा, एईआरबी ने देश में उपयोग किए जाने वाले विकिरण स्रोतों का एक डेटाबेस विकसित किया है और हाल ही में विकिरण स्रोतों का प्रयोग कर सुविधाओं के लाइसेंसीकरण को शुरू करने के लिए और पूर्ण स्वचालन के लिए एक बहुत ही सफल ई मंच ई-लोरा (विकिरण अनुप्रयोगों की ई-लाइसेंसिंग) की स्थापना की है। एईआरबी नियमित रूप से पूरे देश में विकिरण स्रोतों की सुरक्षा के लिए विभिन्न हितधारकों/कानून प्रवर्तन एजेंसियों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर रहा है।
- देश में किसी भी स्थान पर कोई परमाणु या रेडियोलॉजिकल आपातकालीन दशा की खोज करने और उस पर त्वरित प्रतिक्रिया करने के लिए पूरे भारत में 23 आपातकालीन प्रतिक्रिया केंद्रों का नेटवर्क विकसित किया गया है। सभी वाहन, यात्री और माल संबंधी यातायात की निगरानी करने के लिए सभी प्रमुख समुद्री बंदरगाहों और हवाई अड्डों पर विकिरण पोर्टल और खोजी उपकरण लगाए जा रहे हैं।
- साइबर खतरों का मुकाबला करने के लिए, ऑन-साइट साइबर सुरक्षा संरचना का एक पदानुक्रम तैनात किया गया है और साथ ही देश में साइबर बुनियादी ढांचे की सुरक्षा के लिए कई परिष्कृत उत्पादों और सेवाओं जैसे सुरक्षित नेटवर्क एक्सेस सिस्टम (एसएनएएस) को विकसित और तैनात किया गया है।
- पांच साल से अधिक समय से स्थापित वैश्विक परमाणु ऊर्जा साझेदारी केंद्र (जीसीएनईपी) ने 30 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय कार्यक्रमों का संचालन किया है, जिसमें परमाणु सुरक्षा के महत्वपूर्ण और उभरते विषयों को शामिल करते हुए लगभग 30 देशों के 300 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया था।
- परमाणु सुरक्षा को और अधिक सशक्त करने के लिए राष्ट्रीय प्रयासों को सुगम बनाने के लिए और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रभावी रूप से प्रोत्साहित करने के लिए भारत ने आईएईए की मुख्य भूमिका का निरंतर समर्थन किया है। परमाणु सुरक्षा से संबंधित दस्तावेजों का प्रारूप बनाने और उनकी समीक्षा के लिए आईएईए द्वारा स्थापित की गई अनेक संस्थाओं में भारतीय विशेषज्ञ भाग लेते रहे हैं। आईएईए ने भारत की नियामक एजेंसी एईआरबी की "एकीकृत नियामक समीक्षा सेवा" (आईआरआरएस) की समीक्षा की है। भारत ने 2013 में आईएईए के परमाणु सुरक्षा कोष में 1 मिलियन डॉलर का योगदान दिया और 2016 में भी इसी तरह की राशि का योगदान देने का प्रस्ताव रखा।
- भारत यूएनएससी परिषद के प्रस्ताव 1540, इसके विस्तार प्रस्ताव 1977 और संयुक्त राष्ट्र वैश्विक आतंकवाद निरोधी रणनीति का पूरी तरह से समर्थन करता है। इसके अलावा, भारत परमाणु आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए वैश्विक पहल (जीआईसीएनटी) का भी सदस्य है और जीआईसीएनटी के तीनों कार्य समूह, परमाणु खोज, परमाणु फॉरेंसिक और अनुक्रिया एवं शमन के क्षेत्रों में भाग लेता है।

9.5.सी. प्रधान मंत्री का यूएसए दौरा (6-8 जून, 2016)

प्रधान मंत्री के यूएसए दौरे के दौरान भारत-यूएस संयुक्त वक्तव्य की मुख्य बिन्दुएँ (संयुक्त राज्य और भारत: 21 वीं शताब्दी में स्थायी वैश्विक साझेदारी) (07 जून, 2016)[13]

- उन्होंने आर्थिक विकास और सतत विकास को बढ़ावा देने, स्वदेश और दुनिया भर में शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देने, समावेशी, लोकतांत्रिक शासन को मजबूत करने के नए अवसरों का अनुसरण करने और सार्वभौमिक मानवाधिकारों को सम्मान देने, और साझा हितों के मुद्दों पर

वैश्विक नेतृत्व प्रदान करने तथा एक-दूसरे की सुरक्षा और समृद्धि में निकटता से संलग्न होने का संकल्प लिया।

जलवायु एवं स्वच्छ ऊर्जा में भारत-यूएस का वैश्विक नेतृत्व आगे बढ़ाना

- यू.एस.-भारत संपर्क समूह के माध्यम से पिछले दो वर्षों में दोनों सरकारों ने जो कदम उठाए हैं, उन्होंने भारत में परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के निर्माण के लिए अमेरिकी और भारतीय कंपनियों के बीच दीर्घकालिक साझेदारी की मजबूत नींव रखी है। दोनों पक्षों ने भारतीय परमाणु विद्युत निगम और वेस्टिंगहाउस द्वारा की गई उस घोषणा का स्वागत किया जिसके अनुसार, इंजीनियरिंग एवं साइट डिजाइन का काम तुरंत शुरू हो जाएगा और दोनों पक्ष जून 2017 तक संविदात्मक व्यवस्था को अंतिम रूप देने की दिशा में काम करेंगे।
- दोनों देश पेरिस समझौते के पूर्ण कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए मिलकर तथा दूसरों के साथ काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं ताकि जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न तात्कालिक खतरों से निपटा जा सके। दोनों नेताओं ने 2020 से पहले न्यूनतम ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन विकास रणनीति तैयार करने और लंबी अवधि की न्यूनतम ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन विकास रणनीति विकसित करने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया।

[13]http://mea.gov.in/outoging-visit-detail.htm?26879/IndiaUS+Joint+Statement+during+the+visit+of+Prime+Minister+to+USA+The+United+States+and+India+Enduring+Global+Partners+in+the+21st+Century

इसके अलावा, दोनों देशों ने 2016 में दाता देशों की ओर से कार्यान्वयन के साथ विकासशील देशों की मदद के लिए बहुपक्षीय कोष में वित्तीय सहायता बढ़ाकर एक एचएफसी संशोधन को अपनाने की दिशा में काम करने और मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के तहत दुबई पाथवे के अनुरूप एक महत्वकांक्षी फेजडाउन शिड्यूल का संकल्प जताया है। दोनों नेताओं ने अंतर्राष्ट्रीय विमानन से होने वाले ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के मुद्दे से निपटने के लिए आगामी अंतर्राष्ट्रीय नागर विमानन संगठन असेंबली में एक सफल परिणाम तक पहुंचने के लिए एक साथ काम करने का संकल्प लिया।

- दोनों नेताओं ने ऊर्जा सुरक्षा, स्वच्छ ऊर्जा एवं जलवायु परिवर्तन और गैस हाइड्रेट में सहयोग बढ़ाने के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए जाने का स्वागत किया।
- वन्यजीव संरक्षण और संयुक्त वन्यजीव तस्करी पर सहयोग बढ़ाने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर।

स्वच्छ ऊर्जा वित्त

- संयुक्त राज्य अमेरिका ने अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) का सदस्य बनने का आशय व्यक्त किया। इसके लिए, और आईएसए को एक साथ मजबूत करने के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत ने संयुक्त रूप से आईएसए का तीसरा पहल शुरू किया, जो सितंबर, 2016 में भारत में होने वाले आईएसए के संस्थापक सम्मेलन में ऊर्जा पहुंच के लिए ऑफ-ग्रिड सौर पर ध्यान केंद्रित करेगा।
- संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत ने घोषणा की: 20 मिलियन अमेरिकी डॉलर की संयुक्त राज्य अमेरिका-भारत स्वच्छ ऊर्जा वित्त (यूएसआईसीईएफ) पहल का निर्माण, जो भारत और यूएसए

द्वारा समान रूप से समर्थित होगा और "ग्रीनिंग द ग्रिड" पर यूएसएआईडी के साथ सफल सहयोग जारी रखना।

वैश्विक अप्रसार को मजबूत बनाना

- नेताओं ने मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था में भारत के आसन्न प्रवेश की आशा व्यक्त की। राष्ट्रपति ओबामा ने परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) में शामिल होने के लिए भारत के आवेदन का स्वागत किया, और पुष्टि की कि भारत सदस्यता के लिए तैयार है। संयुक्त राज्य अमेरिका ने ऑस्ट्रेलिया समूह और वासेनार व्यवस्था की भारत की जल्द सदस्यता के लिए अपने समर्थन की पुनः पुष्टि की।

क्षेत्रों को सुरक्षित करना: भूमि, समुद्री, वायु, अंतरिक्ष और साइबर

- नेताओं ने संकल्प लिया कि संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत, एशिया प्रशांत और हिंद महासागर क्षेत्र में एक-दूसरे को प्राथमिक साझेदार के रूप में देखेगा।
- उन्होंने समुद्री सुरक्षा वार्ता की उद्घाटन बैठक का स्वागत किया, समुद्री "श्वेत पोत परिवहन" जानकारी साझा करने के लिए एक तकनीकी व्यवस्था संपन्न होने का स्वागत किया, समुद्री सुरक्षा को बढ़ावा देने में यूएस-भारत सहयोग के लिए उनके समर्थन की पुष्टि की और दोनों ने नेवीगेशन की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने, ओवरफ्लाइट (ऊपरी उड़ान), अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार संसाधनों के दोहन, जिसमें समुद्र के नियमों पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन शामिल है, की बात दोहराई, साथ ही क्षेत्रीय विवादों का निपटान शांतिपूर्ण तरीके से करने की बात कही।
- नेताओं ने दोनों देशों के बीच विशेष रूप से संयुक्त अभ्यास, प्रशिक्षण और मानवीय सहायता और आपदा राहत (एचए/डीआर) में सैन्य सहयोग के लिए बढ़ाया सैन्य की सराहना की। उन्होंने समझौतों का पता लगाने की इच्छा व्यक्त की जो व्यावहारिक तरीकों से द्विपक्षीय रक्षा सहयोग के और विस्तार की सुविधा प्रदान करेगा। इस संबंध में, उन्होंने लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट (एलईएमओए) के पाठ को अंतिम रूप देने का स्वागत किया।
- इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए कि अमेरिका एवं भारत के बीच रक्षा संबंध स्थिरता का भरोसा दिला सकते हैं और रक्षा क्षेत्र में आपसी सहयोग निरंतर बढ़ता जा रहा है, अमेरिका भारत को एक प्रमुख रक्षा भागीदार मानता है।
- नेताओं ने भारत सरकार की 'मेक इन इंडिया' पहल के समर्थन में सहयोग बढ़ाने और रक्षा प्रौद्योगिकी और व्यापार पहल (डीटीटीआई) के तहत प्रौद्योगिकियों के सह-उत्पादन और सह-विकास का विस्तार करने के लिए प्रतिबद्धता ली। उन्होंने नौसेना डीटीए, एयर सिस्टम और अन्य हथियार प्रणालियों को कवर करने वाली सहमत वस्तुओं को शामिल करने के लिए नए डीटीटीआई कार्य समूहों की स्थापना का स्वागत किया। नेताओं ने एयरक्राफ्ट कैरियर टेक्नोलॉजी कोऑपरेशन पर ज्वाइंट वर्किंग ग्रुप के तहत एक सूचना विनिमय अनुबंध को अंतिम रूप देने की घोषणा की।
- इस संदर्भ में उन्होंने इन स्वैच्छिक मानकों को लेकर अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की कि किसी भी राष्ट्र को ऐसा आचरण नहीं करना चाहिए अथवा ऐसी ऑनलाइन गतिविधि को जानबूझकर बढ़ावा नहीं देना चाहिए, जिससे महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को नुकसान पहुंचता हो अथवा आम जनता को सेवाएं मुहैया कराने के मार्ग में बाधाएं उत्पहन्ना होती हों; किसी भी राष्ट्रा को ऐसा आचरण नहीं करना चाहिए अथवा जानबूझकर ऐसी किसी गतिविधि को बढ़ावा नहीं देना चाहिए, जिससे राष्ट्रीय कंप्यूटर सुरक्षा संबंधी घटनाओं पर आवश्यक कदम उठाने वालों के सामने मुश्किलें पैदा हों या उन्हें अपने ऐसे दलों का उपयोग नहीं करना चाहिए, जो नुकसान पहुंचाने के मकसद से किसी ऑनलाइन गतिविधि को अंजाम देते हों; हर राष्ट्र को अपने घरेलू कानून और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं के अनुरूप सहयोग करना चाहिए, अपने क्षेत्र से होने वाली किसी दुर्भावनापूर्ण

साइबर गतिविधि को रोकने के लिए अन्य राष्ट्रों से मदद हेतु अनुरोध करना चाहिए; किसी भी राष्ट्र को ऐसा आचरण नहीं करना चाहिए अथवा व्यापार से जुड़ी गोपनीय सूचनाओं अथवा अन्य गोपनीय व्यावसायिक सूचनाओं सहित बौद्धिक संपदा की आईसीटी आधारित चोरी के लिए जानबूझकर किये जाने वाले ऐसे कार्यों में अपनी ओर से सहयोग नहीं देना चाहिए, जिसका उद्देश्य अपनी कंपनियों अथवा वाणिज्यिक क्षेत्रों को प्रतिस्पर्धा के लिहाज से बढ़त प्रदान करना हो।

आतंकवाद और हिंसक चरमपंथ के खिलाफ एक-जुट होकर खड़ा होना

- नेताओं ने आतंकवाद द्वारा मानव सभ्यता को होने वाले खतरे को पहचाना और इसके साथ ही कई संयुक्त पहलों के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर संयुक्त राष्ट्र व्यापक संधि के लिए अपने समर्थन की पुष्टि की, जो वैश्विक सहयोग के लिए रूपरेखा को आगे बढ़ाता और मजबूत बनाता है, और इस बात की पुष्टि करता है कि किसी भी कारण या शिकायत की दृष्टि से आतंकवाद को सही नहीं ठहराया जा सकता है।

आर्थिक और व्यापारिक संबंधों को मजबूती प्रदान करना

- द्पक्षीय व्यापार को बढ़ाने के लिए वस्तुओं और सेवा के निर्बाध प्रवाह के लिए नए अवसरों को खोजने की बात कही। दोनों अर्थव्यवस्थाओं में नई नौकरियों और संपन्नता को बढ़ाने के लिए वैश्विक आपूर्ति श्रंखला में एक होकर काम करने की बात कही। भारत में इस साल के अंत में होने वाली दूसरी वार्षिक रणनीतिक और वाणिज्यिकी वार्ता में इस संबंध में उठाये जाने वाले ठोस कदमों की जानकारी पर भी चर्चा की। उन्होंने व्यापार नीति फोरम (टीपीएफ) के तहत व्यापार और निवेश के मुद्दों पर बढ़ते जुड़ाव की भी सराहना की और इस वर्ष के अंत में अगले टीपीएफ में ठोस परिणाम प्राप्त करने को प्रोत्साहित किया। उन्होंने भारत के स्मार्ट सिटी कार्यक्रम में अमेरिकी निजी क्षेत्र की कंपनियों की सगाई का स्वागत किया।
- नेताओं ने भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के 1.5 अरब लोगों के बीच मजबूत दोस्ती की सराहना की और समृद्ध द्विपक्षीय भागीदारी के लिए अमेरिका ने ठोस नींव प्रदान की है। ध्यान देने योग्य बात है कि पर्यटन,व्यापार, और शिक्षा के लिए दो-जिस तरह से अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई, 2015 में भारत से संयुक्त राज्य अमेरिका में दस लाख से अधिक यात्री, और ठीक इतनी ही संख्या में अमेरिका से भारत के लिए लोगों ने यात्राएं की। दोनों नेताओं ने देशों के बीच पेशेवरों, निवेशकों और व्यापार यात्रियों, छात्रों के अधिक से अधिक आवाजाही की सुविधा के लिए कई मुद्दों को सुलझाया। आवाजाही को आसान करने के लिए उन्होंने एक अंतर्राष्ट्रीय शीघ्र यात्री पहल (जिसे ग्लोबल प्रवेश कार्यक्रम के रूप में जाना जाता है) पर समझौता किया और अगले तीन महीनों में भारत के वैश्विक प्रविष्टि कार्यक्रम में प्रवेश के लिए प्रक्रियाओं को पूरा करने के समझौता पर हस्ताक्षर किया जाएगा।
- दोनों नेताओं ने भारत-अमेरिका टोटलाइजेशन समझौते को अगस्त 2015 और जून 2016 में दोनों देशों में फलदाई आदान प्रदान के तत्व को मान्यता दी, इस साल भी यह जारी रहेगी।
- नई खोज के लिए एक अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देने और उद्यमियों को सशक्त बनाने के महत्व को स्वीकार करते हुए अमेरिका ने 2017 में वैश्विक उद्यमिता शिखर सम्मेलन में भारत की मेजबानी का स्वागत किया।
- दोनों नेताओं ने भारत-अमेरिका टोटलाइजेशन समझौते को अगस्त 2015 और जून 2016 में दोनों देशों में फलदाई आदान प्रदान के तत्व को मान्यता दी, इस साल भी यह जारी रहेगी।

- नई खोज के लिए एक अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देने और उद्यमियों को सशक्त बनाने के महत्व को स्वीकार करते हुए अमेरिका ने 2017 में वैश्विक उद्यमिता शिखर सम्मेलन में भारत की मेजबानी का स्वागत किया।
- नेताओं ने बौद्धिक संपदा पर उच्च स्तरीय कार्य समूह के तहत बौद्धिक संपदा अधिकार पर सहयोग का स्वागत किया और क्षेत्र में नई खोज और रचनात्मकता के द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाने के लिए काम करके बौद्धिक संपदा अधिकार के मुद्दों पर ठोस प्रगति करने के लिए दोनों देशों ने अपनी प्रतिबद्धता की बात कही।
- अमेरिका ने एशिया प्रशांत आर्थिक सहयोग मंच में भारत की शामिल होने की इच्छा का स्वागत किया क्योंकि भारत एशियाई अर्थव्यवस्था का एक गतिशील हिस्सा है।

सहयोग विस्तार करना: विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और स्वास्थ्य

1. नेताओं ने निकट भविष्य में भारत में लेजर इंटरफेरोमीटर ग्रेविटेशनल वेव ऑब्जर्वेटरी (एलआईजीओ) के निर्माण में सहयोग करने के लिए विज्ञान के सबसे बुनियादी सिद्धांतों की खोज में अपने राष्ट्रों के आपसी समर्थन की पुष्टि की और संयुक्त प्रवासी समूह परियोजना के वित्तपोषण और निरीक्षण के एजेंसी समन्वय की सुविधा के लिए भारत-यू.एस. के गठन का स्वागत किया।
2. नेता वाशिंगटन, डीसी में सितंबर 2016 में होने वाली महासागर सम्मेलन में भारत की भागीदारी के लिए तत्पर हैं और साथ ही इस वर्ष बाद में होने वाली भारत-यूएस समुद्री वार्ता के लिए तत्पर हैं। समुद्री वार्ता से समुद्री विज्ञान, समुद्र ऊर्जा,प्रबंध और रक्षा सागर जैव विविधता, समुद्री प्रदूषण, और सागर संसाधनों के सतत उपयोग में सहयोग को मजबूत करने की दिशा में मजबूती मिलेगी।
3. नेताओं ने वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा एजेंडा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और इसके उद्देश्यों को समय पर लागू करने की पुष्टि की। प्रधान मंत्री ने संचालक समूह पर भारत की भूमिका और माइक्रोबियल प्रतिरोध और टीकाकरण के क्षेत्रों में इसके नेतृत्व को नोट किया। राष्ट्रपति ने संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रतिबद्धता का उल्लेख किया जो उन्होंने विश्व स्वास्थ्य संगठन के सहयोग से संयुक्त बाह्य मूल्यांकन का समर्थन, कार्यान्वयन और साझा करने की दिशा में ली है।
4. नेताओं ने बहु-दवा प्रतिरोधी तपेदिक (एमडीआर-टीबी) द्वारा उत्पन्न वैश्विक खतरे को पहचाना और तपेदिक के क्षेत्र में सहयोग जारी रखने और संबंधित सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिए प्रतिबद्धता ली।
5. नेताओं ने गैर-संचारी रोगों के बढ़ते खतरे को नोट किया। नेताओं ने स्वास्थ्य और कल्याण के लिए समग्र दृष्टिकोण के महत्व को भी दोहराया, और योग सहित आधुनिक और पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के समन्वय द्वारा समग्र दृष्टिकोण के संभावित लाभों को बढ़ावा दिया।
6. नेताओं ने इंडो-यू.एस. वैक्सीन एक्शन प्रोग्राम के विस्तार का जोरदार समर्थन किया, जो तपेदिक, डेंगू, चिकनगुनिया और अन्य विश्व स्तर पर गंभीर संक्रामक रोगों को रोकने के लिए टीकों के विकास और मूल्यांकन पर केंद्रित सार्वजनिक-निजी अनुसंधान साझेदारी को बढ़ावा दे रहा है।

वैश्विक नेतृत्व

1. नेताओं ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ मिलकर काम करने के साथ ही संयुक्त राष्ट्र की क्षमता को अधिक प्रभावी ढंग से वैश्विक विकास और सुरक्षा चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने संकल्प को दोहराया। सितंबर 2015 में सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के ऐतिहासिक एजेंडे और अपनी सार्वभौमिकता को पहचानने के साथ, नेताओं ने इस महत्वाकांक्षी एजेंडा घरेलू और

अंतर्राष्ट्रीय स्तर को लागू करने और सतत विकास लक्ष्यों के प्रभावी उपलब्धि के लिए एक सहयोगात्मक साझेदारी में काम करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

2. नेताओं ने संशोधित संयुक्त सुरक्षा परिषद के लिए भारत के स्थायी सदस्य के रूप में अपने समर्थन की पुष्टि की।
3. नेताओं ने संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना पर नेताओं की शिखर सम्मेलन के सफल आयोजन का स्वागत किया और तीसरे देशों में संयुक्त राष्ट्र शांति क्षमता निर्माण के प्रयासों को मजबूत बनाने के लिए इस वर्ष प्रतिभागियों के लिए नई दिल्ली में में आयोजन किया जाएगा। अफ्रीका के दस देशों से अफ्रीकी भागीदारों के लिए सह आयोजन पहली बार संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना कार्यक्रम के तहत किया जा रहा है। नेताओं ने संयुक्त राष्ट्र के शांति अभियानों को मजबूत बनाने के लिए चल रहे सुधार के प्रयासों के प्रति अपना समर्थन दोहराया।
4. अफ्रीका के साथ अपने संबंधित द्विपक्षीय संबंधों का निर्माण करते हुए, जैसे कि यूएस-अफ्रीका नेता शिखर सम्मेलन और इंडिया-अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन, नेताओं ने प्रतिबिंबित किया कि महाद्वीप में समृद्धि और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत, अफ्रीका के साझीदारों के साथ काम करने में समान हित साझा करते हैं। नेताओं ने अफ्रीकी साझेदारों के साथ त्रिपक्षीय सहयोग का स्वागत किया, जिसमें कृषि, स्वास्थ्य, ऊर्जा, महिला सशक्तिकरण और वैश्विक विकास के लिए त्रिकोणीय सहयोग पर मार्गदर्शक सिद्धांतों के वक्तव्य के तहत स्वच्छता जैसे क्षेत्र शामिल हैं। वे अफ्रीका में भारत के वैश्विक विकासात्मक सहयोग के साथ-साथ एशिया और उससे आगे के क्षेत्रों को गहरा करने के अवसरों के लिए तत्पर थे।

दोनों देशों की जनता के बीच संपर्क बढ़ाना

1. दोनों पक्षों ने एक-दूसरे के देश में अतिरिक्त वाणिज्य दूतावास खोलने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। भारत सिएटल में एक नया वाणिज्य दूतावास खोलेगा। इसी तरह अमेरिका भारत में आपसी सहमति वाले स्थान पर एक नया वाणिज्य दूतावास खोलेगा।
2. दोनों नेताओं ने घोषणा की कि अमेरिका और भारत वर्ष 2017 के लिए यात्रा एवं पर्यटन भागीदार देश होंगे और उन्होंने एक-दूसरे के नागरिकों के लिए वीजा को सुविधाजनक बनाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।
3. दोनों देशों के बीच मजबूत शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संबंधों का उल्लेख करते हुए दोनों नेताओं ने अमेरिका में पढ़ाई करने वाले भारतीय विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या का स्वागत किया, जो वर्ष 2014-15 में 29 प्रतिशत बढ़कर तकरीबन 133,000 विद्यार्थियों के स्तर पर पहुंच गई। दोनों नेताओं ने भारत में पढ़ाई के लिए अमेरिकी विद्यार्थियों को कहीं ज्यादा अवसर मिलने की उम्मीद जताई। दोनों नेताओं ने वैश्विक जलवायु परिवर्तन की साझा चुनौती से निपटने के लिए जलवायु विशेषज्ञों का एक समूह विकसित करने हेतु फुलब्राइट-कलाम जलवायु फेलोशिप के माध्यम से अपनी-अपनी सरकारों के संयुक्त प्रयासों की भी सराहना की।
4. दोनों देशों के ज्यादा-से-ज्यादा लोगों के बीच संबंधों को मजबूत बनाने के अपने आपसी लक्ष्य का उल्लेख करते हुए दोनों नेताओं ने दोनों देशों के नागरिकों को प्रभावित करने वाले मुद्दों को सुलझाने के लिए नए सिरे से अपने प्रयासों को तेज करने का इरादा व्यक्त किया जो कानूनी प्रणालियों के दृष्टिकोण में अंतर के कारण उभर कर सामने आते हैं। इनमें सीमा पार विवाह, तलाक और बाल संरक्षण से जुड़े मुद्दे शामिल हैं।
5. प्रधानमंत्री नरेन्द्रर मोदी ने संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा भारत की प्राचीनकालीन वस्तुओं को स्वदेश वापस भेजे जाने का स्वागत किया। दोनों नेताओं ने सांस्कृतिक वस्तुओं की चोरी एवं तस्करी की समस्या से निपटने के लिए अपने प्रयासों को दोगुना करने की भी प्रतिबद्धता जताई।
6. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शालीन निमंत्रण और गर्मजोशी भरे आतिथ्य के लिए राष्ट्रपति ओबामा का धन्यवाद किया। उन्होंने राष्ट्रपति ओबामा को अपनी सुविधानुसार भारत आने का निमंत्रण दिया।

9.5.डी. भारत के प्रधान मंत्री की अमेरिका दौरे के दौरान हस्ताक्षरित दस्तावेज या ऐसे दस्तावेज जिन्हें अंतिम रूप दिया गया (07 जून, 2016)[14]

हस्ताक्षरित दस्तावेज

1. भारत सरकार के मल्टी–एजेंसी सेंटर/इंटेलिजेंस ब्यूरो और संयुक्त राज्य अमेरिका की आतंकवादी स्क्रीनिंग केंद्र के बीच व्यवस्था, आतंकवादी स्क्रीनिंग सूचनाओं के आदान–प्रदान के लिए व्यवस्था।
2. ऊर्जा सुरक्षा, स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन पर सहयोग बढ़ाने के लिए भारत सरकार और संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू)।

[14]http://mea.gov.in/outoging-visit-detail.htm?26878/Documents+signedfinalized+in+the+run+upto+the+visit+of+Prime+Minister+of+India+to+the+US

3. वन्यजीव संरक्षण और संयुक्त वन्यजीव तस्करी पर सहयोग बढ़ाने के लिए भारत सरकार और संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू)।
4. भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के कौंसुलर, पासपोर्ट और वीजा प्रभाग और अमेरिका के सीमा शुल्क और सीमा सुरक्षा,अमेरिका होमलैंड सुरक्षा विभाग के बीच एक अंतर्राष्ट्रीय त्वरित यात्री पहल (ग्लोबल एंट्री प्रोग्राम) के लिए समझौता।
5. अवर्गीकृत समुद्री सूचना साझाकरण के विषय में भारतीय नौसेना और संयुक्त राज्य नौसेना के बीच तकनीकी व्यवस्था।
6. पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय, भारत सरकार और ऊर्जा विभाग, संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच गैस हाइड्रेट्स में सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू)।

दस्तावेज जिन्हें अंतिम रूप दिया गया

1. विमान वाहक प्रौद्योगिकी से संबंधित मास्टर सूचना विनिमय समझौते के लिए रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार और संयुक्त राज्य अमेरिका के रक्षा विभाग के बीच सूचना विनिमय अनुबंध (आईईए)।
2. रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार और संयुक्त राज्य अमेरिका के रक्षा विभाग के बीच लॉजिस्टिक एक्सचेंज समझौता ज्ञापन।

9.5.ई. अमेरिकी कांग्रेस में प्रधानमंत्री का संबोधन (08 जून, 2016)[15]

हमारे देश को भी अलग–अलग इतिहास, संस्कृतियों, और धार्मिक निष्ठाओं ने स्वरुप प्रदान किया है। फिर भी, लोकतंत्र में हमारे देश का विश्वास और स्वतंत्रता हमारे देशवासियों के लिए सामान्य आधार है।

यह विचार कि सभी नागरिक समान हैं, अमेरिकी संविधान का आधार स्तंभ है। हमारे संस्थापकों ने भी इसी प्रकार का विश्वास जताया है, प्रत्येक भारतीय नागरिक के लिए व्यक्तिगत स्वतंत्रता सुनिश्चित किए हैं।

हमारे लोकतंत्र के बीच संलग्नता आचरण में दिखाई पड़ रहा है, जो हमारे एक दूसरे के विचारकों को प्रभावित किया है और हमारे समाज की रुपरेखा को गढ़ा है।

आज, हमारे संबंधों ने इतिहास के संकोच को दूर किया है। आराम, स्पष्टवादिता और अभिसरण हमारी संवादों को परिभाषित करते हैं।

[15]http://mea.gov.in/outoging-visit-detail.htm?26886/Prime+Ministers+remarks+at+the+US+Congress

चुनावों के चक्र और प्रशासनों में संक्रमणों के माध्यम से हमारे जुड़ाव की तीव्रता में वृद्धि हुई है। और, इस रोमांचक यात्रा में, यू.एस. कांग्रेस ने एक कम्पास के रूप में काम किया है।

2008 के पतझड़ में, जब कांग्रेस ने भारत–यू.एस. सिविल न्यूक्लियर कोऑपरेशन एग्रीमेंट पारित किया, इसने हमारे संबंधों की पत्तियों के रंगों को बदल दिया। जब हमे साझेदारी में आपकी सबसे अधिक जरूरत थी तब उसमे साथ देने के लिए धन्यवाद।

नॉर्मन बोरलॉग की प्रतिभा भारत में हरित क्रांति और खाद्य सुरक्षा को लाया। अमेरिकी विश्वविद्यालयों की श्रेष्ठता ने भारत में प्रौद्योगिकी और प्रबंधन संस्थानों को विकसित किया।

हमारी भागीदारी के आलिंगन को — महासागर की गहराई से अंतरिक्ष की विशालता तक मानव प्रयत्न की सम्पूर्णता के लिए विस्तृत करना है।

हमारी एस एंड टी सहयोग सार्वजनिक स्वास्थ्य, शिक्षा, भोजन और कृषि के क्षेत्र में सदियों पुरानी समस्याओं को दुर करने में निरंतर हमारी मदद करता है।

वाणिज्य और निवेश के संबंध फल–फूल रहे हैं। हम किसी अन्य राष्ट्र की तुलना में अमेरिका के साथ अधिक व्यापार करते हैं। और, हमारे बीच वस्तुओं, सेवाओं और पूंजी का प्रवाह हमारे दोनों समाजों में रोजगार पैदा करता है।

जितनी व्यापार में, उतनी ही रक्षा क्षेत्र में संबंध बढ़ा है। भारत अमेरिका के साथ किसी भी अन्य भागीदारों की अपेक्षा अधिक यूद्धाभ्यास करता है। रक्षा खरीद एक दशक से भी कम समय में लगभग शून्य से दस अरब डॉलर तक पहुँच गया है।

मारे सहयोग अपने शहरों और नागरिकों को आतंकवादियों से और हमारे महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को साइबर खतरों से सुरक्षित करता है। असैनिक परमाणु सहयोग, एक वास्तविकता है।

हमारे लोगों के बीच मजबूत संबंध हैं; और हमारे समाजों के बीच करीबी सांस्कृतिक संबंध हैं। सीरी हमें बताती है कि योग भारत की प्राचीन विरासत है और यूएस में 30 लाख से अधिक योगाभ्यासी है।

हमारे दोनों देशों को जोड़ने में तीन लाख भारतीय मूल के अमेरिकी भी एक विशेष और गतिशील सेतु हैं। आज, वे आपके सबसे अच्छे मुख्य कार्यकारी अधिकारी, शिक्षाविद, अंतरिक्ष यात्री, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, डॉक्टर और यहां तक कि वर्तनी चैंपियन हैं।

कार्य सूची लंबी और महत्वाकांक्षी है। इसमे मजबूत कृषि क्षेत्र सहित एक जीवंत ग्रामीण अर्थव्यवस्था; प्रत्येक सिर पर एक छत और सभी घरों को बिजली; हमारे लाखों युवाओं के लिए हुनर; 100 स्मार्ट शहरों का निर्माण; एक अरब के लिए एक ब्रॉड बैंड है, और हमारे गांवों को

डिजिटल वर्ल्ड से जोड़ना; और इक्कीसवीं सदी के लिए रेल, सड़क और बंदरगाह का बुनियादी ढांचा तैयार करना शामिल है।

ये सब सिर्फ आकांक्षाएं नहीं हैं; ये लक्ष्य हैं जिन्हें समयसीमा में प्राप्त करना है। और, इसे एक हल्के कार्बन फुट प्रिंट के साथ प्राप्त किया जाना है, नवीकरणीय ऊर्जा पर अधिक जोर देते हुए। भारत के हर क्षेत्र के तरक़्क़ी में, मैं अमेरिका को एक अपरिहार्य भागीदार के रूप में देखता हुँ।

इसमें कोई शक नहीं है कि इस रिश्ते को आगे बढ़ाने से, दोनों देशों को अधिक मात्रा में हासिल होगा। क्योंकि अमेरिका के कारोबार आर्थिक विकास के नए क्षेत्रों, अपने माल के लिए बाजार, कुशल संसाधनों का समुह और उत्पादन तथा निर्माण के लिए वैश्विक स्थानों को खोज रहा है तो भारत उनका आदर्श साझीदार हो सकता है।

भारत की मजबूत अर्थव्यवस्था और 7.6% की वार्षिक विकास दर, हमारे पारस्परिक समृद्धि के लिए नए अवसर पैदा कर रही है। भारत में परिवर्तनकारी अमेरिकी प्रौद्योगिकी और भारतीय कंपनियों द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका में बढ़ती निवेश दोनों का, हमारे नागरिकों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

आज, अपने वैश्विक अनुसंधान और विकास केन्द्रों के लिए, अमरीकी कंपनियों के लिए भारत पसंदीदा ठिकाना है। भारत से प्रशांत पार में पूर्व की ओर देखते हुए, हमारे दोनों देशों के नवाचार ताकत कैलिफोर्निया में साथ-साथ दिखाई पड़ते हैं।

यहाँ अमेरिका की अभिनव प्रतिभा और भारत की बौद्धिक रचनात्मकता भविष्य के नए उद्योगों को आकार देने के लिए काम कर रहे हैं। 21वीं सदी अपने साथ महान अवसर लाया है। लेकिन, इसके साथ कई चुनौतियां भी आती है।

परस्पर निर्भरता बढ़ती जा रही है। जबकि, दुनिया के कुछ भाग बढ़ती आर्थिक समृद्धि के द्वीप हैं, अन्य संघर्ष में फंस गए हैं।

एशिया में, एक सम्मत सुरक्षा संरचना का अभाव अनिश्चितता पैदा करता है। आतंकवाद के खतरे बढ़ रहे हैं, और साइबर तथा बाह्य अंतरिक्ष में नई चुनौतियां उभर रहे हैं।

ये दुनिया कई संक्रमणों और आर्थिक अवसरों; बढ़ती अनिश्चितताओं और राजनीतिक जटिलताओं; मौजूदा खतरों और नई चुनौतियों से भरी हुई है; हमारी संलग्नता निम्नलिखित उपायों को प्रोत्साहित करके अंतर पैदा कर सकती हैं:

- सहयोग, प्रभुत्व नहीं;
- संपर्क, अलगाव नहीं;
- विश्व के आमजन के लिए सम्मान;
- सम्मिलित करना, छोड़ना नहीं; और सबसे बढ़कर
- अंतर्राष्ट्रीय नियमों और मानदंडों का पालन।

भारत पहले से ही हिंद महासागर क्षेत्र में अपनी जिम्मेदारियों को संभाल रहा है।

एक मजबूत भारत-यूएस, अफ्रीका से एशिया और प्रशांत से हिंद महासागर तक शांति, समृद्धि और स्थिरता प्रदान कर सकता हैं।

यह वाणिज्य के लिए समुद्री मार्गों की सुरक्षा और समुद्र में नौवाहन की स्वतंत्रता भी सुनिश्चित कर सकता हैं।

एक शांतिपूर्ण, स्थिर और समृद्ध अफ़ग़ानिस्तान के पुनर्निर्माण के साझा उद्देश्य हमारी प्रतिबद्धता है।

आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई कई स्तरों पर लड़ा जाना है। और, सैन्य, खुफिया और कूटनीति के केवल परंपरागत साधन इस लड़ाई को जीतने के लिए सक्षम नहीं हैं।

आतंकवाद को अवैध घोषित किया जाना चाहिए। हमारी भागीदारी के विस्तार का लाभ सिर्फ देशों और क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है।

हम अकेले अथवा अपनी–अपनी क्षमताओं के संयोजन से, आपदा प्रभावित और जहाँ मानवीय राहत की जरूरत है सहित अन्य वैश्विक चुनौतियों का भी हम प्रतिकार कर रहे हैं।

हमारे तट से बहुत दूर, हमने यमन से हजारों भारतीयों, अमेरिकियों और अन्य लोगों को निकाला। हमारे देश के नजदीक होने के कारण, हम नेपाल में भूकंप के दौरान, मालदीव में पानी संकट के समय और अभी हाल ही में श्रीलंका में भूस्खलन के दौरान हम पहले मददकर्त्ता थे।

संयुक्त राष्ट्र की शांति बनाए रखने के मिशन के लिए हम सैनिकों के सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक हैं। भारत, और अमेरिका ने दुनिया के विभिन्न हिस्सों में भूख, गरीबी, बीमारियों और अशिक्षा से लड़ने में मदद करने के लिए विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार में अपनी ताकत को संयुक्त किया है।

हमारी भागीदारी की सफलता एशिया से अफ्रीका तक सीखने, सुरक्षा और विकास के लिए नए अवसरों को भी खोल रहा है।

पर्यावरण की सुरक्षा तथा पृथ्वी की देखभाल, एक सही दुनिया के लिए हमारे साझा दृष्टिकोण के केंद्रीय विंदु हैं। भारत में हमारे लिए, धरती माँ के साथ तारतम्य से रहना हमारे प्राचीन विश्वास का अंग है।

और, प्रकृति से केवल अत्यन्त जरूरी चीज ही लेना हमारी सभ्यता के लोकाचार का अंग है। इसलिए हमारी भागीदारी का उद्देश्य क्षमताओं के साथ जिम्मेदारियों को संतुलित करना है।

और, यह अक्षय ऊर्जा की उपलब्धता और उपयोग के नए तरीके बढ़ाने के लिए ध्यान देता है। हमारी अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन बनाने के पहल के लिए एक मजबूत अमेरिकी समर्थन ऐसा ही एक प्रयास है।

हम एक साथ काम सिर्फ अपने लिए ही नहीं ब्लकि पूरी दुनिया के एक बेहतर भविष्य के लिए कर रहे हैं। यह हमारे जी–20, पूर्व एशिया और जलवायु परिवर्तन शिखर सम्मेलन का भी लक्ष्य है।

क्योंकि हम एक नई यात्रा पर निकले हैं, और नए लक्ष्य की तलाश है, हम केवल नियमित मामलों पर ही ध्यान केंद्रित न करे बल्कि परिवर्तनकारी विचारों पर भी।

- केवल धन कमाने पर ही नहीं बल्कि समाज के लिए मूल्य निर्माण पर भी;

- केवल तत्कालिक लाभ पर ही नहीं बल्कि दीर्घकालिक लाभ पर भी;
- केवल सर्वोत्तम प्रथाओं का ही साझा नहीं बल्कि भागीदारी को आकार देने पर भी; तथा
- केवल हमारे लोगों के लिए उज्जवल भविष्य का निर्माण ही नहीं बल्कि और अधिक संगठित मानवीय और समृद्ध दुनिया के सेतु के लिए भी।

9.5.एफ. नई दिल्ली में आयोजित द्वितीय भारत-यूएस रणनीतिक और वाणिज्यिक संवाद (एस एंड सीडी) के दौरान उद्घाटन भाषण (30 अगस्त, 2016)

- भारत और अमेरिका ने नई दिल्ली में द्वितीय भारत-अमेरिकी सामरिक और वाणिज्यिक संवाद आयोजित किया। भारत की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और भारत के वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री निर्मला सीतारमण ने अमेरिकी राज्य सचिव जॉन एफ केरी और अमेरिकी वाणिज्य सचिव पेनी प्रित्जकर के साथ वार्ता की सह-अध्यक्षता की।
- दोनों पक्षों ने हाल के दिनों में द्विपक्षीय जुड़ाव के विस्तारित और मजबूत क्रम पर गहरी संतुष्टि व्यक्त की और आपसी समृद्धि, वैश्विक शांति और स्थिरता को आगे बढ़ाने के लिए अपनी साझा प्रतिबद्धता को दोहराया। दोनों पक्षों ने जून 2016 में वाशिंगटन, डीसी में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति बराक ओबामा के बीच हालिया शिखर सम्मेलन की बैठक में लिए गए निर्णयों के कार्यान्वयन में हुई प्रगति की समीक्षा की और द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत बनाने के लिए निरंतर सहभागिता के लिए तत्पर रहे।
- श्रीमती स्वराज ने कहा कि हम अपने बढ़ते रक्षा सहयोग को सह-उत्पादन और सह-विकास के अगले चरण पर ले जाना चाहते हैं। इसके लिए, हमें जून में प्रधान मंत्री के दौरे के दौरान अमेरिका के 'प्रमुख रक्षा साझेदार' के रूप में भारत के पदनाम से जुड़े लाभों को परिभाषित करने की आवश्यकता है। यह भारत और अमेरिका के बीच रक्षा उद्योग के सहयोग को बढ़ावा देगा और क्षेत्र में सुरक्षा के शुद्ध प्रदाता के रूप में भारत को वांछित भूमिका निभाने में मदद करेगा।
- दोनों पक्ष किसी अन्य देश के साथ, भारत और अमेरिका दोनों के लिए इस प्रकार का सबसे पहला, भारत-अमेरिका साइबर संबंध की रूपरेखा तैयार करने में सक्षम थे।
- उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका से अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन में एक सक्रिय सदस्य के रूप में शामिल होने का आग्रह किया, जो इसकी सफलता के लिए महत्वपूर्ण होगा।
- जॉन केरी ने कहा कि अमेरिका एक साइबर-रूपरेखा को अंतिम रूप देने के लिए तत्पर है, जो हम सभी को वैश्विक सुरक्षा के प्रति नए और उभरते खतरों से बचाने और उनकी पहचान करने में सक्षम होने में मदद करेगा।
- उन्होंने कहा कि सुरक्षा और आर्थिक क्षेत्रों में, हमारे पास ना केवल अपने दो-तरफा व्यापार, अपने निवेशों को आगे बढ़ाने और विस्तारित करने के अवसर हैं, बल्कि सुरक्षा की समस्याओं को भी हल करने के अवसर हैं। उन्होंने ऊर्जा क्षेत्र पर बल दिया जिसमें दोनों देशों के पास अपार अवसर हैं।
- दोनों पक्ष स्वच्छ ऊर्जा में अपने सहयोग को बढ़ाने के लिए और प्रधान मंत्री के दौरे के दौरान घोषित विभिन्न पहलों को जल्दी से संचालित करने के लिए सहमत हुए ताकि अमेरिका से भारत में इस क्षेत्र में निवेश को सुगम बनाया जा सके। हम अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की सफलता सुनिश्चित करने के लिए अमेरिका के साथ काम करने के लिए तत्पर हैं।
- दोनों एजेंडा 2030 के कार्यान्वयन पर अपने 17 सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के माध्यम से एक-साथ काम करने के लिए सहमत हुए।
- दोनों पक्षों ने हितों के निम्नलिखित क्षेत्रों पर चर्चा की: रणनीतिक, रक्षा और सुरक्षा, क्षेत्रीय परामर्श और वैश्विक मुद्दों, जलवायु, ऊर्जा और पर्यावरण, वाणिज्य, अर्थव्यवस्था, और विकास, नवाचार और उद्यमिता, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस, स्मार्ट सिटीज सहयोग, यात्रा, पर्यटन, और दोनों देशों के लोगों के

बीच संबंध, मानक सहयोग, परिवहन क्षेत्र में सहयोग, व्यापार नीति, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, शिक्षा और दोनों देश के लोगों के बीच संपर्क।

9.6 यूनाइटेड किंगडम

यूके की प्रधान मंत्री, थेरेसा मे ने नवंबर 2016 में भारत का दौरा किया। भारत और यूके ने एक संयुक्त बयान जारी किया और बौद्धिक संपदा के क्षेत्र में सहयोग और ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए। दोनों देशों ने व्यापार, शहरी विकास-स्मार्ट शहरों, रक्षा, ऊर्जा, जलवायु परिवर्तन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, आदि के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर चर्चा की। प्रधान मंत्री मे ने दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों को व्यापक बनाने में अपनी रुचि व्यक्त की।

9.6.ए. 07 नवंबर, 2016 को यूनाइटेड किंगडम के प्रधान मंत्री के भारत दौरे के दौरान भारत-यूके संयुक्त वक्तव्य (भारत-ब्रिटेन रणनीतिक साझेदारी एक नए सिरे से जुड़ाव की ओर अग्रसर: आगे के दशक के लिए दृष्टि)

- यह दौरा भारत-यूके की सामरिक साझेदारी को और मजबूत करने के लिए डिज़ाइन की गई थी, जो भविष्य के लिए एक साझा दृष्टिकोण द्वारा निर्देशित और द्विपक्षीय तथा वैश्विक जुड़ाव के एक ठोस और व्यापक रोडमैप द्वारा समर्थित है।
- दोनों नेताओं ने मित्रता के मजबूत बंधन को याद किया जो दोनों देशों के बीच मौजूद है तथा जो व्यापक राजनीतिक जुड़ाव, गहरे आर्थिक सहयोग और हमेशा बढ़ते वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग के माध्यम से झलकता है। दोनों राज्यों के लोगों के बीच एक जीवंत आपसी संबंध है जो ब्रिटेन में रहने वाले 1.5 मिलियन मजबूत भारतीय प्रवासियों द्वारा समर्थित है और 21 वीं सदी की प्रमुख वैश्विक चुनौतियों को संबोधित करने की दिशा में अग्रसर होने में बढ़ते अभिसरण द्वारा समर्थित है।
- पिछले साल प्रधानमंत्री मोदी की ब्रिटेन दौरे के दौरान, दोनों देशों ने यूके-इंडिया सामरिक साझेदारी के लिए एक साहसिक दृष्टिकोण स्थापित किया था। दोनों देश आज इस दृष्टि को यथार्थ, व्यावहारिक सहयोग के माध्यम से वास्तविकता में बदलने के लिए प्रतिबद्ध हैं जो दोनों देशों को वास्तविक लाभ पहुंचाता है।
- यूके, हमारे दोनों देशों द्वारा अपनाई जाने वाली साझा मूल्यों और एक स्थिर, नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली की हमारी साझा दृष्टि को पहचानते हुए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता के पक्ष में बोलने वाले प्रथम P5 अधिवक्ताओं में से एक था। हम आतंकवाद, कट्टरता, हिंसक उग्रवाद और साइबर सुरक्षा का मुकाबला करने सहित सहयोग को गहराने के लिए अपनी 2015 की रक्षा और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा साझेदारी की नींव पर अपने संबंधों का निर्माण करते हैं। हम संयुक्त रूप से रक्षा और सुरक्षा पर क्षेत्रों को निर्धारित करेंगे जो एक-साथ मिलकर इन्हें डिजाइन करने, बनाने, अभ्यास करने, प्रशिक्षण देने और सहयोग करने की हमारी भविष्य की महत्वाकांक्षाओं को स्पष्ट करते हैं। और हम एक अधिक सुरक्षित दुनिया के हमारे साझा लक्ष्य के अनुसरण में वैश्विक नीति सुरक्षा चुनौतियों की एक श्रृंखला में परामर्श और समन्वय करना जारी रखेंगे।

विकास, व्यापार और व्यापार को एक-साथ मिलकर प्रेरित करना

- दोनों प्रधानमंत्रियों ने यूके-भारत व्यापार संबंधों के महत्व को पहचाना एवं भारत और यूके के बीच फलते-फूलते व्यापारिक संबंधों का स्वागत किया। उन्होंने उल्लेख किया कि भारत ब्रिटेन में तीसरा सबसे बड़ा निवेशक था और विश्व में रोजगार उत्पन्न करने में दूसरे स्थान पर था जिसके

तहत भारतीय कंपनियों ने यूके में 110,000 से अधिक नौकरियां सृउत्पन्न की थी। यूके भारत में सबसे बड़ा जी-20 निवेशक है। दोनों प्रधानमंत्रियों ने द्विपक्षीय वित्तीय सहयोग के स्तर पर अपनी खुशी व्यक्त की और भारतीय और यूके के आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने में दोनों ओर से निवेश समुदाय की अधिक से अधिक भागीदारी का अनुरोध किया।

- दोनों प्रधानमंत्रियों ने कई क्षेत्रों-आईसीटी कंपनियों, महत्वपूर्ण इंजीनियरिंग और स्वास्थ्य संबंधी उत्पादों में यात्रा के संबंध में बड़ी संख्या में वाणिज्यिक सौदों का स्वागत किया।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने सरकार और व्यापार का एक-साथ मिलकर काम करने के महत्व को पहचाना। उन्होंने भारत-यूके सीईओ फोरम द्वारा दिए गए सुझावों का स्वागत किया, जिन्होंने दौरे के अवसर पर अपनी बैठक की थी। वे इस बात पर सहमत हुए कि दोनों सरकारें, सीईओ फोरम के साथ मिलकर यह समीक्षा करेंगी कि सरकारी संवादों के साथ-साथ फोरम किस तरह से आर्थिक और वाणिज्यिक संबंधों को बेहतर बना सकता है।
- उन्होंने सहमति व्यक्त की कि जब यूके यूरोपीय संघ को छोड़ देगा, वे दोनों देशों के बीच निकटतम संभव वाणिज्यिक और आर्थिक संबंध बनाने को प्राथमिकता बनाएंगे। इसके लिए, जेटको को रिपोर्ट करने वाला नव स्थापित संयुक्त कार्य समूह, हमारे व्यापारिक संबंधों पर विस्तार से चर्चा करेगा और प्रगति लाने में मदद करेगा।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने भारतीय बुनियादी ढांचे में निवेश के वित्तपोषण में यूके और भारत के बीच गहरी साझेदारी को गति देने पर सहमति व्यक्त की।
- जुलाई 2016 के बाद से लंदन में 1.1 बिलियन डॉलर (7,500 करोड़ भारतीय रुपए या £900 मिलियन) से अधिक मूल्य के बांड जारी किए गए हैं, जिसकी वजह से लंदन अपतटीय रुपये वित्तपोषण में एक अग्रणी वैश्विक केंद्र बन गया है। दोनों प्रधानमंत्रियों ने एचडीएफसी (3,000 करोड़ भारतीय रुपए या £366 मिलियन) और एनटीपीसी (2,000 करोड़ भारतीय रुपए या £244 मिलियन) द्वारा अग्रणी और अत्यधिक सफल बांड जारी करने की सराहना की, जो कि लंदन में भारतीय व्यवसायों के लिए बड़ी मात्रा में वित्त जुटाने का मार्ग प्रशस्त करेगा। उन्होंने लंदन के ब्रिटिश कोलंबिया के कनाडाई प्रांत में रुपये-मूल्यवर्ग के बांड जारी करने वाली पहली विदेशी उप-राष्ट्रीय संस्था द्वारा हाल ही में जारी किए गए बांड पर ध्यान दिया। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण [एनएचएआई] और भारतीय रेलवे वित्त निगम [आईआरएफसी] के अगले कुछ महीनों में रुपए-मूल्यवर्गीय बांड जारी करने के इरादे का स्वागत किया। वे लंदन की अन्य भारतीय संस्थाओं जैसे कि एनर्जी एफिशिएंसी सर्विसेज लिमिटेड और भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास एजेंसी द्वारा आने वाले हफ्तों में रुपये-मूल्य वाले बॉन्ड सहित ग्रीन बांड जारी करने की तैयारी के लिए भी तत्पर थे।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने एफटीएसई-एसबीआई इंडिया बॉन्ड्स इंडेक्स श्रृंखला बनाने के समझौते का भी स्वागत किया, जो भारत के बढ़ते कॉर्पोरेट बॉन्ड बाजार के विकास का सहायता करेगा। इसके बाद भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) और लंदन स्टॉक एक्सचेंज समूह के सूचकांक व्यापार एफटीएसई रसेल के बीच एक सफल सहयोग किया होगा।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने राष्ट्रीय निवेश और बुनियादी ढांचा कोष (एनआईआईएफ) के तहत भारत-ब्रिटेन उप-कोष स्थापित करने में हुई प्रगति से खुश थे। यह कोष, एनआईआईएफ की छत्र तले लंदन शहर के निजी क्षेत्र के निवेश का लाभ भारतीय बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए उठाएगा। यह उम्मीद की जाती है इससे आरम्भ में लगभग £500 मिलियन की रकम संचय होगी और भविष्य में और भी अधिक निवेश प्रवाह होने की संभावना है। दोनों सरकारें भारत-यूके सब-फंड में प्रत्येक £120 मिलियन का सुदृढ़ निवेश करने की तैयारी करेंगी किन्तु एक रूपरेखा के अधीन जो निवेशकों को अधिक से अधिक आकर्षित करेगा।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने स्वागत किया कि आर्थिक और वित्तीय एजेंडा को वित्त मंत्रियों द्वारा आगे ले जाया जाएगा जब वे 2017 की शुरुआत में आर्थिक और वित्तीय वार्ता के लिए बैठक बुलाएंगे।

उन्होंने उद्योग द्वारा संचालित भारत-ब्रिटेन वित्तीय भागीदारी के माध्यम से दो वित्तीय सेवा क्षेत्रों के बीच सफल सहयोग का स्वागत किया। आर्थिक और वित्तीय वार्ता के मौके पर आईयूकेएफपी पुनः बैठक करेगी। दोनों प्रधानमंत्रियों ने भारत में पहल के लिए सीडीसी समूह, ब्रिटेन की विकास वित्तीय संस्थान की सराहना की। उन्होंने भारत में सीडीसी के बढ़ते निवेश पोर्टफोलियो का उल्लेख किया। भारत सीडीसी के निवेश रणनीतियों का एक प्रमुख ध्यान केंद्रित बनना जारी रखेगा।

स्मार्ट सिटीज और शहरी विकास

- दोनों प्रधानमंत्रियों ने नवंबर 2015 में लंदन में सहमति व्यक्त की गई तीन शहर भागीदारी को याद किया और प्रगति को नोट किया। वे इसके आधार पर, अधिक सामरिक और महत्वाकांक्षी शहरी साझेदारी बनाने के लिए सहमत हुए, जो ऐसे स्मार्टर, अधिक समावेशी शहरों के निर्माण के लिए सरकारों, व्यापार, निवेशकों और शहरी विशेषज्ञों को एक साथ लाता है, जो भारत और ब्रिटेन में साझा समृद्धि, रोजगार और विकास को संचालित करता है। दोनों पक्ष निवेश बढ़ाने, अवसरों की पहचान करने और प्रगति में तेजी लाने के लिए अपनी साझेदारी को संचालित करेंगे। यूके सीडीसी, एनआईआईएफ, और यूके एक्सपोर्ट फाइनेंस जैसे तंत्र के माध्यम से निवेश को बढ़ावा देना चाहता है जो लंदन स्टॉक एक्सचेंज में निवेश किए गए रुपए बॉन्ड समेत वित्तीय बाजारों से उच्च वित्तपोषण का लाभ उठा सके। साझेदारी के हिस्से के रूप में, दोनों प्रधानमंत्रियों ने वाराणसी स्मार्ट सिटी विकास योजना के तहत वाराणसी सिटी रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास के लिए नई तकनीकी सहायता का स्वागत किया।

स्टार्ट-अप इंडिया

- प्रधान मंत्री मे ने घोषणा की कि यूके 75 स्टार्ट-अप उद्यमों में £160 मिलियन से अधिक का निवेश कर रहा है जो भारत में कई राज्यों में रोजगार पैदा करेगा और महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान करेगा। उन्होंने स्टार्ट-अप इंडिया वेंचर कैपिटल फंड के लिए अतिरिक्त £20 मिलियन देने की घोषणा की। इस निधि से 30 उद्यमों को सहायता मिलेगी और यूके वेंचर कैपिटल फंड्स सहित अन्य निवेशकों से अतिरिक्त £40 मिलियन पूंजी का लाभ मिलेगा।

ईज ऑफ डूइंग बिज़नस

- दोनों प्रधानमंत्रियों ने यूके और भारत के बीच ईज ऑफ डूइंग बिजनेस पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का स्वागत किया, जो विश्व बैंक की ईज ऑफ डूइंग बिजनेस रेटिंग में ऊपर चढ़ने में भारत के प्रयासों में सहायता करने के लिए यूके की विशेषज्ञता का दोहन करेगा।

बौद्धिक सम्पदा

- दोनों प्रधानमंत्रियों ने बौद्धिक संपदा पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का स्वागत किया, जो दोनों देशों में नवाचार, रचनात्मकता और आर्थिक विकास को बढ़ावा देगा।

ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन

- सुरक्षित, किफायती और टिकाऊ ऊर्जा की साझा रणनीतिक प्राथमिकता पर द्विपक्षीय सहयोग को अगले चरण तक आगे बढ़ाने के लिए, दोनों प्रधानमंत्रियों ने विकास साझेदारी के लिए वर्धित यूके-भारत ऊर्जा का उल्लेख किया और 2017 की शुरुआत में प्रथम भारत-यूके ऊर्जा शिखर सम्मेलन आयोजित करने के निर्णय का स्वागत किया।

- उन्होंने संयुक्त यूके-भारत नागरिक परमाणु शोध कार्यक्रम के चौथे चरण का भी स्वागत किया, जो परमाणु सुरक्षा को बढ़ाने, परमाणु प्रणालियों के लिए उन्नत सामग्री, अपशिष्ट प्रबंधन और भविष्य की नागरिक परमाणु ऊर्जा प्रणालियों में योगदान करता है।
- प्रधान मंत्री ने विश्व स्तर पर ऊर्जा की मांगों को पूरा करने और जलवायु परिवर्तन संबंधी चिंताओं को दूर करने हेतु सौर ऊर्जा के लिए अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन पर भारतीय नेतृत्व की सराहना की। उसने गठबंधन में शामिल होने के लिए यूके के आशय का संकेत दिया और फ्रेमवर्क समझौते को अंतिम रूप दिए जाने पर यूके चर्चाओं में संलग्न रहना जारी रखेगा। दोनों नेताओं ने 15 नवंबर 2016 को मारकेश में होने वाले सीओपी 22 के अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन के लिए अपने समर्थन का संकेत देने के लिए भावी सदस्य देशों से अनुरोध किया।

एक वैश्विक साझेदारी

- दोनों प्रधानमंत्रियों ने नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली द्वारा पिछले 70 वर्षों में हुए परिवर्तनकारी परिवर्तनों के प्रकाश में स्वयं को अनुकूलित और नवीनीकृत करने की आवश्यकता को दोहराया। प्रधानमंत्री मे ने भारत की स्थायी सदस्यता सहित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार लाने की यूके की प्रतिबद्धता को दोहराया और संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के भीतर भारत की भूमिका को बढ़ाने की पुष्टि की। दोनों प्रधानमंत्रियों ने अंतर्राष्ट्रीय शांति बनाए रखने की प्राथमिकता का उल्लेख किया, जहां भारत दूसरा सबसे बड़ा दल योगदानकर्ता है और ब्रिटेन दुनिया में 6 था सबसे बड़ी बजट योगदानकर्ता है।
- उन्होंने जी20 में सर्वाधिक निकटता के साथ समन्वय करने की प्रतिबद्धता ली, और लोकतंत्र और मौलिक स्वतंत्रता की प्रतिस्पर्धा में कॉमनवेल्थ द्वारा निभाई गई सकारात्मक भूमिका का स्वागत किया। भारत और यूनाइटेड किंगडम ने परमाणु निरस्त्रीकरण और अप्रसार को आगे बढ़ाने में अपनी मजबूत और साझा रुचि व्यक्त की। यूके ने मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था (एमटीसीआर) में भारत की संलग्नता का स्वागत किया, जो वैश्विक अप्रसार उद्देश्यों को मजबूत करेगा और परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) के साथ-साथ अन्य मुख्य निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाओं में भारत की सदस्यता के पक्ष में बोलना जारी रखता है।
- नवंबर 2015 में तीसरे देशों में सहयोग के लिए साझेदारी के आशय वक्तव्य पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद, दोनों प्रधानमंत्रियों ने अफ्रीका पर एक विशेष ध्यान देने के साथ इस साझेदारी को जारी रखने के लिए सहमति व्यक्त की। दोनों पक्ष विकास संबंधी सहयोग प्रदान करने के लिए अपने अनुभवों और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिए सहमत हुए।

आतंकवाद से लड़ना और वैश्विक सुरक्षा चुनौतियों के प्रति अनुक्रिया।

- प्रधान मंत्री मे ने सितम्बर के महीने में उरी में भारतीय सेना ब्रिगेड मुख्यालय पर हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की और पीड़ितों और उनके परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की। दोनों नेताओं ने दृढ़ता से पुष्टि की कि आतंकवाद मानवता के लिए एक गंभीर खतरा है। उन्होंने सभी रूपों और किस्मों के आतंकवाद से निपटने के लिए अपनी मजबूत प्रतिबद्धता दोहराई और बल दिया कि किसी भी आधार पर आतंक के कृत्यों को सही नहीं ठहराया जा सकता है और सहमत हुए कि आतंकवाद पर शून्य-सहिष्णुता होनी चाहिए।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने पुष्टि की कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई का उद्देश्य ना केवल आतंकवादियों, आतंकी संगठनों और नेटवर्कों को बाधित करना और उन्हें अपने अंजाम तक पहुंचाने का प्रयास होना चाहिए, बल्कि आतंकवाद को प्रोत्साहित, समर्थन और वित्त प्रदान करने वाले, आतंकवादियों और आतंकी समूहों को शरण देने वाले और उनका झूठा गुणगान करने वाले सभी लोगों की पहचान करके, उन्हें दोषी ठहरा कर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करना चाहिए। आतंकवादियों का

कोई महिमामंडन नहीं होना चाहिए और न ही अच्छे और बुरे आतंकवादियों के बीच अंतर करने का प्रयास किया जाना चाहिए। वे सहमत हुए कि दक्षिण एशिया को स्थिर, समृद्ध और आतंक से मुक्त होना चाहिए और सभी देशों से इस लक्ष्य की दिशा में काम करने का अनुरोध किया।

- नेताओं ने हाल ही में न्यूयॉर्क में आयोजित वैश्विक आतंकवाद निरोधी मंच में यूके द्वारा हिंसक चरमपंथ निवारण पर दिए गए आरम्भ संयुक्त वक्तव्य का स्वागत किया। दोनों नेताओं ने अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक संधि को अपनाने के माध्यम से मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद निरोधक कानूनी संरचना को मजबूत करने का भी अनुरोध किया। दोनों नेताओं ने मुंबई में नवंबर 2008 के आतंकवादी हमलों और 2016 के पठानकोट हमले के अपराधियों को सजा दिलाने के लिए पाकिस्तान से अनुरोध किया।

रक्षा साझेदारी बढ़ाना

- नवंबर 2015 में सहमत रक्षा और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा साझेदारी (डीईएसपी) के आधार पर, यूके और भारत रक्षा में अपनी रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने 'मेक इन इंडिया' ढांचे में यूके और भारतीय कंपनियों के बीच रक्षा विनिर्माण में सहयोग की क्षमता को पहचाना और इस तरह के सहयोग को प्रोत्साहित करने और इसे सुगम बनाने के लिए सहमत हुए। यूके निर्यात नियंत्रण को सरल बनाने और तेज करने और आपसी हित के क्षेत्रों में परियोजनाओं को सक्षम बनाने के लिए प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण का समर्थन करने के लिए इंडियन एमओडी और भारतीय रक्षा कंपनियों के साथ अपना जुड़ाव जारी रखेगा।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने 15-16 नवंबर 2016 को रक्षा सहयोग समूह (डीसीजी) को द्विपक्षीय रक्षा सहयोग एजेंडा को आगे बढ़ाने का कार्य सौंपा, और सहयोग, प्रशिक्षण, विषय विशेषज्ञों का आदान-प्रदान, अनुसन्धान एवं प्रौद्योगिकी जुड़ावों, रक्षा विनिर्माण सहित अन्य क्षेत्रों में कई गतिविधियों के माध्यम से क्षमता साझेदारी के लिए यूके के प्रस्तावों को आगे बढ़ाने का कार्य सौंपा।
- भारत में हॉक एडवांस्ड जेट ट्रेनर्स के निर्माण में एचएएल और बीएई सिस्टम्स के बीच चल रहे सहयोग को रक्षा विनिर्माण में एक साझेदारी के उदाहरण के रूप में पेश करते हुए, प्रधान मंत्रियों ने संयुक्त रूप से उत्पादों और सेवाओं को अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में बढ़ावा देने के लिए अभिनव दृष्टिकोण लागू करने की सहमति व्यक्त की।

साइबर सहयोग

- दोनों प्रधानमंत्रियों ने यूके-इंडिया साइबर संबंधों के रूपरेखा में प्रवेश करने की अपनी इच्छा की घोषणा की। प्रधानमंत्रियों ने साइबर सुरक्षा पर की गई प्रगति पर संतुष्टि व्यक्त की, जिसमें साइबर अपराध के साझा खतरे से निपटने के लिए नियमित सहयोग और मार्च 2016 में संबंधित कंप्यूटर सुरक्षा घटना प्रतिक्रिया टीमों के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करना शामिल है।

समुद्री स्वतंत्रता

- दोनों पक्षों ने 1982 के यूएन समुद्री कानून संधि (यूएनसीएलओएस) के आधार पर समुद्र और महासागरों के कानूनी व्यवस्था को बनाए रखने के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने राज्यों से यूएनसीएलओएस का सम्मान करने और महासागरों की शांति, सुव्यवस्था और सुरक्षा को प्रभावित करने वाली गतिविधियों से बचने का आग्रह किया।

अंतर्राष्ट्रीय मामले

- दोनों प्रधानमंत्रियों ने एक वैश्विक खिलाड़ी के रूप में भारत की बढ़ती भूमिका को पहचाना। इस संदर्भ में, उन्होंने दक्षिण एशिया क्षेत्र में शांति और स्थिरता के निर्माण में भारत के रचनात्मक योगदान को पहचाना, जिसमें अफ़ग़ानिस्तान में इसका विस्तृत विकास सहयोग भी शामिल है। इस संदर्भ में, उन्होंने अफ़ग़ानिस्तान में आतंकवाद के बढ़ते खतरे के खिलाफ अफगान सुरक्षा बलों के प्रयासों के प्रति समर्थन व्यक्त किया और अफ़ग़ानिस्तान की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उनके प्रयासों का दृढ़ता से समर्थन किया। यूके पक्ष ने 4 दिसंबर 2016 को अमृतसर में आयोजित हार्ट ऑफ एशिया इस्तांबुल प्रक्रिया की छठी मंत्रिस्तरीय बैठक के लिए भारत को अपना समर्थन दिया।
- दोनों राष्ट्र मालदीव के लोकतांत्रिक संस्थानों को मजबूत करने के लिए मालदीव के साथ अपना जुड़ाव जारी रखने पर सहमत हुए। प्रधानमंत्रियों ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद के प्रस्ताव 30/1 के अनुरूप श्रीलंका द्वारा की गई प्रगति पर ध्यान दिया और इस बात पर सहमति व्यक्त की कि और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने इसे हासिल करने के लिए श्रीलंका सरकार के साथ मिलकर काम करना जारी रखने की प्रतिबद्धता ली।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में इराक के लोगों और सरकार को अपने समर्थन की पुष्टि की और मोसुल और अन्य शहरों को आतंकवादी संगठन आईएसआईएस के नियंत्रण से मुक्त कराने के लिए इराकी द्वारा संचालित ऑपरेशन का स्वागत किया।

प्रत्यर्पण, वापसी और गतिशीलता

- दोनों प्रधानमंत्रियों ने आपसी कानूनी सहायता संधि के तहत सहयोग बढ़ाने के लिए अपनी दृढ़ प्रतिबद्धता की पुष्टि की। दोनों नेताओं ने इस बात पर सहमति जताई कि भगोड़े और अपराधियों को कानून से बचने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। उन्होंने दोनों पक्षों से लंबित प्रत्यर्पण अनुरोधों को सुगम बनाने के लिए अपनी दृढ़ प्रतिबद्धता व्यक्त की। इस संदर्भ में, उन्होंने निर्देश दिया कि दोनों देशों के प्रत्यर्पण मामलों से निपटने वाले अधिकारियों को प्रत्येक देश की कानूनी प्रक्रियाओं और आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझने के लिए जल्द से जल्द मिलना चाहिए; सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करना, और देरी होने के कारणों का पता लगाना और लंबित अनुरोधों को पूरा करने में तेजी लाना चाहिए। उन्होंने यह भी सहमति व्यक्त की कि सभी लंबित मामलों को तेजी से हल करने के लिए भारत-यूके के उचित अधिकारियों के बीच नियमित रूप से वार्ता उपयोगी साबित होगी।
- प्रधान मंत्री मोदी ने प्रधान मंत्री मे की घोषणा का स्वागत किया कि यूके भारतीय आगंतुकों के लिए व्यापार यात्रा में सुधार के लिए नई सेवाओं की पेशकश करेगा। भारत पंजीकृत यात्री योजना की पेशकश करने वाला पहला वीजा देश बन जाएगा, जिसके अधीन व्यापारिक यात्रियों को ब्रिटेन की सीमा पर शीघ्र निकास प्रदान किया जाएगा। भारत सरकार दुनिया की पहली सरकार बन जाएगी जिसे ग्रेट क्लब, बीस्पोक वीजा और आव्रजन सेवा के लिए व्यापार अधिकारियों को नामित करने के लिए आमंत्रित किया जाएगा।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने 1.5 मिलियन मजबूत भारतीय प्रवासियों का ब्रिटिश समाज के प्रति बहुमूल्य योगदान और द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने में उनकी भूमिका को स्वीकार किया। उन्होंने माना कि गतिशीलता दोनों देशों के बीच लोगों के बीच संबंधों को मजबूत कर सकती है। इसके लिए, दोनों पक्षों ने सहमति व्यक्त की कि वीजा व्यवस्था छात्रों, व्यवसायों, पेशेवरों, राजनयिकों और अधिकारियों और अन्य यात्रियों के लिए यथासंभव सरल और कुशल होने की आवश्यकता है, जिसमें दोनों देशों के बीच कुशल कर्मियों की अल्पकालिक गतिशीलता को सुगम बनाना शामिल है। दोनों नेताओं ने उल्लेख किया कि यूके भारतीय छात्रों के लिए एक लोकप्रिय गंतव्य बना रहा है और ये कि छात्र द्विपक्षीय जुड़ाव के सभी क्षेत्रों में भारत-यूके साझेदारी को और अधिक गहरा कर रहे हैं। प्रधान मंत्री मे ने कहा कि यूके की मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थानों में पढ़ने वाले अंतर्राष्ट्रीय छात्रों की कुल संख्या की कोई सीमा नहीं रखी गई है, भारतीय छात्रों का स्वागत किया जाना जारी

रहेगा और यूके के गृह सचिव ने हाल ही में यूके छात्रों की वीजा व्यवस्था में बदलाव के बारे में परामर्श देने के अपने आशय की घोषणा की थी।

- दोनों प्रधानमंत्रियों ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि सरल और प्रभावी वीजा प्रणाली सुनिश्चित करना सीमा और आव्रजन प्रणालियों की अखंडता की रक्षा में सहयोग करने पर सख्त निर्भर करता है। इसमें लोगों का अपने संबंधित देशों में समय पर वापसी सुनिश्चित करना शामिल है, जैसा कि संबंधित राष्ट्रीय कानूनों अनुसार आवश्यक है। दोनों देशों ने राष्ट्रीयता की पुष्टि करने और यात्रा दस्तावेज जारी करने के लिए एक त्वरित प्रक्रिया को लागू करके इस क्षेत्र में सहयोग को मजबूत करने पर सहमति व्यक्त की। दोनों प्रधानमंत्रियों ने गृह मामलों के मुद्दों पर यूके-भारत वरिष्ठ संवाद शुरू करने की घोषणा की, जो कि प्रतिवर्ष द्विवर्षीय होगी और इसकी अध्यक्षता स्थायी सचिव / सचिव स्तर पर की जाएगी। प्रधानमंत्रियों ने अपेक्षा की कि इस संवाद से आपसी चिंता के प्रमुख मुद्दों पर प्रगति होगी, जिसमें वीजा प्रणाली को सरल और अधिक कुशल बनाने के अवसर एवं सीमा और आव्रजन प्रणालियों की अखंडता में सुधार के लिए कदम उठाना शामिल हैं।

संस्कृति और शिक्षा का उत्सव और कौशल को बढ़ावा देना

- दोनों प्रधानमंत्रियों ने उल्लेख किया कि 2016 भारत-यूके की शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार का वर्ष है और यूके-इंडिया शिक्षा अनुसन्धान पहल (यूकेआईईआरआई) 2021 में अतिरिक्त (£20 मिलियन) निवेश का स्वागत करते हुए 2017 में 50 नई साझेदारियां बनाने का उल्लेख किया। दोनों प्रधानमंत्रियों ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित जीआईएएन कार्यक्रम के तहत भारत आने वाले पहले 35 यूके संकायों का स्वागत किया और यूके के 40 विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने के लिए भारतीय छात्रों को 198 नई महान छात्रवृत्तियां प्रदान करने की बात कही। दोनों नेताओं ने जेनरेशन यूके-इंडिया कार्यक्रम के तहत टीसीएस प्रायोजित यूके इंटर्न्स के पहले बैच का स्वागत किया। दोनों प्रधान मंत्री 2017 को भारत-यूके संस्कृति वर्ष के रूप में मनाने और विनियोजित गतिविधियों और कार्यक्रमों का समर्थन करने की अपेक्षा की, उदाहरण के लिए लंदन में विज्ञान संग्रहालय में भारतीय विज्ञान की प्रदर्शनी और शेक्सपियर के 400 वर्षों पर प्रकाश डालना। दोनों प्रधानमंत्रियों ने यूके और भारतीय विश्वविद्यालयों की साझेदारी में विकसित भारतीय 'स्वयं मूक' मंच पर नई शिक्षण सामग्री का स्वागत किया।
- यूके पुणे की एक ऑटोमोबाइल क्षेत्र के लिए सेंटर फॉर एक्सीलेंस के माध्यम से स्किल इंडिया मिशन में सहायता कर रहा है। प्रधान मंत्री मे ने भारत के स्किल इंडिया मिशन में सहायता के लिए अतिरिक्त £12 मिलियन देने की नई प्रतिबद्धता की घोषणा की। यूके की ओर से प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के माध्यम से प्रशिक्षुता और प्रमाणन सहित 5 क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण मानकों की सुविधा मिलेगी।

बेहतर भविष्य के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी का दोहन

- दोनों प्रधानमंत्रियों ने उल्लेख किया कि भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी कार्यक्रमों में घातीय वृद्धि आगे द्विपक्षीय सहयोग के विस्तार की अपार संभावनाएं प्रदान करता है। भारत-यूके संयुक्त वित्तपोषण अब £200 मिलियन से अधिक है और इससे अर्थव्यवस्थाओं और समाजों को कई गुना अधिक लाभ मिला है। उन्होंने £80 मिलियन की नई अनुसन्धान साझेदारी की घोषणा की, जिसमें £13 मिलियन के संयुक्त निवेश के साथ एंटी-माइक्रोबियल प्रतिरोध (एएमआर) पर एक नए संयुक्त सामरिक समूह का गठन शामिल है। प्रधानमंत्रियों ने माना कि एंटी-माइक्रोबियल प्रतिरोध (एएमआर) एक वैश्विक चुनौती है, और इस वर्ष की शुरुआत में जी20 और यूएनजीए में की गई प्रतिबद्धताओं को मान्यता दी। थेम्स-गंगा साझेदारी के आधार पर, दोनों प्रधानमंत्रियों ने संयुक्त जलीय अनुसंधान कार्यक्रम पर नई पहल का स्वागत किया और अपशिष्ट जल का पुनः उपयोग

करने तथा औद्योगिक अपशिष्टों की सफाई और प्रसंस्करण के लिए अभिनव जैव प्रौद्योगिकी तथा स्वच्छ भारत कार्यक्रम के लिए मूल्य संवर्धन करने का स्वागत किया।

- नवीकरणीय ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन से निपटने के क्षेत्र में बढ़ती साझेदारी को देखते हुए, दोनों प्रधानमंत्रियों ने £10 मिलियन के संयुक्त निवेश के साथ सौर ऊर्जा भंडारण और एकीकरण पर ध्यान केन्द्रित करते हुए भारत-यूके स्वच्छ ऊर्जा अनुसंधान एवं विकास केंद्र के शुभारंभ और ऊर्जा कुशल निर्माण सामग्री का स्वागत किया। ये दोनों हरित पहल कार्बन फुटप्रिंट को कम करने और स्मार्ट शहरों के कार्यक्रम में योगदान करने में मदद करेंगी।
- कृषि में हालिया सफल सहयोगों के आधार पर, दोनों पक्षों ने किसानों को लाभान्वित करने के लिए कटाई के बाद होने वाले नुकसानों को घटाने के लिए परियोजनाओं की घोषणा की। स्वास्थ्य सेवा में हालिया सफल सहयोगों के आधार पर, दोनों पक्षों ने कम आय वाली परिस्थिति में महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य प्रभावों पर संयुक्त अनुसंधान के दूसरे चरण के शुभारंभ की घोषणा की।
- दोनों नेताओं ने जैव प्रौद्योगिकी में चल रहे सहयोग की सराहना की। दोनों पक्ष एक ऐसे जैव-बैंक के विकास के लिए भारत के प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए तत्पर थे जो यूके के जैव-बैंक की वैज्ञानिक विशेषज्ञता पर आधारित होगा।

9.6.बी. यूनाइटेड किंगडम के प्रधान मंत्री के भारत दौरे के दौरान हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापनों की सूची (07 नवंबर, 2016)

1. भारत सरकार और यूके सरकार के बीच ईज ऑफ डूइंग बिजनेस पर समझौता ज्ञापन। इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य यूके सरकार के विभिन्न विभागों की विशेषज्ञता प्राप्त करना है, जिसके कारण यूके की ईज ऑफ डूइंग बिजनेस पहल, भारत सरकार के संबंधित विभागों और एजेंसियों के लिए उपलब्ध हो सकी है।
2. बौद्धिक संपदा के क्षेत्र में सहयोग के लिए औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत और यूनाइटेड किंगडम के बौद्धिक संपदा कार्यालय (यूके आईपीओ) के बीच समझौता ज्ञापन।
3. यह एमओयू आईपी और संबंधित सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं के क्षेत्र में भारत और यूके के बौद्धिक संपदा कार्यालयों के बीच सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए एक तंत्र स्थापित करने की परिकल्पना करता है।

10 भारत और बहुपक्षीय संस्थाएं

10.1. भारत और ब्रिक्स शिखर सम्मेलन

15 से 16 अक्टूबर 2016 तक गोवा में आठवां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया था। शिखर सम्मेलन गोवा घोषणा के अनुकूलन के साथ संपन्न हुआ। दो दिवसीय शिखर सम्मेलन में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, ब्राज़ील के राष्ट्रपति मिशेल टेमर और दक्षिण अफ्रीकी राष्ट्रपति जैकब जुमा ने भाग लिया। शिखर सम्मेलन का विषय "अनुक्रियाशील, समावेशी और सामूहिक समाधान तलाशना" था।

ब्रिक्स देशों ने गोवा घोषणा को अपनाया, जो ब्रिक्स के अंतर्गत और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर हमारे सहयोग और समन्वय के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। ब्रिक्स शिखर सम्मेलन गोवा घोषणा की मुख्य बिन्दुएँ हैं:

- ब्रिक्स राष्ट्रों ने न्यू डेवलपमेंट बैंक (एनडीबी) और आकस्मिक रिजर्व व्यवस्था (सीआरए) के संचालन, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना की मजबूती; और एनडीबी के अफ्रीका क्षेत्रीय केंद्र (एआरसी) के संचालन में प्रगति को संतोष के साथ नोट किया।
- न्यू डेवलपमेंट बैंक (एनडीबी) द्वारा प्रथम ऋणों की मंजूरी की सराहना की, विशेष रूप से ब्रिक्स देशों में अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं में; और आरएमबी में ग्रीन बांड का पहला सेट जारी करने की सराहना की।
- सुरक्षा परिषद सहित संयुक्त राष्ट्र में व्यापक सुधार की आवश्यकता की पुष्टि की।
- एजेंडा 2063 के अधीन अफ्रीका के विकास के लिए अफ्रीकी संघ (एयू) की दृष्टि, आकांक्षाओं, लक्ष्यों और प्राथमिकताओं का स्वागत किया, जो सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के अनुपूरक है।
- 25 सितंबर 2015 को आयोजित सतत विकास पर संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन के दौरान सतत विकास और इसके सतत विकास लक्ष्यों के लिए ऐतिहासिक 2030 एजेंडा को अपनाने और विकास के लिए वित्त पोषण पर तीसरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में अदीस अबाबा एक्शन एजेंडा का स्वागत किया।
- विकसित देशों से अनुरोध किया कि वे विकासशील देशों को आधिकारिक विकास सहायता प्रदान करने के लिए सकल राष्ट्रीय आय प्रतिबद्धता का 0.7% प्राप्त करने के लिए अपनी आधिकारिक विकास सहायता प्रतिबद्धताओं का सम्मान करें। एसडीजी के कार्यान्वयन में वे प्रतिबद्धताएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
- एक मजबूत, कोटा आधारित और पर्याप्त रूप से संसाधित आईएमएफ के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्टि की।
- उन्नत यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं से अपनी प्रतिबद्धता को पूरा करने का अनुरोध किया ताकि आईएमएफ के कार्यकारी बोर्ड में दो ओहदे सुपुर्द किए जा सके।
- दोहा विकास के शेष एजेंडा (डीडीए) के मुद्दों पर प्राथमिकता के रूप में वार्ता को आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया।
- नई दिल्ली में पहला ब्रिक्स व्यापार मेला आयोजित करने के भारत की पहल का स्वागत किया, जो ब्रिक्स आर्थिक साझेदारी के लिए रणनीति के कार्यान्वयन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
- वैश्विक व्यवस्था संरचना को अधिक मजबूत बनाने के लिए, बाजार उन्मुख सिद्धांतों के आधार पर विशेषज्ञों द्वारा एक स्वतंत्र ब्रिक्स रेटिंग एजेंसी स्थापित करने की संभावना का स्वागत किया।
- यूएनसीओपीयूओएस वैज्ञानिक और तकनीकी उप-समिति कार्य समूह द्वारा बाहरी अंतरिक्ष गतिविधियों की दीर्घकालिक स्थिरता पर लिए गए हालिया निर्णयों का स्वागत किया ताकि संवादों को संपन्न किया जा सके और 2018 तक बाहरी अंतरिक्ष गतिविधियों की दीर्घकालिक स्थिरता के सम्पूर्ण दिशानिर्देशों पर सर्वसम्मति प्राप्त की जा सके।
- 2018 में एक सम्मेलन आयोजित करने के लिए भारत के प्रस्ताव का स्वागत किया जिसका उद्देश्य डब्लूएमडी-टेररिज्म नेक्सस की चुनौती का सामना करने में अंतर्राष्ट्रीय संकल्प को मजबूत बनाना होगा।
- संयुक्त राष्ट्र महासभा में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक संधि (सीसीआईटी) को अपनाने के लिए सभी राष्ट्रों को बिना किसी देरी के एक-साथ मिलकर काम करने का अनुरोध किया।
- पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान पर एक ब्रिक्स उच्च स्तरीय बैठक आयोजित करने के लिए सहमत हुए।
- ब्रिक्स नेटवर्क विश्वविद्यालय (ब्रिक्सएनयू) के साथ-साथ ब्रिक्स विश्वविद्यालय लीग (ब्रिक्सयूएल) की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया, जो 2017 में अपने कार्यक्रम शुरू करेंगे।

- ज्ञान और अनुभवों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करने के लिए ब्रिक्स राजनयिक अकादमियों के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जाने का स्वागत किया।
- ब्रिक्स वैश्विक अनुसन्धान उन्नत अवसंरचना नेटवर्क (ब्रिक्स-ग्रेन) को सुदृढ़ बनाने के लिए अनुसन्धान अवसंरचनाओं और मेगा-साइंस पर ब्रिक्स कार्य समूह की स्थापना का स्वागत किया।
- ब्रिक्स कृषि अनुसंधान मंच की स्थापना के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जाने का स्वागत किया।
- भारत, दक्षिण अफ्रीका, ब्राज़ील और रूस ने 2017 में नौवां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन आयोजित करने के चीन के प्रस्ताव के लिए चीन की सराहना की और इसके लिए अपना पूर्ण समर्थन दिया।

भारत की ब्रिक्स अध्यक्षता के दौरान अपनाए गए कुछ मुख्य पहल

- ब्रिक्स कृषि अनुसंधान मंच
- ब्रिक्स रेलवे अनुसंधान नेटवर्क
- ब्रिक्स खेल परिषद
- ब्रिक्स रेटिंग एजेंसी
- ब्रिक्स आर्थिक अनुसंधान और विश्लेषण संस्थान
- पर्यावरण सहयोग पर समझौता ज्ञापन
- ब्रिक्स कस्टम सहयोग समिति पर विनियम
- ब्रिक्स देशों की राजनयिक अकादमियों के बीच सहयोग पर समझौता ज्ञापन
- ब्रिक्स डेवलपमेंट बैंकों और एनडीबी के बीच सहयोग पर समझौता ज्ञापन
- ब्रिक्स महिला सांसद मंच
- ब्रिक्स अंडर-17 फुटबॉल टूर्नामेंट
- ब्रिक्स व्यापार मेला
- ब्रिक्स फिल्म समारोह
- ब्रिक्स पर्यटन सम्मेलन
- ब्रिक्स डिजिटल कॉन्क्लेव
- ब्रिक्स कल्याण मंच
- ब्रिक्स मैत्री शहर कॉन्क्लेव
- ब्रिक्स स्मार्ट सिटीज़ वर्कशॉप
- तृतीय ब्रिक्स शहरीकरण मंच
- ब्रिक्स स्थानीय निकाय सम्मेलन
- ब्रिक्स हस्तशिल्प कारीगर विनिमय कार्यक्रम
- ब्रिक्स युवा वैज्ञानिक कॉन्क्लेव
- ब्रिक्स युवा वैज्ञानिकों के लिए अभिनव विचार पुरस्कार
- ब्रिक्स आर्थिक अनुसंधान पुरस्कार

➢ **ब्रिक्स देशों द्वारा हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापनों की सूची, 16 अक्टूबर, 2016**

1. ब्रिक्स कृषि अनुसंधान मंच की स्थापना के लिए समझौता ज्ञापन
2. राजनयिक अकादमियों के बीच आपसी सहयोग पर समझौता ज्ञापन

3. ब्रिक्स कस्टम सहयोग समिति पर विनियम

16 अक्टूबर, 2016 को आयोजित ब्रिक्स नेताओं के पूर्ण अधिवेशन में, प्रधान मंत्री मोदी ने निम्नलिखित मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाश डाला:

- उनकी साझेदारी का दायरा कृषि से लेकर उद्योग और नवाचार तक; पर्यटन से लेकर व्यापार तक; पर्यावरण से लेकर ऊर्जा तक; फुटबॉल से लेकर फिल्मों तक; स्मार्ट शहरों से लेकर कौशल विकास तक; और हमारे समाजों को सुरक्षित करने के लिए भ्रष्टाचार से लेकर धन शोधन से लड़ाई तक फैला है।
- इस साल, वे ब्रिक्स को भारतीय शहरों और प्रांतों तक ले गए हैं और इसे सीधा अपने लोगों से जोड़ा है जो जीवन के विभिन्न चरणों से आते हैं।
- एजेंडा 2030, पेरिस जलवायु समझौते, और विकास के वित्तपोषण के लिए अदीस अबाबा एक्शन एजेंडा के साथ उनका सहयोग उद्देश्यपूर्ण और उत्पादक रहा है। और, वैश्विक व्यवस्था संरचना में बदलाव को आगे बढ़ाने में वे सबसे आगे हैं।
- ब्रिक्स में संस्था निर्माण की प्रक्रिया को एक फोकस क्षेत्र बना रहना चाहिए। वे ब्रिक्स क्रेडिट रेटिंग एजेंसी के विचार को वास्तविकता में बदलने के लिए तत्पर हैं।
- उन्हें ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार और निवेश जुड़ाव की मात्रा और गुणवत्ता को बदलने की जरूरत है। 2015 में, इंट्रा-ब्रिक्स व्यापार लगभग 250 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। उन्हें 2020 तक इस संख्या को पांच सौ बिलियन अमेरिकी डॉलर करने का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए।
- नई दिल्ली में हाल ही संपन्न ब्रिक्स व्यापार मेला और प्रदर्शनी को व्यापारिक आदान-प्रदान का एक नियमित मंच बनना चाहिए।
- भारत ने डब्ल्यूटीओ को सेवाओं के लिए व्यापार सुविधा समझौते का एक प्रारूप तैयार किया है। इस प्रस्ताव को ब्रिक्स की ओर से कड़ा समर्थन मिलना उनके सामूहिक आर्थिक हित में होगा।
- भारत की अध्यक्षता में, डिजिटल प्रौद्योगिकी, स्मार्ट-शहरों, शहरीकरण और शहरों के बीच सहयोग पर बल दिया गया है।
- आतंकवाद हमारे विकास और आर्थिक समृद्धि पर एक काले साए की तरह है। इसलिए, आतंकवाद के प्रति उनकी प्रतिक्रिया व्यापक से कम नहीं होनी चाहिए। आतंकवादी व्यक्तियों और संगठनों के लिए चुनिंदा दृष्टिकोण न केवल निरर्थक होंगे, बल्कि प्रति-उत्पादक भी होंगे।
- उन्हें अपने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों के बीच सुरक्षा सहयोग को गहरा बनाने की आवश्यकता है। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक संधि के मसौदे को जल्द अपनाना इस खतरे से लड़ने के संकल्प की अभिव्यक्ति होगी।
- लोगों-से-लोगों का फलता-फूलता आदान-प्रदान ब्रिक्स की जीवनदायिनी है। ब्रिक्स फिल्म फेस्टिवल, व्यापार मेला, पर्यटन सम्मेलन, खेल परिषद, फुटबॉल टूर्नामेंट और अन्य संबंधित गतिविधियों से लाखों युवा हितधारक बनेंगे जो अंततः हमारी साझेदारी को आगे बढ़ाएंगे।

10.2 ब्रिक्स-बिमस्टेक आउटरीच

साथी विकासशील और उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं के साथ समझ और जुड़ाव बढ़ाने के लिए, बिमस्टेक सदस्य देशों के नेताओं के साथ ब्रिक्स नेताओं का एक आउटरीच शिखर सम्मेलन – बांग्लादेश, भूटान, भारत, म्यांमार, नेपाल, श्रीलंका और थाईलैंड को शामिल करते हुए बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी की पहल 17 अक्टूबर 2016 को आयोजित की गई थी। बांग्लादेश, भूटान, म्यांमार, नेपाल, श्रीलंका और थाईलैंड के राष्ट्राध्यक्षों, शासनाध्यक्षों और नेतागण विशेष अतिथि के रूप में और साथ ही भारत के नेता एक-साथ गोवा में इकट्ठा हुए थे। बैठक ने बिमस्टेक देशों के साथ अपनी मित्रता को नवीनीकृत करने और शांति, विकास, लोकतंत्र और

समृद्धि के अपने साझा लक्ष्यों को आगे बढ़ाते हुए, बिमस्टेक देशों के साथ-साथ व्यापार और वाणिज्यिक संबंधों के विस्तार एवं ब्रिक्स और बिमस्टेक देशों के बीच निवेश सहयोग बढ़ाने की संभावनाओं को संयुक्त रूप से तलाशने का एक अवसर प्रदान किया।

16 अक्टूबर, 2016 को ब्रिक्स-बिमस्टेक आउटरीच शिखर सम्मलेन के पूर्ण अधिवेशन में प्रधान मंत्री के स्वागत भाषण की कुछ मुख्य बिन्दुएँ

पहली ब्रिक्स-बिमस्टेक आउटरीच समिट में सभी का स्वागत करते हुए प्रधान मंत्री मोदी ने कहा कि विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में स्थित ब्रिक्स और बिमस्टेक एक-साथ दो तिहाई मानवता का प्रतिनिधित्व करते हैं और एक आम दृष्टि और शांति, स्थिरता और विकास के प्रति आम प्रतिबद्धता से जुड़े हुए हैं।

हमारे पास ढेर सारे आर्थिक अवसर मौजूद हैं। 1.5 बिलियन लोगों और 2.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के संयुक्त सकल घरेलू उत्पाद के साथ, बिमस्टेक के देशों ने विकास, विकास, वाणिज्य और प्रौद्योगिकी के लिए आकांक्षाएं साझा की हैं।

ब्रिक्स उभरती अर्थव्यवस्थाओं, जी-20 के सदस्य देशों और सुरक्षा परिषद के दो स्थायी सदस्यों का प्रतिनिधित्व करता है। इसका बिमस्टेक देशों के साथ संयोजन स्थानीय व वैश्विक गतिशील विकास और सम्पन्नता को बढ़ाएगा।

ब्रिक्स और बिमस्टेक के उद्देश्यों व प्राथमिकताओं का अभिसरण आर्थिक व विकासवादी साझेदारी का ढांचा बनाने; उर्जा, कृषि, प्रोद्योगिकी, मत्स्य पालन और सांस्कृतिक गठबंधनों का स्वरुप बनाने; व्यापार, निवेश और वाणिज्यिक साझेदारी की संरचना; और आतंकवाद व राष्ट्र-पार अपराधों से लड़ने के संसाधन जुटाने में एक बेहतरीन अवसर प्रदान करेगा।

वाणिज्य, संपर्कता, संस्कृति, सुरक्षा और आपदा प्रबंधन के क्षेत्र सहियोग की संभावनाओं के आशाजनक क्षेत्र हैं।

ब्रिक्स का द न्यू डेवलपमेंट बैंक ब्रिक्स-बिमस्टेक सहयोग का एक मार्ग हो सकता है। बिमस्टेक का संपर्कता पर ख़ास ध्यान रहा है। बिमस्टेक के अंतर्गत कई संपर्क योजनायें चल रही हैं। इन योजनाओं को ब्रिक्स देशों की क्षमताओं से फायदा मिल सकता है।

डिजिटल संपर्कता बहुत उपयोगी है। यह हमारी भौतिक दूरी पाट सकती है और क्षेत्रों से परे समुदायों को जोड़ सकती है।

पर्यटन, शिक्षा, संचार, छात्रवृति के जरिये लोगों-से-लोगों का विनिमय करना दीर्घावधि लाभ है।

आतंकवाद, उग्रवाद और राष्ट्र-पार अपराध सभी सदस्यों के लिए बड़े खतरे हैं। एक को छोड़ कर, सभी दक्षिण एशियाई और बिमस्टेक देश शांति, विकास और अपने देशवासियों की आर्थिक सम्पन्नता के पथ पर अग्रसर हैं। दुर्भाग्यवश, भारत का यह पड़ोसी देश आतंकवाद के अँधेरे का अंगीकरण किये है और उसे फैला रहा है।

अब राज्य प्रायोजित आतंकवाद की निंदा मात्र करें, उसका समय बीत चुका है। इसलिए ब्रिक्स और बिमस्टेक देशों को अपने समाज को आतंकी अपराधियों से बचाने के लिए एक व्यापक अनुक्रिया तैयार रखने की जरुरत है।

बिमस्टेक क्षेत्र चक्रवात, बाढ़, सुनामी, और भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं के प्रवृत्त है। पर्यावरण संरक्षण व आपदा प्रबंधन वह छेत्र हैं जिनमे ब्रिक्स बिमस्टेक के साथ मिल कर काम कर सकता है।

इन सम्बंधित मुद्दों के लिए हमें संयुक्त सोच व प्रयास चाहिए। ब्रिक्स और बिमस्टेक के बीच सहकारिता और सहयोग की भावना बदलाव का एक प्रभावशाली कारक बन सकता है।

17 अक्टूबर 2016 को प्रस्तुत बिमस्टेक नेताओं के रिट्रीट 2016 के परिणाम दस्तावेज में उल्लिखित कुछ मुख्य बिन्दुएँ इस प्रकार हैं:

नेताओं ने ब्रिक्स और बिमस्टेक के बीच शिखर सम्मेलन आयोजित करने का अवसर मिलने के लिए आभार जताया। नेताओं ने आपसी हित के मामलों पर चर्चा की और सतत विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र 2030 एजेंडा सहित महत्वपूर्ण वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान किया।

बिमस्टेक नेताओं ने 1997 के बैंकॉक घोषणा में उल्लिखित बिमस्टेक के उद्देश्यों और प्रयोजनों को पूरा करने के लिए अपने प्रयासों को तेज करने पर सहमति व्यक्त की, और इस बात की पुष्टि की कि बिमस्टेक के पास पहचान किए गए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में पारस्परिक रूप से लाभकारी सहयोग करने के माध्यम से आर्थिक और सामाजिक विकास की काफी संभावनाएं हैं।

यह स्वीकार करते हुए कि इस क्षेत्र में आतंकवाद शांति और स्थिरता के प्रति सबसे बड़ा खतरा बना हुआ है, उन्होंने दृढ़ता से कहा कि आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में आतंकवादियों, आतंकी संगठनों और नेटवर्क को ना केवल विघटित किया जाना चाहिए और खत्म करने की कोशिश करनी चाहिए, बल्कि आतंकवाद को समर्थन और वित्त देने वाले लोगों को पहचान कर उन्हें इसके लिए जिम्मेदार ठहराना चाहिए और दंड देना चाहिए, और उन्हे भी जो आतंकवादियों और आतंकी समूहों को शरण देते हैं, और उनका झूठा गुणगान करते हैं।

उन्होंने आपराधिक मामलों में आपसी सहायता के लिए बिमस्टेक संधि पर हस्ताक्षर करने में, और अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, राष्ट्र-पार संगठित अपराध और मादक पदार्थों की अवैध तस्करी से मुकाबला करने में सहयोग के लिए बिमस्टेक संधि के शीघ्र अनुसमर्थन प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हुए।

उन्होंने बिमस्टेक क्षेत्र में मल्टी-मोडल भौतिक संपर्कता (वायु, रेल, सड़क और जलमार्ग) को आगे बढ़ाने के निरंतर प्रयासों और पहलों पर संतोष व्यक्त किया। वे बिमस्टेक मोटर वाहन समझौते की संभावना को तलाशने के लिए सहमत हुए।

यह जानते हुए कि बंगाल की खाड़ी दुनिया के तीस प्रतिशत से अधिक मछुआरों का घर है, उन्होंने माना कि इस क्षेत्र में मत्स्य पालन के लिए सतत विकास में सहयोग से खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और हमारे लोगों की आजीविका में सुधार करने में महत्वपूर्ण योगदान मिलने की संभावना है और इस क्षेत्र में सहयोग को गहराने के लिए सहमत हुए।

उन्होंने ब्लू इकोनॉमी बढ़ाने से इस क्षेत्र में इस क्षेत्र में होने वाले विशाल विकास संभावनाओं को पहचाना, और इस क्षेत्र के समग्र और सतत विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य के साथ एक्वाकल्चर (अंतर्देशीय और तटीय दोनों), जल सर्वेक्षण, समुद्र तल में खनिज खोज, तटीय पोत परिवहन, इको-

टूरिज्म और अक्षय महासागर ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में सहयोग को गहराने के तरीकों पर विचार करने के लिए सहमत हुए।

उन्होंने ग्रिड इंटरकनेक्शन पर बिमस्टेक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने में तेजी लाने का फैसला किया। उन्होंने निर्देश दिया कि बिमस्टेक ऊर्जा केंद्र के शीघ्र परिचालन के लिए कदम उठाए जाएं।

उन्होंने बिमस्टेक मुक्त व्यापार क्षेत्र वार्ता को शीघ्र संपन्न करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को नवीनीकृत किया, और व्यापार वार्ता समिति (टीएनसी) तथा कार्य समूहों को अपने घटक समझौतों को अंतिम रूप देने में तेजी लाने का निर्देश दिया।

उन्होंने श्रीलंका में बिमस्टेक प्रौद्योगिकी हस्तांतरण केंद्र की स्थापना पर संस्थापन प्रलेख को जल्द अंतिम रूप देने का निर्देश दिया।

उन्होंने पारंपरिक चिकित्सा में राष्ट्रीय समन्वय केंद्र के बिमस्टेक नेटवर्क और इसके कार्य बल को इस क्षेत्र में सहयोग का विस्तार करने और गहराने का निर्देश दिया।

उन्होंने इस क्षेत्र के भीतर बौद्ध पर्यटक सर्किट और मंदिर पर्यटक सर्किट के विकास को प्रोत्साहित किया।

उन्होंने भूटान में बिमस्टेक सांस्कृतिक उद्योग आयोग और बिमस्टेक सांस्कृतिक उद्योग वेधशाला की स्थापना में तेजी लाने का फैसला किया, जो सांस्कृतिक उद्योगों की जानकारी के भंडार के रूप में काम करेगा।

बांग्लादेश, भूटान, म्यांमार, नेपाल, श्रीलंका और थाईलैंड के नेताओं ने ब्रिक्स-बिमस्टेक आउटरीच शिखर सम्मेलन में बिमस्टेक नेताओं को आमंत्रित करने और इस शिखर सम्मेलन के दौरान गर्मजोशी से भरे आतिथ्य और उत्कृष्ट व्यवस्थाओं के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति गभीर आभार जताया।

10.3 रूस-भारत-चीन (आरआईसी)

18 अप्रैल 2016 को रूसी महासंघ, भारत गणराज्य और लोक गणराज्य चीन के विदेश मंत्रियों की 14 वीं बैठक आयोजित हुई थी। यह बैठक मास्को, रूस में आयोजित की गई थी और इसमें रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव, केंद्रीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और चीन के विदेश मंत्री वांग यी ने भाग लिया था।

बैठक की कुछ मुख्य बिन्दुएँ इस प्रकार हैं:

- मंत्रियों ने वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दों पर त्रिपक्षीय सहयोग के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की।
- उन्होंने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सहित संयुक्त राष्ट्र के व्यापक सुधार की आवश्यकता की पुनः पुष्टि की।
- उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, द्विपक्षीय और त्रिपक्षीय दोनों, को रोकने और मुकाबला करने में सहयोग को मजबूत करने का आग्रह किया।
- उन्होंने निरस्त्रीकरण सम्मेलन में रासायनिक और जैविक आतंकवाद के कृत्यों के दमन के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन को विस्तृत करने के लिए वार्ता शुरू करने की इच्छा व्यक्त की।
- उन्होंने सभी राज्यों से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव 2199 को पूरी तरह से लागू करने का अनुरोध किया जो इराक और लेवंत के तथाकथित इस्लामी राज्यों (आईएसआईएल) के साथ तेल और अन्य प्राकृतिक संसाधनों में व्यापार को प्रतिबंधित करता है।

- उन्होंने मादक पदार्थों के अवैध उत्पादन और तस्करी के बारे में गहरी चिंता व्यक्त की, और आपराधिक उद्देश्यों के लिए आईसीटी के उपयोग से मुकाबला करने के लिए संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में एक व्यापक अंतर्राष्ट्रीय सार्वभौमिक नियामक बाध्यकारी कानून बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।
- उन्होंने अफगान मुद्दों पर बहुपक्षीय क्षेत्र द्वारा संचालित वार्ता के महत्व पर बल दिया। उन्होंने सीरिया में सभी पक्षों और विदेशी हितधारकों से सीरिया पर प्रासंगिक संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्तावों को लागू करने का अनुरोध किया।
- उन्होंने इराक की स्वतंत्रता, संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया। उन्होंने यूक्रेन के पूर्व क्षेत्र में संघर्ष विराम हासिल करने का स्वागत किया।
- उन्हें थिंक-टैंक के बीच अपने सहयोग को बढ़ाना चाहिए, संसदीय, मीडिया, सांस्कृतिक, फिल्म और टेलीविजन और युवा आदान-प्रदान को बढ़ावा देना चाहिए, जिसमें युवा राजनयिकों की यात्रा भी शामिल है।

विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने 14 वें आरआईसी विदेश मंत्रियों की बैठक के समापन पर शुरुआती भाषण दिया। उनके शुरुआती भाषण की मुख्य बिन्दुएँ हैं:

- राष्ट्र-पार आतंकवाद अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के प्रति सबसे बड़ा खतरा बना हुआ है। आरआईसी देशों को संयुक्त राष्ट्र समेत संयुक्त कार्रवाई करने के माध्यम से आतंकवाद का खात्मा करने में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को एक साथ लाने का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।
- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में तत्काल सुधार करने की आवश्यकता है।
- वैश्विक अर्थव्यवस्था की मंदी ने सभी अर्थव्यवस्थाओं और विकास एजेंडे के लिए कई मुद्दें खड़े किए हैं। तीन बड़ी, उभरती अर्थव्यवस्थाओं में से एक होने के नाते भारत समान दृष्टिकोणों को साझा करता है और हमारे रुख के समन्वय से लाभान्वित हो सकता है।

10.4 संयुक्त राष्ट्र

प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 22 जनवरी 2016 को संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद की 70 वीं वर्षगांठ मनाने के लिए न्यूयॉर्क शहर में आयोजित विशेष कार्यक्रम में एक वीडियो संदेश के माध्यम से संबोधित किया। उनके भाषण की मुख्य बिन्दुएँ इस प्रकार हैं:

- उन्होंने कहा कि आर्थिक और सामाजिक परिषद (इकोसॉक) संयुक्त राष्ट्र संरचना का एक प्रमुख स्तंभ है। भारत इस निकाय के निर्माण में एक गौरवशाली भागीदार था। भारत के एक प्रतिष्ठित नागरिक, अर्कोट रामास्वामी मुदलियार को 1946 में इकोसॉक के उद्घाटन सत्र में पहले अध्यक्ष के रूप में सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।
- इसलिए इकोसॉक का कार्य, विशेष रूप से ये जिस तरह से मानव स्थिति में सुधार को आगे बढ़ाता है और सभी के लिए गरिमापूर्ण जीवन सुनिश्चित करता है, संयुक्त राष्ट्र के समग्र एजेंडे का केंद्र है।
- गरीबी का उन्मूलन 20 वीं सदी का सबसे बड़ा अधूरा कार्य रहा है।
- अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने खुद को विकास की एक नई व्यापक दृष्टि प्रदान की है। इकोसॉक की 70 वीं वर्षगांठ अधिक उपयुक्त समय पर नहीं आ सकती थी। 'सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा', संयुक्त राष्ट्र प्रणाली को अपनी भूमिका और उद्देश्य पर पुनर्विचार करने और खुद को अधिक प्रभावी बनाने के लिए एक बहुमूल्य अवसर प्रदान करता है।

10.5 सार्क

10.5.ए. पोखरा में मंत्रियों की 37 वीं सार्क परिषद की बैठक के दौरान विदेश मंत्री के वक्तव्य का सारांश (17 मार्च, 2016)

- विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने एसएएफटीए और दक्षिण एशियाई व्यापार सेवाओं के समझौते में अर्थव्यवस्थाओं को एकीकृत करने के लिए किए गए कुछ महत्वपूर्ण फैसलों का उल्लेख किया और दक्षिण एशियाई आर्थिक संघ को प्राप्त करने की बजाय इसे विकसित और समेकित करने की आवश्यकता पर बल दिया।
- अंतः–क्षेत्रीय व्यापार विकसित करने के तरीकों के बारे में बताते हुए उन्होंने समुदायों को विकसित करने की प्रकृति पर बल दिया ताकि लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर लाया जा सके, खाद्य सुरक्षा सुदृढ़ की जा सके, क्षेत्र में रहने वाले लोगों कोस स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा दी जा सके।
- उन्होंने कहा कि भारत संयुक्त विकास लक्ष्यों को साकार करने के लिए सार्क समुदाय के अंतर्गत काम करने के लिए तैयार है। भारतीय विश्वविद्यालय सार्क नागरिकों के लिए खुले हैं। उन्होंने भारत में सार्क पर्यावरण और आपदा प्रबंधन केंद्र बनाने का प्रस्ताव रखा, जो विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं के प्रति त्वरित अनुक्रिया देने में अनुभवी विशिष्ट भारतीय संस्थानों के एक बड़े नेटवर्क की क्षेत्र विशेषज्ञता से लाभ उठा सकता है।

10.5 जी 20 और भारत

04 सितंबर 2016 को जी–20 शिखर सम्मेलन के दौरान, प्रधान मंत्री मोदी ने चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात की, जो जी20 शिखर सम्मेलन के मेजबान हैं। उसके बाद प्रधान मंत्री ने गोवा में आयोजित ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए ब्रिक्स नेताओं की बैठक की अध्यक्षता की। प्रधानमंत्री ने ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री मैल्कम टर्नबुल से भी मुलाकात की।

10.6 एससीओ और भारत

10.6.ए. 24 जून, 2016 को आयोजित एससीओ शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी के भाषण की मुख्य बिन्दुएँ इस प्रकार हैं:

- प्रधानमंत्री मोदी ने एससीओ में भारत की सदस्यता का समर्थन करने के लिए एससीओ सदस्य देशों और उनके नेताओं के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने एससीओ के नए सदस्य के रूप में पाकिस्तान और एससीओ के प्रथम पर्यवेक्षक के रूप में बेलारस का स्वागत किया।
- उन्होंने कहा कि भारत इस क्षेत्र के लिए नया नहीं है। ऐतिहासिक संबंध सदियों पुराने हैं। उनके समाजों को संस्कृति, कुशीन और वाणिज्य के जुड़ाव द्वारा समृद्ध किया गया है।
- ऊर्जा, प्राकृतिक संसाधनों और उद्योग में एससीओ की ताकत से भारत को निस्संदेह लाभ होगा।
- व्यापार, निवेश, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, कृषि, स्वास्थ्य देखभाल, लघु और मध्यम उद्योग में भारत की क्षमता, एससीओ देशों में व्यापक आर्थिक लाभ ला सकती है।
- उन्हें अपने के बीच वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी और लोगों के निर्बाध प्रवाह की आवश्यकता है और उनके क्षेत्रों को दुनिया के बाकी हिस्सों के साथ जोड़ने के लिए रेल, सड़क और हवाई संपर्क स्थापित करने की आवश्यकता है।
- अंत में उन्होंने कहा कि एससीओ के भीतर, भारत मजबूत व्यापार, परिवहन, ऊर्जा, डिजिटल और लोगों–से–लोगों को जुड़ाव में एक उत्पादक भागीदार होगा। अंतर्राष्ट्रीय उत्तर दक्षिण परिवहन गलियारे, चाबहार समझौते और अश्गाबात समझौते में शामिल होने का भारत का निर्णय, इसकी इच्छा और आशय को दर्शाता है।

10.7 7 वां एनएएम शिखर सम्मेलन

17-18 सितंबर 2016 को वेनेजुएला के मार्गारीटा द्वीप में 17 वां एनएएम शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया था। भारत के उपराष्ट्रपति मोहम्मद हामिद अंसारी, विदेश राज्य मंत्री एम.जे. अकबर समेत भारतीय प्रतिनिधिमंडल को भी इस शिखर सम्मेलन में साथ लेकर गए थे।

17 वीं एनएएम पूर्ण बैठक में उपराष्ट्रपति ने अपने संबोधन में निम्नलिखित मुख्य बातें कहीं:

- विकास सहयोग, अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता को बढ़ावा देने और विकसित करने का एक आवश्यक साधन है और यह एजेंडा 2030 में सतत विकास लक्ष्यों को अपनाने के प्रकाश में अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।
- शांति और संप्रभुता – विकास के लिए एक पूर्व आवश्यकता है।
- आज, आतंकवाद अंतर्राष्ट्रीय शांति और राज्यों की संप्रभुता के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गया है। यह विकास में एक प्रमुख बाधा बन गया है।
- गुटनिरपेक्ष आंदोलन के लिए अत्यावश्यक है कि वे इस खतरे को दूर करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय कानूनी ढांचे को मजबूत करने की दिशा में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को एकजुट करें, जिसमें आतंकवाद पर संयुक्त राष्ट्र व्यापक संधि का मसौदा अपनाना शामिल है।

दुनिया का सबसे बड़ा शांति आंदोलन होने के नाते एनएएम को आदर्श प्राप्त करने के लिए राजनीतिक, रणनीतिक और यहां तक कि आर्थिक और सामाजिक मुद्दों पर प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय बहस में अग्र–दल होना चाहिए।

11. विविध (शिखर सम्मेलन, सम्मेलन, सेमिनार और संवाद)

- **भारत–अफ्रीका हाइड्रोकार्बन सम्मेलन 2016 में विदेश मंत्री का समापन संबोधन (22 जनवरी 2016)**

विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने भारत–अफ्रीका हाइड्रोकार्बन सम्मेलन के चौथे संस्करण के समापन पर समापन संबोधन दिया। उनके संबोधन की कुछ मुख्य बिन्दुएँ इस प्रकार हैं:

पिछले साल अक्टूबर में नई दिल्ली में आयोजित तीसरे भारत–अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन के सफल आयोजन के तुरंत बाद इस सम्मेलन का आयोजन अफ्रीका के साथ व्यापक क्षेत्रों में अपनी साझेदारी को मजबूत करने में भारत की निरंतर रुचि को दर्शाता है।

उन्होंने कहा कि भारत–अफ्रीका हाइड्रोकार्बन सम्मेलन 2007 में शुरू हुआ था और सम्मेलन पांच साल के अंतराल के बाद हो रहा था। इन वर्षों के दौरान, भारत की ऊर्जा मांग तेजी से बढ़ी है और बढ़ती मांग, तेल और गैस की नई खोजों और तेल और गैस क्षेत्र में वैश्विक जुड़ाव बढ़ने के मामले में अफ्रीका में बदलाव आया है।

उन्होंने कहा कि भारत के विकास के लिए ऊर्जा एक अनिवार्य आवश्यकता है और जैसा कि हाल ही में आईईए रिपोर्ट में कहा गया है, भारत वैश्विक ऊर्जा मामलों का केंद्र बनने के लिए तैयार है, जो 2040 तक वैश्विक ऊर्जा उपयोग में 25% वृद्धि के लिए जिम्मेदार होगा।

हाल के वर्षों में, भारत एशिया–प्रशांत क्षेत्र में एक प्रमुख रिफाइनिंग हब के रूप में उभरा है और वर्तमान में यह दुनिया का चौथा सबसे बड़ा रिफाइनर है। पिछले साल, भारत ने 47 अरब डॉलर के पेट्रोलियम उत्पादों का निर्यात किया, जिसके साथ अफ्रीका पेट्रोलियम उत्पादों के गंतव्यों की सूची में दूसरे स्थान पर रहा।

उन्होंने अफ्रीकी तेल उत्पादकों को दृढ़ साझेदारी विकसित करने के लिए रिफाइनिंग में बढ़ती मांग और शक्ति दोनों का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया। पिछले दो दशकों के दौरान नई खोजों ने अफ्रीका के तेल भंडार को दोगुना किया है और गैस भंडार को 50% से अधिक बढ़ाया है। यह महाद्वीप को सबसे संपन्न भौगोलिक क्षेत्रों के समूह में रखता है। एक और महत्वपूर्ण विकास यह है कि भारतीय तेल कंपनियों ने अफ्रीका में अपने पदचिह्न का विस्तार किया है। आज, भारतीय कंपनियों की सूडान, दक्षिण सूडान, नाइजीरिया, गैबॉन और लीबिया के अन्वेषण और उत्पादन क्षेत्र में उपस्थिति है। वे अल्जीरिया, लीबिया, सूडान और घाना जैसे देशों में ईपीसी परियोजनाओं पर भी काम कर रहे हैं और ऊर्जा क्षेत्र में सक्षम और विश्वसनीय साझेदार के रूप में शानदार प्रतिष्ठा अर्जित की है। मोज़ाम्बिक एक हालिया उदाहरण है, जहां 2014 की तुलना में 5 बिलियन डॉलर का अधिक का निवेश किया गया है।

श्रीमती स्वराज ने कहा कि ऊर्जा के क्षेत्र में भविष्य का हमारा सहयोग केवल हाइड्रोकार्बन तक सीमित नहीं रहना चाहिए और नवीकरणीय ऊर्जा में सहयोग पर समान रूप से ध्यान केंद्रित करना चाहिए। भारत ने अपने नवीकरणीय ऊर्जा कार्यक्रम को विकसित करने में बहुत विशेषज्ञता हासिल की है, विशेष रूप से सौर और पवन क्षेत्र में और अफ्रीका के साथ अनुभव और प्रौद्योगिकियों को साझा करने में भारत को खुशी होगी।

उन्होंने आखिर में कहा कि यह भारत और अफ्रीका दोनों के लिए ऊर्जा सुरक्षा– मांग और आपूर्ति की सुरक्षा दोनों के प्रति प्रतिबद्धता का समर्थन करने का एक उत्तम अवसर है।

- **आतंकवाद विरोध सम्मेलन में विदेश सचिव का संबोधन (03 फरवरी, 2016)**

3 फरवरी, 2016 को आतंकवाद विरोध सम्मेलन में अपने संबोधन में, विदेश सचिव, डॉ एस जयशंकर ने कहा कि आतंकवाद को आज व्यापक रूप से वैश्विक संकट के रूप में देखा जाता है और यह कि आतंकवाद का मुकाबला करना भारतीय राजनय के लिए प्राथमिकता है। शासन के दृष्टिकोण से आतंकवाद के खिलाफ किया गया पहला गंभीर प्रयास संयुक्त राष्ट्र में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर एक व्यापक संधि शुरू करने की भारत की पहल है। दिलचस्प बात यह है कि इस पहल ने अधिक से अधिक कर्षण एकत्र कर लिया है क्योंकि वैश्विक आतंकवाद की छाया अधिक ख़तरनाक है। इस प्रकार, आतंकवाद का मुकाबला करने में पूरी दुनिया के दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना, भारतीय राजनय के प्रमुख लक्ष्यों में से एक है।

- **आठवीं दिल्ली संवाद (आसियान–भारत संबंध: एक नया प्रतिमान)**

दिल्ली संवाद का आठवां संस्करण 17-19 फरवरी, 2016 को आयोजित किया गया था। आसियान–भारत संबंध के सभी पहलुओं पर विचार–मंथन के लिए पूर्व–प्रतिष्ठित वार्षिक ट्रैक 1.5 संवाद प्रक्रिया का मंत्रिस्तरीय सत्र 18 फरवरी, 2016 को नई दिल्ली में हुआ था। मंत्रिस्तरीय सत्र में आसियान देशों और भारत के 200 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया और इसके पहले 17 फरवरी, 2016 को व्यवसाय सत्र हुआ था। सुषमा स्वराज, विदेश मंत्री ने सत्र की मेजबानी की थी।

अपने मुख्य भाषण में श्रीमती स्वराज ने कहा कि 2017 आसियान और आसियान–भारत साझेदारी के लिए एक विशेष वर्ष होगा क्योंकि आसियान अपनी स्वर्ण जयंती मनाएगा और भारत और आसियान अपनी साझेदारी की रजत वर्षगांठ मनाएंगे। उन्होंने कहा कि मई 2014 में प्रधानमंत्री मोदी की सरकार के सत्ता में आने के बाद से, भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने 10 में से 9 आसियान देशों का दौरा किया है। उन्होंने एक आसियान–भारत आर्थिक समुदाय गठित करने का विचार प्रकट किया और आशा व्यक्त की कि एक संतुलित और महत्वाकांक्षी क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता जल्द ही संपन्न होगा, जिससे आसियान और व्यापक एशिया–

प्रशांत के साथ आर्थिक और वाणिज्यिक जुड़ाव को अधिक बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने यह भी घोषणा की कि बहुत जल्द शिलांग के पूर्वोत्तर हिल विश्वविद्यालय में एक आसियान अध्ययन केंद्र का उद्घाटन किया जाएगा। श्रीमती स्वराज ने कहा कि संपर्कता बढ़ाना भारत और आसियान दोनों के लिए एक सामरिक प्राथमिकता है। इस संबंध में उन्होंने प्रमुख संपर्क परियोजनाओं – कलादान मल्टी मोडल परिवहन परियोजना, भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग और म्यांमार में रिह तेडिम परियोजना का उल्लेख किया।

- **नई दिल्ली में रायसीना संवाद के उद्घाटन के अवसर पर विदेश मंत्री का भाषण (01 मार्च, 2016)**

रायसीना वार्ता के उद्घाटन सत्र में सभी का स्वागत करते हुए, विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि यह एक नई पहल थी जिसका उद्देश्य भारत में नीति निर्माताओं और रणनीतिक विचारकों के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय मंच बनाना था ताकि प्रतिदिन के प्रमुख मुद्दों पर विचार–विमर्श किया जा सके।

उन्होंने बताया कि संवाद का विषय 'एशियाई संपर्कता' है, और कहा कि आज का दिन वैश्वीकरण प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण है। यह एशिया के विकास और वृद्धि के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

समकालीन दुनिया में, संपर्कता के बहुत रूप हैं। भौतिक संपर्कता की बुनियादी समस्याओं से उभरना और डिजिटल संपर्कता को मजबूत करने पर एक–साथ विचार किया जा रहा है। आर्थिक गतिविधियाँ, जबकि संपर्कता का एक परिणाम है, स्वयं और राष्ट्रों के बीच एक बंधन बनती हैं। संपर्कता के किसी भी बातचीत में रोजगार के लिए प्रवासन का मुद्दा महत्वपूर्ण है। वैश्विक समुद्री या अंतरिक्ष समान हित, अपनी विशिष्ट चुनौतियों के साथ–साथ समाधान भी प्रस्तुत करते हैं।

संपर्कता के परिणाम संबंधों को जितना प्रेरित करते हैं, संपर्कता भी उतना प्रेरित करती है। जबकि संसाधन और क्षमताएं संपर्कता की गति को बढ़ाती हैं, वहीं नीतियों का चुनाव एक महत्वपूर्ण कारक हो सकता है। दक्षिण एशिया में, यह देखा गया है कि अच्छे पड़ोसी संबंध सड़क और रेल कनेक्शन बनाने, जलमार्ग खोलने या ऊर्जा की आपूर्ति पर एक मजबूत लाभकारी प्रभाव डाल सकते हैं। बीबीआईएन जैसे उप–क्षेत्रीय संयोजनों पर रचनात्मक रूप से काम किया गया है ताकि सहयोग की गति धीमी न पड़े।

एक अन्य पहलू संपर्कता में व्यवधान का खतरा है। अपने सबसे आमूल रूप में, यह आतंकवाद के प्रसार से निकलता है, जो प्रौद्योगिकी की गति के साथ तालमेल रखने के लिए उत्परिवर्तित हुआ है। परिणामस्वरूप, हम साइबर हमलों की काली छाया का सामना करते हैं, क्षेत्रीय विवादों में राष्ट्रों द्वारा बल के उपयोग के खतरे का सामना करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में नियमन और कूटनीति इसकी प्रतिक्रिया के हिस्से हैं। अतः, संपर्कता विभिन्न रूपों में इसकी सुरक्षा वैश्विक व्यवस्था के रखरखाव के लिए महत्वपूर्ण है। विभिन्न क्षेत्रों में शुद्ध सुरक्षा प्रदाताओं की भूमिका भी एक स्वाभाविक परिणाम है।

भारत में सीमांत क्षेत्रों को जोड़ने पर विशेष बल दिया जा रहा है। बंदरगाहों का विकास न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था बल्कि बड़े क्षेत्र के लिए भी अच्छा है। पड़ोसी संपर्कता का लाभ उठाने वाले पारगमन समझौते इसके राजनय का एक नियमित परिणाम बन गए हैं। हमारे अंतर्राष्ट्रीय आउटरीच का उद्देश्य इन पहलों को सफल बनाने के लिए संसाधनों, प्रौद्योगिकियों और सर्वोत्तम प्रथाओं को आकर्षित करना है। सांस्कृतिक जुड़ाव के संदर्भ में, प्रवासियों के साथ संबंधों को और मजबूत बनाने के साथ–साथ विश्व स्तर पर भारतीय धरोहरों को दर्शाने का भी कड़ा प्रयास किया जा रहा है।

हमारी सीमाओं से परे, एक 'नेबरहुड फर्स्ट' की नीति है जो हमारी सरकार के शुरुआत होने के साथ शुरू हुई थी, वह बड़े क्षेत्र के साथ संपर्कता, वाणिज्य और संपर्कों के लिए एक मजबूत प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। भारत की संपर्कता क्षितिज, जो पहले सिंगापुर से खाड़ी तक सीमित थी, अब इसकी आर्थिक क्षमताओं और रुचियों के बढ़ने के साथ-साथ इसका विस्तार भी हुआ।

हमारे दक्षिण में विशाल समुद्री स्थान का मतलब है कि संपर्कता उतना ही समुद्री है जितना कि यह क्षेत्रीय है। भारत के आसपास के महासागर और संबंधित नीली अर्थव्यवस्था, समुद्री क्षेत्र में सुरक्षा और समृद्धि को मजबूती से जोड़ते हैं तथा अन्य क्षेत्रों को भी मजबूती से जोड़ते हैं। भारत की इस दृष्टि को प्रधान मंत्री ने सागर-क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास के रूप में व्यक्त किया था। यह सुरक्षित, सुरक्षित, स्थिर और साझा समुद्री स्थान के लिए प्रतिबद्धता है।

बढ़ती डिजिटल दुनिया में साइबर संपर्कता का महत्व बढ़ रहा है। भारत ने एक स्वतंत्र और एकीकृत इंटरनेट के संरक्षण के उद्देश्य से एक बहु-हितधारक दृष्टिकोण का समर्थन किया है, लेकिन महत्वपूर्ण इंटरनेट बुनियादी ढाँचे के वितरण और विभिन्न हितधारकों के बीच विश्वास और स्थिरता बनाने के लिए साइबर सुरक्षा और साइबर अपराध पर करीब अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का भी अनुरोध किया है।

संक्षेप में, संपर्कता भारत की विकास महत्वाकांक्षाओं के लिए ना केवल महत्वपूर्ण है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए इसकी दृष्टि का एक महत्वपूर्ण और अभिन्न पहलू भी है। यह एशिया और उसके बाहर अपने हितों और संबंधों को बढ़ाएगा।

- **चौथे वार्षिक विकास नेट शिखर सम्मेलन में विदेश सचिव का समापन संबोधन: उच्च विकास के लिए राजनय (09 अप्रैल, 2016)**
- भारत आज प्रमुख पहल और अभियानों के बीच में है जो विकास के पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिसे भूगोल के देशों ने सफलतापूर्वक पिछले कुछ दशकों में अपनाया है। उनमें से विनिर्माण को मजबूत बनाने और कौशल में सुधार है, संयोजन अधिक से अधिक रोजगार सृजन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इनमें साथ ही आधुनिकीकरण और बुनियादी ढांचे का विस्तार शामिल है जिन पर हमारी प्रतिस्पर्धा टिकी हुई है। प्रौद्योगिकी का अर्क समान रूप से महत्वपूर्ण है जो डिजिटल युग के लिए हमें तेजी से पारित कर सकता है, क्योंकि वह ये सुनिश्चित करता है कि हमारा विकास पथ हरा-भरा और साफ़ रहे। शहरी केन्द्रों की ओर गुरुत्वाकर्षण इस सन्दर्भ में संबोधित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि कर्मियों की संख्या में महिलाओं की बड़ी प्रविष्टि हुई है जिसके लिए उन्हें पहले से शिक्षित किया जाना चाहिए था।
- भारत अलगाव में विकसित नहीं कर सकता, और वास्तव में, अपने क्षेत्र के मजबूत समर्थन के बिना ऐसा करना बहुत कठिन होगा। उस कारण के लिए, यह जरूरी है कि हमारा सहयोग और संयोजकता पड़ोसियों के साथ तेजी से बढ़ें। यह 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति का सार यह है जो साझा समृद्धि के लिए एक प्रतिबद्धता पर उपदेशात्मक है।
- भारत के भीतर, वहाँ क्षेत्रीय सहयोग के लाभों की अधिक से अधिक जागरूकता है-जैसे कि ऊर्जा, व्यापार और पारगमन में। हमारे पड़ोसियों के लिए, सहयोग का फल भी प्रमुख बुनियादी ढांचा परियोजनाओं, आय और रोजगार के अतिरिक्त स्रोत, व्यापक सामाजिक विकास और एक बड़े और बढ़ते बाजार के लिए उपयोग में दिखाई दे रहे हैं।

- लुक ईस्ट का दृष्टिकोण तब उत्तर पूर्व एशिया से आगे बढ़ा जिसने इसे व्यापार, पर्यटन और संसाधनों के प्रवाह के मामले में और भी अधिक परिवर्तनशील बना दिया। परिणामस्वरूप भारत के गुरुत्वाकर्षण के केंद्र में बदलाव भारत के पूर्वी समुद्र तट के पुनरुद्धार से स्पष्ट प्रकट है।
- चीन सहित पूर्व से निवेश, प्रौद्योगिकी और सर्वोत्तम प्रथाओं को आकर्षित करने, और जापान के साथ ओडीए द्वारा संचालित निवेश रणनीति का चलन लाने से भारत के उच्च आर्थिक विकास के लिए बहुत संभावनाएं हैं।
- जबकि 'एक्ट ईस्ट' नीति समेकन के अधीन है, शायद अब 'थिंक वेस्ट' का समय भी हो चुका है। जीवाश्म ईंधन की संभावनाएं, अधिक निर्णायक और उच्च विकास वाला भारत निर्माण और अंतर-क्षेत्रीय प्रतियोगिता ने समस्त संयोजन कर भारत और खाड़ी के लिए नए अवसरों का मार्ग खोला है। आने वाले दिनों में इसे भारतीय राजनय का एक प्रमुख मुद्दा बने रहने की अपेक्षा की जा सकती है।
- संयुक्त राज्य अमेरिका एक ऐसा भागीदार है जिसके साथ भारत ने बहुत व्यापक क्षेत्रों में व्यापक और गहन सहयोग किया है। यूरोप की अर्थव्यवस्थाओं के साथ संबंध शायद कम अस्थिर रहे हैं, लेकिन इसका महत्व भी कोई कम नहीं है। रूस के मामले में, राजनीति ने मार्ग प्रशस्त किया लेकिन रणनीतिक अभिसरण और लोकप्रिय समर्थन एक बड़ा संचालक साबित हुआ। लगभग समग्र क्षेत्रों में ऐसे अवसर मौजूद हैं जिनका दोहन करने का बस इंतजार है। अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के बारे में भी ऐसा कहा जा सकता है। भारत की विदेश नीति बहुत सचेत है कि इसकी मांग तीव्र गति से बढ़ रही है।
- राजनय और आर्थिक विकास के संदर्भ में ऊर्जा सुरक्षा का विशेष उल्लेख करना बनता है। भारत ऐसे वार्ताओं को उच्च प्राथमिकता देता रहेगा जो भारत के नागरिक परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम का विस्तार करने में मदद कर सकते हैं। क्षेत्र के भीतर, जल विद्युत परियोजनाओं को प्रोत्साहन दिया जाएगा। अन्य के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की स्थापना में नवीकरणीय स्रोतों के प्रति भारत की महत्वाकांक्षी प्रतिबद्धताओं पर भी बात होती है। जीवाश्म ईंधन की निकट अवधि की प्रासंगिकता को पहचानते हुए, यह अधिक आक्रामक रूप से पारंपरिक ऊर्जा आपूर्तिकर्ताओं, अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम दोनों, के साथ संलग्न होना जारी रखेगा।
- 'स्मार्ट सिटीज' के लिए अंतर्राष्ट्रीय साझेदारों की तलाश करना एक बड़ी कवायद रही है। मुंबई और अहमदाबाद के बीच शिंकानसेन परियोजना के लिए रेलवे का विशेष ध्यान रहा है। इसके अलावा, गति बढ़ाने, स्टेशन विकास, रेल सुरक्षा, लोकोमोटिव उत्पादन और यहां तक कि वित्तपोषण के लिए विभिन्न राष्ट्रों के साथ कई समझौते हुए हैं। 'डिजिटल इंडिया' और 'नमामि गंगे' जैसे कार्यक्रमों के साथ भी विदेशी भागीदार, सरकारें और साथ ही निजी क्षेत्र जुड़ रहे हैं।

12. प्रमुख आर्थिक विकास, 2016

12.1 भारतीय आर्थिक प्रदर्शन

- ***आर्थिक विकास***

वर्ष 2016 में भारत सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक था। फरवरी 2016 में, भारत ने धीमी वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में से दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बनकर चीन को पछाड़ा था। मई में, भारत की जीडीपी जनवरी-मार्च के बीच सालाना आधार पर 7.5 प्रतिशत बढ़ी, जो पिछली तिमाही के 7.3 प्रतिशत से अधिक थी। जून में, भारत की जीडीपी बढ़कर 7.6 प्रतिशत हो गई, जिसने सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था का खिताब बरकरार रखा। इसके बाद के

महीनों में भले ही भारत की जीडीपी 7.1 प्रतिशत तक गिर गई, फिर भी यह चीन के 6.7 प्रतिशत की वृद्धि से आगे रहने में सफल रहा।

- ***व्यापार संतुलन***

वर्ष 2016 में कुल मिलाकर व्यापार संतुलन में सुधार नज़र आया। माल और सेवाओं को एक साथ लेते हुए, अप्रैल–दिसंबर 2016-17 के लिए कुल व्यापार घाटा 33742.17 मिलियन अमेरिकी डॉलर रहा जो कि अप्रैल–दिसंबर 2015-16 के दौरान 53371.23 मिलियन अमेरिकी डॉलर के स्तर की तुलना में डॉलर के संदर्भ में 36.78 प्रतिशत कम है।

- ***एफडीआई और विदेशी मुद्रा***

इक्विटी प्रवाह, पुनः–निवेशित आमदनी और अन्य पूंजियों के सन्दर्भ में, 2000–01 से संचयी विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) 453,183 मिलियन अमेरिकी डॉलर रही थी। 2016-17 (अप्रैल-सितम्बर) के लिए कुल एफडीआई 29,016 मिलियन अमेरिकी डॉलर था। 30 दिसंबर, 2016 को कुल विदेशी मुद्रा भंडार (विदेशी मुद्रा) 360,296.8 मिलियन अमेरिकी डॉलर था।

12.2 राष्ट्रीय–प्रमुख नीतियाँ/उपाय

- ***500 रुपये और 1,000 रुपये के नोटों का विमुद्रीकरण***

8 नवंबर, 2016 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने काले धन पर नकेल कसने के लिए की 500 रुपये और 1,000 रुपये के नोटों को वापस लेने की घोषणा की। इस कार्रवाई के चार उद्देश्य थे: भ्रष्टाचार, जालसाजी; आतंकवादी गतिविधियों के लिए उच्च मूल्यवर्ग के नोटों के उपयोग; और विशेष रूप से "काला धन", जो पैसे ऐसे आय से उत्पन्न होते हैं जो कर अधिकारियों को घोषित नहीं किया गया है, के संचय पर अंकुश कसना। बेनामी लेनदेन अधिनियम 2016 सहित ऐसी अवैध गतिविधियों पर अंकुश कसने से पहले कई प्रयास किए गए थे।

- ***वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) विधेयक पारित करना***

स्वतंत्रता के बाद से भारतीय इतिहास में सबसे बड़े कर सुधारों में से एक सुधार के रूप में, राज्यसभा ने 4 अगस्त, 2016 को एक सर्वसम्मत निर्णय से वस्तु एवं सेवा कर विधेयक को कानून बनाने के लिए महत्वपूर्ण 122 वें संवैधानिक संशोधन को मंजूरी दी। कई वर्षों के बहस और विचार–विमर्शों के बाद विधेयक के पक्ष में 203 मत मिले और विपक्ष में एक भी मत नहीं मिले। इसने सभी अप्रत्यक्ष करों को एक समान कर प्रणाली के तहत लाया। इसके पारित होने के बाद, केंद्र ने 12 सितंबर, 2016 को अपनी बैठक में केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित एक जीएसटी परिषद की स्थापना की, जिसने कर के अन्य पहलुओं जैसे कि छूट, सीमा, आमिश्रण और नियंत्रण पर ध्यान केंद्रित किया। 4 नवंबर को, जीएसटी परिषद ने बहुस्तरीय दर संरचना के रूप में 0 प्रतिशत, 5 प्रतिशत, 12 प्रतिशत, 18 प्रतिशत और 28 प्रतिशत की सहमति व्यक्त की, जो कि सभी वस्तुओं और सेवाओं के लिए एक कर दर रखने की लोकप्रिय अंतर्राष्ट्रीय प्रथा से लिया गया है।

- ***भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 के तहत मौद्रिक नीति समिति का गठन***

सरकार ने भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 को वित्त अधिनियम, 2016 द्वारा संशोधित किया, जिसके अधीन भारतीय रिज़र्व बैंक के परामर्श से सरकार हर पांच वर्षों में एक बार मुद्रास्फीति लक्ष्य निर्धारित करेगी। इसने आरबीआई के 3 सदस्यों (गवर्नर सहित) और सरकार द्वारा चुने गए तीन सदस्यों को शामिल करते हुए एक छह सदस्यीय मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) के गठन

के लिए एक वैधानिक आधार प्रदान किया। सरकार ने 29 सितंबर, 2016 को एमपीसी के गठन को अधिसूचित किया। संशोधित मौद्रिक नीति रूपरेखा के अनुसार, सरकार ने 5 अगस्त, 2016 से लेकर 31 मार्च, 2021 तक की अवधि के लिए मुद्रास्फीति का लक्ष्य +/- 2 % के सहिष्णुता स्तर के साथ 4 प्रतिशत निर्धारित किया। एमपीसी ने दो बैठकें कीं, 7 दिसंबर, 2016 को हालिया बैठक हुई। 4 अक्टूबर, 2016 को हुई इसकी पहली बैठक में नीतिगत दर को 25 आधार अंक घटाकर 6.25 प्रतिशत कर दिया गया। 7 दिसंबर, 2016 को हुई बैठक में एमपीसी ने नीतिगत रुख को बनाए रखते हुए नीतिगत दर में बदलाव नहीं किया।

कराधान विधि (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2016

कराधान विधि (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2016 15 दिसंबर, 2016 को प्रभाव में आया। योजना की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- योजना के तहत किसी भी व्यक्ति द्वारा अघोषित आय के संबंध में नकद या बैंक या डाकघर या निर्दिष्ट इकाई के खाते में जमा धनराशी की घोषणा की जा सकती है।
- अघोषित आय के 30% दर से कर, कर के 33% दर से अधिभार और ऐसे आय के 10% दर से जुर्माना देय है और साथ ही प्रधानमंत्री जनकल्याण योजना, 2016 में अघोषित आय के 25% से धनराशी जमा करना अनिवार्य है। ये जमा ब्याज मुक्त हैं और चार साल की लॉक-इन अवधि है।
- योजना के तहत घोषित आय को किसी भी आकलन वर्ष के लिए आयकर अधिनियम के तहत घोषितकर्ता की कुल आय में शामिल नहीं किया जाएगा।
- योजना के तहत की गई घोषणाएं किसी भी अधिनियम (जैसे केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, धन-कर अधिनियम, कंपनी अधिनियम आदि) के तहत प्रमाण के रूप में स्वीकार्य नहीं होंगी। हालांकि, योजना की धारा 199-ओ में उल्लिखित आपराधिक अधिनियमों के तहत कोई प्रतिरक्षा उपलब्ध नहीं होगी।

12.3 अंतर्राष्ट्रीय- प्रमुख नीतियाँ/उपाय

- **विश्व प्रतिस्पर्धात्मकता सूचकांक में भारत लगातार आगे बढ़ा**

  वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम (डब्ल्यूईएफ) द्वारा 26 सितंबर, 2016 को जारी आंकड़ों के अनुसार, वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता सूचकांक (जीसीआई) में भारत की रैंकिंग में लगातार दूसरे वर्ष 16 स्थान का सुधार हुआ है। नवीनतम रैंकिंग के अनुसार, भारत 138 देशों में से 39 वें स्थान पर है, जो चीन के अलावा ब्रिक्स के अन्य देशों से आगे है और जिसमें चीन 28 वें स्थान पर है।

- **विश्व बैंक के लॉजिस्टिक्स परफॉर्मेंस इंडेक्स में भारत ने 19 स्थानों की छलांग लगाई**

  28 जून, 2016 को लॉजिस्टिक्स परफॉर्मेंस इंडेक्स (एलपीआई) 2016 में विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, भारत एलपीआई 2014 के 54 रैंक के मुकाबले 160 देशों में 35 वें स्थान पर रहा। भारत ने 19 स्थानों की छलांग लगाई है।

- **भारत में अवसंरचना क्षेत्र में क़तर से निवेश प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय निवेश और अवसंरचना कोष (एनआईआईएफ) लिमिटेड और क़तर निवेश प्राधिकरण (क्यूआईए) के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर**

  एनआईआईएफ की छत्र तले क़तर से निवेश आकर्षित करने के उद्देश्य से, राष्ट्रीय निवेश और अवसंरचना कोष (एनआईआईएफ) लिमिटेड ने 4-5 जून, 2016 को भारत के प्रधान मंत्री की दोहा

यात्रा के दौरान 5 जून, 2016 को क़तर निवेश प्राधिकरण (क्यूआईए) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) में प्रवेश किया। एमओयू पर श्री अब्दुल्ला बिन मोहम्मद अल थानी, क़तर निवेश प्राधिकरण (क्यूआईए) के सीईओ और एनआईआईएफ लिमिटेड की ओर से श्री अमर सिन्हा, सचिव (आर्थिक संबंध), विदेश मंत्रालय ने हस्ताक्षर किए। एमओयू का उद्देश्य भारत में अवसंरचना क्षेत्र में निवेश के अवसरों का अध्ययन करने के लिए क्यूआईए को सुविधा प्रदान करना और ऐसे निवेश अवसरों के संबंध में सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए एक रूपरेखा विकसित करना है, ताकि दोनों पक्ष संयुक्त निवेशों पर निर्णय लेने में सक्षम हो सकें। यह बारह (12) महीनों के लिए प्रभावी रहेगा, जिस अवधि के दौरान दोनों पक्ष इस निवेश के लिए शर्तों, सिद्धांतों, मानदंडों पर चर्चा करेंगे और सहमत होंगे।

- **भारत के वित्त मंत्री और संयुक्त राज्य अमेरिका के व्यापार प्रतिनिधि राजदूत श्री माइकल फ्रोमन के बीच द्विपक्षीय बैठक**

14 अप्रैल, 2017 को, वित्त मंत्री श्री जेटली ने संयुक्त राज्य अमेरिका के व्यापार प्रतिनिधि राजदूत श्री माइकल फ्रोमन के साथ द्विपक्षीय बैठक की। भारत और अमेरिका के बीच निरंतर जुड़ाव और तेजी से बढ़ती व्यापार और निवेश साझेदारी को प्रभावित करते हुए, वित्त मंत्री ने निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं पर बल दिया:

- संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ एक टोटलाइजेशन समझौते को जल्द संपन्न करने में भारत की उत्सुकता। (उद्योग के अनुमान के अनुसार, भारतीय पेशेवरों ने पिछले दशक के दौरान अमेरिका से कोई योगदान प्राप्त किए बिना अमेरिकी सामाजिक सुरक्षा में 25 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक का योगदान दिया है)
- एच-1 बी और एल 1 वीजा शुल्क में बढ़ोतरी पर भारत की चिंता जो भेदभावपूर्ण है और मुख्य रूप से, बड़े पैमाने पर भारतीय आईटी कंपनियों पर लक्षित है।

- **छठा वार्षिक भारत-अमेरिका आर्थिक और वित्तीय भागीदारी (ईएफपी)**

केंद्र वित्त मंत्री श्री अरुणजेटली और अमेरिकी ट्रेजरी सचिव श्री जैकब जे ल्यु ने 15 अप्रैल, 2017 को वाशिंगटन डीसी में छठे वार्षिक यूएस-भारत आर्थिक और वित्तीय भागीदारी (ईएफपी) के लिए मुलाकात की। चर्चा की मुख्य बिन्दुएँ निम्नानुसार हैं:

- दोनों पक्षों ने विदेशी खाता कर अनुपालन अधिनियम (एफएटीसीए) के अनुसार अंतर-सरकारी समझौते के तहत दोनों देशों के बीच वित्तीय जानकारी साझा करने में प्रगति का उल्लेख किया और एफएटीसीए के पूर्ण पारस्परिक व्यवस्था पर चर्चा जारी रखने के लिए पुष्टि की।
- दोनों पक्षों ने सीमा पार कर-जानकारी साझा करने में सहयोग बढ़ाने पर भी चर्चा की। दोनों पक्षों ने संयुक्त कर लेखा परीक्षा और विदेश में कर परीक्षा सहित अपतटीय कर चोरी और परिहार से निपटने के लिए निरंतर सहयोग और अनुभव साझा करने के लिए प्रतिबद्धता ली।
- दोनों पक्षों ने जनवरी 2015 में शुरू की गई यूएस-भारत निवेश पहल के तहत, विशेष रूप से विशिष्ट नीतियों, विनियामक सुधार की पहचान करने के लिए निजी क्षेत्र के साथ सहयोग और बुनियादी ढांचे के निर्माण और रोजगार के सृजन के लिए दोनों घरेलू और विदेशी निवेशकों से पूंजी जुटाने के उद्देश्य से तकनीकी सहयोग में प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने यह भी पुष्टि की कि दोनों देश भारत के राष्ट्रीय निवेश और अवसंरचना कोष (एनआईआईएफ) का समर्थन करने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं ताकि भारत के बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए वित्त पोषण के विकल्पों को बढ़ाया जा सके।

- नेताओं ने हमारी अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत, सतत और संतुलित विकास की ओर अग्रसर करने के लिए बहुपक्षीय मंचों, जैसे जी 20 में सहयोग करने की भी प्रतिबद्धता ली।

- **केंद्र वित्त मंत्री का मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया दौरा**

  केंद्र वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली 1 अप्रैल, 2016 को एक उच्च स्तरीय वित्त और व्यापार प्रतिनिधिमंडल के साथ मेलबर्न गए। अपने मुख्य भाषण में श्री जेटली ने भारत के व्यापक निवेश स्पेक्ट्रम को कवर किया और यह भी बताया कि भारत कैसे और क्यों निश्चित रूप से निवेश का एक आकर्षक गंतव्य है। उन्होंने भारत सरकार के निवेश के अनुकूल सुधारों के क्षेत्रवार विवरण दिए। उनकी यात्रा के दौरान एफआईसीसीआई और ऑस्ट्रेलिया–भारत व्यापार परिषद के बीच एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर भी हस्ताक्षर किए गए थे।

- **वाशिंगटन डीसी में केंद्र वित्त मंत्री श्री अरुणजेटली ने जी –20 वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक गवर्नरों की बैठक में भाग लिया।**

  15 अप्रैल, 2016 को वाशिंगटन डीसी में केंद्र वित्त मंत्री श्री अरुणजेटली ने जी –20 वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक गवर्नरों की बैठक में भाग लिया। मुख्य बिन्दुएँ थीं:

  - वित्त मंत्री श्री जेटली ने आईएमएफ में शेयरधारिता की समीक्षा के लिए अक्टूबर 2017 की सहमत समयरेखा का स्वागत किया और कहा कि नए कोटा फार्मूले में विकासशील देशों की आवाज, भूमिका और मतदान का हिस्सा बढ़ाना चाहिए और वैश्विक जीडीपी में उनकी बढ़ी हुई हिस्सेदारी को प्रतिबिंबित करना चाहिए।
  - वित्त मंत्री ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में विकासशील देशों के हिस्से को प्रतिबिंबित करने के लिए विश्व बैंक की हिस्सेदारी की समीक्षा की आवश्यकता पर भी बल दिया।
  - श्री जेटली ने गरीब देशों में बुनियादी ढांचे में निवेश को सुनिश्चित करने के लिए बहुपक्षीय विकास बैंकों की क्रेडिट रेटिंग और बैलेंस शीट का लाभ उठाने की आवश्यकता को दोहराया।
  - उन्होंने कर आश्रयों के खिलाफ दृढ़ उपाय करने की आवश्यकता पर भी बल दिया। जी –20 के वित्त मंत्रियों ने भ्रष्टाचार, कर चोरी, आतंकवादी वित्तपोषण और धन शोधन को रोकने के लिए कड़े कदम उठाने की प्रतिबद्धता जताई।
  - विश्व बैंक समूह के वित्तपोषण और पूंजी की आवश्यकता के आकलन का समर्थन किया, उन्होंने अध्यक्ष को विश्व बैंक समूह की वार्षिक वित्तपोषण मात्रा को बढ़ाकर 100 बिलियन डॉलर प्रति वर्ष करने का अनुरोध किया। विश्व बैंक समूह में भारतीयों द्वारा किए गए उत्कृष्ट योगदान का उल्लेख करते हुए, वित्त मंत्री ने विश्व बैंक के शीर्ष प्रबंधन में भारतीयों के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया।

- **आईएमएफ और भारत दिल्ली में एक दक्षिण एशिया क्षेत्रीय प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता केंद्र (एसएआरटीटीएसी) की स्थापना करेगा**

  केंद्र वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली और मिस क्रिस्टीन लेगार्ड, प्रबंध निदेशक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने 12 मार्च, 2016 को नई दिल्ली में राष्ट्रीय राजधानी में क्षमता विकास केंद्र स्थापित करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। इस समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर नई दिल्ली में एक पूरी तरह से एकीकृत क्षमता विकास केंद्र की ओर एक महत्वपूर्ण कदम को दर्शाता है, और आर्थिक स्थिरता और समावेशी विकास के लिए साधनों के रूप में तकनीकी सहायता और प्रशिक्षण का उपयोग करते हुए आईएमएफ और इसके सदस्यों के बीच साझा प्रतिबद्धता को दर्शाता है। केंद्र की प्रमुख विशेषताएं हैं:

- क्षेत्र की कई श्रेणियों में आईएमएफ की क्षमता विकास गतिविधियों की योजना, समन्वय, और कार्यान्वयन का मुख्य केंद्र बनना, जिसमें व्यापक आर्थिक और राजकोषीय प्रबंधन, मौद्रिक संचालन, वित्तीय क्षेत्र विनियमन और पर्यवेक्षण और व्यापक आर्थिक सांख्यिकी शामिल है।
- केंद्र, इस क्षेत्र में प्रदान की जाने वाली प्रशिक्षण की मात्रा को अन्य क्षेत्रों के बराबर बनाने के लिए भारत, बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, नेपाल और श्रीलंका में प्रशिक्षण आवश्यकताओं को संबोधित करेगा और आईएमएफ प्रशिक्षण की मांग को पूरा करने में मदद करेगा।
- एसएआरटीटीएसी छह पूर्वोक्त देशों के नीति निर्माताओं और अन्य सरकारी एजेंसियों को पाठ्यक्रम और सेमिनार प्रस्तुत करेगा। यह आईएमएफ की क्षेत्रीय तकनीकी सहायता केंद्रों और क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्रों के अनुभवों पर क्षमता विकास में आईएमएफ के गहन अनुभव के आधार पर निर्माण करेगा, जिसमें आर्थिक संस्था निर्माण पर तकनीकी सहायता प्रदान करने का एक रिकॉर्ड बनाया है।
- क्षेत्रीय सदस्य देशों और विकास भागीदारों द्वारा वित्तपोषण में योगदान मिलेगा। ऑस्ट्रेलियन एजेंसी फॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट, कोरिया गणराज्य और भारत ने उक्त केंद्र के लिए वित्तीय सहायता का वादा किया है।

- **ब्रिक्स इंडिया 2016 के सेमिनार में "सार्वजनिक एवं निजी कंपनियों की भागीदारी (पीपीपी) में सर्वोत्तम प्रथाएं और दीर्घकालिक अवसंरचना वित्तपोषण" पर वित्त मंत्री का उद्घाटन भाषण**

  22 सितंबर, 2016 को आयोजित ब्रिक्स इंडिया 2016 सेमिनार में उद्घाटन भाषण में वित्त मंत्री, अरुण जेटली ने कहा कि अवसंरचनाएं अर्थव्यवस्था के विकास की कुंजी हैं। श्री जेटली ने कहा कि ब्रिक्स देशों के बीच एक संस्थागत मंच क्लाउड साझाकरण और अन्य इलेक्ट्रॉनिक पद्धति के माध्यम से सुगम सूचना के आदान-प्रदान के साथ एक क्षेत्रीय ज्ञान केंद्र के रूप में काम कर सकता है। श्री जेटली ने कहा कि जहाँ तक भारत में अवसंरचनाओं का सवाल है, राजमार्ग, बंदरगाह और रेलवे जैसे परिवहन क्षेत्र में परियोजनाएँ मेगा आर्थिक गतिविधियों का क्षेत्र होंगी। श्री जेटली ने आगे कहा कि अवसंरचनाओं के वित्तपोषण के लिए निवेश की आवश्यकता होगी, विशेषकर स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छता, नवीकरणीय ऊर्जा, राजमार्ग, बंदरगाह और रेलवे जैसे क्षेत्रों में। भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने जो रणनीति अपनाई है, जैसे कि मेक इन इंडिया, 100 स्मार्ट शहरों और उदारीकृत एफडीआई व्यवस्था, उसे रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि सरकार अवसंरचना को उच्च प्राथमिकता देती है और एनआईआईएफ, अभिनव नए वित्तीय संस्थाएं जैसे कि रीट्स, इनविट्स, आईडीएफ जैसे नीति निर्णय ली है।

शोधकर्ता, जिन्होंने वार्षिक समीक्षा 2016 में योगदान दिया है

माह वार

क्रमांक	माह	शोधकर्ता
1	जनवरी	डॉ इन्द्राणी तालुकदार और डॉ स्मिता तिवारी
2	फरवरी	डॉ अरुंधती शर्मा
3	मार्च	डॉ दिनोज उपाध्याय और डॉ एफ आर सिद्दिक्की

4	अप्रैल	डॉ स्तुति बनर्जी और डॉ संघमित्रा शर्मा
5	मई	डॉ अथर ज़फर और डॉ संजीव कुमार
6	जून	डॉ अमित कुमार और डॉ आसिफ शुजा
7	जुलाई	डॉ अमित रंजन
8	अगस्त	डॉ अम्बरीन अघा
9	सितम्बर	डॉ ध्रुबज्योति भट्टाचार्जी
10	अक्टूबर	डॉ एम सामंथा और डॉ निवेदिता राय
11	नवम्बर	डॉ अविनाश गोडबोले
12	दिसंबर	डॉ निहार रंजन दास

क्षेत्र वार

क्रमांक	क्षेत्र/देश	शोधकर्ता
1	अफ़ग़ानिस्तान	डॉ स्मिता तिवारी
2	बांग्लादेश	डॉ ध्रुबज्योति भट्टाचार्जी
3	नेपाल	डॉ अमित कुमार
4	पाकिस्तान	डॉ ध्रुबज्योति भट्टाचार्जी
5	श्री लंका	डॉ सामंथा मल्लेम्पति
6	पूर्व एशिया/आसियान	डॉ संघमित्रा शर्मा
7	मध्य एशिया	डॉ अथर ज़फर
8	सऊदी अरब	डॉ ज़ाकीर हुसैन
9	चीन	डॉ संजीव कुमार
10	लैटिन अमेरिका	डॉ मो. अब्दुल गफ़र
11	यूएस और लैटिन अमेरिका	डॉ स्तुति बनर्जी

12	रूस	डॉ इन्द्राणी तालुकदार
13	यूरोपीय संघ	डॉ दिनोज उपाध्याय
14	पश्चिम एशिया	डॉ एफ आर सिदिक्की
15	ईरान	डॉ आसिफ शुजा
17	अफ्रीका और बहुपक्षीय संगठनें	डॉ निवेदिता राय (शोध निदेशक)
18	आर्थिक विकास एवं वृद्धि	डॉ अरुंधती शर्मा

डॉ निवेदिता राय, निदेशक (शोध) और डॉ ध्रुबज्योति भट्टाचार्जी, शोधकर्ता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा संयुक्त रूप से संशोधन और संपादन किया गया